BHIMA

LONE WARRIOR

M.T. Vasudevan Nair

Table of Contents

शीर्षक पेज
समर्पण
विषयसूची
भाग ---- पहला
भाग 2
भाग 3
भाग 4
भाग 5
भाग 6
भाग 7
भाग 8
उपसंहार
पी. एस .: अंतर्दृष्टि , साक्षात्कार और भी बहुत कुछ अनुवादक की टिप्पणी : गीता कृष्णनकुट्टी
एक वंशावली
एमटी अनूप रामकृष्णन के साथ यात्रा
प्रमुख कृतियाँ
लेखक के बारे में
कॉपीराइट

□□□□

□□□□□ □□□□□□

□□.□□. □□□□□□□□□ □□□□

□□□□□□□

□□□□ □□□□□□□□□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□□□□ • □□□□ • □□□□□□ • □□□□□ • □□ □□□□□□ • □□□□□□

[illegible]

विषय-सूची

कवर पृष्ठ
समर्पण
भाग ---- पहला
भाग 2
भाग 3
भाग 4
भाग 5
भाग 6
भाग 7
भाग 8
उपसंहार
पी.एस.: अंतर्दृष्टि, साक्षात्कार और भी बहुत कुछ लेखक के बारे में

भाग ---- पहला

यात्रा

प्रतिष्ठा उनके सामने ही घने जंगलों में तार-तार हो गई थी, और उनकी चीखों की गूँज अब भी उनके हृदय में गूँज रही थी। इसी बीच, प्रलय की लहरों और निर्धन हवा के कठोर हाथों ने अब नंगे, बेघर शहर पर आक्रमण करना शुरू कर दिया था। तट पर टकराती लहरों की आवाज़ में, अर्जुन को यादव वंश के इतिहास को मिटा देने के अहंकार से भरी एक हँसी सुनाई देती रही।
कुरुक्षेत्र के युद्ध के समाप्त होने के बाद जब अर्जुन युद्धक्षेत्र के सन्नाटे में, लाशों के बीच से और सूखे खून की नदियों को पार करते हुए चल रहे थे, तब उन्हें कोई दुःख नहीं हुआ था। युद्ध क्षत्रिय जाति का धर्म था और विजय के बाद मृत्यु निश्चित थी। कृष्ण उनके साथ वहाँ चल रहे थे और बिना कुछ कहे उन्हें याद दिला रहे थे कि अब तक जो कुछ भी हुआ है, वह भाग्य द्वारा खेले गए शतरंज के खेल की एक चाल है।
क्या कृष्ण, जिनकी मृत्यु शिकारी के तीर से भेदी जाने पर हुई, ने अपने अंत का पूर्वाभास कर लिया था? कृष्ण, जो अपने शस्त्रों और अपनी आत्मा की शक्ति के स्वामी थे? आह भरते हुए अर्जुन ने सोचा कि नर-नारायण, मनुष्य और ईश्वर, जो वह और कृष्ण थे, उनमें से केवल नर ही शेष रह गए हैं।
अर्जुन ने अपनी महान यात्रा शुरू करते समय दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह न केवल बीते हुए मार्ग की ओर, बल्कि जीवन में अब तक तय किए गए किसी भी मार्ग की ओर मुड़कर नहीं देखेंगे। लहरों के अस्पष्ट शोर से दूर, एकांत में खड़े होकर उन्होंने स्वयं को एक बार फिर चेतावनी दी: पीछे मुड़कर मत देखो। द्रौपदी, सुभद्रा, चित्रांगदा, उलूफी, और वे अनगिनत स्त्रियाँ जिनके नाम उसे याद तक नहीं थे, उसके जीवन में उसके लिए कुछ भी नहीं थीं। जैसा कि बचपन में शास्त्रों का अध्ययन करने वाले ब्राह्मण कहा करते थे, वे देवताओं को अपनी संतान अर्पित करने के लिए प्रज्वलित की गई यज्ञ की ज्वालाओं से अधिक कुछ नहीं थीं। या फिर किसी धनुर्धर के लिए विजय के क्षणों में प्रदर्शित करने के लिए मात्र आभूषण थीं।
लेकिन कृष्ण, जिनका पालन-पोषण उस छोटे से देश और कुल में हुआ था जिसे समुद्र ने निगल लिया था और अब उस पर ललचा रहा था – उस व्यक्ति ने उन पर अपना प्रेम उंडेल दिया था। पहली बार, और आखिरी बार, उन्हें असीम प्रेम की विशालता का अहसास हुआ।
जब अर्जुन युवा थे, तब उन्होंने उस गुरु में प्रेम के सभी पहलुओं को देखने का प्रयास किया था, जिन्होंने भीड़ के सामने गर्व से उन्हें चुना था और

अब और गहरा डूबता जा रहा था। अगर वह चाहता, तो अब वह यह गणना कर सकता था कि अदृश्य होने में उसे कितने सेकंड और लगेंगे। मानसिक कसरतें हमेशा उसे आनंद देती थीं। सहदेव को याद आया कि अब किसी को आश्चर्यचकित या मनोरंजन करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। महान यात्रा शुरू हो चुकी थी।
जब स्तंभ अंततः पानी में डूब गया, तो भीम ने अपने होठों पर आई सरल प्रसन्नता की मुस्कान को दबा लिया और युधिष्ठिर की ओर देखा, जो आँखें बंद किए और सिर झुकाए खड़े थे। भीम को याद आया कि वह द्रौपदी से क्या कहना चाहते थे, जो अपने बड़े भाई के पीछे सिर झुकाए खड़ी थीं: कि समुद्र तट पर, रेत में धंसे रथ और टूटे हुए सिंह-स्तंभ के बीच एक संकरी नाली में मुरझाई हुई मालाएँ पड़ी थीं। मालाओं के बीच, उन्होंने एक विशाल माणिक देखा था, जो स्पष्ट रूप से किसी आभूषण का हिस्सा था, और सूर्य के प्रकाश में अग्नि की आँख की तरह चमक रहा था।
नहीं, द्रौपदी ने कुछ नहीं देखा होगा। केवल अपने पैरों की ओर देखते हुए, वह यह अनदेखा करने की कोशिश कर रही थी कि द्वारका नष्ट हो चुकी है। भीम को याद आया कि द्रौपदी की यह आदत थी कि वह स्थिर खड़ी रहती थी और उसका मन दूर-दूर के स्थानों के बारे में सोचने लगता था।
भीम को अचानक द्वारका में अतिथि और विद्यार्थी के रूप में बिताए गए थोड़े समय की याद आ गई। जिस दिन वह वहाँ पहुँचा, उसे मामा के घर आने की खुशी महसूस नहीं हुई। उसके चचेरे भाई बलराम ने उससे दूरी बनाए रखी और उम्र के अंतर को उजागर किया। सुबह, दूत के आने पर समय बर्बाद न करने की चिंता में, भीम जल्दी उठकर तैयार हो जाता था - अपने गहने उतारता, बालों को सिर पर बाँधता, कमर पर ऊपरी वस्त्र कसकर लपेटता और शरीर पर सूअर की चर्बी मलता। वह हमेशा चिंतित रहता था: क्या गुरु उसे गदा से युद्ध करने की गुप्त रणनीतियाँ सिखाएँगे, वही जो उन्होंने दुर्योधन को सिखाई थीं? उसे लगता था कि उसके गुरु अक्सर भूल जाते थे कि उन्होंने उसे सुबह पाठ के लिए बुलाया था। शाम को, जब गुरु शराब के नशे में धुत्त होकर बोलते, भीम उनके चरणों में बैठकर उनकी हर बात सुनता। वह कब उन रणनीतियों का रहस्य प्रकट करेंगे जो शुक्राचार्य ने उसे पहले बताई थीं और जो केवल बलराम को ही पता थीं? भीम रात में बेचैन रहता था, सोचता रहता था कि उसे क्या करना चाहिए या क्या कहना चाहिए जिससे गुरु उसमें भी वही रुचि दिखाएं जो उन्होंने दुर्योधन में

दिखाई थी। जब भी वह गुरु से विदा लेता, तो इस बात का खास ध्यान रखता कि उसे कुछ नया न सीखने की निराशा न झलके।
उस समय कृष्ण वहां से दूर थे। और भीम अपने मामा वासुदेवर से केवल दो बार ही मिले थे: एक बार आगमन के तुरंत बाद और दूसरी बार बाईसवें दिन उनसे विदाई लेते समय। द्वारका की समृद्धि और धन-दौलत देखकर जो आश्चर्य उनके मन में बसा हुआ था, वही कुछ समय के लिए उनके मन में बसा रहा।
युधिष्ठिर आगे बढ़ने लगे। फिर भीम की बारी आई। वे अपने दुःख को छुपाने की कोशिश कर रहे अर्जुन के पास से गुज़रे, चट्टानों से नीचे उतरे और फिर से समुद्र तट पर पहुँच गए। युधिष्ठिर काफी आगे निकल चुके थे। भीम ने सोचा कि बाकी लोग भी उनके पीछे आ रहे होंगे - अर्जुन ठीक उनके पीछे और उनके बाद नकुल। नकुल के पीछे सहदेव होंगे, और सबसे आगे द्रौपदी, जो निश्चित रूप से सबसे आखिर में होंगी।
इस प्रकार वे रातों में चलते रहे जो दिनों से भिन्न नहीं थीं। जैसे-जैसे मील बीतते गए, भीम को लगा कि वे उन क्षेत्रों के निकट हैं जहाँ वे वनवास के दौरान तीर्थयात्रा करते हुए गए थे। "ऐसा मत सोचो," उसने स्वयं को फटकारा। उसके गुरुओं और बड़े भाई ने यात्रा के आरंभ में कहा था: मोक्ष के मार्ग की खोज करने वाले मन को ऐसे कार्यों में संलग्न नहीं होना चाहिए।
हमारे लिए अतीत का अब कोई अस्तित्व नहीं है।
जब यादें और आशाएं मिट जाती हैं, तो मन शांत और अविचलित हो जाता है, क्रिस्टल की तरह शुद्ध।
क्या सिरा की पवित्र नदी यहीं कहीं नहीं थी?
अगर आप उसे देख भी लें, तो भी ऐसे आगे बढ़ें जैसे आपने उसे देखा ही न हो; यही नियम है।
जैसे ही दूर से हिमवान की चोटियाँ दिखाई देने लगीं, ऐसा लगा मानो युधिष्ठिर की चाल तेज हो गई हो। भीम अपनी धीमी गति से चलते रहे, पीछे से आ रही कदमों की आहट और तेज़ साँसों को सुनते हुए।
हिमवान की ढलानें! भीम ने मन ही मन सोचा, शतश्रृंग किस ओर था, जिसने बचपन में मुझे प्यार से छुपाया था? क्या उन ऋषियों का आश्रम अभी भी वहीं था जिन्होंने उसे नाम दिया था और उसका जनेऊ संस्कार कराया था? शतश्रृंग, हमारी पालक माता, क्या तुम भीमसेन को देख पा रही हो, क्या तुम पांडवों को उनकी अंतिम यात्रा पर जाते हुए देख पा रही हो?

भीमा को गंगा के किनारे, दमकते हिमवान के पश्चिमी ढलान पर बसे एक जंगल की याद आई। एक मुरझाया हुआ जंगल। पिछली मानसून में गिरे मधुका फूलों की खुशबू अभी भी पेड़ों के नीचे बसी हुई थी। घाटियों में बहती धाराएँ चट्टानों की सतहों से डामर चाट रही थीं। उस काले रंग की सुंदरी की आँखों में एक चमक थी जो जंगल में दौड़ रही थी, उसके बालों में कुटकप्पला के फूलों की खुशबू बसी हुई थी। परछाइयाँ दबे स्वर में ज़मीन पर सरक रही थीं, मानो युवाओं के उल्लासपूर्ण उत्साह पर चुपचाप चीख रही हों। कहाँ, कहाँ वे जंगल थे जिनके नाम वह नहीं जानता था, वे जंगल जो हँसे थे, अपनी आँखें आंशिक रूप से ढककर उसके नग्न पुरुषत्व को देख रहे थे?
ऊंचाइयों और ढलानों को पार करके दूसरी ओर पहुँचने पर उनके सामने कंटीली झाड़ियों वाला रेगिस्तान फैला हुआ था। उन्हें मेरु पर्वत की दूर स्थित चोटी तक अपनी यात्रा जारी रखनी थी। उसके बाद, योगनिद्रा में सब कुछ शांतिपूर्वक समाप्त हो जाएगा, जहाँ मन नींद और ध्यान के बीच की अवस्था में होता है। भीम तब रुक गया जब उसने एक सिसकी और दबी हुई विलाप की आवाज़ सुनी, जिसे वह किसी भी शोरगुल के बीच पहचान सकता था।
उसने इतनी ऊँची आवाज़ में पुकारा कि युधिष्ठिर सुन सके, 'रुको, बड़े भाई, द्रौपदी गिर गई है!'
बिना रुके या पीछे मुड़कर देखे, युधिष्ठिर ने कहा, 'मुझे आश्चर्य नहीं है। देवताओं के चरणों तक जीवित पहुँचने के लिए आवश्यक मानसिक शक्ति तो वह बहुत पहले ही खो चुकी है।'
भीम अचंभित रह गया। क्या युधिष्ठिर अपनी श्रेष्ठ पत्नी के बारे में बात कर रहे थे?
युधिष्ठिर के शब्द हवा के साथ बहकर उन तक स्पष्ट रूप से पहुंचे, “वह केवल अर्जुन से प्रेम करती थी। राजसूय यज्ञ में मेरे पास बैठी होने पर भी उसकी निगाहें अर्जुन पर ही टिकी थीं। चलते रहो, रास्ते में गिरने वालों का इंतजार मत करो।”
युधिष्ठिर चलते रहे।
भीम ने अपने पीछे आते कदमों की आहट सुनी। विशाल मेरु पर्वत की चोटी पर टकटकी लगाए अर्जुन भीम के रास्ते से बचते हुए निकल गए, जो उनके सामने खड़े थे, और उन्होंने भीम को छूने से बचने का पूरा ध्यान रखा।
भीम ने उससे कहा, ‘द्रौपदी गिर पड़ी।’

अर्जुन को मानो सुनाई ही नहीं दिया। भीम सोचने लगा: क्या कंटीली झाड़ियों से होकर इतनी तेज़ी से बहने वाली हवा ने, जिससे झाड़ियाँ काँप रही थीं, उसकी थकी हुई आवाज़ को दबा दिया था? लेकिन उसके पास कहने के लिए और शब्द नहीं थे।
कुछ देर बाद, जब नकुला का पिघले हुए सोने का रूप, चलने के प्रयास से पसीने से तरबतर, उसके बाईं ओर से गुजरा, तो भीम ने उसे बुदबुदाते हुए सुना: 'किसी का इंतजार करने का समय नहीं है।'
भीम उस पल का इंतज़ार कर रहा था जब सबसे छोटा बेटा, माद्री का पुत्र, जिसे वह हमेशा बच्चा ही समझता था, द्रौपदी को अपनी बाहों में उठाकर उसके पास से गुज़रेगा। सहदेव उसे कभी ज़मीन पर छोड़कर आगे नहीं जाता। वह न केवल उसकी पत्नी थी जिसके लिए वह पति बनने की कतार में पाँचवें स्थान पर था, बल्कि उसने भी उसे माँ का असीम प्रेम दिया था।
लेकिन अंत में, जब सहदेव भी उनके पास से गुजरे, न बाएँ न दाएँ, उनकी आँखें आगे जाने वालों के पदचिह्नों पर टिकी थीं, एकाग्रता में उनके होंठ काँप रहे थे, तब भीमसेन महान यात्रा के नियमों को भूल गए। वे पीछे मुड़े। और उस एक क्षण में जब वे सभी शास्त्रों, सभी नियमों को भूल गए, मेरु पर्वत की वह चोटी, जिसने अपनी अदृश्य शक्ति से उन्हें आह्वान किया था, उनके पीछे छूट गई।
थके-हारे कदमों को घसीटते हुए भीमा अपने रास्ते पर वापस लौट गया।
वह द्रौपदी के पास खड़ा था, जो अपना संतुलन खोकर कंटीली झाड़ियों के बीच झुलसी हुई धरती पर गिर पड़ी थी। उसके कंधे की हड्डियाँ फड़क रही थीं, उसके होंठ धरती से लगे हुए थे और उसकी साँसें धीमी चल रही थीं। वह उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गया। उसके कंधे को छूने के लिए आगे बढ़े हाथ को रोकते हुए उसने पुकारा: 'द्रौपदी!'
द्रौपदी का थका हुआ शरीर हिल उठा। उसने बड़ी मुश्किल से उठकर बैठना सीखा। भीम ने राहत की सांस ली और देखा कि उसकी आंखें, जो पहले मानो कुछ भी न देख रही हों, धीरे-धीरे साफ होने लगी थीं।
लेकिन उसने उनमें केवल निराशा ही देखी। युधिष्ठिर और अर्जुन ने उसका इंतजार नहीं किया था। किसी ने भी इंतजार नहीं किया था।
उन्होंने दोहराया, 'मैं यहाँ हूँ।'

उसकी आँखें कठोर हो गईं, फिर नम हो गईं। वे आगे जाने वालों के पीछे-पीछे रेगिस्तान के सन्नाटे में चली गईं। उसे कोई दिखाई नहीं दिया। हवा ने उन लोगों के पदचिह्न भी मिटा दिए थे जो शाश्वत शांति की तलाश में उस रास्ते गए थे।
उसने भीमा की ओर देखा, जो असमंजस में खड़ा था, यह नहीं जानता था कि उसके लिए क्या करे। उसने उसकी आँखों में उमड़ते मौन प्रश्न देखे।
उसके होंठ हिले। लेकिन वह उसके बोले हुए शब्दों को समझ नहीं पाया। वह जानना चाहता था कि क्या वे कृतज्ञता व्यक्त कर रहे थे, प्रार्थना कर रहे थे, या क्षमा मांग रहे थे। या फिर जो लोग चले गए थे, उन पर श्राप दे रहे थे? उसने उसके होंठों के दोबारा हिलने का इंतजार किया।
उसके मन में एक प्रार्थना का भाव आया: कुछ कहो, आखिरी बार, कुछ कहो। बस एक बार।
एक बार फिर, द्रौपदी का थका हुआ सिर नीचे झुक गया।
क्या कहीं उनके सामने, युधिष्ठिर का स्वागत करने के लिए आ रहे दिव्य रथ के पहियों की आवाज सुनाई दे रही थी? कहीं बहुत दूर से?
लेकिन उसने जो सुना, वह सुदूर अतीत की बात थी। महल के प्रांगणों, वन पथों, युद्धक्षेत्रों पर रथों के पहियों की आवाज...
भीमा उदास होकर बैठ गई और उसकी आंखें खुलने का इंतजार करने लगी, साथ ही उसे लगातार देखती रही।
फिर वह मुस्कुराया।

भाग 2

चक्रवात की गड़गड़ाहट

1

शतश्रृंग से हस्तिनापुरा तक की यात्रा मुझे धुंधली सी याद है। मैं रथ में इसलिए बैठा था क्योंकि मैं रास्ते के नज़ारे देखना चाहता था। लेकिन मैं ज़्यादातर समय सोता रहा। रास्ते में पड़ने वाले विश्राम स्थलों पर पहुँचकर मैं जागता और फिर सो जाता।
राजधानी के किले के द्वार पर प्रतीक्षा करते हुए, मुझे दूर से महल दिखाई दे रहे थे। द्वार के दोनों ओर, शेरों की मूर्तियों के नीचे, कमर पर तलवारें और दाहिने हाथ में लंबे भाले लिए चार पहरेदार खड़े थे। उनके लाल सिर के वस्त्रों के ऊपर भालों की नोकें चमक रही थीं।
मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित करने वाली चीज़ें थीं वे विशाल ढोल जो ध्वजदंड के दोनों ओर, द्वार के बाहर लटके हुए थे। मैं एक सवाल पूछने के लिए मुड़ी और देखा कि माँ बेचैन लग रही थीं। जब मैंने उन्हें सहदेव को अपनी गोद में लिए और नकुल को अपने घुटनों से सटाए वहाँ खड़े देखा, तो मेरे पाँच साल के मन में एक विचार आया: माँ डरी हुई थीं! मुझे एहसास हुआ कि यह सवाल पूछने का समय नहीं था।
शतश्रृंग से हमारे साथ आए तपस्वियों में एक बहुत वृद्ध तपस्वी भी थे। वे हमारे साथ आए अन्य ब्राह्मणों के साथ पहरेदारों से मिलने गए और अकेले ही वापस लौटे।
मां ने गुस्से से भरी आवाज में पूछा, 'हमें कब तक इंतजार करना पड़ेगा?' वृद्ध तपस्वी ने कहा, ‘राज दरबार में एक दूत गया है। पांडु हस्तिनापुर के राजा थे। इसलिए, उनकी पत्नी और बच्चों का विधिवत स्वागत किया जाना चाहिए।’ मेरे बड़े भाई युधिष्ठिर चुपचाप माँ के पीछे खड़े थे। मेरा छोटा भाई, चार वर्षीय अर्जुन, जो स्थिर रथों के बीच इधर-उधर दौड़ रहा था, मेरे पास आया और पूछा, 'क्या यह हमारा राज्य है?'
मैंने कोई जवाब नहीं दिया।
अपनी यात्रा शुरू करने से पहले, जब नौकरानियां हमें तैयार कर रही थीं, तब मां ने हमसे कहा था, 'हम राजधानी वापस जा रहे हैं।'
मैं अक्सर सोचती थी कि जब एक राज्य और जीवन के सारे सुख-सुविधाएँ हमारा इंतज़ार कर रही थीं, तब हम जंगल में तम्बुओं में क्यों रह रहे थे। नौकरानियों ने हमें कुरु वंश के राजाओं के शिकार के प्रति जुनून के बारे

xxx xxxxxx xxx xxxxxx xxx-xxx xxx xx xxxx xx: xxxxxxxx xxxxx xxxxxxxxxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxx, xx xxxxx xxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx, xxxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx, xx xxxxxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xxx xxxxxxx xx xxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxxx xxxxx? xxxxx xxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxxxx xxx xxxxx xxxxxx, xxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxx xxx

xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxx xxx xx xx xxxxxxxxxxxx xx xxxxxxxxx xxx, xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xxx xxxxxxxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxx xxx xxxxx xxx xxxxx xxxxxxxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xxx xxxxx xx, xxxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xxxxxxx xxx xxx xxxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xx xxxxx-xxxxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxxxx, xxxxxxxxxxxxxxx, xxxxx xx xx xx xxxxxx xxxxxxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxx

xxxxx xxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxxx xx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxxxxxxxx xx xxx xxx xxxxxxxxxx xxx xxxxx xx xx xxx xxxxx xxxxx xxxxx x xxxxx xx xxxxxx xxxxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xx x xxxxxx xxxxx, xx xxxxxxxx xx xxx xxxxxx xxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xxxxxxxxxx xx xxxxxxx xxx xxxxxx xxx xxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxx

xxxxxx xxxxx xxxxx xxx xx xx xxxxx, xx xxx xx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xxx xxxxx xxx xx xx xx xxx xxx xxx xxx xxx, xx xxxxxx xxx xxxxx xx xx xxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxx xx, xxxxx xx xx xxxxx xxx xxx xxxxxxxx xx: xxxxx xxx xx xxxxxx xx xxx xx xxxxxxxx xxx xxx xxx xx? xxxxxx xxx xxx xxx xx xx xx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xxxxxxx

xxxxxx, xxxxx xx xxx xxxxx xxx xx xxx xx xxx xxxxxx xxxxx xxxxx

xxxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxxxx xxx xx, xxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxx xxxxx xx xx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxx xxxxx xxxxxx xx xx xxxxxxxx xxxxx xxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxx xx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xxx xx xxx xxx xxxxx-xxxxx xxxxx xxxxxx xx, xxx xxxxx xxx xx xxxxx xxx xxx xxxxxx xxxxx xxx, xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxxxx

महल के पहरेदार दोनों ओर हट गए और अंगरक्षक बाहर आ गए। उनके पीछे आ रहे लोगों के समूह में, मैंने एक आदमी को तेज़ी से हमारी ओर आते देखा। उसके भूरे बाल मुकुट की तरह सिर के ऊपर गुंथे हुए थे। उसकी दाढ़ी सफ़ेद थी। लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए, वह बाकी सभी को पीछे छोड़ गया।
मां ने कहा, 'चलते रहो, चलते रहो...'
उसने सहदेव को नीचे उतारा और सिर के ऊपर हाथ जोड़कर आदरपूर्वक उस व्यक्ति को प्रणाम किया। फिर वह उसके सामने घुटने टेककर बैठ गई।
उसने उसके सिर को छुआ और कहा, 'सारे लड़के आ गए हैं, यह अच्छी बात है।'
मां ने मेरे बड़े भाई की ओर देखा और कहा, 'अपने दादाजी के सामने प्रणाम करो।'
हम सबने बारी-बारी से, अपनी उम्र के क्रम में, उनके सामने प्रणाम किया। जब नकुल और सहदेव माता के संकेत का इंतज़ार कर रहे थे, तभी उन्होंने उन दोनों को अपनी बाहों में उठा लिया।
तब तक हमारे चारों ओर पुरुषों और महिलाओं की एक शोरगुल भरी भीड़ जमा हो चुकी थी।
मैंने उन दादियों को देखा जो माँ को गले लगा रही थीं। हमने ऋषियों के निर्देशों के अनुसार एक-एक करके उनका अभिवादन किया।
एक व्यक्ति हम सबसे कुछ दूरी पर खड़ा होकर हमें देख रहा था और मुस्कुरा रहा था। वह दादा भीष्म के साथ आए लोगों में से एक था। उसने न तो कोई वस्त्र पहना था और न ही कोई आभूषण। मुझे लगा कि उसके माथे पर बिखरे लहराते बालों के बीच से झांकती उसकी आँखों में मुस्कान थी। वह दुबला-पतला और लंबा था। वह न तो ब्राह्मण था और न ही क्षत्रिय के आभूषण धारण किए हुए था।
महिलाओं के समूह से अलग होते ही माँ ने उसे देख लिया। उसने तुरंत उसके सामने घुटने टेक दिए। वह मुस्कुराया और उससे कुछ कहा, लेकिन मैंने नहीं सुना कि उसने क्या कहा।
मां की आंखें हमें ढूंढ रही थीं।
‘अपने छोटे चाचा, विदुरा के सामने प्रणाम करो।’
किसी ने युधिष्ठिर को पीछे से धक्का दिया जिससे वह हमारे सामने खड़े हो गए।
युधिष्ठिर द्वारा प्रणाम करने के बाद, चाचा ने उन्हें गले लगाया और कहा, 'बच्चे, तुम मेरी कल्पना से भी अधिक तेजस्वी दिख रहे हो।'

शिष्टाचार की औपचारिकताएं पूरी होने के बाद, चाचा ने मेरे कंधे को प्यार से सहलाते हुए पास खड़े किसी व्यक्ति से कहा, 'भीमा दुर्योधन से भी बड़ा हो गया है!'
लोगों ने हमारे पैर पानी से धोए। हमारे करीब आती भीड़ शोर मचाने लगी। भीष्मचार्य ने विदुर को बुलाया और उनसे कुछ कहा। विदुर ने उस वृद्ध तपस्वी से बात की, जो शतश्रृंग से हमारे साथ आए समूह का हिस्सा था: 'यहाँ एकत्रित ब्राह्मण, कुलीन और सभी परिवार पांडु पुत्रों से मिलने आए हैं। कृपया उनका परिचय कराएँ।'
वह बूढ़ा व्यक्ति हमारे पास आया और फिर भीड़ की ओर मुड़ गया। किले के द्वार पर मौजूद शाही दल और हमारे चारों ओर की भीड़ खामोश हो गई, सब उसकी बात सुनने के लिए उत्सुक थे।
‘महान और दयालु राजा, कौरवों के जनक पांडु अब हमारे बीच नहीं रहे। आप सब यह जानते हैं।’
वह रुका।
जब उसने दोबारा बोलना शुरू किया तो उसकी आवाज तेज हो गई।
“हस्तिनापुरा के महान जनो, पांडु के शतश्रृंग में रहते हुए, उनकी पत्नियों से दिव्य वरदानों द्वारा उत्पन्न हुए वीर पुत्रों का स्वागत कीजिए!” युधिष्ठिर का हाथ पकड़कर वह उन्हें आगे ले गए। “यह युधिष्ठिर हैं, जो कुंती के पुत्र हैं, पांडु के सबसे बड़े पुत्र, भगवान धर्म के आशीर्वाद से जन्मे। वह राजकुमार जो एक दिन धर्मपुत्र के नाम से प्रसिद्ध होंगे, धर्म के पुत्र।”
मेरे बड़े भाई मुस्कुराए। वे हर अवसर पर विनम्रता का उचित स्तर प्रदर्शित करने में हमेशा सतर्क रहते थे। वे माँ के इस निर्देश का बहुत ध्यान रख रहे थे कि सभी की निगाहें हम पर होंगी और इसलिए हमें राजकुमारों के योग्य गरिमा के साथ व्यवहार करना चाहिए।
किसी ने मुझे आगे धकेल दिया।
'वायु देव, जो आठ दिशाओं में से एक के स्वामी हैं, के आशीर्वाद से जन्मे दूसरे पांडव भीमसेन अत्यंत बलवान होने के लिए नियत हैं।'
मुझे लगा कि मेरे चाचा का पुत्र दुर्योधन शायद स्त्रियों के समूह में कहीं होगा और यह सुन लेगा, इसलिए मैंने सिर ऊंचा करके उसे ढूंढना शुरू किया।

क्या ये लोग तपस्वी पर विश्वास नहीं करते थे? वे हंस रहे थे। क्या वे वायु के पुत्र पर हंस रहे थे, जो आगे चलकर सबसे शक्तिशाली बनने वाला था?
तपस्वी ने अर्जुन को उठाया, फिर नीचे बिठाया और कहा, ‘अर्जुन, मध्य पांडव। देवताओं के देव इंद्र के पुत्र, युवा योद्धा। उनके जन्म के समय दिव्य वाणी ने घोषणा की थी कि वे सभी धनुर्धारियों को पराजित करेंगे।’
फिर उन्होंने नकुल और सहदेव की ओर इशारा किया, जिनमें से एक माता की कमर पर बैठा था जबकि दूसरा उनका हाथ पकड़े हुए था, “नकुल और सहदेव, माद्री के जुड़वां पुत्र, जिन्होंने अपने पति की चिता पर गिरकर उनका अनुसरण करने का चुनाव किया। जब वे बड़े होंगे, तो इस पृथ्वी पर कोई भी राजकुमार अश्विनी देवों के आशीर्वाद से जन्मे इन बुद्धिमान और सुंदर पुत्रों को चुनौती नहीं दे पाएगा।”
लोगों के चेहरों से मुस्कान गायब हो गई थी। वे स्तब्ध लग रहे थे: शायद उसी क्षण उन्हें जंगल में हुई मौतों की याद आ गई। मुझे भी अपनी छोटी माँ, माद्री, की याद करके दुख हुआ, जिसने पिताजी की चिता में खुद को झोंक दिया था और प्राण त्याग दिए थे। नौकरानियों ने हमें दिलासा देते हुए कहा कि कई क्षत्रिय स्त्रियों ने ऐसा ही किया था।
एक तपस्वी ने कहा, “आइए हम पांडु और माद्री के अंतिम संस्कार की तैयारी करें, जिन्होंने अनेक पुण्य कर्म किए, वन में निवास किया और पुत्रों के रूप में धन अर्जित किया, जिससे कुरु वंश का विकास और समृद्धि हुई। शोक की अवधि समाप्त होने के बाद, सभी श्रेष्ठ ब्राह्मण और स्वामी उन देवताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्रार्थना और यज्ञ करें जिन्होंने उन्हें पुत्रों के रूप में यह धन प्रदान किया।”
विदुरा ने माता से कहा, 'मेरे साथ आइए, राजा दरबार में आपका इंतजार कर रहे हैं।'
माताजी सभी वृद्ध स्त्रियों के साथ अंदर गईं। युधिष्ठिर विदुर का हाथ पकड़े उनके पीछे-पीछे चले। अर्जुन और मैं दादा भीष्म के पीछे-पीछे चल रहे थे। स्त्रियों ने नकुल और सहदेव को अपनी गोद में उठा रखा था। हस्तिनापुर में सब कुछ देखकर छोटे बच्चे मंत्रमुग्ध हो गए और खुशी से हंसने लगे।
एक महिला, जिसका चेहरा काले कपड़े से पूरी तरह ढका हुआ था, दरबार के मुख्य हॉल के प्रवेश द्वार पर अकेली खड़ी थी। माँ दौड़कर उसके पास पहुँची और उसके चरणों में गिरकर प्रणाम किया। महिला ने माँ को उठाया और कहा, 'आपको

स्वागत करने के लिए बाहर न आने के लिए मुझे क्षमा करें। आप जानती हैं कि मैं कभी बाहर नहीं जाती।'
हमें यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि वह कौन थीं – हमारी चाची गांधारी, जो हमेशा अपना चेहरा ढके रहती थीं और कभी बाहर नहीं निकलती थीं। उनका संदेशवाहक हमारे लिए उपहार लाया करता था। मैं उस काले मुखौटे के पीछे का चेहरा देखने के लिए तरसता था। हम बारी-बारी से उनके सामने झुके, फिर उनकी लंबी, पतली भुजाओं के घेरे में खड़े हो गए, जिन पर नीली नसें स्पष्ट रूप से उभरी हुई थीं। उन्होंने हममें से प्रत्येक से कोमल स्वर में, लगभग फुसफुसाते हुए कहा, 'आप सभी समृद्ध हों।'
मां ने अपनी आंखों से आंसू पोंछे।
मेरी चाची ने मां के कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'चलिए। वह इंतजार कर रहा है।' मेरे अंधे चाचा। जब मेरी चाची को पता चला कि वह अंधे हैं, तो उन्होंने अपना चेहरा ढकने, महल की चारदीवारी में रहने और कभी बाहर न निकलने का फैसला किया।
वह अकेला था, उसकी मौजूदगी उस सोफे पर महसूस हो रही थी जो जटिल नक्काशीदार लकड़ी के खंभों से घिरे कमरे के बीचोंबीच रखा था। सुनहरे बालों की पट्टी के ऊपर घने बाल थे, जिसके बीचोंबीच एक रत्न चमक रहा था। उसकी आंखें पुतलियों के बिना सफेद गोलों जैसी लग रही थीं। उसके भारी जबड़े लगातार हिल रहे थे, मानो वह कुछ चबा रहा हो। उसकी घूमती आंखों में देखकर मैं डर गया और उससे कुछ दूरी पर रुक गया। क्या वह कुछ चबा रहा था या खुद से कुछ बुदबुदा रहा था?
माता ने कहा, 'मैं कुंती हूं, जो विधवा हो गई हूं। मैं और मेरे पुत्र आपको प्रणाम करते हैं।'
जब मैंने उनके सामने सिर झुकाया, तो उन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा। बाद में उनकी बाहों में खड़े होकर, मैं अचानक उनकी विशाल भुजाओं के आकार से चकित रह गया।
उन्होंने कहा, 'ये पांचों लड़के अब से मेरे बेटे हैं।'
मां ने एक बार फिर अपनी आंखों से आंसू पोंछे।
मुझे लगा कि उनकी कमजोर आवाज उनके विशाल शरीर के अनुरूप नहीं थी।
मैंने जंगल में सूतों को जो गीत गाते सुना था, उनमें से एक गीत इसी चाचा के बारे में था। उसमें कहा गया था कि राजा धृतराष्ट्र में मदमस्त 10,000

हाथियों को वश में करने की शक्ति थी। जब नकुल और सहदेव उनके सामने प्रणाम कर रहे थे, तब मैंने उनकी आँखों में देखने से बचते हुए उनकी विशाल भुजाओं और चौड़ी छाती को निहारा। उनकी चौड़ी छाती पर सौ लड़ियों वाला देवछंद हार कितना छोटा लग रहा था! गायक सही कह रहे थे। उनकी भुजाएँ साल के वृक्षों जितनी विशाल थीं। अगर उनकी आँखें होतीं, तो वे केवल अपनी उन विशाल भुजाओं से ही सभी राजाओं को परास्त कर सकते थे।
हो सकता है कि जिन सूतों और मगधों ने ये गीत लिखे हों, उन्होंने थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर बताया हो। लेकिन यह स्पष्ट था कि इस चाचा में कम से कम एक उद्दंड हाथी जितनी ताकत थी।
अचानक मेरी नज़र तीन लड़कों पर पड़ी जो हॉल में दाखिल हुए थे और अंकल के पीछे खड़े थे। उनके दाहिनी ओर खड़ा लड़का सोफे के कोने पर बने सुनहरे बुलबुलों पर अपनी उंगली फेरता हुआ मुझे घूर रहा था। उसके कानों में लंबी बालियां लटक रही थीं और छाती पर कवच की तरह चौवन लड़ियों वाला रश्मिकलापम हार था। मैंने मन ही मन कहा, ये उस पर भद्दा लग रहा है। शायद मैं ईर्ष्या कर रही थी, क्योंकि मैंने तो सिर्फ एक लड़ी वाली एकावली माला पहनी हुई थी। शतश्रृंग से उपहार लेकर आए लोगों को विदा करने के बाद, दादा भीष्म दरबार में हमारे साथ शामिल हो गए।
उन्होंने हम बच्चों को एक-दूसरे से सावधानीपूर्वक दूरी पर खड़े देखा और मुस्कुराए। ‘आओ, दुर्योधन और दुस्साना। अब तुम सब एक साथ रहोगे। चित्रसेन, बच्चे, इधर आओ।’
चाचा विदुर से कह रहे थे, 'तुम्हें पांडु और माद्री के अंतिम संस्कार अवश्य करने चाहिए। यह सुनिश्चित करो कि ब्राह्मणों को सभी पारंपरिक उपहार दिए जाएं।'
उनमें सबसे छोटी चंद्रसेना सबसे पहले हमारे पास आई।
दुर्योधन का जन्म भी उसी दिन हुआ था जिस दिन मेरा। सोफे के पीछे जहाँ वह खड़ा था, वहीं खड़ा रहकर वह हमें घूरता रहा। मैंने उसे देखकर मुस्कुराने की कोशिश की। उसने अनदेखा करने का नाटक किया। वह मुझसे बड़ा दिखता था। जैसे ही हम हमारे लिए तैयार किए गए महल की ओर बढ़े, मैं हंस पड़ा। युधिष्ठिर ने मुझे चेतावनी भरी निगाहों से देखा। मैंने ऐसा दिखाया जैसे मैंने उन्हें देखा ही न हो और अर्जुन से कहा, 'देखा तुमने, मामा के बेटों ने अपने बालों में फूल लगाए हैं!'

मेरे बड़े भाई ने ऐसे लहजे में कहा जैसे इसमें कुछ भी अजीब न हो, 'अरे मूर्ख, राजकुमार आमतौर पर अपने बालों में फूल लगाते हैं। जंगल में इतनी नौकरानियां नहीं थीं कि हमारे लिए फूल ला सकें, इसलिए हमने फूल नहीं लगाए।' मैं कुछ और कहने ही वाला था, लेकिन चुप रहा, क्योंकि उसने मुझे मूर्ख कहा था। जब दादा भीष्म ने उन्हें हमसे मिलने के लिए बुलाया, तो दुस्साना ने अपने बड़े भाई की ओर ऐसे देखा मानो उससे पूछ रहा हो कि क्या करना चाहिए। मैं दुर्योधन से पूछना चाहता था, क्या चौवन लड़ियों वाली इतनी भारी माला पहनना मुश्किल नहीं है? दुस्साना, छोटा भाई, अपने गले में केवल सोलह लड़ियों वाली मानवकम माला पहने हुए था।
जब हम शतश्रृंग में थे, तब मैंने बड़े चाव से सुना था जब माँ ने पिताजी के सारे गहने निकालकर मेरे बड़े भाई को अलग-अलग तरह के आभूषणों और उनके नाम सिखाए थे। उसी क्षण मैंने मन ही मन तय कर लिया था कि जब मैं बड़ी हो जाऊँगी, तो मैं सत्ताईस बड़े मोतियों वाला तारा-नुमा हार पहनूँगी। मैंने सुना था कि यह हार विशाल शरीर वाले निडर योद्धाओं को सबसे ज़्यादा शोभा देता है। दुर्योधन ने हमें इतनी घृणा से क्यों देखा था? मेरे मुस्कुराने पर भी उसका चेहरा गंभीर बना रहा।
हमारे लिए अलग से निर्धारित महल में अभी भी तैयारियां चल रही थीं।
एक बुजुर्ग नौकरानी मेरे पास आई और बोली, 'मुझे तुम्हें ठीक से देखने दो।' नौकरानियों ने बारी-बारी से हमें प्यार से सहलाया और साथ-साथ कहानियां भी सुनाईं। जिस रात मेरा जन्म जंगल में हुआ था, उस रात हस्तिनापुरा में चक्रवात आया था। गिद्ध और उल्लू चीख रहे थे। सियार महल के प्रांगण में घुस आए थे और जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। ज्योतिषियों ने तारों की स्थिति देखकर भविष्यवाणी की थी कि मेरा जन्म मेरी जाति का नाश करने के लिए हुआ है। उस बूढ़ी औरत ने हमें याद दिलाया कि यह भविष्यवाणी दुर्योधन पर भी उतनी ही लागू होती है।
बहुत से लोग हमसे मिलने आए, जिनमें से अधिकतर महल के सेवक थे। वे युधिष्ठिर के सामने आदरपूर्वक खड़े थे, जो मुझसे केवल एक वर्ष बड़े थे, और उन्होंने अपनी हथेलियाँ जोड़ रखी थीं। युधिष्ठिर भविष्य में राजा बनेंगे। इसलिए वे अधिकतर गंभीर रहते थे, और केवल आवश्यकता पड़ने पर ही मुस्कुराते थे, और इन शिष्टाचारों को स्वीकार करते थे।

नकुल और सहदेव माता के साथ अंदर हॉल में थे। आगंतुकों ने अर्जुन को भी प्रणाम किया, क्योंकि वह धनुर्धरों में सबसे महान बनने वाले थे। जाने से पहले, उन्होंने उस विलक्षण बच्चे की कहानी सुनाई जो जन्म लेते ही किसी की गोद से गिर गया था और घायल होने के बजाय, जिस चट्टान पर गिरा था उसे चकनाचूर कर दिया था। इसलिए वे आए और मुझे आश्चर्य से देखने लगे। मुझे गले लगाने और सहलाने का नाटक करते हुए, उन्होंने मेरे शरीर के विभिन्न बिंदुओं को दबाकर मेरी शक्ति का परीक्षण किया।
मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मेरे बारे में कहानियां महल तक भी पहुंच गई थीं। जंगल में रहते हुए मैंने सुना था कि एक बार मैं अपनी मां की गोद से गिर गई थी और जब उन्होंने मुझे डरते हुए उठाया तो उन्हें यह देखकर बहुत राहत मिली कि मुझे कुछ नहीं हुआ था। लेकिन यहां पहुंचते-पहुंचते यह कहानी और भी पुख्ता हो गई थी।
मैंने अपनी शर्मिंदगी छुपा ली। क्या मेरा शारीरिक गठन अन्य बच्चों से इतना अलग था?
महल में हमारी पहली रात, हमें भरपूर भोजन परोसा गया और कई तरह के व्यंजन थे। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भोजन को कितने अलग-अलग रूपों में और कितने विविध स्वादों के साथ बनाया जा सकता है। जंगल में, भूख लगने पर पेट भरने के लिए जो कुछ भी मिलता था, हम उसे ही भोजन मान लेते थे। भोजन परोसने वालों ने मेरी खाली थाली भरते हुए मुस्कुराया। युधिष्ठिर ने मुझे चेतावनी भरी नजरों से देखा, मानो कह रहे हों कि यह एक राजकुमार के लिए उचित व्यवहार नहीं है, लेकिन मैंने अनदेखा करने का नाटक किया।
रात में एक बूढ़ा सूत आया और अतीत की कहानियाँ सुनाने लगा। जब उसने राजा शांतनु द्वारा गंगा को देखकर उसकी कामना करने की कहानी गाना शुरू किया, तो युधिष्ठिर ने उसे रुकने को कहा। हमने यह कहानी कितनी बार सुनी है। तब उसने नागों, कद्रू और विनता की कहानी सुनाई।
नींद आने लगी, इसलिए मैं चला गया। लेटते ही मुझे पिताजी की मृत्यु का ख्याल आया। अगले दिन हम सबको अंतिम संस्कार करना था। लेकिन अगर हम तपस्वियों की बात मानें, तो क्या सच में मेरे पिताजी की मृत्यु हुई थी? मेरे पिता, जिन्हें मुझे, जो इतना शक्तिशाली बनने वाला था, पूजना था, वे पवन देवता थे – और वे अमर थे।

जब से मुझे याद है, हमें तीन शक्तियों की पूजा करना सिखाया गया था: हजार नेत्रों वाले इंद्र, सात ज्वालाओं वाली अग्नि और ब्रह्मा के क्रोध के प्रचंड प्रकाश के रूप में जन्मे रुद्र। मैंने अपने बगल में सो रहे अर्जुन की ओर देखा। वह प्रतिदिन जो प्रार्थना करता होगा, उनमें से कम से कम एक प्रार्थना उसके पिता इंद्र तक अवश्य पहुँचती होगी।
क्या मेरे पिता, जो तूफानों के स्वामी थे, ने कभी मेरे बारे में सोचा था? उस रात मैंने एक सपना देखा: मदमस्त एक विशालकाय हाथी अपने दांत लहराते हुए मुझ पर हमला करने के लिए झपटा। जब मैंने उससे बचने के लिए पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की, तो कुल्हाड़ी लहराते हुए एक चौकीदार ने मेरा रास्ता रोक दिया। मैं अचानक चौंककर जाग गया और पाया कि मेरे बड़े और छोटे भाई मेरे दोनों ओर सो रहे थे।
मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने कहीं उस कुल्हाड़ी लिए पहरेदार का चेहरा देखा हो जो पेड़ की रखवाली करता था। वह चेहरा चाचा के बेटे दुर्योधन के चेहरे जैसा लग रहा था।
आधी नींद में मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और चुपचाप प्रार्थना की। 'हे ईश्वर, तूफ़ानी हवाओं को जंजीरों में जकड़ने वाले, मैं, आपका पुत्र, पाँच वर्ष का बच्चा, यहाँ हूँ।'
मेरे पिता समान ईश्वर ने एक बार मेरी हार्दिक प्रार्थना सुनी। कई वर्षों बाद।

2

हस्तिनापुरा में हमारे युवावस्था के दिन बहुत व्यस्तता से भरे हुए थे। भोर होने से पहले ही हमें संगीत सुनाई देने लगता, जिसमें शंख, मृदंगम, वीणा और बांसुरी की मधुर ध्वनियाँ मिश्रित होती थीं। उठने की अनिच्छा के कारण मैं बिस्तर पर लेटा रहता। थोड़ी देर में ब्राह्मणों के शुद्धिकरण अनुष्ठानों की आवाज़ सुनाई देती। फिर रुक-रुक कर ढोलों की थाप सुनाई देती; उसके बाद दूर स्थित गौशालाओं से किसी कम आज्ञाकारी हाथी की चिंघाड़ और रथों के पहियों की लय के साथ घोड़ों के खुरों की खड़खड़ाहट सुनाई देती। उस समय मुझे लगता था कि दुनिया का सबसे सुंदर संगीत रथों के चलने की आवाज़ है। हम पाँचों अलग-अलग कमरों में सोने लगे थे और हममें से हर एक के पास सेवा के लिए एक सारथी और साथ ही नौकरानियों के रूप में शूद्र स्त्रियाँ थीं। सुबह तैयार होने के बाद हमें उस कक्षा में जाना पड़ता था जहाँ हम वेदों का अध्ययन करते थे। मैं हमेशा सबसे आखिर में पहुँचता था। हमारे मामा के पुत्रों की शिक्षा दूसरी जगह होती थी। हमने सुना था कि विदुर के पुत्र हमारे साथ पढ़ेंगे, लेकिन वे नहीं आए। मैंने पूछा क्यों, तो युधिष्ठिर ने कहा, 'अच्छा ही हुआ कि वे नहीं आए। वे शूद्र हैं।'
दादा भीष्म और विदुर कभी-कभी दरवाजे पर खड़े होकर हमें देखते रहते थे। हमारे गुरुजी तभी प्रणाम करने के लिए खड़े होते थे जब दादाजी आते थे। गुरुजी को इशारा करके कि वे जारी रखें, दादाजी जल्दी से चले जाते थे।
इस कक्षा के बाद, हम शुक्राचार्य के निवास के प्रांगण में हथियारों का अभ्यास करते थे। वहाँ भी हम अकेले ही होते थे। एक वर्ष बाद, जब कृपाचार्य ने हमें सिखाना शुरू किया, तो चाचा के पुत्र भी हमारे साथ प्रशिक्षण लेने आए। हमारे गुरु के तीन वरिष्ठ शिष्य उनकी सहायता के लिए आए।
राजकुमारों को रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदल सैनिकों के साथ लड़ी जाने वाली चार प्रकार की युद्धकलाएँ सीखनी अनिवार्य थीं। रथ पर सवार होकर युद्ध करने में निपुण होने के बाद ही कोई रथवीर बन सकता था, जो रथ पर सवार होकर युद्ध करने में माहिर होता था। सूत गाथाओं में भीष्म द्वारा एक घोड़े से खींचे गए रथ पर सवार होकर काशी राज्य के विरुद्ध युद्ध करने और हमारी दादी-नानी अंबिका और अंबालिका को विचित्रवीर्य के लिए दुल्हन के रूप में वापस लाने की वीर गाथाएँ वर्णित हैं।

जब वह अपनी मां सत्यवती, जो उम्र के कारण कमर झुकाए खड़ी थीं, और मेरी दादी अंबिका और अंबालिका के साथ जंगल के लिए निकले, तो उन्होंने आदेश दिया था कि कोई अनुयायी नहीं होंगे, कोई शोक नहीं मनाया जाएगा।
मेरी मां अब अकेली थी।
मैंने यही मान लिया था कि माँ को यह नहीं पता था कि शुक्रचार्य और कृपाचार्य के मार्गदर्शन में हमारी पढ़ाई कैसी चल रही है, क्योंकि वह कभी भी शस्त्रगृह के आसपास भी नहीं आती थीं।
लेकिन एक दिन माँ ने मुझे बुलवाया।
‘क्या आपकी पढ़ाई अच्छी चल रही है?’
'हाँ'
और आपको सबसे ज्यादा किस चीज में दिलचस्पी है?
कृपाचार्य ने विभिन्न प्रकार की युद्ध रणनीतियों पर पाठ शुरू किए थे। मुझे गदा से युद्ध करना वास्तव में बहुत दिलचस्प लगा।
लेकिन मैंने कहा, 'बहुयुद्धम, मैं अपने खाली हाथों से लड़ूंगा!'
मां का चेहरा उतर आया। ‘बहुयुद्धम नीची जाति के लोगों के लिए है। क्षत्रियों को इसे सीखना चाहिए, बेशक, लेकिन…’
मां कुछ देर चुप रहीं, मानो कुछ सोच रही हों। 'मुझे बताया गया है कि तुम अपने चाचा के बेटों को परेशान कर रही हो।'
‘कौन, मैं? मैं…’ मैं परेशान था, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।
मां ने कहा, 'याद रखना, वे हमेशा हम पर ही दोष निकालेंगे। अपने आप को ऐसा व्यक्ति मत बनने देना जो अपने कुल पर बुराई लाता हो।'
उसके कुल का विनाश करने के लिए मेरा जन्म नहीं हुआ था, बल्कि दुर्योधन का हुआ था। मैंने सूतों को आपस में फुसफुसाते हुए सुना था कि स्वयं कृष्णद्वैपायन दादा ने भविष्यवाणी की थी कि जल्द ही विपत्तियाँ आने वाली हैं। मुझे डर था कि दुर्योधन मेरे बारे में झूठी अफवाहें फैला रहा है।
जब मेरी पढ़ाई नहीं होती थी, तो मैं अक्सर हाथियों के बाड़े में जाया करता था। महावतों में एक बूढ़ा कुबड़ा था। वह देखने में ऐसा लगता था मानो हाथी की चिंघाड़ पर ही उड़ जाएगा, लेकिन जब वह बोलता था तो सबसे उग्र हाथी भी उसकी बात मान लेता था। उसने महान ऋषियों से हाथियों और उनके रोगों के उपचार से संबंधित सभी ग्रंथों का अध्ययन किया था। वह मुझे अपने साथ बाड़ों में आने देता था।

धृतराष्ट्र राजा का हाथी एक छोटे पहाड़ जितना विशाल था। कई हाथियों के नाम कुरु वंश के प्राचीन राजाओं के नाम पर रखे गए थे। चूंकि मुझे जानवरों में बहुत रुचि थी, इसलिए उस बूढ़े व्यक्ति ने मुझे कुछ विशेष अधिकार दिए। मैं उनकी सूंड छू सकता था और उन्हें गन्ने के टुकड़े भेंट कर सकता था। एक दिन, वह मुझे हाथी के माथे पर वह स्थान दिखा रहे थे जहाँ से मदमस्त होने पर तरल पदार्थ रिसने लगता है, तभी हमने कुछ दूरी पर तीन लोगों को हाथी के बाड़े को निहारते हुए देखा - दुर्योधन, दुस्साना और युधिष्ठिर।
लेकिन जब मैं झोपड़ी से बाहर आया, तो मैं दंग रह गया। तीसरा व्यक्ति युधिष्ठिर नहीं, कर्ण था।
उस समय तो मुझे उसका नाम तक नहीं पता था। वह उन लड़कों में से एक था जो कौरवों के साथ कृपाचार्य की कक्षाओं में आते थे।
मैं उनके हावभाव और चेहरे के भाव समझ गया था। उन तीनों ने मिलकर मुझे हराने की योजना बनाई थी। मुझे उनसे एक-एक करके मुकाबला करने से डर नहीं लग रहा था। लेकिन मैं हाथी के बाड़े में काम करने वाले नौकरों के सामने हारना नहीं चाहता था। मैंने उनसे बचते हुए दूसरी तरफ के दरवाजे से बाहर निकल गया और बूढ़े महावत से कहा, 'देर हो रही है, मुझे नहाने जाने दो।'
पीछे मुड़े बिना आगे बढ़ते हुए, मुझे पीछे से तेज़ी से आते कदमों की आहट सुनाई दी। डर से मेरे पैर कांपने लगे। अगर मैं भाग जाऊं तो क्या होगा? लेकिन मेरे चचेरे भाई और उनका दोस्त इसे एक कहानी बना देंगे: भीम न केवल मूर्ख है, बल्कि डरपोक भी है। बच्चों में दुर्योधन द्वारा कई लोगों को आज्ञाकारिता सिखाने की कहानियां खूब प्रचलित थीं। अचानक, मैं पीछे मुड़ गया।
दुर्योधन मुस्कुरा रहा था। मैंने उसे पहली बार मुस्कुराते देखा था। मानो उसकी परछाईं हो, दुस्साना भी मुस्कुराया। यह छोटा भाई हमेशा दुर्योधन के पीछे परछाईं की तरह चलता था, उसकी हर बात मानता था। वह मेरे जितना ही बड़ा और बलवान दिखता था।
'दुर्योधन, इसे ध्यान से देखो। वृकोदरा को देखो, जो कौरवों का संहार करने के लिए ही पैदा हुआ था।'
कर्ण ने बात कही।
जब मैं छोटा बच्चा था, तो मेरी माँ ने खाने के प्रति मेरे लगाव को देखते हुए, नौकरानियों में सबसे वरिष्ठ महिला से मजाक में कहा था: 'मेरा दूसरा

बेटा सचमुच एक वृकोदरा है, उसका पेट भेड़िये जैसा है! वह जो कुछ भी खाता है, फिर भी उसे भूख लगती है!'
माँ ने मुझे जिस नाम से पुकारा था, वो नाम रसोई में रहने वाले लोगों के लिए मेरा उपनाम बन गया और वे मुझे तिरस्कारपूर्वक इसी नाम से पुकारने लगे। और जब ये नाम बाहरी गलियारों और आँगन तक पहुँचा, तो ये भीमसेन का पर्याय बन गया। हर बार जब मैं ये नाम सुनता, तो मुझे बहुत गुस्सा आता।
मैं वहां एक मूर्ख की तरह खड़ा रहा।
‘मूर्ख! क्या तुम ही कौरवों को मारने वाले हो?’
दुर्योधन मेरे सामने खड़ा होकर तिरस्कारपूर्ण हंसी हंस रहा था। संभवतः पूर्व नियोजित चाल के तहत, दुस्साना धीरे-धीरे मेरे पीछे आ गया। तीसरा व्यक्ति अलग खड़ा था, खेल का आनंद लेने के लिए तैयार।
जब मैं हार से बचने के उपाय सोच रहा था, तभी मेरे मन में यह ख्याल आया कि दुर्योधन के दल में घूमने वाला यह कर्ण, जो किसी सारथी का पुत्र था, युधिष्ठिर से अजीब तरह से मिलता-जुलता था। बस फर्क इतना था कि कर्ण के चेहरे पर जो घमंडी मुस्कान थी, वह युधिष्ठिर के चेहरे पर कभी नहीं दिखती थी।
मुझे तुरंत समझ आ गया कि धनुर्वेद (तीर-धनुष विद्या) के लिए शुक्राचार्य के नियम मेरी वर्तमान स्थिति से कोई संबंध नहीं रखते। दुर्योधन वैशाख मुद्रा में खड़ा था: पैर फैलाए, छोटी उंगलियों पर संतुलन बनाए, घुटने मजबूती से टिके हुए। और मेरे बाईं ओर दुस्साना अर्धमंडल मुद्रा में था, घुटने मुड़े हुए। सारथी का पुत्र थोड़ा दूर खड़ा धीरे-धीरे हंस रहा था। मेरे भीतर भय नहीं, क्रोध की ज्वाला भड़क उठी।
हाथी के बाड़े का बाहरी आंगन खाली था। मुझे यह काम जल्द से जल्द निपटाना था, इससे पहले कि कोई पहरेदार या नौकरानी उस तरफ आ जाए।
शतश्रृंग में, बचपन में, माँ की गोद में बैठकर, मैंने जंगलों से आए आदिवासियों को शहद और डामर उपहार के रूप में लाते और फिर जाने से पहले हमारा मनोरंजन करने के लिए लड़ाई करते देखा था। चट्टानों से गिरने वाले हार नहीं मानते थे, वे लड़ते-लड़ते वापस ऊपर चढ़ जाते थे। एक बार, मैंने एक लड़के को देखा जो अभी भी बच्चा ही दिखता था, उसने एक विशाल आकृति को उठाया और फिर नीचे फेंक दिया। लड़ाई के अंत में, जब उसने माँ के सामने सिर

झुकाया, तो मिट्टी से सना उसका चेहरा चौड़ी मुस्कान से भरा हुआ था, और माँ ने उसे इनाम के रूप में एक सोने का कंगन दिया।
मुझे एहसास हुआ कि जंगल के नियम ही मेरे लिए यहाँ सबसे अधिक उपयोगी साबित होंगे।
‘बेचारा मूर्ख, वह डर से कांप रहा है। उसे छोड़ दो। उसे हाथ जोड़कर कान छूने को कहो और एक सौ एक बार नीचे झुकने को कहो, फिर उसे जाने दो,’ कर्ण ने कहा।
हमला होने से पहले ही मैं आगे की ओर झपटा, यह एक ऐसी तरकीब थी जो मैंने सीख ली थी। दुस्साना ने सोचा था कि दुर्योधन मेरा निशाना है, इसलिए उसे उम्मीद नहीं थी कि मैं अचानक बाईं ओर घूमकर, सीना तानकर, कोहनी से उस पर ज़ोरदार प्रहार करूँगा। वह ज़मीन पर गिर पड़ा। एक पल के लिए मेरा संतुलन बिगड़ गया, और इससे पहले कि मैं संभल पाता, दुर्योधन ने मुझ पर हमला कर दिया। मैं इतनी दूर जा गिरा कि बाहरी शेड के लकड़ी के फ्रेम से जा टकराया। मैंने कर्ण को फिर से हंसते हुए सुना।
लेकिन दुर्योधन भी गिर पड़ा था। उसे अंदाज़ा भी नहीं था कि मैं, जो जंगल में दौड़ते-खेलते बड़ा हुआ था, कितनी फुर्तीला हो सकता हूँ। उसके उठने से पहले ही मैं उसकी पीठ पर गिर पड़ा, उसकी गर्दन पर बाहें लपेट लीं और मुट्ठियों से उसकी पसलियों पर वार करने लगा। दुस्साना मदद के लिए दौड़ता हुआ आया, लेकिन मैंने उस पर झपट्टा मारा और अपने दाहिने हाथ से उसके बाल पकड़ लिए। दोनों छटपटा रहे थे, खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहे थे। मुझे पता था कि अगर वे कामयाब हो गए, तो वे मुझे तब तक मारेंगे जब तक मैं बेबस न हो जाऊँ। इसलिए मैंने दोनों के सिर पकड़े और उन्हें आपस में टकरा दिया। दुस्साना की दर्द भरी चीख ने मुझे और जोश दिलाया। मैंने उनके सिर फिर से टकरा दिए, और दुर्योधन भी चिल्ला उठा। उसकी आवाज़ में दर्द से ज़्यादा गुस्सा था। मैंने सोचा, पहले इन दोनों को ऐसी हालत में पहुँचा दूँ कि ये उठ न सकें, फिर मैं उस सारथी के बेटे से निपटूँगा जो यह तमाशा देख रहा था। ‘उन्हें जाने दो, जाने दो!’
लोग चिल्ला रहे थे। मेरी चोटी खुल गई थी और किसी ने मेरे बालों को ज़ोर से खींचा। मैंने देखा कि वह कृपाचार्य थे।
यह स्पष्ट था कि कर्ण उसे लेकर आया था, हालांकि वह अभी भी कुछ दूरी पर इस तरह खड़ा था मानो उसका इसमें कोई हाथ ही न हो।

गुस्से और आंसू से लथपथ, दोनों भाई अस्पष्ट रूप से बड़बड़ा रहे थे, वे यह व्यक्त करने में असमर्थ थे कि वे क्या कहना चाहते थे।
‘वह हमेशा से ऐसा ही है। हम कुछ नहीं कर रहे थे और वह...’
मैं कहना चाहता था कि इसकी शुरुआत मैंने नहीं की थी। मैंने कर्ण की ओर देखा, जो हमसे अलग खड़ा था। मैं उसे यह बताना चाहता था कि अगर वह मुझ पर, तीसरे प्रतिद्वंद्वी के रूप में, हमला करे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। जब वह अकेला मिलेगा तो मैं उसे सबक सिखाऊंगा, और इसके लिए मैं कोड़े का इस्तेमाल करूंगा।
कृपाचार्य ने हमें सख्ती से बताया कि इस तरह के खेल केवल शस्त्रगृह तक ही सीमित रहने चाहिए।
दुर्योधन की आंखें लाल हो गई थीं। उसने मेरी ओर मुड़कर देखा, मानो कह रहा हो कि अभी खेल खत्म नहीं हुआ है, और फिर तेज़ी से चला गया।
कृपाचार्य ने अपने गुस्से पर काबू पाने की कोशिश की। 'तुम भाई हो। क्या तुमने अभी से लड़ना शुरू कर दिया है?'
मैंने कुछ नहीं कहा। वह कुछ बुदबुदाते हुए चला गया।
जब मैं उस दिन नदी पर गया, तो मेरे भाई पहले ही नहा चुके थे और वापस आ रहे थे।
युधिष्ठिर ने पूछा, ‘तुम कहाँ थे?’
मैंने उसे स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। न ही मैंने किसी को बताया कि मैंने दुर्योधन को कैसे चोट पहुंचाई थी। कृपाचार्य इसे गंभीरता से नहीं लेते। हालांकि, कुछ दिनों बाद मां ने मुझसे पूछा, 'बेटा, क्या तुम छिपने की जगह से अचानक बाहर निकले और दुर्योधन को मार गिराया?'
युधिष्ठिर उसके बगल में खड़े थे। उन्होंने जरूर सब कुछ सुना होगा और तुरंत माताजी को बताया होगा।
मैंने उत्तर दिया, 'नहीं।'
युधिष्ठिर ने मुझे याद दिलाया, 'तुम्हें झूठ नहीं बोलना चाहिए।'
मैंने माँ की ओर देखा और कहा, 'मैं कहीं छिपा नहीं था। वे दोनों साथ में थे।' मेरी माँ ने मुझे आगे न बढ़ने के लिए हस्ताक्षर दिए।
युधिष्ठिर मेरे साथ बाहर आए और बोले, 'चाचा के महल के सभी बच्चे मिलकर तुम्हें सबक सिखाने वाले हैं।'
‘ऐसा किसने कहा?’

'मैंने सुन लिया।'
मैंने जो कुछ हुआ था उसका विस्तृत विवरण केवल अर्जुन को दिया। उन्होंने मुझे बहुत सावधान रहने की सलाह दी।
अर्जुन दोपहर बाद कृपाचार्य के पास धनुर्विद्या का अभ्यास करने जाया करते थे। जब भी हम साथ होते, वे धनुर्विद्या के बारे में ही बात करते थे। उनका कहना था कि एक घोड़े से खींचे जाने वाले रथ से सभी राजाओं को चुनौती देने में सक्षम होना चाहिए। वे प्रतिदिन अपने पिता इंद्र का ध्यान करते थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि एक दिन उनके पिता उन्हें दिव्य शस्त्र प्रदान करने आएंगे।
अर्जुन ने मुझसे कहा कि धनुष और बाण मेरे लिए उपयुक्त हथियार नहीं हैं, और मुझे शुकचार्य से गदा से युद्ध करना सीखने की सलाह दी।
उस दिन, शाम की प्रार्थना के बाद, मैं नदी किनारे अकेला खड़ा होकर पवन देव का ध्यान कर रहा था, जिन्होंने मुझे जन्म दिया था। हे प्रभु, मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए और मुझे अत्यंत बलवान बनाइए। हे प्रभु, अपने पुत्र भीमसेन को समस्त शस्त्रों के प्रयोग में सर्वोपरि बनाइए।
मैं अपने पिता समान देवता को प्रसन्न करने के लिए क्या कर सकता था? कौन मुझे बता सकता था? शायद मेरे पिता के बुद्धिमान छोटे भाई, विदुर, को पता हो। लेकिन मुझमें उनसे पूछने का साहस नहीं था। हालाँकि वे हमेशा हमारे आस-पास ही रहते थे, फिर भी वे बहुत दूर लगते थे और आमतौर पर केवल युधिष्ठिर से ही बात करते थे।
युधिष्ठिर के लिए रथों पर युद्ध, अर्जुन के लिए धनुष-बाण से युद्ध: गुरुओं ने पहले ही तय कर लिया था कि किसे क्या सिखाया जाएगा। युधिष्ठिर राजा बनने वाले थे – और राजाओं को रथों पर युद्ध करने में निपुण होना आवश्यक था। दिव्य वाणी ने बहुत पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि अर्जुन, इंद्र के पुत्र होने के नाते, एक अजेय धनुर्धारी होंगे। इसलिए उन्हें धनुर्विद्या का विशेष प्रशिक्षण दिया जाना था।
मां अब भी महिला कक्ष में नौकरानियों और उनसे मिलने आने वाली क्षत्रिय महिलाओं के सामने नकुल और सहदेव को प्यार से सहलाती थीं। 'माद्री के ये जुड़वां बेटे मुझे अपने जन्म के बेटों से भी ज्यादा प्यारे हैं।'
नकुल और सहदेव की कोई बड़ी आकांक्षा नहीं थी।

सभी जानते थे कि माँ अर्जुन से विशेष स्नेह रखती थीं, हालाँकि उन्होंने कभी खुलकर यह बात नहीं कही। महल की सभी स्त्रियाँ अर्जुन की सुंदर, सांवली त्वचा से मोहित थीं। जब हम साथ खड़े थे, तब मैंने उनकी आँखों में यह देखा था।
मगध के घुमंतू लोग महल में आकर अर्जुन के गुणगान करने लगे। माना जाता था कि ये गायक भविष्य जानते थे। उन्होंने बताया कि कैसे सफेद घोड़ों द्वारा खींचे गए रथ पर सवार होकर अर्जुन दिव्य धनुष और कभी खाली न रहने वाले तरकश से संसार को अपने वश में कर लेंगे। सुंदर अप्सराएं उनके सांवले शरीर के लिए व्याकुल हो जाएंगी, उनकी वासना से व्याकुल हो जाएंगी। यहां तक कि अग्नि और वरुण भी उनके तेज बाणों के आदेश का पालन करेंगे।
माँ ने अपनी आँखों को पोंछा, जो खुशी के आँसुओं से भर गई थीं। जब उन्होंने गाना समाप्त किया, तो उन्होंने उनके हाथों में सोने के सिक्के बरसा दिए। मैंने उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर देखा और वहाँ पहरा दे रहे पवन देवता का ध्यान किया। क्या दूर कहीं विराजमान मेरे दिव्य पिता मेरी प्रार्थनाएँ सुन रहे थे?
उसी क्षण, पानी की सतह पर हजारों लहरें उठीं, मानो किसी पोशाक की तहें खुल रही हों। अचानक कहीं से एक हल्की हवा आई और मेरे बालों को बिखेर दिया। नम पानी की बूंदों जैसे मंद स्पर्श वाले अदृश्य हाथों ने मुझे आलिंगन दिया। किसी ने मेरे कान में फुसफुसाया: मैं तुम्हें सुन रहा हूँ, मैं तुम्हें सुन रहा हूँ।

3

मुझे पता था कि दुर्योधन मुझसे बदला लेने के लिए अपने गिरोह के समर्थन पर निर्भर रहेगा। इसलिए मैं बहुत सतर्क था।
मेरी चाची गांधारी के कई बच्चे थे, और मैं उनमें से कई के नाम नहीं जानती थी। इसके अलावा, उनके पति, मेरे चाचा, के सूत और शूद्र स्त्रियों से भी बच्चे थे। ये सभी बच्चे एक साथ घूमते-फिरते थे।
जिन दिनों हमारी कक्षाएं नहीं होती थीं, हम शिकार पर जाते थे। कभी-कभी रथ जंगल की सीमा तक चले जाते थे। शिकारी पहरेदार शिविर लगाते थे। सैनिक हाथियों पर सवार होकर जंगल में हलचल मचाते थे, ताकि सभी जानवर अपने बिलों से बाहर आ जाएं। फिर तीरंदाज भागते हुए जानवरों को अपने तीरों से मार गिराते थे। ये क्षत्रिय युवकों को सिखाए जाने वाले पाठों का हिस्सा थे। कृपाचार्य के वरिष्ठ शिष्यों में से एक, निर्भीकरा, इन अभियानों का नेतृत्व करते थे। हम—अर्थात् बड़े बच्चे—कक्षों में धनुर्धारियों के साथ समय बिताते थे। जब समूह के बाकी लोग शिकार के पकने का इंतज़ार करते थे, तब हमें जंगल में जहाँ तक चाहें घूमने की अनुमति थी, बशर्ते हम उनकी आवाज़ की पहुँच में रहें। मुझे पूरा विश्वास था कि दुर्योधन इनमें से किसी एक अभियान के दौरान मुझसे बदला ज़रूर लेगा।
जब भी शिकार का आयोजन होता, मैं बहुत खुश होता। मैं उस पल का बेसब्री से इंतज़ार करता जब कोई जानवर तीर लगने से गिर पड़ता, जिसे शिकारी ने शिकार की दौड़ने की गति का सावधानीपूर्वक आकलन करने के बाद छोड़ा होता। मैं अपनी सांस रोककर धनुष की झनझनाहट के ठीक बाद के क्षण का इंतज़ार करता, यह सोचते हुए कि देखो, अब जानवर हवा में ऊँचा उछल रहा है। और फिर, जब वह ज़मीन पर बेसुध पड़ा होता, तो मैं तीरंदाज को देखता और उसके चेहरे पर विजय की मुस्कान देखता। चाहे वह सूत हो या शूद्र, मैं उसे गले लगाना चाहता।
जब कृपाचार्य के शस्त्र प्रशिक्षण के दौरान हमारी मुलाकात हुई, तो दुर्योधन हमेशा अपना चेहरा दूसरी ओर मोड़ लेता था, जबकि दुस्साना की नजर में एक चेतावनी छिपी होती थी: तुम्हारा दिन भी आने वाला है।
जंगल में, मैं इस बात का बहुत ध्यान रखता था कि भीड़ से ज्यादा दूर न भटकूं।

एक टीले पर खड़ा था जो शिकारियों के पैरों से बने जंगल के रास्ते पर था। आस-पास कोई पेड़ भी नहीं था जिसके पीछे मैं छिप सकूँ। डर के मारे मुझे एहसास हुआ कि गुस्से में भरे उस जानवर ने मेरी गंध पहचान ली है और सीधा मेरी तरफ आ रहा है। शिकारियों का चिल्लाना, शोर मचाना और उसका ध्यान भटकाने की कोशिश करना बेकार था। वह नुकीले दांतों वाले तीर की तरह मेरी तरफ दौड़ रहा था।
शायद यही अंत था। एक जंगली सूअर के नुकीले दांतों पर फँसकर, वह जो सबसे शक्तिशाली बनने वाला था, मर गया, यहाँ तक कि सोतस को एक योद्धा की वीरगाथा सुनाने का मौका भी नहीं मिला। इस जानवर को निश्चित रूप से वह नहीं पता था जो शिकारियों ने मुझे सिखाया था - कि एक जंगली सूअर ज़मीन की ओर देखे बिना हमला करता है, उसे पता नहीं होता कि उसके रास्ते में क्या बाधाएँ हैं। वह अपना सिर ऊपर उठाए, नुकीले दांत फैलाए और मुँह चौड़ा खोले मेरी ओर आ रहा था। मेरी शक्ति से परे किसी शक्ति ने मेरे भाले को जानवर के मुँह में धकेल दिया, और मैंने महसूस किया कि तीन फुट लंबे हथियार का आधा हिस्सा उसके मुँह में घुस गया।
जैसे ही मैं नीचे गिरा, मुझे याद आया कि भाला नहीं छोड़ना है। मिट्टी से सने हुए उसके नुकीले दांत मेरे ठीक सामने, मेरी छाती के पास थे। जानवर के आखिरी वार में, भाले की नोक उसमें और भी गहरी धंस गई। मुझे पूरा यकीन था कि अब वह अपनी ताकत से मुझे हरा नहीं पाएगा, इसलिए मैंने अपना शरीर मोड़ा और खुद को ऊपर उठाया। थका हुआ जानवर अचानक दर्द से तड़प उठा।
जैसे ही भयभीत शिकारी पास आए, मैंने अपना पैर उस बेजान जानवर पर जमा दिया और भाला निकाल लिया। खून की एक धारा निकली और मेरे शरीर पर छिटक गई।
मुझे लगा जैसे मैं बेहोश होने ही वाली हूँ। अर्जुन ने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा। मैंने अपनी बाहें उनकी गर्दन के चारों ओर लपेट लीं और तब तक इंतज़ार किया जब तक मैं सामान्य रूप से सांस नहीं ले पाई। फिर मैंने मुस्कुरा दिया।
शिकारियों ने कहा, 'जब हमने तुम्हारी चीखें सुनीं, तो हमें लगा कि सब कुछ खत्म हो गया है।'
क्या मैंने तब चीख मारी थी? मुझे याद नहीं। मेरा सारा ध्यान मिट्टी से सने हुए दांतों पर था। मैंने कब चीख मारी थी?

युधिष्ठिर ने गंभीर स्वर में कहा, 'अरे मूर्ख, तुमने कितनी मूर्खतापूर्ण बात की है! माताजी को मत बताना।'
जब मैंने पहली बार किसी जानवर को मारा, तो न तो खुशी की कोई आवाज उठी, न ही कोई उत्सव मनाया गया। न ही मेरे बड़े भाई ने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मुझे जो बलि देनी चाहिए, उसका जिक्र किया।
हम वहां से चले गए। लेकिन मैंने तय कर लिया था कि मैं देवताओं को धन्यवाद जरूर दूंगी। मुझे पूरा यकीन था कि जिस क्षण खतरा मेरे इतने करीब आया था, उस समय किसी ने मुझे शक्ति प्रदान की थी।
अब मुझे अपनी शक्ति का पूर्ण ज्ञान हो गया था। शायद मैं अपने बड़े भाई के लिए अब भी मूर्ख ही था। और कौरवों के लिए वृकोदरा। लेकिन भीम बड़ा हो गया था और शक्तिशाली बन गया था, मैंने मन ही मन प्रसन्नता से कहा।
मैं शाम की नमाज़ के समय से काफी पहले नदी पर गया और पानी में तैरा और खेला। फिर मैंने खुद को पानी में डुबोया, बाहर निकला और अपनी नमाज़ पढ़ी। और उस दिन भी, संदेशवाहक एक कोमल हवा के रूप में आया, जो केवल मेरे लिए एक संदेश लेकर आया था।
उसी क्षण दुर्योधन और उसके साथी वहाँ पहुँचे। उन्हें अवश्य ही पता चल गया होगा कि मैं सामान्य से पहले नदी पर आ गया था।
मुझे पता था कि डरने का कोई फायदा नहीं है। कई हाथ मेरी ओर बढ़े और मुझे पकड़ लिया। मैंने कुछ हमलावरों को लात मारकर गिरा दिया। मुट्ठी बांधकर मुझ पर वार किए गए, लेकिन मुझे कोई दर्द महसूस नहीं हुआ। मूर्ख! उन्हें नहीं पता था कि अगर वे मेरे चारों ओर जमा हो गए, तो उनके अपने हाथ-पैर बेकार हो जाएंगे। मैंने हार मानने का नाटक किया और तब तक इंतजार किया जब तक कि मैं दुर्योधन और दुस्साना को, जो दोनों मुझ पर झपट रहे थे, अपनी बाहों में जकड़ न लूं। जैसे ही मैंने उनकी गर्दनें पकड़ीं, मैं उन्हें घसीटता हुआ नदी में कूद गया। वे छटपटाते और अजीबोगरीब भयानक आवाजें निकालते रहे, जैसे ही मैंने उनके सिर पानी में गहरे डुबो दिए। जब यह निश्चित हो गया कि अगर मैंने उनके सिर और दबाए रखे तो वे मर जाएंगे, तो मैंने उन्हें छोड़ दिया। वे बड़ी मुश्किल से बाहर निकले, पानी की उल्टी की और पत्थर की सीढ़ियों पर बैठ गए।
मैं उनके सामने सिर ऊंचा करके खड़ा रहा। डर के मारे गिरोह के बाकी सदस्य कुछ दूरी पर हट गए थे।

'अगर तुम दोबारा मुझ पर हमला करने आओ तो मेरी तरफ देखना, साथी!'
दुर्योधन ने धीरे-धीरे अपना सिर उठाया।
मैंने कहा, 'मैं तुम्हें मार डालूंगा। मैं तुम सबको मार डालूंगा!'
अगले दिन मुझे आंटी गांधारी के महल में बुलाया गया। हम सभी को बुलाया गया था, इसलिए मुझे राहत मिली, यह सोचकर कि इसका नदी किनारे हुई लड़ाई से कोई लेना-देना नहीं हो सकता।
हम सब एक-एक करके अंदर दाखिल हुए, युधिष्ठिर आगे-आगे चल रहे थे। जब हम छोटे से हॉल में पहुँचे, तो हमने देखा कि माँ वहाँ हमारी चाची के साथ खड़ी थीं। उनके सिर पर पड़ा काला कपड़ा चाची गांधारी के चेहरे का आधा हिस्सा ही ढके हुए था। क्या उनकी निगाहें मुझे ही ढूँढ रही थीं?
दुर्योधन और उसके छोटे भाई अंदर आए। वे हमारी चाची के सामने, हमारे बाईं ओर कतार में खड़े हो गए।
Aunt Gandhari called me. ‘Son, Bhimasena, come here.’
मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उसने दुर्योधन को भी आगे आने का इशारा किया। क्या काले घूंघट के पीछे छिपी आंखें मुझे देख सकती थीं?
हमारी चाची ने धीरे से पूछा, 'क्या तुम दोनों आपस में लड़ने लगे हो?'
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। दुर्योधन ने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन उसके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला।
आंटी गांधारी ने हम सभी से कहा, 'अगर तुम लोग लड़ने लगो तो मुझे बताना। फिर मैं भी उसी रास्ते जंगल में जाऊंगी जिस रास्ते हमारी माताएं और दादी-नानी गई थीं, और तुम लोग आपस में लड़कर अपना मनोरंजन कर सकते हो।'
मैंने लोगों से सुना था कि हमारी चाची गांधार से हस्तिनापुरा नगर में दुल्हन बनकर आई थीं, उनके साथ उनके भाई शकुनी, सौ अंगरक्षक और सौ दासियाँ थीं। सुंदर दुल्हन को देखने के लिए किले के द्वार पर भीड़ लगी हुई थी। दादी-नानी ने उनका स्वागत किया, उनके पैर धोए, उन्हें अनगिनत उपहार दिए और उन्हें अंदर ले गईं। शादी की रस्मों के दौरान ही हमारी चाची को पता चला कि कौरव राजकुमार धृतराष्ट्र अंधे थे।
जब दादा भीष्म ने राजा सुबल, यानी उनके पिता से विवाह के बारे में बात की, तो उन्होंने उन्हें सच बता दिया था, लेकिन पिता ने बेटी को नहीं बताया था। उनके भाई शकुनी उन्हें तुरंत गांधार वापस ले जाना चाहते थे, लेकिन हमारी चाची ने उन्हें समझाया। सुबल ने भीष्म द्वारा भेजे गए उपहार स्वीकार कर

ही नहीं था। लेकिन उस दिन उन्होंने जो कहा था, उसे पूरी तरह समझने में मुझे कई साल लग गए।
हालाँकि चाची गांधारी ने हममें से किसी को भी उनके सामने शपथ नहीं दिलाई थी, फिर भी हमारे व्यवहार में स्पष्ट परिवर्तन आ गया था। अब हम शस्त्रगृह में मिलने पर एक-दूसरे को अनदेखा नहीं करते थे। एक बार शुक्राचार्य एक यादव को लाए थे, जिन्हें बलराम ने गदा से युद्ध करना सिखाया था। इस व्यक्ति ने मुझे दुर्योधन और दुस्साना, और बाद में चित्रसेन का भी सामना करवाया। सहदेव तलवार चलाना सीखने लगे। जब भी हमें मामूली चोट लगती, हमारा विरोधी आकर हमें सांत्वना देता। इस पूरे समय कर्ण हमसे अलग रहकर धनुष-बाण का अभ्यास करता रहा। उसके पास तीरंदाजी का एक विशेष शिक्षक था, इसलिए कई दिनों तक वह दुर्योधन की संगति में नहीं दिखाई देता था। हम अपने पुराने झगड़े भूल गए।
एक दिन, जब हमारी कोई क्लास नहीं थी, चित्रासेना आई और उसने मुझे बुलाया। 'आओ, सब लोग तैयार हैं।'
मैं हाथियों के बाड़े में था। कामारूपा से आए हाथियों के एक नए समूह को प्रशिक्षण दिया जा रहा था, और मैं पूरी तरह से मंत्रमुग्ध था।
मैंने पूछा, ‘कहाँ जाना है?’
‘प्रमनाकोटी में जल उत्सव के लिए। हम सब जा रहे हैं। चलो, सब जाने के लिए तैयार हैं।’
प्रमाणकोटी शांत गंगा नदी के किनारे स्थित एक चट्टानी हिस्सा था। वहाँ शाही परिवारों के सदस्यों के लिए स्नानगृह बनाए गए थे। जल उत्सव के दौरान होने वाली प्रतियोगिताओं को देखने के लिए लोगों के बैठने हेतु पत्थर के चबूतरे और हॉल बनाए गए थे। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि पिछली रात भी किसी ने इस उत्सव का ज़िक्र नहीं किया था।
‘कौन-कौन जा रहा है?’
हम सब, सिर्फ हम।
दुर्योधन और उसके साथी महल के प्रांगण में एकत्रित थे। उत्सवों में जाने के लिए इस्तेमाल होने वाले आनंद रथ तैयार खड़े थे, उनमें घोड़े जुते हुए थे।
मैं उस स्थान पर गया जहाँ अर्जुन नकुल और सहदेव के साथ खड़े थे।
क्या हमारा बड़ा भाई हमारे साथ नहीं जा रहा है?

'मुझे ऐसा नहीं लगता।'
मुस्कुराते हुए दुर्योधन मेरी ओर आया।
‘आइए। रसोइये पहले ही जा चुके हैं। चिंता मत कीजिए, खाना आपको निराश नहीं करेगा!’
उसने मेरी पीठ थपथपाई।
मैं अपने बड़े भाई को ढूंढने गया और पाया कि वह चाचा के एक मंत्री के साथ पासा खेल रहा था, जिसमें विभीतिका के बीजों का इस्तेमाल काउंटर के रूप में किया जा रहा था।
‘तुम अभी तक निकले नहीं?’
मुझे ऐसा लग रहा था कि जब वह खेल खेलना सीख रहा था, उस समय मेरा वहाँ आना उसे पसंद नहीं आया था।
मैं उससे कहना चाहता था, अगर तुम नहीं आओगे, तो हममें से कोई नहीं जाएगा। मुझे यही सिखाया गया था: चाहे हम युद्ध लड़ने जा रहे हों, या अंतिम संस्कार कर रहे हों या कोई त्योहार मना रहे हों, मेरा स्थान उसके पीछे ही था।
मेरे बड़े भाई को वह खेल छोड़ने में हिचकिचाहट हो रही थी जिसमें उन्हें आनंद आने लगा था। लेकिन मुझे दरवाजे पर हठपूर्वक खड़े देखकर उन्होंने कुछ बुदबुदाया और उठ गए।
दुर्योधन ने पहले रथ में मेरे, युधिष्ठिर और अर्जुन के लिए स्थान आरक्षित कर रखे थे। नकुल और सहदेव दुस्साना और चित्रसेना के साथ दूसरे रथ में थे। प्रमाणकोटी में, जहाँ पानी सबसे गहरा होता है, गंगा नदी अर्धवृत्ताकार रूप में अंदर की ओर मुड़ जाती है। जल उत्सव शरद ऋतु में मनाया जाता है। जब हम स्नान घाट की ओर जा रहे थे, तब दुर्योधन ने कहा, 'रथों को वापस जाने दो। हम शाम को नदी किनारे-किनारे पैदल लौटेंगे।'
युधिष्ठिर ने सहमति में धीमी सी आवाज़ निकाली। जिस दिन को वे पासा खेलने में बिता सकते थे, जो उनका नया शौक था, उस दिन के न बीतने की निराशा उनके चेहरे पर अभी भी स्पष्ट थी।
जैसे ही रथ मुड़कर जाने लगे, मैं स्नानगृहों के ठीक बाहर बने छोटे से बगीचे की ओर चल पड़ा। वहाँ खाने की तेज़ खुशबू फैली हुई थी। रसोइयों ने चूल्हे बनाए थे जिन पर बड़े-बड़े धातु के बर्तनों में तरह-तरह के व्यंजन पक रहे थे। बड़े महल का एक रसोइया निगरानी कर रहा था। मेरी खाने के प्रति दीवानगी

को जानते हुए उसने कहा, 'जंगली बकरी और काले हिरण पक रहे हैं। अगर आप चाहें तो अभी कबूतर का मांस चख सकते हैं।'
मांस पकने की मनमोहक खुशबू आ रही थी। मैंने तैयार पैकेट खोले। गन्ने के रस में डूबी हुई देसी फलियाँ तली हुई थीं, और घी में तले हुए गुड़ और पिसे हुए अनाज से बने बड़े-बड़े गोल मोदक थे।
मैंने सिर्फ एक मोदक खाया और चला गया।
मैं एक ऊँचे खंभे पर चढ़ गया, एक पैर पर खड़ा हो गया, अपने शरीर को धनुषाकार बनाया और नीचे खड़े छोटे लड़कों की प्रशंसा बटोरी। मैं पानी में कूद गया और तैरने लगा, पहले पीठ के बल लेटा, फिर पेट के बल। फिर मैं पानी में गहराई तक गोता लगाया, लापरवाह लोगों को उनके पैरों से पकड़ा, उन्हें डराया और हँसा। मैंने चित्रासेना को अपनी पीठ के बल लिटाया और स्नान घाट के एक छोर से दूसरे छोर तक तैरा, जिससे देखने वाले चकित रह गए।
दुर्योधन भी उतना ही उत्साहित था, और जब बाकी सब पानी से बाहर निकल आए, तब भी हम दोनों उसमें खेलते रहे। यह सोचकर मुझे आश्चर्य हुआ कि हम कभी दुश्मन हुआ करते थे। जब हम आखिरकार किनारे पर पहुँचे, तो दुर्योधन ने कहा, 'आराम से समय लो।' नौकर आए और हमारे गीले कपड़े ले गए। दुर्योधन ने मुझसे कहा, 'हम सबसे आखिर में खाना खाएंगे। मेरे पास तुम्हारे लिए एक राज़ है।'
सभी लोग भोजन करने के लिए इकट्ठा हो गए थे। दुर्योधन ने एक सेवक को बुलाया और उससे कहा, 'जिस स्थान के बारे में मैंने तुम्हें बताया है, वहाँ हमारी सेवा करो।'
जल उत्सव के आरंभ में दुर्योधन की भव्य तैयारियों को देखकर मुझे बहुत विनम्रता का अनुभव हुआ।
नौकरों ने जामुन के पेड़ों के नीचे एक चादर बिछा दी। जैसे ही खाना चांदी की थालियों में परोसा गया, दुर्योधन ने उन्हें जाने का इशारा किया। उसने तला हुआ मांस का एक टुकड़ा उठाया, उसे चबाया और कहा, 'मेरे पास तुम्हारे और मेरे लिए कुछ खास है।'
उसने चमड़े का एक बर्तन खोला, उसे सूंघा और सिर हिलाया। 'शराब।'
मेरी पहली प्रतिक्रिया डर की थी। हम शराब पीने की उम्र के नहीं थे।
मधुका के फूलों से बनी उत्तम शराब। जौ से बनी शराब केवल निम्न वर्ग के लोग ही पीते हैं। यह बहुत खास है और कहा जाता है कि राजकुमारों के लिए उपयुक्त है। इसे चखकर देखें।

मैंने उससे चमड़े का घड़ा लिया और उसे सूंघा। उसमें मुरझाए फूलों की गंध आ रही थी। मैंने उसे घड़ा वापस देते हुए कहा, 'नहीं, हम अभी पीने लायक उम्र के नहीं हैं।'
दुर्योधन मुस्कुराया। 'जिस दिन तुमने अपने भाले से जंगली सूअर को मार गिराया, उसी दिन तुम असली मर्द बन गए।'
मुझे पता था कि ग्यारह साल की उम्र में भी मेरा शरीर सोलह साल के लड़के जितना विकसित था। जब नौकरानियाँ स्नानागारों में पानी बदलने आती थीं, तो मुझे अपने नंगेपन पर शर्म आने लगी थी।
महल में किसी ने भी मेरे द्वारा जंगली सूअर के वध पर कोई टिप्पणी नहीं की थी। न ही मुझे बधाई का एक शब्द भी सुनने को मिला था। विदुर ने अर्जुन के पहले वध के सम्मान में एक यज्ञ किया था और भीष्मचार्य ने उन्हें पुरस्कार के रूप में सोने के पंखों वाला एक बाण दिया था।
दुर्योधन, जिसे मैं अपना शत्रु समझता था, उसने सबसे पहले मेरी प्रशंसा की। धृतराष्ट्र के इस पुत्र के प्रति मेरा हृदय प्रेम से भर गया।
उसने घड़ा होठों तक उठाया, एक घूँट पिया और कहा, 'पहला जानवर जिसे वह मार गिराता है, पहला दुश्मन जिसे वह मारता है, पहली स्त्री जिसके साथ वह आनंद लेता है: ये ऐसे अवसर हैं जिन्हें हर पुरुष याद रखता है।'
वह एक वयस्क की गंभीर आवाज में बोल रहा था।
‘जिस दिन वह पहली बार शराब पीता है, वह दिन भी महत्वपूर्ण है।’ वह मुस्कुराया और फिर से शराब पी ली। फिर उसने घड़ा ज़मीन पर रख दिया और माथे पर गिरे बालों को पीछे हटाया। उसका चेहरा लाल हो गया था।
‘तुम्हारा बड़ा भाई युधिष्ठिर – वह एक अनाड़ी मूर्ख है जिसमें न तो साहस है और न ही शक्ति। बड़ा होकर वह क्या करेगा?’
मेरे भाई के बारे में उसने जो कहा, वह मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। मैंने अक्सर सोचा था कि यद्यपि मेरा भाई शास्त्रों को सीखने में उत्कृष्ट था और सुनी हुई हर बात को बिना एक भी गलती के दोहरा सकता था, फिर भी शस्त्र विद्या में वह नकुल से भी बदतर था। लेकिन दुर्योधन को ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं था।
युधिष्ठिर को केवल राज्य चलाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा था। नकुल महल के कामकाज संभालेंगे और गायों की देखभाल करेंगे। सहदेव कर वसूलेंगे और वित्त का प्रबंधन करेंगे। अर्जुन युद्ध लड़ेंगे और मैं भी। हालाँकि किसी ने भी

उनके कार्यों का स्पष्ट वर्णन नहीं किया था, फिर भी हम सभी जानते थे कि हमें कौन-कौन से कार्य करने होंगे।
सौभाग्यवश, दुर्योधन ने इस विषय पर और चर्चा नहीं की। उसने मेरे द्वारा दूर धकेले गए शराब के बर्तन की ओर देखा और धीरे से मुस्कुराते हुए कहा, 'यदि तुम्हें डर लग रहा है, तो मत पियो। शराब बड़ों के लिए होती है।'
मैंने तुरंत अपना हाथ आगे बढ़ाया।
इसका स्वाद तीखा और मीठा दोनों था। अगर मुझे एक समझदार व्यक्ति की तरह पीना होता, तो मैं अपनी नापसंदगी ज़ाहिर नहीं कर सकता था। उसे मुझे हराने न देने का दृढ़ निश्चय करके, मैंने एक और घूंट पिया। और फिर एक जंगली बकरी की जांघ का टुकड़ा चखा।
दुर्योधन ने मुझे बताया कि वह जल्द ही बलराम के पास गदा से युद्ध करना सीखने जा रहा है। मुझे ईर्ष्या हुई। बलराम मेरी माँ के सबसे बड़े भाई के पुत्र थे। फिर भी, न तो माँ और न ही युधिष्ठिर ने मुझे उनके पास भेजने के बारे में सोचा था।
क्या आप जानते हैं कि सबसे शक्तिशाली राजा कौन है?
मैंने प्रश्न पर विचार किया। बलराम नहीं। जरासंध ने उन्हें हराया था। मैंने कई गाथाओं में जरासंध की शक्ति के बारे में सुना था। इसलिए मैंने उत्तर दिया: 'जरासंध।'
दुर्योधन मुस्कुराया। ‘नहीं, मेरे पिता धृतराष्ट्र सबसे बलवान हैं। जरासंध दूसरे स्थान पर है। लेकिन मेरे पिता कभी युद्ध नहीं करेंगे। याद रखिए, उन्होंने बहुत पहले ही अपना राज्य त्याग दिया था।’
दुर्योधन ने मुझे बताया कि उसके पिता की शक्ति, जो मदमस्त अवस्था में 10,000 हाथियों की शक्ति के बराबर थी, देवताओं का वरदान थी।
‘कुछ समय बाद मुझे भी वह वरदान प्राप्त होगा।’ उसने अपने कपड़े एक तरफ हटाए और अपनी बाईं जांघ पर मुट्ठी से प्रहार किया।
‘पवन देवता ने पहाड़ों को उखाड़कर गेंदों की तरह उछाला। वे मुझे भी वही शक्ति प्रदान करेंगे।’ अनजाने में ही मैंने अपने मन में चल रही प्रार्थना को ज़ोर से बोल दिया था।
दुर्योधन की हंसी में व्यंग्य का पुट था।
‘हंसो मत। मैं भीमसेन हूं, पवन का पुत्र।’
दुर्योधन जोर से हंस पड़ा।

‘धर्म से युधिष्ठिर, वायु से भीम, इंद्र से अर्जुन। जैसा कि चाचा सुबाला कहते हैं, तुम सब बिलकुल मूर्ख हो। क्या तुम्हारी माँ को सुनाने के लिए इससे बेहतर कहानियाँ नहीं सूझ सकती थीं?’
मैं सुन्न पड़ गया। उसकी कही बातों का महत्व धीरे-धीरे मेरे मन में उतर रहा था। क्रोध से मेरा गला सूख गया। दुर्योधन ने चुनौती देते हुए दूसरा घड़ा मेरी ओर बढ़ाया और मैंने उसे स्वीकार कर लिया। मैंने एक ही घड़े में आधा घड़ा पी लिया और फिर घड़ा फेंक दिया।
‘पहले एक सुविधाजनक शिकार अभियान, फिर जंगल में लंबा प्रवास, ये सब उसके बच्चों के पिताओं की पहचान छिपाने के लिए किया गया था। भोले-भाले लोग ऋषियों की हर बात पर विश्वास कर लेते हैं। लेकिन हे वृकोदरा, ये सब बातें मुझे बार-बार क्यों बता रहे हो?’
मैं उठा और उसकी ज़ोरदार हंसी फिर से गूंज उठी: 'पवन देवता का पुत्र, सबसे शक्तिशाली!'
मेरे पैर लड़खड़ा रहे थे। मैंने उसे पकड़ने के लिए आगे छलांग लगाई और गिर पड़ी। मैंने हाथों का सहारा लेकर उठने की कोशिश की, लेकिन मेरे हाथ मेरा साथ नहीं दे रहे थे और इससे पहले कि वे किसी जगह को पकड़ पाते, मेरा सिर ज़मीन पर जा टकराया।
जैसे ही मैं बेहोश होने लगा, मुझे लगा कि मैंने और भी हंसी और अन्य आवाजें सुनीं जो हमारी ओर आ रही थीं, जिनमें से एक दुस्साना की थी।
तभी किसी ने चिल्लाकर कहा, 'रस्सी कहाँ है? उसे बांधने के लिए रस्सी कहाँ है?'
सारथी के पुत्र कर्ण की आवाज।

4

जब मुझे होश आया, तो पहले तो मुझे लगा कि मैं दो उग्र हाथियों की खोपड़ियों के बीच फंसा हुआ हूँ, जो आपस में लड़ रहे हैं और उनके दांत एक-दूसरे में उलझे हुए हैं। मेरी छाती अंदर की ओर दब रही थी। काश, मुझे कुछ सहारा मिल जाता, कोई लता जिसे मैं पकड़ सकूँ... लेकिन नहीं, मैं अपने हाथ हिला नहीं पा रहा था। जब मैं नदी की गहराई में डूबने लगा, तब मुझे एहसास हुआ कि मैं डूब रहा हूँ।
मैंने उठने की कोशिश की और महसूस किया कि मेरे हाथ और पैर पीछे की ओर बंधे हुए थे। यह निश्चित रूप से मेरा अंत था।
मेरा कंकाल, मगरमच्छों के खाने के बाद जो कुछ भी बचेगा, गंगा के किसी दूर किनारे पर सतह पर आ जाएगा। किसी को कभी पता नहीं चलेगा कि यह कुंती के पुत्र भीमसेन थे। हे तूफान के देवता, क्या यही आपके पुत्र का अंत है? मैं मन ही मन रोते हुए चीखा। गंदा पानी मेरे मुंह और नाक में भर गया।
बचने की आखिरी कोशिश में, मैंने बेतहाशा पैर पटके। आखिरकार मेरी प्रार्थना किसी तक पहुँच गई, और उसका फल मिला – मेरे पैरों की गांठें खुल गईं। मैंने अपने पैरों को मरोड़ा और खुद को छुड़ाने के लिए हर संभव कोशिश की। मानो भगवान मेरे साथ थे, रस्सी मेरे टखनों से फिसल गई। मैं ऊपर की ओर उछल पड़ा।
मुझे लगा कि पानी से भरे मेरे फेफड़ों में फंसी थोड़ी सी हवा मेरी पसलियों को तोड़कर बाहर निकल जाएगी। मैं चाहे जितनी भी ऊंची छलांग लगाता, मेरे सिर के ऊपर पानी ही पानी था। मुझे नहीं लगता था कि मैं बच पाऊंगा। मेरे पैरों की सारी ताकत खत्म हो चुकी थी। ठीक जब मुझे यकीन हो गया कि मौत बहुत करीब है, तभी मेरा सिर पानी से बाहर निकला। मैंने सांस ली। मैंने पानी उल्टी किया, फिर गहरी सांस ली।
मेरे हाथ अभी भी गांठों में बेकार ही फंसे हुए थे, लेकिन मैंने बहुत पहले ही खुद को बिना चप्पू चलाए या हाथों का इस्तेमाल किए पानी में तैरने का प्रशिक्षण दे दिया था।
चारों ओर घना अंधेरा था। नदी का किनारा कहाँ था? जैसे-जैसे मैं साँस लेते हुए बहता गया, मुझे एहसास हुआ कि मैं अपने हाथों को थोड़ा हिला सकता हूँ। मैंने अपने शरीर को आराम देने और धारा के साथ बहने का संकल्प किया, बीच-बीच

में अपने पैरों से धीरे-धीरे चप्पू चलाते हुए। ऊपर, तारों से भी खाली आकाश, मुझे एक काली हिरण की खाल की तरह घेरे हुए था।
जैसे-जैसे मैं धारा के साथ बहता गया, मैं सोचने लगा कि उस संयुक्त हमले में कौन-कौन शामिल था। दुर्योधन, जिसने मेरे लिए दावत और विशेष 'गुप्त' व्यवस्था की थी, उसने सब कुछ पहले से ही योजना बना लिया होगा। अगर उसने मेरे भाइयों को बताया होता कि खाना खाते ही मैं चला गया, तो वे उस पर विश्वास कर लेते और खुद वापस चले जाते। दुर्योधन, दुस्साना और सारथी के पुत्र कर्ण ने ही मुझे बांधकर नदी में धकेला था। बाकी कौरवों का क्या? यह पता लगाना मुश्किल होगा कि दुर्योधन ने उन्हें भी साजिश में शामिल किया था या नहीं। चित्रसेना और बाकी लोगों को तो यह जरूर पता होगा कि जल उत्सव की आड़ में कुछ होने वाला है। अगर मैं इस खतरे से बच निकला...
मुझे अपने पैरों के नीचे कुछ महसूस हुआ। गंगा के कई हिस्सों में मगरमच्छ थे। मैंने सुना था कि उनमें से अधिकतर पापी थे जिन्हें महान ऋषियों ने श्राप देकर मगरमच्छ बना दिया था। मैंने तुरंत अपने पैर हटाए और फिर से चप्पू चलाना शुरू किया, तब मुझे खुशी हुई कि मेरे पैर नदी के किनारे से टकराए थे।
मैं बड़ी मुश्किल से फिसलन भरी कीचड़ पर चढ़ पाया। पैरों के नीचे किनारे की ठोस ज़मीन को महसूस करके कितनी राहत मिली! अंधेरे में मुझे घनी झाड़ियाँ दिखाई दीं। मैंने चार-पाँच कदम आगे बढ़ाए और गिर पड़ा। जब मैं थका हुआ वहीं पड़ा था, आँखें बंद किए हुए, ठंड मेरे शरीर में ऐसे चुभ रही थी जैसे किसी कांटेदार पौधे की नुकीली टहनियाँ।
मैंने किसी की सीटी सुनी और आँखें खोलीं। अँधेरा अब उतना घना नहीं था। मुझे कुछ ऐसी भाषा की आवाज़ें सुनाई दीं जिन्हें मैं समझ नहीं पा रहा था, लेकिन वे निश्चित रूप से किसी इंसान की भाषा थीं।
जल्द ही, कुछ लोग मुझे घेरकर ज़ोर-ज़ोर से बातें करने लगे। वे प्राकृत भाषा नहीं बोल रहे थे। किसी ने मेरे हाथों की गांठें खोल दीं। कई हाथों ने मुझे उठाने की कोशिश की, और मैंने भी बड़ी मुश्किल से खुद को ऊपर उठाया। मेरे चारों ओर पीले रंग की चमड़ी वाले, छोटे कद के, छोटी आँखों वाले और बिना बालों वाले चेहरे और छाती वाले पुरुष थे। उनके पीछे कानों में बड़े-बड़े धातु के छल्ले पहने और रंग में रंगे जानवरों की खाल ओढ़े हुए औरतें थीं। जब

मैं उनकी तरफ मुड़ा, तो उनमें से सबसे छोटी औरत खिलौने की झनझनाहट जैसी आवाज़ के साथ हँसी। कहीं जाकर मेरे कपड़े नदी में गिर गए।
लाल और काले पंखों से सजी पगड़ी पहने एक आदमी भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए मेरे पास आया। उसके कंधे पर तीरों से भरा चमड़े का तरकश लटका हुआ था और उसके दाहिने हाथ में बांस का बना धनुष था, जिसकी डोरी ढीली थी। सबने उसके लिए रास्ता बना दिया। पहले तो उसकी छोटी-छोटी गोल आँखें, जो मुझे घूर रही थीं, क्रूरता से भरी हुई लग रही थीं। धीरे-धीरे, मैंने उनमें कोमलता देखी। उसने मुझसे उस भाषा में पूछा जिसे मैं समझ सकता था, 'तुम कौन हो?'
मैंने उसे अपना नाम बताया और कहा कि मैं हस्तिनापुरा से हूँ। उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। वह झाड़ियों को हटाते हुए आगे बढ़ गया और मैं उसके पीछे-पीछे चलने लगा। बाकी लोग भी उसके पीछे आ गए। जैसे ही हम जंगल के सबसे घने हिस्से में पहुँचे, हवा सूर्योदय की रोशनी से भर गई।
पेड़ों को काटकर समतल किए गए एक खुले मैदान में, मैंने गोल लट्ठों से बने घर देखे। मुझे एहसास हुआ कि ये लोग नाग थे। मैंने सुना था कि वे यमुना नदी के किनारे जंगलों में रहते हैं। नौकरानियाँ बच्चों को डराने के लिए नागों की कहानियाँ सुनाया करती थीं। कि वे रात में अपना मानव रूप त्यागकर सर्प बन जाते हैं। कि वे जंगलों से केवल उन लोगों से बदला लेने के लिए निकलते हैं जिन्होंने उनके साथ बुरा बर्ताव किया था। कि वे विष से युक्त छोटे तीरों से शिकार करते हैं।
उनमें से एक ने मुझे पहनने के लिए एक जानवर की खाल दी, जिसे रंग में नहीं डुबोया गया था। मुझे ठीक से पता नहीं था कि वह किस जानवर की खाल थी। फिर उन्होंने मुझे पीने के लिए पके हुए अनाज से भरा एक लकड़ी का कटोरा दिया। वह गर्म था। ठंड और भूख से बेहाल होकर मैंने उसे जल्दी-जल्दी पी लिया। जब मैंने कटोरा दूसरी और फिर तीसरी बार आगे बढ़ाया, तो औरतें मुस्कुराईं। उनमें से एक ने आग से एक बर्तन उतारा और मेरे पास रख दिया, और वे सब एक साथ हंस पड़ीं।
भूख मिटने पर मैंने आंखें बंद कर लीं और अपना सिर लकड़ी की दीवार से टिका लिया। किसी ने मुझे एक विशाल हिरण की खाल से ढक दिया। उसकी गर्माहट ने मुझे अंदर और बाहर से घेर लिया। पंखों वाला मुकुट पहने उस आदमी ने कुछ बुदबुदाया और सब चले गए। मैं चैन से सो गया।

पहले दो दिन तो मैं बिल्कुल खाली बैठा रहा। मुझे ऐसा लग रहा था कि औरतें मुझे खाना खिलाने के लिए आपस में होड़ कर रही हैं। उनका मुख्य शौक मुझे खाते हुए देखना था।
तीसरे दिन मैं रात में उन आदमियों के साथ शिकार पर गया। उनसे मुझे पता चला कि रात में शिकार करना बहुत आसान होता है। जंगल में दूर से भी पक्षियों और जानवरों की आँखें दिखाई देती थीं और थोड़े अभ्यास से उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता था। जब ये शिकारी किसी अकेले जानवर को अपने साथी को पुकारते हुए सुनते थे, तो वे उसकी जगह का पता लगा लेते थे।
सातवें दिन, जंगल के किनारे पर मैंने उस नाग से विदा ली जो उस कबीले का मुखिया था। मैंने उसे गले लगाने के लिए अपनी बाहें फैलाईं और उसने भी अपनी बाहें ऊपर उठाकर मुझे प्रणाम किया।
‘हे पांडव राजकुमार, आपके साथ सभी शुभ चीजें हों!’
मैं व्यथित था, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं अपनी कृतज्ञता कैसे व्यक्त करूं।
पिछले कुछ दिनों में उन्होंने मुझे बहुत कुछ सिखाया था, और हर बात की शुरुआत में कहते थे: 'यह हमारे जंगल का नियम है।' उनकी छाती पर लटकता बाघ के पंजों से बना हार और सिर पर सिले पंख उस कबीले के मुखिया की पहचान थे। वे जानना चाहते थे कि मुझे किसने बांधकर पानी में फेंका था, और मैंने बस इतना ही कहा था: 'एक दुश्मन ने।'
फिर उन्होंने मुझे सलाह दी, 'तुम्हें कभी भी दुश्मन के प्रति दया नहीं दिखानी चाहिए। वह तुम्हारी दया से और अधिक शक्तिशाली हो जाएगा और अजेय बन जाएगा। यही हमारा नियम है: तुम किसी जानवर को भागने दे सकते हो, लेकिन किसी इंसान को कभी दूसरा मौका नहीं देना चाहिए।'
लेकिन जब उसने कहा कि दैवीय शक्तियों पर भरोसा करने के बजाय अपनी खुद की ताकत पर भरोसा करना बेहतर है, तो मुझे उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ। मैंने जितनी भी युद्ध कथाएँ सुनी थीं, उन सभी के नायकों की जीत केवल इसलिए हुई थी क्योंकि उनके पास दैवीय शक्तियाँ थीं।
नाग ने पूछा, 'यदि शत्रु तपस्या करके तुमसे अधिक शक्तिशाली शस्त्र प्राप्त कर ले और देवता उसे वही शस्त्र दे दें तो पहले शस्त्र का क्या उपयोग होगा?' मुझे उस प्रश्न का उत्तर देना कठिन लगा।

आठवें दिन भोर होते ही, जब महल के पहरेदार मुझे हिरण की खाल पहने हुए प्रांगण में प्रवेश करते देख हैरान रह गए। खबर फैलने में देर नहीं लगी। भीम, जिसके बारे में माना जा रहा था कि वह देश छोड़कर चला गया है, वापस आ गया था। मैं सीधे माँ के पास गई।
उसने पहले मेरी तरफ देखा और राहत की सांस ली, फिर उसका चेहरा लाल हो गया और उसने गंभीरता से पूछा, 'तो तुम्हें लगता है कि तुम बिना किसी को बताए इधर-उधर घूम सकते हो?'
वह अपने आंसुओं को मुश्किल से रोक पा रही थी।
तभी युधिष्ठिर और अर्जुन वहां आ गए।
'कहाँ थे?'
यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई और हमें सुन न सके, मैंने उन्हें बताया कि क्या हुआ था। कि दुर्योधन और दुस्साना ने मुझे प्रमाणकोटी में नदी में फेंक दिया था। 'उन दोनों ने और उस नीच सारथी के पुत्र कर्ण ने।'
मुझे अपनी हैरानी का एहसास न होने देते हुए, माँ लकड़ी के फर्श पर बने पवित्र श्री चक्रों में से एक को टकटकी लगाकर देखती रहीं। मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि दुर्योधन ने मेरा भी मज़ाक उड़ाया था और कहा था कि माँ ने हमें हमारे जन्म के बारे में जो कहानियाँ सुनाई थीं, वे सब झूठ थीं। युधिष्ठिर ने कहा, “जब उसने कहा कि तुम पहले ही लौट आए हो, तो हम सबने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। हमें तुरंत दादा भीष्म को सारी बात बतानी चाहिए। आओ, भीमसेन।”
मां ने कहा, 'किसी को मत बताना। बस सावधान रहना। हर समय सतर्क रहना।' अर्जुन ने तर्क दिया, “लेकिन चाची गांधारी ने हमसे कहा था कि हम सबको एक ही माता के पुत्रों की तरह मिलकर रहना चाहिए। हमें उन्हें इस बारे में बताना होगा।”
मां ने सिर हिलाकर मना किया।
युधिष्ठिर बहुत परेशान थे। वे बार-बार पूछ रहे थे, हम यहाँ कैसे रह सकते हैं? फिर उन्होंने माँ की ओर मुड़कर कहा, 'हम चाचा वासुदेवर के महल में जाकर रह सकते हैं।'
मुझे यह सुझाव बहुत अच्छा लगा। मैं बलराम से गदा चलाना सीख सकता था। और कृष्ण, जो मेरी ही उम्र के थे - बल्कि मुझसे एक साल छोटे थे - मेरे साथ होते।

माता ने कहा, “कौरवों की यही इच्छा है। अगर सिंहासन के हकदार लोग चुपचाप चले जाएं तो यह उनके लिए बहुत अच्छा रहेगा। क्या तुम राज-प्रबंधन के यही सिद्धांत सीख रहे हो, पुत्र?”
युधिष्ठिर असमंजस में थे और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें।
‘क्या तुम्हें बस इतना ही चाहिए, किसी राज्य में रहने की जगह?’ माँ ने पूछा। एक नौकरानी अंदर आई और बोली कि विदुर बाहर इंतजार कर रहा है।
विदुर के प्रवेश करते ही माँ खड़ी हो गईं और उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने जल्दी से विदुर को प्रणाम किया और हमारी ओर चल पड़ीं।
युधिष्ठिर ने कहा, “मामा जी, कम से कम आपको यह तो पता होना चाहिए कि हमारे मामा धृतराष्ट्र के पुत्रों और सारथी के पुत्र कर्ण ने भीम को जहर देकर बेहोश कर दिया और उसे मारने के लिए नदी की गहराई में फेंक दिया। अब हम क्या करें?”
विदुरा ने मां की ओर देखा जो सिर झुकाए अपने पैरों को घूर रही थी।
‘आप पांचों को बहुत सावधान रहना चाहिए। विशेषकर भीम और अर्जुन को।’ युधिष्ठिर बाहर चले गए और हम उनके पीछे-पीछे गए। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो विदुर माता के पास एक चौकी पर बैठे थे। माता उन पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रही थीं। जाहिर है, प्रमाणकोटी में मुझे जान से मारने की कोशिश ने माता को बहुत परेशान कर दिया था। अगर उन्हें दुर्योधन द्वारा मेरे बारे में बताई गई शर्मनाक कहानियाँ पता चल जातीं तो क्या होता?
मैं शुक्राचार्य को प्रणाम करने गया, लेकिन मैंने उन्हें पूरी सच्चाई नहीं बताई। मैंने कहा कि मैं नदी में गिर गया था और किनारे पर पहुँचकर जंगल में रास्ता भटक गया था। उन्होंने मुझसे कोई सवाल नहीं पूछा। लौटते समय मुझे आंगन में कौरव मिले। वे मुझे घेरकर खड़े हो गए और ऐसा दिखावा करने लगे जैसे उन्हें बहुत खुशी हो रही हो कि मैं, जिसे वे खोया हुआ समझ रहे थे, लौट आया हूँ।
मैंने मन ही मन सोचा, इन बीते दिनों के बारे में मैं उन्हें क्या बताऊँ? लेकिन मुझे उन्हें कुछ भी बताने की ज़रूरत नहीं पड़ी। मेरी वापसी से कहीं अधिक रोचक घटना घटित हुई और चर्चा का विषय बन गई। कृपाचार्य की बहन के पति, जो धनुर्विद्या के एक विख्यात शिक्षक थे, हमें सिखाने आए थे।
कृपाचार्य से मिलने जाते समय, वे महल के बाहर खेल रहे बच्चों का मनोरंजन करने के लिए कुछ तीर-कमान के करतब दिखाने के लिए रुक गए। यह सुनकर दादा

भीष्म बाहर आए और बच्चों ने देखा कि आदरणीय भीष्म ब्राह्मण के सामने प्रणाम कर रहे हैं। कौरवों और पांडवों के लिए इसे सौभाग्य बताते हुए, उन्होंने उस ब्राह्मण को हमारा गुरु नियुक्त किया। द्रोणाचार्य।
उसके बाद, हाथियों के बाड़ों और घुड़सवार प्रशिक्षकों के बीच द्रोण के बारे में अनगिनत कहानियां सुनाई जाने लगीं। लोग कहते थे कि उनके पास दिव्य हथियार थे जो परशुराम ने उन्हें दिए थे।
हालांकि, एक बूढ़ा महावत, जो यह सब उदासीनता के भाव से सुन रहा था, ने टिप्पणी की: "एक बार एक ब्राह्मण, जिसका कर्तव्य यज्ञ करना और वेदों का उपदेश देना है, क्षत्रिय के कौशल प्राप्त कर लेता है, तो सब कुछ समाप्त हो जाता है।"
जिस सूत ने हमें परशुराम और द्रोण के मिलन की कहानी सुनाई थी, वह अप्रसन्न था।
‘तो क्या हुआ? अगर कोई ब्राह्मण क्षत्रिय कौशल सीखता है तो इसमें क्या गलत है?’
‘इसमें कुछ गलत नहीं है। लेकिन वे ही खौफनाक बन जाएंगे। अंत में, वे क्रूरता की कला में माहिर हो जाएंगे और क्षत्रियों को उनसे ही यह कला सीखनी पड़ेगी, बस इतना ही।’
बूढ़े व्यक्ति ने बहस जारी नहीं रखी। वह उठा और खजूर के पत्तों को खाने के लिए धृतराष्ट्र नामक हाथी को देने के लिए झोपड़ी में चला गया।
यदि नाग की बात सही थी, यदि द्रोण के शत्रु थे, तो उन्होंने सबसे पहले परशुराम से उन हथियारों से अधिक शक्तिशाली हथियार प्राप्त किए होंगे जो परशुराम ने द्रोण को दिए थे।
हर रात मुझे भयानक सपने आते थे जिनमें मैं अथाह गहराई में डूबता जा रहा होता था, मेरा सीना असहनीय दर्द से फट रहा होता था। और हर बार जब मैं अचानक जाग जाता, तो मैं खुद से कहता, 'नहीं, कोई भी दया का पात्र नहीं है।'

5

हमारी विभिन्न प्रतिभाओं के प्रदर्शन के लिए एक तारीख तय कर दी गई थी।
इसलिए आजकल जब भी युवा लोग मिलते थे, सारी चर्चा इसी कार्यक्रम के इर्द-गिर्द घूमती थी।
मैदान का चयन किया गया और उस स्थान को शुद्ध करने के लिए एक बलि दी गई। हर जगह दर्शक दीर्घाएँ बनाई गईं।
अर्जुन ने आकर मुझे बताया कि दिन और तारीख तय हो गई है। उनके उत्साह और उमंग को देखकर ऐसा लग रहा था मानो ये सारी भव्य तैयारियां सिर्फ उनके पहले प्रदर्शन के लिए ही की गई हों।
जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, उसकी काली त्वचा में नीले रंग की झलक आ गई और उसकी लंबाई भी बढ़ गई। समूह में खड़े उसे देखते ही हर कोई उसे दोबारा देखता। अर्जुन के चेहरे पर जवानी की झलक दिखने लगी थी। लेकिन वह अपने कपड़ों या गहनों पर कभी ध्यान नहीं देता था। हम सब में नकुल और सहदेव सबसे सुंदर थे। नकुल को अपने सुंदर रूप पर बहुत गर्व था। अगर वह किसी साफ पानी के तालाब या धातु के दर्पण के पास होता, तो वह खुद को निहारना पसंद करता था।
द्रोणाचार्य के आगमन की खबर सुनकर पड़ोसी देशों के राजकुमार हस्तिनापुर में आकर उनसे शिक्षा प्राप्त करने लगे। लोग खुलेआम अर्जुन की प्रशंसा करते हुए उन्हें द्रोणाचार्य का सर्वश्रेष्ठ शिष्य बताते थे। जब अर्जुन अपने धनुष-बाण लेकर शस्त्रगृह के प्रांगण में जाते थे, तो सेवक भी काम रोककर उन्हें प्रशंसा भरी निगाहों से देखते थे।
आमंत्रित राजाओं के अलावा, शहर के लोग भी उस भव्य आयोजन को देखने के लिए आने वाले थे जो जल्द ही होने वाला था। दूत हाथियों पर सवार होकर शहर में इधर-उधर घूम रहे थे, तुरही बजा रहे थे और तैयारियों की घोषणा कर रहे थे। सभी लोग हथियारों को तेज करने और चमकाने में व्यस्त थे।
मुझे निष्क्रिय बैठे देखकर अर्जुन आश्चर्यचकित हो गया और उसने पूछा, 'क्या तुमने अपनी तैयारियाँ पूरी कर ली हैं?'
मैंने उदासीनता से हल्की सी आवाज़ निकाली। उसका उत्साह देखकर मेरा मन हुआ कि मैं उससे कुछ शरारती सवाल पूछ लूँ: 'क्या एकलव्य आएगा?'

अर्जुन का चेहरा गंभीर हो गया। निषाद सरदार के पुत्र, धनुर्धारी एकलव्य ने दावा किया था कि वह द्रोण का शिष्य है। एक शिकार अभियान के दौरान जब द्रोण और अर्जुन उससे मिले थे, तो उसकी वीरता देखकर चकित रह गए थे। वह एक बार द्रोण के पास शिष्य बनने की इच्छा लेकर गया था, लेकिन निषाद वंश का होने के कारण द्रोण ने उसे मना कर दिया था। कहा जाता था कि जंगल में एकांत साधना से उसकी भुजाओं में ऐसी शक्ति और गति आ गई थी कि अर्जुन भी लज्जित हो जाते। ‘उसे आने दो।’ अर्जुन ने ऐसा दिखाने की कोशिश की जैसे उसे कोई परवाह नहीं है।
मैंने ऐसे कहा जैसे मैं मंदबुद्धि हूँ, ‘मुझे आश्चर्य होता है कि अगर किसी का अंगूठा कट जाए तो क्या वह तीर चला सकता है…’
हाथी के बाड़े में मौजूद नौकर ने हमें बताया कि कैसे कुछ लोगों ने एकलव्य पर सोते समय हमला किया था। उन्होंने उसके दाहिने हाथ का अंगूठा काट दिया और फिर अंधेरे में भाग गए। एक सैनिक-जासूस ने यह खबर बाड़े तक पहुंचाई थी। अगले दिन, जब हम सब शस्त्रगृह के प्रांगण में खड़े थे, तभी एक बूढ़ा व्यक्ति दरवाजे पर प्रकट हुआ। उसके कपड़ों से हम समझ गए कि वह जंगल का कोई आदिवासी था। उस समय अर्जुन अश्वत्थामा के साथ प्रशिक्षण ले रहा था।
वह बूढ़ा व्यक्ति निषाद जैसा दिखता था और किसी कबीले का मुखिया प्रतीत होता था। इसलिए कृपाचार्य उससे पूछने गए कि वह क्या चाहता है। हमने नहीं सुना कि उन्होंने आपस में क्या कहा। कृपाचार्य ने बूढ़े व्यक्ति द्वारा बढ़ाए गए पैकेट को लिया, वापस आए और उसे द्रोण को दे दिया। वह पैकेट एरिक्कू के पत्ते से बना था।
द्रोण ने पैकेट उठाया और कृपाचार्य की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखी। उन्होंने कहा कि निषाद एकलव्य ने इसे गुरुदक्षिणा के रूप में, अपने गुरु को भेंट के रूप में आपको भेजा है।
द्रोणाचार्य का चेहरा पीला पड़ गया। एकलव्य का नाम सुनकर हम सब उत्सुक हो गए। अर्जुन आगे बढ़कर द्रोणाचार्य के ठीक बगल में खड़ा हो गया, जिन्होंने बड़ी सहजता से पैकेट खोला। हमने उन्हें गहरी साँस लेते हुए सुना।
हमने गर्दन उठाकर देखने की कोशिश की कि जंगल में मौजूद शिष्य ने अपने मन में चुने हुए गुरु को क्या उपहार भेजा है।
पत्तों की थैली में एक अंगूठा था जिस पर खून जम गया था।

उस दिन के बाद से मैंने किसी को भी एकलव्य के बारे में बात करते नहीं सुना था।
अर्जुन मुड़कर जाने लगा, और मैंने कहा, 'मैंने सुना है कि निषाद अपने बाएं हाथ से भी निपुणता से काम करता है।'
अर्जुन ने मेरी ओर मुख करके उत्तर दिया, 'हस्तिनापुरा में कौशल का प्रदर्शन निषादों के लिए नहीं है।'
जब अर्जुन चला गया, तो मुझे हँसी आ गई। मुझे पूरा यकीन था कि उसे एकलव्य पर हुए हमले की कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन मेरा यह प्यारा छोटा भाई किसी कुशल धनुर्धर के बारे में सुनकर इतना परेशान क्यों हो जाता था?
वह द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा से भी ईर्ष्या करता था, क्योंकि उसे डर था कि गुरु उसके पुत्र को ऐसे पाठ और रणनीतियाँ सिखा देंगे जो वह स्वयं कभी नहीं सीख पाएगा। भीष्मचार्य ने एक मंत्री को हटाकर द्रोण के लिए एक महल बनवाया था, और अर्जुन अपना सारा समय वहीं बिताता था, और हमें बताता था कि वह अपने गुरु की सेवा कर रहा है।
द्रोणाचार्य ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। ऐसा लगता था मानो उन्होंने हस्तिनापुरा आने से पहले ही तय कर लिया था कि उनके प्रत्येक शिष्य को कितनी प्रगति करनी है। मुझे पूरा विश्वास था कि अश्वत्थामा अर्जुन से आगे था। कर्ण को दुर्योधन के साथ आकर सीखने की अनुमति दी गई थी। लेकिन यदि कर्ण अपने गुरु से मिलने जाता, तो उसे हमेशा दूर खड़े रहने का आदेश दिया जाता था क्योंकि वह एक सारथी का पुत्र था।
जब मैं रथ चलाना सीख रहा था, तब मेरे गुरु ने महसूस किया कि मैंने इस क्षेत्र में युधिष्ठिर को पीछे छोड़ दिया है, जबकि उन्होंने मुझसे पहले शुरुआत की थी। हर बार जब सारथी गति बढ़ाता और मैं रथ से कूदकर गति कम होने का इंतजार किए बिना वापस बैठ जाता, तो युधिष्ठिर की निराशा स्पष्ट हो जाती थी। मुझे एक चतुर सारथी, विशोक दिया गया, जो मुझसे कुछ वर्ष बड़ा था। उसने मुझे रथ में बाएँ और दाएँ दोनों ओर से चढ़ने-उतरने के लिए प्रोत्साहित किया। युद्ध में सारथी बाएँ और योद्धा दाएँ बैठता है। विवाह के समय सारथी दाएँ और योद्धा बाएँ बैठता है।
'राजकुमारों के बीच, शादी का युद्ध में तब्दील हो जाना काफी आम बात है,' विशोका ने हंसते हुए मुझे याद दिलाया।

रथ चलाने का प्रशिक्षण जारी रखने देने के बजाय, द्रोणाचार्य ने मुझे इससे दूर कर दिया। शायद इसलिए कि उन्हें लगा कि मैं धनुर्धर के रूप में कभी नाम नहीं कमा पाऊंगा, उन्होंने मुझे अर्जुन और अश्वत्थामा के पास भेज दिया। चलो, मैं मूर्ख पीछे रहकर ही कष्ट भोगता रहूँ!
हालांकि, अर्जुन को आश्चर्यचकित करने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, मैंने विशोक की सहायता से पूरी रात गुप्त रूप से अभ्यास किया।
द्रोण ने शायद सोचा होगा कि भारी-भरकम शरीर होने के कारण मुझे तीर निकालने और धनुष में लगाने में समय लगेगा। तब वह कह सकता था, 'मूर्ख, तुम्हारे लिए गदा ही सबसे अच्छी रहेगी।'
जैसा कि बाद में पता चला, द्रोणाचार्य अर्जुन से भी अधिक आश्चर्यचकित थे। जब मैंने एक के बाद एक पांच बाण चलाए और वे सभी दूर एक ध्वजदंड पर लटके हुए लकड़ी के बाघ के चेहरे पर जा लगे, तो उन्होंने धीरे से मुझे बधाई दी।
फिर उन्होंने कृपाचार्य के शिक्षण कौशल की ज़ोरदार प्रशंसा की और मुझे सलाह दी, “क्षत्रिय के लिए गदा से युद्ध करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना रथों की रणनीति और धनुर्विद्या सीखना। गदा महान योद्धाओं का हथियार है। भीमसेन, बुनियादी पाठ पूरे करने के बाद इस पर ध्यान केंद्रित करना।” उन्होंने पहले ही यह तय कर लिया था कि उनके प्रत्येक शिष्य को अपनी प्रतिभा का उपयोग किस सीमा तक करने की अनुमति होगी।
इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह थी कि द्रोणाचार्य ने जानबूझकर कुछ तथ्यों को नजरअंदाज कर दिया। ध्यान से देखने वाला कोई भी व्यक्ति यह बता सकता था कि कर्ण की गति अर्जुन से कहीं अधिक थी। फिर भी द्रोणाचार्य ने इस बात को अनसुना करने का नाटक किया। यदि उनके सर्वश्रेष्ठ शिष्य की ख्याति ही एक शिक्षक के रूप में उनकी स्वयं की सफलता का प्रतीक थी, तो इसे चुनौती निषाद एकलव्य से नहीं, बल्कि सारथी के पुत्र कर्ण से मिलनी थी।
इसके बाद नकुला मुझसे कला प्रदर्शन के बारे में बात करने आया। उसने उस दिन पहनने के लिए नीले रेशमी कमरबंद, हल्के पीले रंग का ऊपरी वस्त्र और एक बड़े नीलम जड़े सोने के बेल्ट का चुनाव किया था। उसे लगा कि अर्धहारम की माला पर्याप्त रहेगी। आखिर यह तो सिर्फ कला प्रदर्शन ही तो था, है ना? उसने कुछ संशय से पूछा। मैंने मुस्कुराकर हां में जवाब दिया।

मैंने अपने कपड़ों या गहनों के बारे में सोचा ही नहीं था। मैं जो भी पहनती, लोग सिर्फ मेरे भारी-भरकम शरीर को ही देखते। मुझे ये भ्रम नहीं था कि बालों का गहना या मोतियों का हार मुझे सुंदर बना देगा।
हालांकि मेरा शरीर एक युवक के आकार का हो गया था, लेकिन मेरी मूंछें अर्जुन की तरह नहीं थीं। मेरी ठुड्डी पर बस कुछ बिखरे हुए तांबे जैसे बाल थे। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे-जैसे मेरा शरीर बड़ा होता जा रहा है, मेरी गर्दन छोटी होती जा रही है।
जब विशोका ने मुझसे पूछा, 'क्या तुम तैयार नहीं होने वाले हो?' तब मैं उठ खड़ा हुआ। इस प्रकार महान उत्सव का समय आ गया था।
आवाहन के समय यज्ञ और शुद्धिकरण समारोह संपन्न हुआ और उसके बाद ढोल बजने लगे। हम प्रतिभागियों के लिए आरक्षित गैलरी से हम द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा को उस स्थान पर खड़े देख सकते थे जहाँ यज्ञ हुआ था। मैं और मेरे भाई अकेले थे। हस्तिनापुरा में अध्ययन करने आए सभी युवक कौरवों के साथ थे। उनके लिए निर्धारित स्थान हमारे दाहिनी ओर था। स्त्रियाँ उनके ठीक पीछे थीं और माताजी भी उनमें से एक थीं। स्त्रियों के बैठने की जगह के ऊपर बनी सबसे ऊँची गैलरी चाचा धृतराष्ट्र और उनके दो मंत्रियों के लिए थी, जो उन्हें हर क्षण की जानकारी देते थे। जैसे ही दुर्योधन और उसका दल यज्ञ स्थल के पीछे से अखाड़े में आया, तुरही बज उठी, संभवतः किसी पूर्व-निर्धारित संकेत के उत्तर में। वे सभी ऐसे सजे हुए थे मानो स्वयंवर में जा रहे हों, चमकदार रेशमी वस्त्र और दमकते आभूषणों से सजे हुए। नकुल और सहदेव उनके वस्त्रों की कीमत का आकलन करने लगे।
मेरी निगाहें महिलाओं के समूह में माँ को ढूँढ़ रही थीं और आखिरकार मुझे वो मिल गईं। वो पहली पंक्ति में ही थीं। उनके एक तरफ विदुर की पत्नी पार्श्ववती थीं और दूसरी तरफ युयुत्सु की माँ, एक शूद्र महिला, जो हमारी चाची की गर्भावस्था के दौरान उनकी देखभाल करने वाली सेविकाओं में से एक थीं। जब मेरे चाचा ने उनसे एक संतान को जन्म दिया, तो उन्होंने उन्हें एक घर दिया और बच्चे को राजा को 'पिता' कहने का अधिकार दिया।
युयुत्सु कौरवों की टुकड़ी के बिल्कुल पीछे साधारण कपड़े पहने खड़ा था। ढोल फिर से बज उठे। तुरहियों की आवाज़ शंखों और ढोलों की गूंज में घुलमिल गई, जब हमारे चाचा ने अपने दोनों ओर खड़े संजय और विदुर के कंधों पर हाथ रखा और दर्शक दीर्घा की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे।

द्रोणाचार्य मेरी ओर तेज़ी से आए। ‘उन्हें दिखाओ कि गदा से युद्ध कैसे किया जाता है। तुम्हारे बाद कई और लोग तीरंदाजी में अपने कौशल का प्रदर्शन करने आए हैं। गदा से युद्ध करो, गदा से!’
मैंने उसकी ओर देखा। पसीने से तरबतर, उसका पवित्र धागा उसके सांवले शरीर से चिपका हुआ था। उसकी भूरी दाढ़ी से पसीने की बूँदें टपक रही थीं, मानो नीचे गिरने को तैयार हों।
मैंने पहले ही आकाश में पतंगों को चक्कर लगाते देखा था, जो बलि स्थल पर खून की गंध से आकर्षित होकर उड़ रही थीं। मैंने तय कर लिया था कि अगर उनमें से कोई एक पतंग इतनी ऊंचाई तक नीचे आ जाए जहाँ से मैं तीर चला सकूँ, तो मैं उसे मार गिराऊँगा। मैंने यह भी इरादा किया था कि सभी कार्यक्रम समाप्त होने के बाद जब मैं सीढ़ियाँ चढ़ूँगा, तो मैं माँ को औपचारिक रूप से प्रणाम करूँगा।
‘बेवकूफ, तुम समय बर्बाद कर रहे हो।’
मैंने अपना धनुष और बाण विशोका को लौटा दिया और क्रोध से उबलते हुए रथ के फर्श से गदा उठा ली। मैंने लोहे की कीलों से जड़ी गदा को हवा में घुमाया और द्रोणाचार्य से, अपने क्रोध को छिपाते हुए, पूछा, 'मैं किसके विरुद्ध अपनी कुशलता का प्रदर्शन करूँ?'
मैं वास्तव में किसी शत्रु की प्रतीक्षा नहीं कर रहा था, लेकिन मैंने कौरवों की चीखें और चिल्लाहट सुनीं और दुर्योधन को खड़े होते देखा। दर्शकों में उत्सुकता भरी चीखें गूंज उठीं, जिन्होंने कौरवों में सबसे बड़े और पांडवों में दूसरे स्थान पर रहने वाले दुर्योधन के बीच होने वाली भीषण प्रतिद्वंद्विता का पहले ही अनुमान लगा लिया था। दुर्योधन ने अपने वस्त्र और आभूषण उतारकर दुस्साना को दे दिए और अखाड़े में कूद पड़ा।
तीन सेवक गदाएँ लेकर उसके सामने कतार में खड़े हो गए। दुर्योधन ने एक गदा उठाई, उसका वज़न परखने के लिए उसे उछाला, उसे अस्वीकार कर दिया और दूसरी स्वीकार कर ली। फिर वह धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ा। द्रोण और सेवक पीछे हट गए। मुझे कोई तैयारी नहीं करनी थी, न ही मैंने कोई आभूषण पहने थे जो बाधा उत्पन्न कर सकें।
दुर्योधन मेरे पास आकर बोला, 'दर्शकों को निराश नहीं होना चाहिए।' दुर्योधन मुझसे डेढ़ उंगली लंबा था, इसलिए उसका शरीर मेरे शरीर से थोड़ा कम भारी-भरकम दिखता था। मैं जानता था कि उसकी ताकत को कम नहीं आंका जा

सकता। वह मुझे हराने और इन सभी दर्शकों के सामने खुद को विजेता घोषित करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करेगा। लेकिन एक राज़ था जो उसे नहीं पता था। यह मेरे लिए सिर्फ एक प्रतियोगिता नहीं थी। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि प्रमाणकोटी की गहराई में असहाय रूप से डूबने का वह भयानक अनुभव मुझे फिर कभी न झेलना पड़े। यहाँ, मेरे सामने, एक ऐसा मैदान था जहाँ मैं दिन दहाड़े, हजारों लोगों के सामने अपना बदला ले सकता था।
जातक मुद्रा में खड़े होकर दुर्योधन ने दोहराया, 'मूर्ख, देखने वालों को निराश नहीं होना चाहिए।'
मैंने सहजता से अपनी वालिता मुद्रा धारण की। उसने अपना गदा घुमाया, अपनी स्थिति बदली और एक नई मुद्रा, प्रत्यालीदा, अपना ली। उसके प्रहार को रोकने के बजाय, मैं पीछे की ओर झुक गया और उसका गदा मेरे शरीर को छूते हुए निकल गया।
भीड़ की खामोशी मेरे कानों में गूंज उठी। मैंने दूसरे वार को रोक दिया। उसकी भुजाओं की ताकत का अंदाजा लगाकर मैंने हमला किया। उसे पता चला कि प्रशिक्षण सत्रों के दौरान उसने मूर्ख भीम की गदा चलाने की गति के बारे में जो भी धारणाएँ बनाई थीं, वे सब गलत थीं। वह पूरी तरह से हैरान रह गया। जितनी तेज़ी से वह पीछे हटा, उतनी ही तेज़ी से मैं आगे बढ़ा और उस पर हमला करता रहा। लोहे की कीलों से जड़ी हमारी गदाओं के टकराने से चिंगारियाँ उड़ने लगीं।
और जैसे ही वह और पीछे हटने लगा, मैंने उसके अहंकार को ठेस पहुंचाने के लिए शब्द ढूंढ लिए, 'कायर! यह लड़ाई है, नाच नहीं!'
मुझे पता था कि उसकी ताकत धीरे-धीरे कम हो रही है। पसीना झाड़ते हुए वह लड़ता रहा और कुछ बुदबुदाया, उसकी आवाज़ विकृत और भयानक लग रही थी। मेरे बदले का पल और करीब आ रहा था। अपने गदा को वापस खींचने और फिर उठाने के बीच वह अपनी पसलियों के बाईं ओर की रक्षा करना भूल जाता था। मेरे मन में आया कि अगर मैं अपने पैरों की चाल को अचानक बदल दूं, तो शायद मैं अपनी गदा उसकी पसलियों के बीच किसी कमजोर जगह पर मार सकूं। मुझे उसके और कमजोर होने का इंतजार करना था। मैं लड़ता रहा, इस विश्वास के साथ कि मेरा मौका जल्द ही आएगा।
कभी-कभी, जब उसे एहसास होता कि दर्शकों के सामने उसकी प्रतिष्ठा कम हो रही है, तो वह नए जोश के साथ मुझ पर हमला करता। अगर मैं प्रमाणकोटी को लगातार

ध्यान में रखता, तो मुझे पूरा विश्वास था कि मैं सूर्यास्त तक बिना थके लड़ सकता था। उसके हाथों की गति धीमी होती जा रही थी। मेरे हाथों में गदा किसी जीवित प्राणी की तरह घूम रही थी, मानो समय के उस क्षण की लालसा से तलाश रही हो जब वह प्रहार करके मार सके।
मेरे दिल की खुशी मेरे चेहरे पर जरूर झलक रही थी, क्योंकि मैंने उसकी आंखों में डर की झलक देखी।
‘यह प्रमाणकोटी की स्मृति में है।’
‘रुको!’ कई आवाजें एक साथ चिल्लाईं।
जिस क्षण जीत मेरे बिल्कुल करीब थी, मुझे अपने हाथ पीछे खींचने पड़े।
‘रुको, रुको!’ मैं आवाजों से घिर गया था।
अश्वत्थामा मेरे सामने उछला, उसने दुर्योधन को ढक लिया और गरजकर बोला, 'भीमसेन, रुको!'
मैंने धीरे-धीरे अपना गदा नीचे किया।
तब तक द्रोणाचार्य और कृपाचार्य मेरे सामने आ चुके थे। उन्होंने कहा, 'यह कोई युद्ध नहीं, बल्कि कौशल का प्रदर्शन है।'
अंत में पहुंचे बुजुर्ग शुक्राचार्य ने मुस्कुराते हुए कहा, 'बस करो। यह काफी से भी ज्यादा है।'
जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। सभी दर्शक खड़े हो गए थे।
मैं अपनी सीटों की ओर वापस चलने लगा और मुझे भीड़ की हल्की-हल्की आवाज़ें सुनाई दीं। जैसे सरकंडों की सरसराहट जो हवा के झोंके से झुकते हैं और फिर सीधे हो जाते हैं।

6

जब मैं सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, तब अर्जुन नीचे उतर रहा था। हालाँकि वह बहुत गंभीर दिख रहा था, फिर भी उसने मुस्कुराते हुए धीरे से कहा: 'हमारे ब्राह्मण शिक्षक कितने मूर्ख हैं!'
मैं युधिष्ठिर के पास अपनी सीट पर वापस आ गया। उनके चेहरे से मुझे समझ आ गया कि वे मुझसे कई सवाल पूछना चाहते हैं। ढोल और तुरही बंद हो गए और हमें द्रोणाचार्य की आवाज सुनाई दी। वे दर्शकों के सामने एक प्रतिभागी का परिचय दे रहे थे, और उन्हें संकेत दे रहे थे कि आगे एक और भी शानदार प्रदर्शन होने वाला है। “यह मेरा प्रिय शिष्य है, जो मुझे मेरे पुत्र से भी अधिक प्रिय है – अर्जुन, जिसने सभी शस्त्रों को समान कुशलता से चलाना सीख लिया है।”
चमड़े के दस्ताने और सोने के तारों से जड़ा कवच पहने अर्जुन अखाड़े के केंद्र की ओर चल पड़े। ऐसा लग रहा था मानो हर कदम पर सभी युवतियों की निगाहें उन पर नीले फूल बरसा रही हों। हम चारों ने एक-दूसरे को देखा। मेरे मन में, जो अब तक क्रोध से भरा हुआ था, गर्व भर गया और वह फिर से शांत हो गया।
युधिष्ठिर ने बस इतना कहकर संतोष कर लिया कि मैंने आवश्यकता से अधिक समय ले लिया था।
प्रणाम समाप्त होने के बाद, अर्जुन ने अपने बाणों की शक्ति और उनकी आश्चर्यजनक गति का प्रदर्शन किया। उन्होंने यह साबित कर दिया कि वे अपने दोनों हाथों का समान कुशलता से उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने धातु के सूअर के मुँह में पाँच बाण और बैल के सींग पर इक्कीस बाण चलाए। प्रत्येक नया बाण पिछले बाण की नोक को छूता हुआ चिंगारियाँ बिखेरता था। दर्शक अचंभित रह गए। उसी समय एक और धनुर्धारी अखाड़े में प्रवेश कर गया। वह सारथी का पुत्र कर्ण था।
‘अर्जुन, अपना अहंकार छोड़ो!’
किसी ने भी नए योद्धा का परिचय नहीं कराया। महान धनुर्धर अर्जुन असहाय होकर देखते रहे जब कर्ण ने एक-एक करके बाणों को सूअर के मुँह में ही चीर डाला। उसके बाद उन्होंने बाणों से ज़मीन पर स्वास्तिक बनाया। हवा में ऊपर भेजे जाने के बाद सीधे नीचे गिर रहे बाणों पर निशाना साधते हुए उन्होंने

उन्हें फिर से ऊपर की ओर निर्देशित किया। उन्होंने बाणों को हवा में इस तरह नचाया कि वे ज़मीन को छू भी न पाए।
भीड़ विस्मय से दहाड़ उठी।
दुर्योधन, जो मानो अपना होश खो बैठा था, चिल्लाया: 'कर्ण, कुरु राज्य और मैं आपके समक्ष नमन करते हैं!'
युधिष्ठिर ने क्रोधित होकर पूछा, 'सारथी को प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति किसने दी?'
कर्ण ने शिक्षकों को इतनी ऊँची आवाज़ में संबोधित किया कि सभी लोग सुन सकें, “मुझे अर्जुन के साथ द्वंद्वयुद्ध करने का अवसर प्रदान करें।” मुझे एहसास हुआ कि स्थिति असहज होती जा रही है, इसलिए मैं अखाड़े की ओर नीचे गया।
अर्जुन ने अनचाहे प्रतिभागियों के भाग्य के बारे में कुछ कहा। उनके पास जाकर मैंने देखा कि उनका साहस कमजोर पड़ रहा था।
दुर्योधन और उसके साथी दौड़कर आए, कर्ण को गले लगाया और उसकी कवच को बांधने में उसकी मदद की।
यह जानते हुए कि उसके पीछे हटने का कोई औचित्य नहीं था, अर्जुन ने मेरी ओर देखा। पीछे से अपना कवच कसते हुए मैंने उससे कहा, 'सारथी का पुत्र किसी भी प्रकार की दया का पात्र नहीं है।'
भीष्मचार्य, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य हमारे पास आए। उन्होंने कर्ण की ओर देखा, जो तैयार खड़ा था, और अर्जुन की ओर देखा, जो ऐसा लग रहा था कि मेरे द्वारा उसे तैयार किए जाने की प्रतीक्षा कर रहा है।
अर्जुन के बाएं कंधे के ऊपर से गर्दन झुकाकर मैंने कृपाचार्य से पूछा, 'उनसे पूछिए कि क्या कुंती के पुत्रों में से कोई चलेगा? मुझे अपना हिसाब चुकता करना है।'
अर्जुन ने कहा, 'नहीं, मैं उसे वहीं भेजूंगा जहां वह जाने का हकदार है।' मैंने विनती की, 'मुझे जाने दो। वह जो चाहे हथियार चुन सकता है।' कृपाचार्य, जो इस टकराव को टालने का कोई कारण न मिलने के कारण परेशान दिख रहे थे, अचानक ऐसे आगे आए मानो उन्हें कोई रास्ता मिल गया हो।
‘कुंती के सबसे छोटे पुत्र और पांडु के पुत्र अर्जुन, कुरु वंश में जन्मे एक राजकुमार हैं।’
कर्ण ने शिक्षक की ओर रुख किया, उसकी आँखों में आग सी जल रही थी।

कृपाचार्य ने अपनी आवाज बुलंद करते हुए कहा, ‘इसलिए द्वंद्वयुद्ध शुरू होने से पहले हमें प्रतिद्वंद्वी के गोत्र और उसके पिता का नाम जानना आवश्यक है। क्षत्रिय युवक उन लोगों से नहीं लड़ते जिनका गोत्र प्रतिष्ठा में उनके गोत्र के बराबर न हो।’
कर्ण का चेहरा, जो वीरता से दमक रहा था, अचानक राख जैसा हो गया।
मैंने फिर कहा, 'मुझे ये सब जानने की जरूरत नहीं है। बस वो हथियार जो वो चुनता है...'
दुर्योधन क्रोधित होकर कृपाचार्य की ओर दौड़ा। ‘हे गुरु, क्या ऐसा कोई नियम नहीं है कि किसी योद्धा के कुल की जाँच-पड़ताल करना आवश्यक नहीं है?’ ऊँची आवाज में उसने सबके सामने घोषणा की, ‘इस क्षण से कर्ण राजा है। मैं अपने पिता से प्राप्त अंग राज्य कर्ण को भेंट करता हूँ।’ वह चिल्लाया, ‘पुजारी कहाँ हैं? मुझे यकीन है कि उनमें से कोई भी नहीं आया है, क्योंकि आज यहाँ दान नहीं दिया जा रहा है। क्या यहाँ कोई है?’
कुछ बूढ़े पुजारी पानी के घड़े लेकर दौड़ पड़े।
दुर्योधन ने कर्ण के कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'परंपरा के अनुसार उत्सव बाद में होंगे। अभी इतना ही काफी है।'
ब्राह्मणों ने मंत्रों का जाप किया, कर्ण के सिर पर तीन घड़े जल उंडेला और राज्याभिषेक किया। कर्ण ने दुर्योधन को गले लगाया।
दुर्योधन ने अहंकारपूर्वक सभी गुरुओं को सुनाते हुए कहा, 'अंग के राजा, मेरी अटूट मित्रता आपके साथ है।'
दर्शकों के बीच अचानक उपहास भरी हंसी गूंज उठी। एक बूढ़ा आदमी मैदान में आ रहा था। हम सभी को लगा कि वह कोई ऐसा दर्शक है जिसका दिमाग ठीक नहीं है। पसीने से तरबतर, अपने ढीले कपड़ों को हाथों में समेटे हुए, बूढ़ा आदमी लंगड़ाते हुए अंदर आया और चिल्लाया, 'मेरा कर्ण कहाँ है?'
कर्ण, जो तब तक आकाश के समान लंबा खड़ा था, मानो सिकुड़ गया हो। वह जल्दी से बूढ़े के पास गया। 'पिताजी, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?'
तो यह थे सारथी, अधिरथ।
कर्ण सिर झुकाए उसके सामने खड़ा था। बूढ़ा सारथी, उसके कंधों के ठीक नीचे लगे छल्लों को पकड़े हुए, उससे कुछ कह रहा था।
मुझे अब गुस्सा या चिंता नहीं हो रही थी। मुझे कर्ण पर दया आ रही थी। अधिरथ ने ज़रूर किसी से सुना होगा कि उसका बेटा खतरे में है और उसे ढूंढने के लिए

दौड़ पड़ा होगा। मुझे नहीं पता कि अचानक मुझे सारथी के बेटे के लिए इतनी सहानुभूति क्यों महसूस हुई, जो राजा बनते ही असहाय हो गया था। लेकिन मुझे दूर से नाग की आवाज़ सुनाई दी: अगर दुश्मन के प्रति दया दिखाई जाए, तो वह और भी शक्तिशाली हो जाता है।
जंगल का नियम है कि शिकार को वहीं मार डालो जहाँ वह गिरता है। घायल जानवर को भागने नहीं देना चाहिए। हंसते हुए मैंने सबको सुनाते हुए चिल्लाकर कहा, 'हथियार तुम्हें शोभा नहीं देते। तुम्हें वह चाबुक चलाना चाहिए जो तुम्हारे खानदानी पेशे की पहचान है।'
मुझे पता था कि मैं सबके सामने खुद को नीचा दिखा रहा हूँ। उस दिन प्रमाणकोटी में उन तीनों ने, जिनमें यह आदमी भी शामिल था, मेरे लिए जो जाल बिछाया था, उसका मकसद दर्शकों से वाहवाही बटोरना तो नहीं था, था ना? मैं कोई भगवान तो था नहीं कि अपने शत्रु को भी वरदान दे दूँ।
कर्ण फुफकारते हुए, सिर से पैर तक कांपते हुए मेरी ओर आया।
मैंने दोहराया, 'मैं किसी से भी लड़ूंगा, चाहे वह नीच जाति का ही क्यों न हो। अगर मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूं, तो तुम्हारा स्वागत है!' दुर्योधन ने मेरी ओर तर्जनी उंगली करके चिल्लाते हुए कहा, “क्या तुम कर्ण को देखकर यकीन कर सकते हो कि यह तेजस्वी युवक एक सारथी की संतान है? भीम, योद्धाओं और नदियों के स्रोत की खोज कोई नहीं करता।” उसने गुरुओं की ओर ऐसे देखा मानो उनसे यही उम्मीद कर रहा हो कि वे उसकी बात सही कहेंगे। फिर वह मेरे पास आकर बोला, “न ही लोग यह पूछते हैं कि नपुंसक पांडु को संतान कैसे हुई।”
मैंने द्रोण के पुत्र को शाप दिया, जिसने दुर्योधन की बाईं ओर की छठी पसली पर निशाना साधते हुए मेरे उठाए हुए हाथ को पकड़ लिया।
ढोल फिर से बज उठे। द्रोणाचार्य ने अष्टगिरि पर्वत पर मंद पड़ते प्रकाश को देखा और कहा, 'कला प्रदर्शन समाप्त हो गया है। सूर्य अस्त हो गया है।' अखाड़े में अभी भी द्वंद्वयुद्ध के लिए पर्याप्त रोशनी थी। दुर्योधन, जो मदमस्त हाथी की तरह आक्रामक मुद्रा में खड़ा था, ने कर्ण के कंधे पर हाथ रखा और पत्थर की सीढ़ियों की ओर चल पड़ा।
सब लोग वहां से हटने लगे, लेकिन मैं वहीं खड़ी रही। नकुल अर्जुन के साथ चला गया। सहदेव दौड़कर मेरे पास आया और बोला, 'माता बेहोश होकर गिर पड़ी हैं।'

माता को अवश्य ही यह विश्वास हो गया होगा कि अर्जुन पर कोई खतरा मंडरा रहा है।
वह कब बेहोश हुई थी? दुर्योधन ने हमारे पितृत्व के बारे में जो संकेत दिए थे, वे महिलाओं की गैलरी में किसी ने नहीं सुने होंगे।
कोई बात नहीं, अब वह ठीक हो गई है।
महल लौटने के बजाय, मैं धीरे-धीरे गंगा की ओर चल पड़ी। मैंने अपनी शाम की प्रार्थना की और वहीं रुककर बहते पानी की धीमी आवाज़ सुनती रही। हवा चली और लहरों को रौंदने लगी। हवा में पराग की मदहोश कर देने वाली खुशबू थी, मानो पवनदेव ने मेनका के वस्त्रों को फड़फड़ाने और उस नग्नता को प्रकट करने के लिए भेजा हो, जिसकी ऋषि कामना करते। मुझे लगा कि मेरे बचपन की वो शामें, जब मैं सूर्यास्त के समय इस सुनसान नदी किनारे आकर हवा की फुसफुसाहट सुनती थी, अब बहुत दूर हो गई हैं।
तूफानों के देवता, धर्मराज, इंद्र – इन सभी ने दुर्योधन की बातें अवश्य सुनी होंगी। मुझे आश्चर्य हुआ कि उन पादरियों में से किसी ने विरोध क्यों नहीं किया। तूफान गर्जना नहीं कर रहा था। रात के बादलों में बिजली और गरज ने अपनी तलवारें नहीं चमकाई थीं। भगवान धर्म के अदृश्य हाथ ने युधिष्ठिर की भुजाओं में कर्ण को मारने के लिए हथियार नहीं रखे थे।
इस विचार से खुद को दिलासा देने की कोशिश करते हुए कि देवता अपना बदला लेने के लिए एक और अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे, मैं अंधेरे में महल की ओर वापस चल पड़ा।
दिन भर की घटनाओं को मनाने के लिए रात में कोई उत्सव नहीं मनाया गया। मेरे सारथी विशोका मेरी सेवा में आए और जब मैं कपड़े बदल रहा था, तब उन्होंने कहा, 'सब कुछ ठीक रहा। कोई पराजित नहीं हुआ और न ही कोई विजयी हुआ।'
जब वह जाने लगा, तो मैंने उससे थोड़ी शराब भेजने के लिए कहा।
नौकर मेरा खाना लेकर चले गए। मुझे लगा विशोका मेरी अजीबोगरीब विनती भूल गई होगी। तभी दरवाजे के बाहर पायल की झंकार सुनाई दी। एक नौकरानी चांदी की थाली लेकर अंदर आई। उसने झुककर सम्मानपूर्वक मेरे सामने एक बर्तन रखा और उसके बालों से तिल के तेल की खुशबू फैल गई, जिसमें मंजिष्ठम जड़ी बूटी की महक थी।

मुझे लगा कि शायद उसे अपनी निराशा को दूर करने के लिए इस तरह की छोटी-मोटी जीत की जरूरत थी।
मुझे देश भर में घूमना होगा, सामंतों और कुलीन लोगों से मिलना-जुलना होगा। चाचा विदुर ने मुझे बताया है कि मुझे राजा बनाने की मांग जनता की ओर से ही आनी चाहिए।
मैंने सहमति जताते हुए हल्की सी आवाज़ निकाली। फिर मुझे याद आया कि मुझे पूछना था, 'माँ कैसी हैं? मैंने उन्हें नहीं देखा।'
‘वह बेहोश हो गई, बस इतना ही। जैसे ही उसे पता चला कि अर्जुन को कोई नुकसान नहीं हुआ है, वह ठीक हो गई।’
मेरे मन में उसके लिए एक और सवाल था। क्या उसके पिता, भगवान धर्म ने कभी उससे संपर्क किया था, कम से कम उस समय जब वह पूरी तरह अकेला था? लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि यह सवाल पूछने का सही समय आया है या नहीं, इसलिए मैं चुप रहा और खेल में उससे हारने के अपने काम में लग गया।
‘तुम बिल्कुल मूर्ख हो। तुम फिर हार गए!’ उसने कहा और खेलना बंद कर दिया। मैं बाहर निकला। मैं गलियारे से होते हुए आंगन में उस दरवाजे से अंदर गया, जहां पत्थर के लैंप धुआं छोड़ रहे थे और टिमटिमा रहे थे।
सभी महल सो रहे थे। हाथियों के बाड़ों से ताड़ के पत्तों को फाड़ने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। आकाश के उत्तरी भाग में मुझे धुंधली सी सप्तऋषि और अरुंधति दिखाई दे रही थीं। वह एक ठंडी रात थी और हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी।
मैं खुरदुरे पत्थरों से बने एक चबूतरे पर बैठ गया, फिर उस पर लेट गया। एक परछाई जैसी आकृति मेरी ओर बढ़ी और मैं डर के मारे उछल पड़ा, मुझे लगा कि वह कोई दुश्मन है।
'कौन है भाई?'
वह एक महिला थी - नौकरानी, जिसने अपने पायल उतार दिए और चुपचाप मेरे पास आ गई। वही नौकरानी जो थोड़ी देर पहले मेरे लिए शराब लाई थी।
आज मैं अपने पहले दुश्मन को मारने का जश्न नहीं मना पाया था। और इस औरत को नहीं पता था कि वो पहली ऐसी औरत होगी जिसके साथ मेरा ऐसा अनुभव होगा। मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने करीब खींच लिया, मानो मैं ये सब करता आ रहा हूँ।
'आपका क्या नाम है?'

उसने मुझे एक नाम दिया, एक साधारण सा नाम जिसे मैं फिर कभी याद नहीं रख सका। वह पहली महिला थी जो मुझे ढूंढते हुए आई थी। स्वागत के शुरुआती स्पर्शों के बाद, वह बदल सी गई। उसके नग्न शरीर की लहरें और दरारें मुझे घेरने लगीं और वह एक जंगली लता की तरह मेरे चारों ओर लिपट गई। उसने मेरे खुरदुरे हाथों और अनुभवहीन उंगलियों को अपने शरीर की घाटियों और उभारों में ले गई।
लेकिन मुझमें कोई उत्तेजना नहीं थी। आखिरकार, एक दबी हुई कंपकंपी के साथ, वह मेरे सामने से हट गई, मानो मैं एक ठंडी ग्रेनाइट की मूर्ति जैसा था। उसने मेरी तरफ देखा, फिर मुड़कर चली गई और खुले दरवाजे के बाहर अंधेरे में विलीन हो गई।
दूर जलते हुए पत्थर के दीयों को निहारते हुए मैंने खुद से पूछा, 'क्या पांडु की परंपरा इस पीढ़ी में भी जारी रही है और इसने पौरुषहीन एक विशालकाय को जन्म दिया है?'
मैं अपने कमरे में वापस गया और बर्तन में बची हुई शराब खत्म कर दी। मेरे मुंह में एक कड़वापन सा छा गया। मैं लकड़ी के फर्श पर लेट गया, नौकरों द्वारा मेरे लिए बिछाई गई दर्भा घास की गद्दी के पीछे।
शराब का असर शुरू हो चुका था। नौकरानी के बालों की महक मेरे सीने से चिपकी हुई सी महसूस हो रही थी। नींद में डूबते हुए भी, उस दिन कला प्रदर्शन के दौरान घटी घटनाएं मेरे दिमाग में साफ-साफ छपी हुई थीं।
मुझे विशोका की कही बात याद आ गई। कोई पराजित नहीं हुआ, न ही कोई विजयी हुआ।

□□□ 3

□□ □□

1

कटी हुई जौ के खेत पहाड़ों की ढलानों तक फैले हुए थे। फाल्गुन का महीना था, इसलिए गर्मी कम हो गई थी। हस्तिनापुरा को पीछे छोड़ते ही मेरा मन हल्का हो गया।
पर्वत की ढलान पर बसे एक छोटे से कस्बे वारनावता पहुँचते ही मेरा उत्साह बढ़ता चला गया। हस्तिनापुरा में मुझे हमेशा यह डर सताता रहता था कि हर जगह दुश्मन घात लगाए बैठे हैं। यहाँ मुझे डरने की कोई ज़रूरत नहीं थी। उत्सव स्थल के पास हमारे लिए लगाए गए तम्बुओं में उपहारों से लदे वैश्य व्यापारी आने लगे। शूद्र छोटे-मोटे काम करने के लिए आ गए। और ब्राह्मण हमें आशीर्वाद देने और भिक्षा लेने के लिए आए।
युधिष्ठिर ने ब्राह्मणों को उनके हक के उपहार दिए: घी के ऊपर सोने के सिक्के और अंजीर की लकड़ी से बनी थालियों में अनाज। उनके मामा धृतराष्ट्र ने उन्हें निर्देश दिया था, 'उन्हें वे सभी उपहार दो जो उन्हें मिलने चाहिए। उत्सव का आनंद लो। मैं धन और अनाज लेकर सेवकों को आगे भेजूंगा।' किसान आमतौर पर साल में एक बार किसी त्योहार को मनाने के लिए यहाँ इकट्ठा होते थे। जैसे ही लोग हमारे तम्बुओं के आसपास जमा होने लगे, मुझे लगा कि हमारा आगमन इस इंद्र उत्सव से कहीं अधिक महत्वपूर्ण घटना है, जो मेरी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। किसान खच्चर और घोड़े बेचने या बदलने आए थे। हाथी ज़्यादा नहीं थे और जो थोड़े-बहुत थे, उनमें कुलीनता की झलक नहीं थी। गाँवों से आए लोगों ने अपने तंबू गाड़े और दस दिन तक वहीं रहकर खरीद-फरोख्त की। संगीतकारों के समूह उनका मनोरंजन करने आए थे। मद्रा क्षेत्र से कई वेश्याएँ आई थीं। वैश्य बाज़ारों में मुख्य रूप से पहाड़ों से लाए गए औज़ार, कपड़े और औषधीय पौधे मिलते थे।
उत्सव क्षेत्र में घूमते हुए, मैं सचमुच आश्चर्यचकित रह गया – क्या यह वही भव्य उत्सव था जिसका वर्णन चाचा ने एक ऐसे तमाशे के रूप में किया था जिसे लोग जीवन में कम से कम एक बार देखने के लिए सौभाग्यशाली होते हैं? एकमात्र आयोजन जो मुझे आनंददायक लगा, वह दूसरे दिन आयोजित हाथियों की दौड़ थी। पहले दिन मैंने एक बूढ़े ब्राह्मण को लोगों के समूह में बैठे हुए देखा, जो वेश्याओं से भिक्षा ले रहे थे। उन्होंने भिक्षा लेकर उन्हें आशीर्वाद

दिया। मैंने युधिष्ठिर से पूछा, ‘क्या ब्राह्मणों को वेश्याओं से भिक्षा लेने की अनुमति है?’
'जी हां, वे हैं। द्विज लोग उपहार देने वालों को आशीर्वाद देते हैं। यहां उपहार देने वाली इन महिलाओं ने प्रेम के देवता कामदेव को प्रसन्न करने के लिए कोई अनुष्ठान करने की प्रतिज्ञा अवश्य की होगी।'
मैंने मद्रा क्षेत्र की वेश्याओं के बारे में सुना था। वे खूब शराब पीती थीं और गंदी गालियाँ बकती थीं। लेकिन यहाँ कतार में खड़ी ये औरतें, जिनके हाथों में फूलों, अनाज और पैसों से भरी थालियाँ थीं, उपहार के रूप में देने के लिए, उनमें एक अलग ही तरह की सादगी भरी सुंदरता थी।
चाचा ने महल से पुरोचना नाम के एक सेवक को केवल हमें उत्सव स्थल घुमाने के लिए भेजा था।
मेरे सभी भाई यह जानकर निराश हो गए कि उत्सव इतना साधारण था, और सहदेव ने भी यही बात कही। चाचा से वरणवता के बारे में सुनने के बाद युधिष्ठिर ने ही सबसे पहले वरणवता आने की इच्छा व्यक्त की थी।
नकुला ने मां से कहा, 'बस बहुत हो गया। हम किसान नहीं हैं। चलो राजधानी वापस चलते हैं।'
माँ ने विनम्रता से पूछा, मानो यह कोई मामूली बात हो, 'जो लोग निर्वासित हो चुके हैं वे महल में वापस कैसे जा सकते हैं?'
आश्चर्यचकित होकर अर्जुन ने सोचा कि माँ मजाक कर रही हैं, 'निर्वासित! आप क्या कह रही हैं? हमें किसी ने निर्वासित नहीं किया है।'
जब कौरवों ने वारणावत की सुंदरता और भव्यता का हर संभव तरीके से वर्णन किया, तो क्या आप में से किसी ने कभी सोचा कि वे इतनी प्रशंसा क्यों कर रहे थे? वे चाहते थे कि आप कहें, “मामाजी, हम वहाँ जाना चाहते हैं।” इस तरह, बाद में कोई उन्हें दोष नहीं दे पाएगा, उन पर हमें यहाँ भेजने का आरोप नहीं लगा पाएगा। जब आप यहाँ आने के लिए इतने उत्सुक थे, मेरे बेटे, तो मामाजी का काम आसान हो गया।
माँ की नज़र पड़ते ही मेरा बड़ा भाई सहम गया। ‘लेकिन इसमें क्या गलत था? क्या आपने नहीं देखा, माँ, कि उन्होंने हमें ब्राह्मणों को उपहार देने के लिए पर्याप्त धन भी दिया?’

मां ने हल्की सी मुस्कान दी। 'हां, उन्होंने किया। अब राजकोष और मंत्रियों पर किसका नियंत्रण है? क्या आपको पता है कि उन्होंने कितना कम खर्च किया है?'
युधिष्ठिर ने देखा कि हम सब उन्हें प्रश्नवाचक दृष्टि से देख रहे हैं। कुछ बुदबुदाते हुए वे जल्दी से तम्बू से बाहर निकल गए।
हमने देखा कि पुरोचना द्वार पर हाथ जोड़कर आदरपूर्वक खड़े थे। उन्होंने हमें बताया कि शिकारियों के लिए बहुत पहले बनाया गया एक पुराना महल मरम्मत कराकर हमारे लिए आरामदायक बना दिया गया है। हम जब चाहें उसमें रह सकते हैं।
युधिष्ठिर आंखें मलते हुए अंदर आए। मां की बातों ने हम सबको बेचैन कर दिया था। वो सही थीं। चाचा और उनके मंत्रियों के पास अचानक पांडु के बेटों पर इतना स्नेह दिखाने और उन्हें उत्सव में भेजने का कोई खास कारण नहीं था। पहले यह बात न समझ पाना हमारी मूर्खता थी। हमारी मां, जो कभी महिलाओं के कमरे से बाहर नहीं निकली थीं, वाकई बहुत समझदार थीं। मैंने उन्हें आदर से देखा, जब वो ज़मीन पर बैठी थीं, उनके सफेद ऊपरी वस्त्र ने उनके बालों की मांग को छुपा रखा था। भीड़ में उन्हें देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वो एक रानी हैं। उनका चेहरा कितनी जल्दी झुर्रियों से भर गया था…
पहाड़ी की ढलान पर एकांत में खड़े उस घर तक हम तब पहुँचे जब बढ़ई और राजमिस्त्री उसकी मरम्मत और चमकाने के बाद जा चुके थे। वह छोटा सा महल पर्वत श्रृंखला के ठीक बीचोंबीच जंगल को काटकर समतल किए गए एक पठार जैसे मैदान पर बना था। अंदर प्रवेश करते ही हमें नई लकड़ी और लाख की खुशबू महसूस हुई।
वहाँ कोई परिचारक या नौकरानी नहीं थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि माँ ने संकेत दिया था कि यह एक निर्वासन है। लेकिन अधेड़ उम्र के, गोरे रंग के पुरोचना, जिनके माथे के मध्य भाग तक जलने का निशान था, व्यस्तता से इधर-उधर भागते रहे, उनका हावभाव स्पष्ट रूप से कह रहा था: मैं यहाँ हूँ, आपकी हर ज़रूरत पूरी करने के लिए। उन्होंने विनम्रता से हमारे निर्देशों को सुना। मुझे हवा में मंडराते खतरे का आभास हुआ, मेरी हड्डियों और नसों में इसके अस्पष्ट संकेत महसूस हुए और मैंने अर्जुन को भी इस बारे में संकेत दिया। ‘देखो, हम अपने धनुष-बाण और अन्य हथियारों से लैस होकर आए हैं। हम पांच लोग हैं, हमें डरने की कोई बात नहीं है,’ उसने जवाब दिया।

युधिष्ठिर ने भी हमें आश्वस्त करने की कोशिश की और कहा कि माता जी को भ्रम हो रहा है। रात को पुरोचन मुख्य द्वार के बाहर पहरा देने के लिए सो गया। उसे पूरा विश्वास था कि दूर स्थित वारणावता पर्वत की तलहटी में कोई शत्रु हमें ढूंढने नहीं आएगा।
मैंने पीछे के दरवाजे की जांच की। बाहर की तरफ तांबे की चादरें इस तरह ठोंकी गई थीं कि उसे खोला नहीं जा सकता था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी - घर एक पहाड़ी ढलान पर स्थित था और चूंकि वहां पहरा देने के लिए कोई नौकर नहीं थे, इसलिए पीछे से बाहर से सुरक्षा करना सबसे अच्छा था।
उस रात हमें नींद नहीं आई। हम सब साथ बैठे बातें करते रहे। युधिष्ठिर ने कहा कि वह पासे लाना तो भूले नहीं थे, लेकिन किसी को खेलने में दिलचस्पी नहीं थी। नकुल ने सहदेव से उत्सव में देखे घोड़ों के बारे में बात की। उन्हें घोड़ों के गुणों और उन्हें प्रशिक्षित करने के तरीकों की अच्छी जानकारी थी।
युधिष्ठिर मन ही मन बुदबुदाए, 'पता नहीं पुरोचन को खेल में दिलचस्पी होगी या नहीं...'
हममें से किसी ने भी यह पता लगाने के लिए स्वेच्छा से आगे कदम नहीं बढ़ाया। माँ, जिनके बारे में हमें लगा था कि वे सो रही हैं, बहुत चुपचाप अंदर आईं। ‘उठो मत। मुझे भी नींद नहीं आ रही है।’ वे सहदेव के बगल में बैठ गईं। ‘चाचा विदुर से विदा लेते समय उन्होंने तुमसे क्या कहा था?’
जब तक हम महल के प्रवेश द्वार पर लाए गए रथों में सवार नहीं हो गए, तब तक चाचा हमारे साथ थे। विदाई की रस्में रीति-रिवाज के अनुसार संपन्न की गईं, क्योंकि युवराज युधिष्ठिर यात्रा पर जा रहे थे। हमारे सेवक, सारथी और धृतराष्ट्र के दरबार के मंत्री एवं सरदार सभी उपस्थित थे। विदुर भी उनमें शामिल थे।
उन्होंने कुछ खास नहीं कहा। उन्होंने हमें अपना आशीर्वाद दिया और बाकी सभी की तरह कहा, 'सुरक्षित वापस आना।'
‘उन्होंने और कुछ नहीं कहा? याद करने की कोशिश करो, उन्होंने कुछ और जरूर कहा होगा…’
युधिष्ठिर ने कुछ रूखेपन से कहा, 'हाँ, हमेशा की तरह, उसे कुछ दार्शनिक बातें कहनी थीं।'

मां की आवाज कठोर थी। 'मुझे ठीक-ठीक बताओ कि उसने क्या कहा। वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जो लापरवाही से दर्शनशास्त्र की बातें करता हो। मैं उसके कहे हुए शब्द सुनना चाहती हूं।'
युधिष्ठिर ने अपना हाथ माथे पर रखा और कुछ देर सोचा। फिर उन्होंने विजयी भाव से सिर उठाया और याद करते हुए कहा, 'उन्होंने कहा था कि हथियार केवल धातु से ही नहीं बनते।'
‘तो फिर?’ माँ ने उसे स्थिर दृष्टि से देखा और दोहराया, ‘तो फिर?’
उन्होंने आगे कहा, 'कभी-कभी वही लोग जो ठंड से सुरक्षा प्रदान करते हैं, जंगल में आग लगा देते हैं।'
माँ विजयी भाव से बोली, 'और क्या? और क्या?'
उन्होंने यह भी कहा कि जंगल में रहने वालों को साही से भी सीखना चाहिए। उन्होंने इससे ज्यादा कुछ नहीं कहा।
मां ने आह भरी और उठ खड़ी हुईं। 'तुम सब मन ही मन उस महान पुरुष, विदुर को प्रणाम करो।'
मां लकड़ी की दीवारों के पास गईं, उन पर उंगलियां फेरते हुए बोलीं, 'यहां आग हमारी दुश्मन है। लाख और घी की गंध आते ही हमें यह समझ जाना चाहिए था। इस घर को हमें जिंदा जलाने के लिए तैयार किया गया है।'
मां कमरे में सोच-विचार करते हुए इधर-उधर टहल रही थीं और बारी-बारी से हम सभी को देख रही थीं। 'धृतराष्ट्र के मंत्रियों और सेवकों के बीच, वह बुद्धिमान लोगों से और क्या कह सकते थे?'
माँ की निगाहों के सामने मेरा बड़ा भाई सहम गया। अंदर जाने से पहले माँ ने मेरी तरफ देखा और कहा, 'पुरोचना से सावधान रहना। बचने का रास्ता तुम्हें ही सोचना होगा।'
हमने दीवारों की जाँच करने के लिए जल्दी की। सभी दरारों में लाख भरा हुआ था। हमने फर्श पर नाक रखी, वहाँ घी की गंध आ रही थी। फर्श पर बिछे लकड़ी के तख्तों के बीच की जगह घी से भीगी हुई थी। सभी जोड़ों के लिए ऐसी लकड़ी का इस्तेमाल किया गया था जो आसानी से आग पकड़ लेती थी।
मैंने सबसे पहले मन ही मन माता को प्रणाम किया, फिर महान और उदार विदुर को। युधिष्ठिर ने कहा, 'चलो पुरोचना को तुरंत मार डालते हैं। फिर हम वापस जा सकते हैं। हम कैदी नहीं हैं।'

जैसे ही मुझे हमारे साथ हुए विश्वासघात की भयावहता का एहसास हुआ, मेरा खून खौल उठा। उन्होंने कितनी चालाकी से हमारे लिए एक ऐसी जगह तैयार की थी जहाँ वे हमें जिंदा जला सकें और हमें वहाँ ले आए, मानो हमारी ही इच्छा से! धृतराष्ट्र, दुर्योधन और उनके साथियों के अलावा इस योजना में और कौन-कौन शामिल था? दादा भीष्म को तो पता ही नहीं होगा। न ही हमारे गुरुओं को। कर्ण को तो इस षड्यंत्र की जानकारी जरूर मिली होगी। और शकुनी, जिसे देखकर मुझे घिन आती थी। दुर्योधन खुद इतना चतुर नहीं था कि ऐसी घिनौनी योजना बना सके। कर्ण और शकुनी, ये तो उन्हीं दोनों का काम होगा। फिर मुझे आश्चर्य हुआ - क्या यह वही अंधा राजा था जिसने सोते समय हमें आग लगाने का सुझाव दिया था? आखिर, उसी ने तो हमें वारणवता आने के लिए प्रोत्साहित किया था। नीच, दुष्ट, सबसे घटिया लोग।
जब सुबह हुई, तो मैंने और मेरे छोटे भाइयों ने शिकार पर जाने का बहाना बनाया और अपने घर के आसपास के पहाड़ी रास्तों को नोट कर लिया। जब हम वापस लौटे, तो पुरोचना ने इस बात पर सहानुभूति जताने का नाटक किया कि हम कुछ भी नहीं पकड़ पाए थे।
मुझे पता था कि अगर मैं अपने बाएं हाथ से उसके सिर पर वार करूँ, तो यह आदमी, जो खुद को हमारा विनम्र सेवक बताकर हमारे दुश्मन का जासूस था, मरकर गिर पड़ेगा। उसके सामने मुस्कुराते हुए खड़े रहना, मानो मुझे कुछ पता ही न हो, मेरे लिए असहनीय था।
युधिष्ठिर कभी-कभी असाधारण रूप से चतुर होते थे, और ऐसे ही एक मौके पर उन्होंने मुझे चेतावनी दी, 'अगर हम यहां से भाग भी जाएं, तो कौरव जासूस हमें कहीं भी घेरकर मार सकते हैं। घर को जलाना होगा। और हमें वहां से भाग निकलना होगा।'
अर्जुन सहमत हो गया, 'हमें छिपकर रहना चाहिए और यह पता लगाना चाहिए कि जब वे सोचेंगे कि पांडव मर गए हैं तो क्या होगा।'
मैंने युधिष्ठिर से कहा, 'चलो इस बारे में माताजी से बात करते हैं।'
मैंने उससे बात कर ली है। उसका कहना है कि अभी समय नहीं आया है।
अगले दिन हस्तिनापुरा से एक राहगीर उस रास्ते से आया। उसने बताया कि उत्सव में किसी ने उसे बताया था कि हम यहाँ हैं और वह युवराज को प्रणाम करने आया है। पुरोचना ने उसे प्रांगण में रोक लिया और काफी देर तक उससे पूछताछ की, जिसके बाद उसने माता को बताया कि हमारे यहाँ एक आगंतुक आया है।

माता ने उस आदमी को खाना खिलाने का आदेश दिया। उसने ऐसे लालच से खाया जैसे उसे कई दिनों से खाना न मिला हो। यह जानकर कि वह आदमी केवल भोजन की तलाश में भटक रहा है, पुरोचना बाहर चला गया। तभी उस आदमी का दयनीय व्यवहार अचानक बदल गया।
पुरोचना के पूरी तरह नज़र से ओझल हो जाने का इंतज़ार करते हुए उसने कहा, “वे अगली अमावस्या की रात के आखिरी पखवाड़े में घर में आग लगाने की योजना बना रहे हैं। हमें उसी दिन आधी रात से पहले उस जगह को आग लगा देनी चाहिए और वहाँ से निकल जाना चाहिए। रानी जहाँ खड़ी है, उस जगह को ध्यान से देख लो। मेरे सहायक और मैं जो सुरंग खोद रहे हैं, वह वहीं जाकर खत्म होगी।”
उसने माँ के पैरों की ओर इशारा किया और उंगली से उनके चारों ओर एक गोला बनाया। अपने द्वारा गिराए गए टुकड़ों को उठाते हुए, वह उठा और धीरे से बुदबुदाया, 'मैं अपने स्वामी, विदुर द्वारा सुरंग खोदने के लिए भेजे गए लोगों में से एक हूँ।'
जब वह आंगन से बाहर जा रहा था, तब हमने उसे पुरोचना के किसी विनोदपूर्ण कथन पर हंसते हुए सुना।
हम पांचों एक-दूसरे को घूरने लगे। एक बार फिर, हमारे चाचा विदुरा ने हमें आश्चर्यचकित कर दिया था।
घर में आग लगाने के लिए अमावस्या का दिन आने में अभी छह दिन और बाकी थे।
सुरंग खोदने वाले से मैं बहुत सारे सवाल पूछना चाहता था।
मैंने उस जगह पर कान लगाया जहाँ उसने हमें इशारा किया था, लेकिन मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया।
पुरोचना दिन में केवल एक बार भोजन सामग्री खरीदने के लिए बाहर जाता था।
अर्जुन बाहर सुनसान इलाकों में घूमता रहता था और अपने धनुष-बाण से पक्षियों का शिकार करता था। युधिष्ठिर प्रतीक्षा के इस समय की ऊब को दूर करने के लिए नकुल को पासा खेलना सिखाने लगा। सहदेव रसोई में माता की सहायता करता था।
एक रात, जब मैं लकड़ी से बने फर्श पर लेटा हुआ सुन रहा था, तो मुझे नीचे से एक कुल्हाड़ी के पत्थर पर गिरने की स्पष्ट आवाज सुनाई दी।
अमावस्या की रात आ गई।
हमने पिछले दिन पुरोचना से ब्राह्मणों को लाने के लिए कहा था, और उसने उत्सुकता से पूछा था कि हमें उनकी आवश्यकता क्यों है।

'आज अमावस्या है, जिस दिन क्षत्रिय अपने पूर्वजों को यज्ञ अर्पित करते हैं।'
पुरोचना युधिष्ठिर की व्याख्या से संतुष्ट प्रतीत हुआ।
माँ ने यज्ञ के लिए निर्धारित सभी रीति-रिवाजों का पालन करने पर जोर दिया। लेकिन हमें यकीन नहीं था कि वारणावता स्थित इस अतिथिगृह में आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं या नहीं।
माता ने कहा, 'यह अब पांडवों का महल है। यज्ञ अनुष्ठान तदनुसार ही संपन्न किए जाने चाहिए।'
सहदेव अब भी संशय में था, और माता ने उससे कहा, 'हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे पूर्वज और देवता इस बड़े खतरे से हमारी रक्षा करने के लिए हमारे साथ हों।'
आंगन में बलि स्थल तैयार किया गया। हम सभी ने मिलकर उसके चारों ओर झालरें लगाईं और उसे सजाया।
पुरोचना द्वारा नियुक्त ब्राह्मण आ गए। वे बारह थे: यज्ञ संपन्न कराने के लिए चार पुरोहित, प्रार्थना करने के लिए चार और सामवेद का पाठ करने के लिए चार अन्य।
जैसे ही अग्नि प्रज्वलित हुई, हमने शुभ और अशुभ संकेतों के लिए ज्वालाओं का अध्ययन किया। हमने यज्ञ की अग्नि में तिल और अनाज 108 बार अर्पित किए।
फिर हमने घी 108 बार अर्पित किया, और ज्वालाएँ सुनहरी हो गईं।
ब्राह्मणों ने यज्ञ के खंभे से बंधे हुए बछड़े पर जल छिड़ककर उसे शुद्ध किया। उन्होंने उसके माथे, कंधों और कमर को फूलों और चंदन के लेप से सजाया।
उन्होंने जमीन पर कुश घास बिछाई।
पुजारियों ने मंत्रों का जाप करना शुरू कर दिया।
‘आपकी सांसें दुनिया की जीवन-सांसें ग्रहण करें।’
पशु के शुद्धिकरण के बाद, ब्राह्मणों ने उससे मुंह मोड़ लिया। प्रधान पुजारी ने पशु को शांत करने का आदेश दिया। कसाईखाने से आए तीन लोगों ने पशु का गला घोंटकर उसे शांत कर दिया। बलि के पशु को कभी मारा नहीं जाता, उसे शांत किया जाता है।
ब्राह्मणों ने उसे शुद्ध करने के लिए उस पर दोबारा जल छिड़का, फिर युधिष्ठिर ने जानवर का सिर काटकर आग में फेंक दिया। जमीन पर खून से सनी घास राक्षसों को प्रसन्न करने के लिए थी।

ज्वालाएं संतुष्टिपूर्वक धधक रही थीं, यह जानते हुए कि बलिदान ग्रहण करते समय किसी भी धुएं या राख ने उन्हें अपवित्र नहीं किया था। दूर से देखते हुए माँ के चेहरे पर राहत स्पष्ट दिखाई दे रही थी।
बारह ब्राह्मण और उनके सहायक उपहार ग्रहण करने के बाद चले गए। जब यज्ञ की सामग्री को पहले सूंघा गया और फिर रसोई में ले जाने के लिए इकट्ठा किया गया, तभी हमें बाहर से भिखारियों की आवाज सुनाई दी - एक आदिवासी महिला और उसके पाँच बेटे।
मां ने कुछ देर तक उन्हें देखा, फिर कहा, 'इन्हें जितना खाना चाहिए उतना दो।'
पुरोचना के हावभाव से यह स्पष्ट हो गया कि उसे किसी आदिवासी महिला का अपने बच्चों के साथ घर में प्रवेश करने का विचार पसंद नहीं था।
मां ने कहा, 'इतना सारा खाना है। यह अच्छी बात है कि हम खुद खाने से पहले इतने सारे लोगों को दान दे सकते हैं।'
पुरोचना ने बुदबुदाना बंद कर दिया।
सहदेव ने भिखारियों को मांस के बड़े-बड़े टुकड़े परोसे।
मां ने कहा, 'मैंने भंडारगृह में कुछ चमड़े के बर्तन देखे। जाओ और देख लो।' हम शराब के बर्तन ले आए और माँ ने हमें उन्हें परोसने का इशारा किया। नए आए मेहमानों ने अप्रत्याशित रूप से मिले आतिथ्य का खूब आनंद लिया। थोड़ी देर बाद, वे शांत और विनम्र रहना भूल गए और हँसने, झगड़ने और खूब शोर मचाने लगे। मैंने माँ की ओर जिज्ञासा से देखा कि क्या मुझे उन्हें बाहर निकाल देना चाहिए। लेकिन माँ वास्तव में उनके द्वारा मचाए जा रहे शोर का आनंद ले रही थीं।
महिला ने कहा कि अंधेरा हो गया है और उन्हें कहीं बहुत दूर जाना है। माँ ने कहा, 'कोई बात नहीं, तुम यहीं सो सकती हो। हमारे पास बहुत जगह है।'
मैंने सोचा भी नहीं था कि माँ की उदारता इतनी अधिक होगी। मैंने अर्जुन की ओर एक नज़र डाली। उस रात हमें बहुत सारे काम करने थे। माँ अपनी अत्यधिक मेहमाननवाज़ी में शायद यह भूल गई थीं। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह उस बूढ़ी औरत और उसके पाँच बेटों को देखकर, जिनकी उम्र दस से सत्रह वर्ष के बीच थी, विदुर का संदेश पूरी तरह से भूल गई थीं।
युधिष्ठिर ने बाहर की ओर देखा और कहा, 'अभी अंधेरा नहीं हुआ है।' उन्होंने माता की ओर मुस्कुराते हुए कहा, मानो उन्हें यह जताने के लिए कि वे

अतिथियों के प्रति शिष्टाचार को नहीं भूले हैं, 'आखिरकार, ये लोग जंगल के रास्तों से परिचित हैं।'
उसकी बात अनसुनी करते हुए, माँ ने उन्हें फिर से आमंत्रित किया, 'यहाँ बहुत जगह है। आप बाहर वाले कमरे में या उस हॉल में, जहाँ चाहें सो सकते हैं।' महिला ने राहत भरी मुस्कान बिखेरी। अपने बड़े बेटे से चमड़े का घड़ा लेकर उसने फिर से जी भरकर पानी पिया।
हम असहाय होकर खड़े थे और माँ की निरंतर मेहमाननवाजी देखकर आश्चर्यचकित थे, तभी माँ हमारी ओर आईं।
युधिष्ठिर बोलने लगे, ‘आज का…’
मुझे पता है। वे आज देवताओं के आशीर्वाद के रूप में आए हैं। उन्हें यहीं सोने दो।
मैं अचंभित रह गया।
मां ने धीमी आवाज में कहा, 'कल जासूस हमारे शवों की तलाश में यहां आएंगे और उन्हें छह कंकाल मिलेंगे। पांच बेटों की मां यहां भीख मांगने क्यों आई? तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों का आशीर्वाद प्राप्त है!'
मां ने जंगल की महिला और उसके बेटों को देखा, मुस्कुराई और अंदर चली गई। हम सब दंग रह गए।
हमने उन सभी को बाहरी हॉल में जोर-जोर से गाते हुए सुना।
मैं परेशान था।
युधिष्ठिर ने यह देखा और कहा, 'आखिरकार वे सिर्फ आदिवासी हैं। इसे पाप समझने की कोई जरूरत नहीं है।'
काफी देर बाद हमारे मेहमान चुप हो गए। शायद ज्यादा खाने-पीने के बाद उन्हें नींद आ रही थी। मैंने सोचा, बेचारे बलि के जानवर, भीख मांगने आए थे और आज रात खामोश हो जाएंगे। मैंने इस सोच से तसल्ली पाने की कोशिश की कि जंगल में रहने वाले छह जीव इतने कीमती नहीं होते। फिर मैं रात की तैयारियों में जुट गई।
मैं पुरोचना के कमरे के बाहर खड़ा होकर सुन रहा था। वह बिस्तर पर तो चला गया था, लेकिन सोया नहीं था। मुझे पता था कि वह सो नहीं पाएगा।
हम पांचों ने अपने पीठ पर कपड़े और हथियार बांध लिए। मां बाहर आईं, जाने के लिए तैयार।

हमने सुरंग खोदने वाले द्वारा बताए गए स्थान से लकड़ी के तख्ते हटाए और पहले तो केवल मिट्टी ही दिखाई दी। लगभग छह उंगलियों की गहराई तक मिट्टी हटाने पर हमें नीचे से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं, फिर एक रोशनी दिखाई दी। वहाँ खड़े किसी व्यक्ति ने नीचे से मिट्टी के ढेले हटाए और एक व्यक्ति के नीचे जाने के लिए पर्याप्त जगह बनाई। युधिष्ठिर पहले नीचे गए, फिर सहदेव। मैंने माता को धीरे से उनकी बाहों में उतारा। नकुल के नीचे जाने के बाद, मैंने अर्जुन से कहा, 'जाओ। मुझे एक काम पूरा करना है।'
मैं चुपचाप सामने के दरवाजे की ओर भागा। मैंने कमरे में जल रहे छोटे से तेल के दीपक को उठाया, उसकी बाती निकाली और तेल दरवाजे पर डाल दिया। जैसे ही मैंने उसे जलाया, मुझे कौरव वास्तुकारों की कुशलता का एहसास हुआ – आग की लपटें दीवारों और खंभों को छूने से पहले ही उनमें आग लग गई। मेरे हाथ में मौजूद बाती बुझ चुकी थी, इसलिए मैंने एक टूटी हुई कुर्सी के पैर से मशाल बनाई।
मैं केंद्रीय हॉल में गया और वहाँ पुरोचना खांसता हुआ और कुछ कहने की कोशिश करता हुआ मिला। मैंने आग की लपटों की रोशनी में उसका चेहरा देखा। उसके चेहरे पर अब किसी सेवक का विनम्र भाव नहीं था। उसकी आँखों में एक ऐसे दुष्ट शिकारी की क्रूर चमक थी जिसे उसके शिकार से वंचित कर दिया गया हो। वह बेतहाशा इधर-उधर हथियार की तलाश कर रहा था, और मैंने अपने मुक्कों से उसके नंगे सिर पर प्रहार किया।
जब मैंने उसकी गर्दन और कपड़े पकड़कर उसे उठाया तो वह दर्द से कराह उठा।
मैंने उसे चमड़े के खाली शराब के बर्तन की तरह माँ के पुराने शयनकक्ष में फेंक दिया, जो आग की लपटों में घिरा हुआ था।
मैं रसोई में वापस गया, लेकिन धुएं के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
मुझे बाहरी हॉल से जंगल के आदिवासियों के एक साथ चीखने की आवाज सुनाई दी।
मुझे नीचे उतरने की ज़रूरत नहीं पड़ी, मैं सीधे एक दरार में जा गिरा जहाँ लाल बत्ती जल रही थी। मेरे गिरने से सहदेव ने धीरे से कराहते हुए अपने पैर कुचल दिए।
हम सभी अंधेरे के अंत में चमकती लाल रोशनी पर नजरें गड़ाए आगे बढ़े, और हममें से प्रत्येक ने अपने सामने वाले व्यक्ति के कंधे को कसकर पकड़ रखा था।
बाहर निकलते समय अर्जुन ने पूछा, 'क्या वे सभी चुप हो गए हैं?'

मैंने कहा, 'वे शांतिपूर्वक सो रहे हैं। या यूं कहें कि अग्नि देवता के आशीर्वाद से उन्हें योग की नींद प्राप्त हुई है।'
सहदेव मुस्कुराया।
मुझे सामने कहीं से युधिष्ठिर की आवाज सुनाई दी, 'हमें किसी भी तरह के हास्य की जरूरत नहीं है, मूर्ख।'
सुरंग चट्टानों के ठीक नीचे समाप्त हो गई। हमें वारणावत से बाहर निकलने वाले रास्ते तक चढ़ना था। युधिष्ठिर चट्टान में तराशी गई खड़ी पगडंडी पर चढ़ने लगे, लेकिन उनका संतुलन बिगड़ गया और वे गिर पड़े। मैं अपने छोटे भाइयों के पीछे गया और रास्ते का जायजा लिया। हमें चट्टान की छोटी दरारों में अपनी उंगलियां फंसाकर सावधानी से खुद को ऊपर खींचना होगा।
‘यह तो लाख के घर से भी ज्यादा खतरनाक है!’ युधिष्ठिर ने उस रास्ते को कोसते हुए कहा।
एक परीक्षा के तौर पर, मैंने सहदेव को अपने कंधों पर उठाया और ऊपर ले गया। अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हुए, मैंने माता को भी ऊपर ले लिया।
युधिष्ठिर ने ज़िद की कि वह चढ़ नहीं सकते और दूसरे रास्ते खोजने लगे, इसलिए अंत में मुझे उन्हें भी अपने कंधों पर उठाना पड़ा। नकुल मेरे पीछे और अर्जुन आगे चल रहे थे। बीच-बीच में नकुल मेरी कमर पकड़कर खुद को ऊपर खींच रहे थे।
जब हम आखिरकार बाहर निकले, तो मैं पूरी तरह थक चुकी थी। मैंने मुस्कुराते हुए नकुला से कहा, 'तुम्हें भी साथ ले जाना बेहतर होता।'
‘भाई, मैंने आज पहली बार तुम्हारे लिए प्रार्थना की – कि तुम मुझ पर वापस न गिर जाओ!’
बच निकलने की राहत के कारण सभी का मन हल्का हो गया था। युधिष्ठिर का अनुसरण करते हुए, मैंने नकुल को मज़ाक में डांटते हुए कहा, 'क्या तुम्हें नहीं पता कि यह मज़ाक करने का समय नहीं है?'
हमने पीछे छूटे हुए मनोरंजन गृह की ओर मुड़कर देखा। अँधेरी रात मानो आग से घिरी हुई थी। जैसे ही हम दोबारा घाटी में पहुँचे, अँधेरे में हमें पानी की चमक दिखाई दी। सुरंग खोदने वाले हमारे मार्गदर्शक ने कहा, 'अगर आप नदी पार कर लेंगे, तो आप जंगल में पहुँच जाएँगे। मेरे गुरु विदुर ने कहा था कि वह आपके लिए सबसे सुरक्षित जगह होगी।'

यह नदी गंगा की सहायक नदी थी। हमें इसे पार करने की चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। हमें स्पष्ट रूप से एक नाव के हमारे ओर आने की आवाज सुनाई दे रही थी।
‘नाव आ गई है।’ गाइड ने माँ और हम सभी के प्रति प्रणाम करते हुए हाथ जोड़े। ‘मुझे जाने की अनुमति दीजिए। क्या आपके पास मेरे स्वामी के लिए कोई संदेश है?’
मां ने कहा, 'उसे बताओ कि हमने अपनी यात्रा शुरू कर दी है।'

2

जंगल सूखा और झुलसा हुआ था। पत्तों से रहित, पीले पेड़ बारिश का इंतज़ार कर रहे थे। मेरे भाई सूखे पत्तों से बने अस्थायी गद्दों पर एक-दूसरे के बगल में सो रहे थे। माँ पहले ही उठ चुकी थीं। उन्होंने देखा कि मैं एक पेड़ के नीचे सूखी घास के बिस्तर पर जाग रहा हूँ, तो उन्होंने कहा, 'यहाँ कहीं पानी नहीं है।'
मैं उठा और सूखी पत्तियों को रौंदते हुए इधर-उधर घूमने लगा। मुझे कहीं पानी नहीं मिला। जब विदुर ने इस जंगल को हमारे लिए सुरक्षित स्थान समझा था, तो जाहिर है उन्होंने यहाँ पानी की जाँच करना भूल गए थे। रात के तीसरे पहर में हमें लेने आई नाव में सभी के लिए पर्याप्त भोजन और हथियार थे। हमें हमेशा ऐसा लगता था कि विदुर अपना अधिकांश समय महल के परिसर में एक अजनबी की तरह घूमते हुए, धर्म का पालन करने के बारे में सलाह देते हुए बिताते थे, फिर भी उन्होंने हमारे भागने की हर छोटी से छोटी बात का ध्यान रखा था। इसके बावजूद, हमें बहते पानी वाला कोई दूसरा जंगल ढूंढना होगा और वहाँ शरण लेनी होगी।
नदी पार करने के बाद हमारी यात्रा कठिन हो गई। माताजी इतनी थक गई थीं कि मैंने उन्हें अपने कंधों पर उठा लिया। काफी दूर चलने के बाद युधिष्ठिर बैठ गए और कहने लगे कि वे और आगे नहीं चल सकते। तब सहदेव ने सुझाव दिया कि हम जहाँ डेरा डाले हुए थे वहीं रात बिता लें।
एक जंगली खरगोश झाड़ियों से निकला और मेरे पास से तेज़ी से भागा। जिस जंगल में जानवर हों, वहाँ पानी तो ज़रूर होगा। मैंने सूखी घास पर पैरों के निशान देखे और एक जगह सियार का गीला मल देखा। मैंने पानी की गंध पहचानने की कोशिश में सूंघा। केवल जंगल के जीव और जानवर ही गंध से पानी का पता लगा सकते हैं। अचानक मुझे पास में जलपक्षियों की आवाज़ सुनाई दी - प्यास से बेहाल इस सुबह के समय मेरे कानों को यह संगीत बहुत अच्छा लगा। मैंने अपनी चाल तेज़ कर दी। मुझे कमल के पत्ते के आकार का एक छोटा सा तालाब दिखाई दिया, जो साफ पानी से भरा हुआ था। उसके चारों ओर चमकीले हरे रंग की झाड़ियाँ थीं, जो सूखे वातावरण के बीच शान से खड़ी थीं।
मैंने थोड़ा पानी पिया। कीचड़ और धुएँ की गंध मेरे शरीर से चिपकी हुई थी।
मैं तालाब में उतरा, जो मेरी सोच से कहीं ज़्यादा गहरा था। मैं थोड़ी देर

तैरा, नहाया, किनारे पर वापस आया और अपने कपड़े निचोड़े, फिर सोचने लगा कि मैं थोड़ा पानी कैसे ले जाऊँ। मैंने अपने ऊपरी कपड़े में थोड़ा पानी भरने की कोशिश की, लेकिन दस कदम आगे बढ़ने से पहले ही वह टपक गया। मैं वहाँ परेशान खड़ा था, समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ, तभी मुझे झाड़ियों से एक हल्की हँसी सुनाई दी। एक जवान आदिवासी औरत उनमें से निकली, जिसने कमर पर सिर्फ़ हिरण की खाल बाँधी हुई थी। मुझे लगा कि शायद वह मुझे देख रही थी। जैसे ही वह निडर होकर मेरे पास आई, मैंने गुस्से से उसकी तरफ देखा।
उसके हाथों में सूअर के दांतों से बने कंगन थे, गले में बाघ के पंजों का हार और एक अकेली लड़ी की चेन थी, जिसके जोड़ आधे चौकोर आकार के थे। मेरे बगल में खड़ी वह लगभग मेरी ही लंबाई की लग रही थी। उसका रंग काले लकड़ी के पेड़ की भीतरी लकड़ी जैसा था। चलते समय उसके टखनों से टहनियों के टूटने की आवाज आ रही थी। मेरे चारों ओर घूमते समय उसके बाघ के पंजों के हार की झंकार सुनाई दे रही थी। उसके शरीर से उभरे हुए उसके स्तन कमारूपा के जंगलों के शरारती बाघों की सूजी हुई ग्रंथियों जैसे लग रहे थे।
मुझे रुकने का इशारा करके वह झाड़ियों में दौड़ गई और बड़े-बड़े पत्तों का ढेर लेकर वापस आई। वह मेरे पास खड़ी होकर कांटों से पत्तों को सिलने लगी, और उसके बिखरे बालों से मुझे पशु वसा की अप्रिय गंध आई। मेरा ऊपरी कपड़ा पकड़कर उसने सिले हुए पत्ते उस पर रख दिए। कितनी आसानी से उसने मेरे लिए पानी ले जाने का बर्तन बना दिया! जब मैं उसे भरकर वापस चलने लगा, तो मुझे पता था कि वह मेरा पीछा कर रही है। जैसे ही मैं अपने शिविर पर पहुँचा, मैं पीछे मुड़ा। वह कहीं भी दिखाई नहीं दी।
मेरी माता और भाई, सब थके-हारे उठे और पानी पिया। युधिष्ठिर, जिनके बारे में शतश्रृंग के ऋषियों ने भविष्यवाणी की थी कि वे गांधार से मगध और वाहलीक से विदर्भ तक शासन करेंगे, सूखे पत्तों के बिस्तर पर शक्तिहीन पड़े थे। और मेरी माता, जिनकी सेवा में कभी अठारह दासियाँ लगी रहती थीं, सिर झुकाए नंगी घास पर बैठी थीं। मुझे बहुत दुख हुआ।
मां ने विदुर को संदेश भेजा था कि यात्रा शुरू हो गई है। हम कहाँ जा रहे थे? वन की स्त्री अचानक प्रकट हुई, उसके हाथ में जंगली फल और शहद से भरा बांस का तना था। हमें उसके कदमों की आहट भी सुनाई नहीं दी। उसने सब कुछ माँ के सामने फैला दिया, घुटने टेके, अपना सिर ज़मीन पर झुकाया और प्रणाम किया।
मां ने आश्चर्यचकित होकर, किसी कारणवश मेरी ओर देखा।

‘तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है?’ उसने पूछा।
उस महिला ने मेरी तरफ देखा, अपनी नज़रें हटा लीं और धीरे से बोली, 'हिडिम्बी।'
युधिष्ठिर ने युवराज की तरह अधिकार जताते हुए कहा, “मुझे लगता है जंगल में बहुत सारे आदिवासी हैं। मुझे आश्चर्य है कि क्या वह माताजी की सेवा करेंगी। उन्हें बता देना कि हम उन्हें उपहार देंगे।” उन्होंने मुझसे पूछा, “क्या यह महिला हमारी भाषा जानती है?”
हिडिम्बी ने अपनी मुस्कान छुपा ली।
मां ने पूछा, 'क्या तुम्हारा परिवार है?'
उसने प्राकृत और पैशाची भाषा से मिश्रित बोली में उत्तर दिया: 'मैं ज्यादातर समय अकेली रहती हूँ। मेरा एक भाई है। वह काम्यका से लेकर गंधमादन तक, इस पूरे जंगल में शिकार करता है। वह यहाँ बहुत कम आता है।'
'आपका घर कहां है?'
उसने जंगल की ओर इशारा किया।
युधिष्ठिर ने कहा, 'उसके जैसी लोगों के पास घर नहीं होते - जंगल ही उनका घर होता है।'
हिदिम्बी फिर धीरे से हंस पड़ी।
वह यह कहकर चली गई कि वह वापस आएगी।
युधिष्ठिर ने मुझे चेतावनी देते हुए कहा, 'सावधान रहो। ये लोग जादू-टोना जानते हैं। उसे अपने पास मत आने देना, खासकर रात में।'
वह मुझसे ऐसा क्यों कह रहा था? जब वह हमारे सामने खड़ी थी, तो क्या उसने मेरे चेहरे के भावों में कुछ ऐसा देखा था जो उसे देखकर सभी की उत्सुकता से परे था?
सूरज डूबने तक मैं सोता रहा। फिर मैं निकल पड़ा और दूसरों को बताया कि मैं पता लगाने जा रहा हूँ कि इस इलाके में किस-किस तरह के जानवर हैं। मैं अपने साथ तीन भुजाओं के बराबर लंबाई का एक छोटा भाला ले गया। अर्जुन ने कुछ दूरी पर एक पेड़ पर निशाना लगा रखा था और तीरंदाजी का अभ्यास कर रहा था।
मैं उस तालाब के विपरीत दिशा में चलने लगा जिसे मैंने सुबह देखा था। एक बार फिर, झाड़ियों से एक खरगोश उछल पड़ा, मेरे इतने करीब से गुजरा कि मैं उस पर अपना भाला तान सकता था। अचानक मुझे एक चीख सुनाई दी और मैंने उसे भागते हुए खरगोश के पीछे दौड़ते देखा जो उससे काफी आगे निकल गया था। पीछा करना

व्यर्थ लग रहा था। वह घनी झाड़ियों के बीच से ऐसे भागी जैसे गिद्ध का पंख बंधा तीर हो। मुझे खरगोश अब दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने उसे गिरते हुए देखा।
मुझे लगा कि वह रास्ते में पड़ी जड़ों से ठोकर खाकर गिर गई होगी, इसलिए मैं उसकी ओर बढ़ा। मेरे पहुँचने से पहले ही वह उठी और पीछे मुड़ी। उसने अपना हाथ उठाकर मुझे एक विशाल खरगोश दिखाया जिसे उसने कानों से पकड़ रखा था। वह खुद को छुड़ाने के लिए छटपटा रहा था। वह हँसी और मैं भी उसके साथ हँस पड़ा। फिर उसने उसे छोड़ दिया। खरगोश एक पल के लिए अविश्वास में काँपता रहा, फिर डर के मारे जान बचाकर भाग गया।
मैंने अपना भाला पास की एक चट्टान पर टिका दिया और बैठ गया। वह मेरे पास आई और भाले पर उंगलियां फेरकर उसके नुकीले सिरे की धार जांचने लगी। वह बैठ गई, हवा में गिरे मुरझाए पलाशा फूलों का एक गुच्छा उठाया और उसे चबाने लगी। उसके हल्के नीले होंठों पर लालिमा छा गई।
मैंने उसकी ओर हाथ बढ़ाया, और वह एक काले नागिन की तरह मेरे चारों ओर लिपट गई। उसके बालों से पशु वसा की गंध आ रही थी, जो गांठ से खुल कर मेरे चेहरे पर अंधेरा छा गई। जिस रात मैं उस दासी को बाहों में लिए जम गया था, वह किसी मूर्खतापूर्ण सपने जैसी लग रही थी। अब मुझे लग रहा था कि मेरे शिक्षकों को मुझे स्त्री शरीर की बारीकियों के बारे में सिखाना चाहिए था। मेरे भीतर की आग में सत्तर लपटें थीं, सात नहीं। नहीं, सत्तर नहीं, दस हजार। ऐसा लग रहा था मानो यज्ञ करने वाला एक ही समय में अग्नि और राख, दोनों ही भेंट बनना चाहता हो...
वापस लौटते समय हम एक-दूसरे के करीब-करीब चल रहे थे। नकुला और सहदेव की आवाज सुनकर मैं रुक गई और वह आगे चली गई।
मैं अंधेरा होने तक जंगल में घूमता रहा। मैंने एक उदुंबरा वृक्ष की शाखाओं के बीच से पुष्य नक्षत्र को उगते हुए देखा, जो किसी तगड़े आदिवासी की तरह लग रहा था मानो वह आकाश की ओर हाथ उठा रहा हो। फिर मैं वापस लौट आया। युधिष्ठिर ने मुझे इतनी देर तक घने जंगल में रहने के लिए डांटा। हम खाने के लिए बैठ गए और सहदेव ने मुझे शराब परोसी। विदुर ने जो भोजन भेजा था, उसमें शराब नहीं थी।
नकुला ने कहा, 'हिडिम्बी हमारे लिए और भी उपहार लाया है।'

अगली सुबह मैं युधिष्ठिर के चिल्लाने की आवाज़ सुनकर देर से जागा और पता लगाने गया कि क्या हुआ था। हम अपने साथ जो अनाज के पैकेट लाए थे, ब्राह्मणों को उपहार देने के लिए चमड़े के थैले, पूजा में इस्तेमाल होने वाले सोने के छोटे बर्तन, सब गायब हो गए थे।
युधिष्ठिर को पूरा यकीन था, ‘यह वही है, आदिवासी स्त्री। वह एक राक्षसी है। वह दिन में मनुष्य रूप में घूमती है, फिर रात में जादूगरनी बनकर आती है और चोरी करती है। हम खुशकिस्मत हैं कि उसे मानव मांस का लालच नहीं था, वरना वह हमें खा जाती।’
मैं अपने शिविर के चारों ओर घूमा। मैं किसी भी चट्टानी सतह पर जानवरों के पदचिह्न पहचान सकता था। मैंने नंगे पैर चलने वाले एक आदमी के विशाल पदचिह्न स्पष्ट रूप से देखे। मैं तालाब की ओर बढ़ा। जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा, एक झाड़ी ने फुसफुसाते हुए कहा, 'मत जाओ, यह खतरनाक है।'
मैंने अपना हाथ बढ़ाया और वह उसके बालों पर जा लगा। मैंने उसे खींचकर बाहर निकाला। वह मेरे सामने कांपती हुई खड़ी थी।
मैंने उसका हाथ पकड़े हुए पूछा, 'तुम्हें सोना चाहिए या अनाज? हमें किसने लूटा?'
अचानक मुझे जंगली सूअर की गुर्राहट जैसी आवाज़ सुनाई दी। मेरे पास आते कदमों की आहट से ऐसा लगा मानो धरती कांप रही हो। ताड़ के पेड़ जितना लंबा और सीधा खड़ा एक आदिवासी अपने हाथ में एक विशाल शाखा लिए हुए दिखाई दिया। मैं जानता था कि युद्ध के बारे में मैंने जो भी सबक सीखे थे, वे यहाँ किसी काम के नहीं होंगे। शब्द भी व्यर्थ साबित होंगे।
उसने डाल से जो पहला वार किया, उससे मैं बड़ी तेज़ी से हटकर बच गया। किस्मत भी मेरे साथ थी। डाल का सिरा मेरे सीने को झुलसाता हुआ गुज़रा। मैंने अपने सीने पर खून की गीली लकीर महसूस की और समझ गया कि मुझे इस आदमी का सामना ताकत से नहीं, बल्कि अपने पैरों की फुर्ती और शरीर की लचक से करना होगा। उसने मुझ पर दूसरा वार किया। मैं बच गया। इससे पहले कि वह अपना संतुलन बना पाता, मैं उस पर झपटा और उसे ज़ोर से मारा, मुट्ठियाँ उसकी पसलियों में धंसा दीं। उसे पता था कि अब वह डाल से मुझे नहीं मार सकता, इसलिए उसने मुट्ठियों से लड़ना शुरू कर दिया। यही तो मैं चाहता था। उसने अपनी मुट्ठियाँ मेरे सीने और पेट पर तान दीं। मैं उसकी बाहों के घेरे में कूद

गया और उसकी नाक और होंठों पर वार किया। उसकी चीख, जिसे वह दबाने की कोशिश कर रहा था, खून की फुहार के साथ उसके गले से निकल गई।
वह बेहद ताकतवर था। जंगल में शायद ही कोई उससे भिड़ने की हिम्मत करता। लेकिन शुक्राचार्य ने मुझे शरीर के सबसे कमजोर हिस्सों को पहचानना सिखाया था, और उसके वारों के बीच मैंने सावधानीपूर्वक उन सभी हिस्सों पर निशाना साधा जिनके बारे में मैंने सीखा था।
उस लड़ाई ने मुझे यकीन दिला दिया कि शारीरिक शक्ति में मैं उससे किसी भी तरह कम नहीं था। जब उसने पहलवान की तरह मुझे अपनी बाहों में जकड़ लिया, तो मैंने उसके गले की अहम नस पर ज़ोरदार प्रहार किया। वह किसी आंधी में फंसे विशाल ताड़ के पेड़ की तरह कांप उठा। संतुलन बनाने के लिए अपना बड़ा हाथ ज़मीन की ओर बढ़ाते हुए वह धीरे-धीरे गिर पड़ा। मैं वहीं रुक सकता था। लेकिन मैं अच्छी तरह जानता था कि केवल एक जानवर को ही बख्शा जा सकता है, एक इंसान को दूसरा मौका नहीं दिया जा सकता। मैं पीछे की ओर झपटा, उसकी गर्दन पर वार किया और उसे गिरा दिया।
मैंने अर्जुन की आवाज सुनी, 'हटो, मैं उसे बाण से मार डालूंगा।'
अपनी बची-खुची ताकत बटोरते हुए, उस आदमी ने ऊपर चढ़ते हुए मुझे पकड़ने की कोशिश की, अपनी बांहें मेरी बगलों के नीचे डाल दीं, लेकिन मैं झट से दूर हट गई। मैंने अपने घुटने उसकी कमर में गाड़ दिए और उसके कंधों को नीचे दबा दिया। मैंने उसके बाल पकड़े और उसकी रीढ़ की हड्डियां तानी के दानों की तरह चटकने की आवाज़ साफ सुनी।
मुड़ा हुआ शरीर अचानक स्थिर हो गया।
मैं धीरे-धीरे उठा। भीमसेन ने पहली बार किसी को मारा था।
मैं भीमसेन था, पवन देव का शक्तिशाली पुत्र। मैं इतनी जोर से चिल्लाना चाहता था कि पूरा जंगल सुन ले।
मैंने वहाँ खड़ी हिडिंबी की ओर देखा, जो स्तब्ध थी। ‘बाकी लोग कहाँ हैं? अगर कोई और है, तो उसे आने दो। भीमसेन तैयार है।’
उसने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और रोने लगी।
'यह कौन है?'
वह सिसकते हुए बोली, 'मेरा भाई।'
वापस लौटते समय अर्जुन ने कहा, 'मुझे एक भी ऐसी जगह नहीं मिली जहाँ मैं तीर चला सकता था।'

मेरे होठों पर लगे खून का नमकीन स्वाद मेरे मुंह में घुल गया। मैंने कहा, 'वह बहुत ताकतवर था।'
लड़ाई में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि पहले कौन दूसरे को गिराता है। क्षत्रियों को यह तय करने की आवश्यकता नहीं थी कि हत्या न्यायसंगत है या अन्यायसंगत। युद्ध का धर्म ही हत्या करना था। मरने वाला भी धन्य हो जाता था। पता नहीं क्यों, अपनी पहली हत्या के खून के धब्बे धोते समय मुझे विजयी योद्धा का गर्व महसूस नहीं हुआ। एक अस्पष्ट बेचैनी मेरे भीतर घर कर गई, जैसे अंजीर के अंदर मधुमक्खी भिनभिना रही हो।
मैं फिर से अकेले टहलने निकला और उस चट्टान पर पहुँचा जहाँ एक दिन पहले खरगोशों का पीछा किया गया था। मेरे पीछे ऊँची चोटी के बीचोंबीच खुले मैदान से जंगली बकरियाँ दौड़ती हुई निकलीं, उनके खुरों की आवाज़ गूंज रही थी, और वे गायब हो गईं।
मैं बैठ गया। दोपहर की परछाइयाँ पेड़ों के चारों ओर घिरने लगीं। मैं वहीं बैठा रहा, कुछ नहीं कर रहा था। थोड़ी देर बाद वह आई। उसके चेहरे पर आँसुओं के निशान नहीं थे, न ही उसने मुझ पर कोई दोष लगाया। वह मेरे बगल में बैठ गई और धीरे से उस घाव को सहलाने लगी जो मेरी छाती की हड्डी पर तलवार के वार की तरह फैला हुआ था। उसकी एड़ियाँ मेरे शरीर से छू गईं।
‘वह एक क्रूर व्यक्ति था। लेकिन वही मेरा इकलौता खून का रिश्तेदार था।’ उसकी आवाज़ में कोई दुख नहीं था। उसके होंठ कांप रहे थे।
मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा, उसे अपनी छाती से लगा लिया और कहा, 'मैं तुम्हारे लिए यहां हूं।'
उसके हाथ, पंख के स्पर्श से भी अधिक कोमल, मेरे शरीर पर जमे खून पर फिरे। हम युद्ध और मृत्यु को भूल गए।
शाम ढलने पर जब हम शिविर में वापस लौटे तो मैंने उसे अपने आगे चलने के लिए कहा।
मैंने उसे माँ के सामने खड़े होने के लिए कहा और बोला, 'अब से वह आपकी सेवा करेगी, माँ। वह मेरी दुल्हन है।'
केवल मैंने ही माँ की आँखों में हैरानी का भाव देखा। हिडिम्बी ने प्रणाम किया। माँ ने उसके सिर पर हाथ रखकर कहा, 'तुम्हें सब कुछ शुभ मिले।'
मैंने हिदिम्बी से कहा, ‘मेरे बड़े भाई, युवराज युधिष्ठिर, उनके सामने प्रणाम कीजिए।’

युधिष्ठिर ने उन्हें आशीर्वाद दिया, जल्दी से एक तरफ हट गए और बोले, 'मुझे तुम्हें उपहार देना चाहिए, लेकिन मेरे पास कुछ नहीं है। यह मेरे लिए बुरा समय है।'
वह धीरे से मुस्कुराई। 'आपको मुझे कुछ भी देने की ज़रूरत नहीं है। अगर आप हमेशा मेरे प्रति दयालुता दिखाएंगे तो मैं संतुष्ट रहूंगी।'
मैंने अपने छोटे भाइयों का उससे परिचय कराया, फिर महिलाओं को आपस में जान-पहचान करने के लिए छोड़कर जंगल की ओर चल दिया। मेरे साथ आए सहदेव ने मुझे बधाई दी। युधिष्ठिर हमारे ठीक पीछे थे।
उसने मुझे एक तरफ हटने के लिए कहा, ताकि दूसरे लोग न सुन सकें, और धीरे से बोला, 'उसके लोग जादू-टोना जानते हैं। रात में उसके साथ भोग-विलास मत करो। तुम्हें हमारे साथ ही रहना होगा।'
बचपन में मैंने जादू-टोना करने वाले राक्षसों की कहानियाँ सुनी थीं। नौकरानियों ने हमें बताया था कि कैसे एक राक्षस हिरण का रूप धारण करके सीता को लुभाने आया था, और कैसे राक्षस राजा रावण ने तपस्वी का वेश धारण करके सीता का अपहरण कर लिया था। अगर मैंने जिस आदिवासी को मारा था, वह जादूगर होता, तो वह दिन निश्चित रूप से इस तरह समाप्त नहीं होता। फिर भी, मैंने युधिष्ठिर की सलाह गंभीरता से सुनी, मेरा सिर झुका हुआ था।
तीन दिन के शोक के बाद हिदिंबी में बदलाव आया। वह अपने बालों और गले में फूल पहनने लगी। उसने मुझे जंगल की सभी छिपी हुई सुंदरताएँ दिखाईं। ऐसे पेड़ जो चिलचिलाती गर्मी में भी फूलते थे, ऐसे पौधे जिनकी टहनियाँ मीठे रस से भरी होती थीं, ऐसे क्षेत्र जहाँ वन देवियाँ निवास करती थीं, छिपी हुई नदियाँ, ऐसी झीलें जहाँ केवल नीले कमल खिलते थे...
मैं हस्तिनापुरा के दुश्मनों और जंगल के जीवन की कठिनाइयों को भूल गया था। दिन कभी लंबे नहीं लगते थे और मैं चाहता था कि रातें लंबी होती जाएं, सूरज कभी न उगे।
एक शाम जब मैं सूर्यास्त के समय जंगल से वापस आया, तो माँ ने कहा, 'अब हमारे लिए अपनी यात्रा जारी रखने का समय आ गया है।'
अर्जुन ने कहा, “हमारे मामा विदुर का संदेश लेकर एक विशेष दूत आया है। हमें एकाचक्र जाना होगा।”
युधिष्ठिर ने समझाया, “एकचक्र एक छोटा सा स्थान है, एक ब्राह्मणों का गाँव है। यदि हम वहाँ ब्राह्मणों की तरह ध्यान करते हुए और भिक्षा माँगते हुए

रहें, तो कोई हमें पहचान नहीं पाएगा। मैं अब जंगल की कठिनाइयों को सहन नहीं कर सकता।”
हस्तिनापुरा में क्या हो रहा था? हमने सुना था कि चाचा धृतराष्ट्र ने वारणावता में स्थित महल के जल जाने पर शोक व्यक्त किया था। और कौन-कौन रोया था? दूत ने इस बारे में कुछ नहीं बताया था।
क्या भीष्म रोये थे? या द्रोणाचार्य? या मेरा सारथी विशोका?
माँ ने हमें जल्दी करने को कहा। यात्रा के लिए हमें ज़्यादा तैयारी नहीं करनी थी। हिडिम्बी उन फलों और जड़ों को खोजने के लिए बाहर जाने की तैयारी कर रही थी जिन्हें हमें अपने साथ ले जाना था।
मां ने मेरी तरफ देखा। 'हिडिम्बी का हमारे साथ आना ठीक नहीं होगा।' युधिष्ठिर ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। ‘हमें उनके बीच ब्राह्मणों की तरह रहना होगा। इसलिए…’
हिदिम्बी किसी चीज़ को एक पैकेट में बाँध रही थी। वह रुकी और माँ की तरफ देखा। फिर मेरी तरफ देखने लगी। उसकी आँखों में आँखें न मिला पाने के कारण मैंने मुँह फेर लिया।
सहदेव मेरे पास आया।
मैंने उससे धीरे से कहा, 'वह गर्भवती है।'
‘मां को पता है।’
मां उठीं, हिदिम्बी के पास गईं और उसके सिर पर हाथ रखा। ‘तुम मेरी पहली बहू हो। तुम्हें एक अच्छा बेटा मिले। मैं तुम्हारे प्यार और देखभाल को हमेशा याद रखूंगी।’
मेरे भाई, जो यात्रा के लिए तैयार थे, युधिष्ठिर के पीछे-पीछे चल दिए। माता ने मुझे चेतावनी भरी नज़रों से देखा और आगे बढ़ने लगीं। मैंने अपने धनुष और बाण कंधे पर बाँध लिए और वहीं खड़ा रहा।
मां हिचकिचाईं, फिर वापस आ गईं।
‘जब तुम्हारा बेटा बड़ा हो जाए तो उसे मुझसे मिलने भेजना। वह मेरे पाँचों बेटों में सबसे बड़ा होगा।’ यह कहकर वह चली गई।
मैं हिदिम्बी के सामने खड़ा था।
भीमसेन एक निर्धन व्यक्ति था जिसके पास कुछ भी मूल्यवान नहीं था, यहाँ तक कि कोई ऐसी वस्तु भी नहीं थी जिसे वह उसे या उसके होने वाले बच्चे को दे सके।

वह मेरे चरणों में गिर पड़ी थी। मैंने उसे उठाया, उसके सिर पर अपने होंठ रखे और असहाय खड़ा रहा, उसे अलविदा कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं थे।
फिर मैं धुंधले अंधेरे में दूर होती जा रही उन आकृतियों का पीछा करने के लिए तेजी से आगे बढ़ा।

3

सूटाओं ने बाद में मेरे दूसरे द्वंद्वयुद्ध के बारे में जो कहानियां गढ़ीं, उन्हें सुनकर मुझे हंसी आती थी। सच्चाई यह थी कि बाका हिदिम्बा जितना शक्तिशाली नहीं था।
हम एकाचक्र में एक ब्राह्मण के घर के आधे हिस्से में रहकर भीख मांगकर जैसे- तैसे अपना गुजारा कर रहे थे। हमारे पहुंचने के ठीक अगले दिन हमें पता चला कि राजा वेत्रकिया पुरुषमेध अनुष्ठान करने वाले हैं, जिसमें मनुष्यों की बलि दी जानी थी।
युधिष्ठिर ने विद्वान ब्राह्मण गुरुओं से पुरुषमेध यज्ञ के बारे में सुना था और वे इसकी पेचीदगियों से भलीभांति परिचित थे। मैंने भी एक बार एक लालची ब्राह्मण ऋचीका की कहानी सुनी थी, जिसने अपने पुत्र शुनशेफ को सौ गायों के बदले बलि के रूप में बेच दिया था।
मेरे बड़े भाई ने बताया कि पुरुषमेध चालीस दिनों तक चलता था। सभी जातियों के लोगों की बलि दी जाती थी – एक ब्राह्मण, ताकि बलि देने वाला वेदों का महान विद्वान बन सके; एक क्षत्रिय, ताकि राजा के सभी गुण प्राप्त हो सकें; एक वैश्य, ताकि वायु शांत हो सकें; एक शूद्र, ताकि प्रायश्चित हो सके; एक चोर, ताकि अंधकार की शक्तियों को शांत किया जा सके; एक हत्यारा, ताकि नरक में उसकी बलि दी जा सके; एक नपुंसक, ताकि पापों का प्रायश्चित हो सके; और फिर एक नाई, एक जुआरी, एक लंगड़ा और एक वीणा वादक। युधिष्ठिर ने बलि के लिए बलि दिए जाने वाले लोगों के गुणों का वर्णन किया। इन चालीस दिनों में पंद्रह अवसरों पर ग्यारह-ग्यारह पुरुषों की बलि दी जाती थी।
पुराने समय में, कुछ लोग पुरुषमेध को सर्वमेध बना देते थे: यदि यज्ञ कराने वाला व्यक्ति अंत में स्वयं को बलिदान के रूप में अर्पित कर देता था, तो वह सर्वमेध हो जाता था। इसके पीछे का कारण पूछने का कोई औचित्य नहीं था, क्योंकि इसका कोई उत्तर था ही नहीं। 'मुझे सब कुछ दे दो, जैसे मैं तुम्हें सब कुछ देता हूँ' - यही मान्यता थी। यदि यज्ञ का सिद्धांत आशीर्वाद की प्रार्थना था, तो सर्वमेध यज्ञ में स्वयं को अंतिम बलिदान के रूप में अर्पित करने वाले बलिदाता को क्या प्राप्त होता था? युधिष्ठिर के पास इसका कोई उत्तर नहीं था।

बाका नामक एक निषाद ने राजा वेत्रकिया को बलि देने के लिए आवश्यक पुरुषों को लाने का जिम्मा उठाया था।
माँ ने हमारे घर में पिता, माँ, बेटी और छोटे लड़के को आपस में बहस करते हुए सुना। बाका के दूतों ने उन्हें घर से एक ब्राह्मण को भेजने का आदेश दिया था।
बाका ने बलि के लिए चढ़ाए जाने वाले पुरुषों को गाँव के ठीक बाहर जंगल में स्थित एक विशाल गुफा में इकट्ठा किया। गाँव वालों में से कोई भी उसका विरोध करने की हिम्मत नहीं कर पाया। इसके अलावा, बाका ने अपने राजा की ओर से लोगों को पकड़ने के लिए पूरे इलाके की छानबीन की, जबकि वे केवल एक ही व्यक्ति से अपील कर सकते थे।
जैसे-जैसे शोर बढ़ता गया, माँ ने परिवार से कहा, 'अगर केवल एक ही व्यक्ति को भेजना पड़े, तो मेरा एक बेटा है जो बहुत बलवान है। वह जाएगा।'
जब माँ ने हमें बताया कि उन्होंने उन्हें वचन दे दिया है, तो मैंने कुछ नहीं कहा। कभी-कभी, वरदान के रूप में मुझे मिली शारीरिक शक्ति अभिशाप भी बन जाती थी।
'जब मैंने उन्हें इतना दुखी देखा, तो मैं खुद को वह कहने से रोक नहीं पाई जो मैंने कहा,' मां ने कहा।
युधिष्ठिर क्रोधित हो गए। ‘माँ, यह कितनी मूर्खतापूर्ण बात है! हम भीमसेन की शक्ति पर ही चैन से सोते हैं। क्या आप यह नहीं जानतीं?’
माता ने ब्राह्मण और उसकी पत्नी को इस बात पर बहस करते सुना कि कौन जाएगा। बेटे ने कहा कि वह जाएगा। तभी उसके छोटे भाई ने घास का एक तिनका तोड़ा और घोषणा की कि वह उससे बाका को मार डालेगा। यह देखकर माता का हृदय पिघल गया और उन्होंने कहा: 'मैं अपने बेटे को भेजूंगी।'
सहदेव ने संदेह व्यक्त किया। ‘लेकिन हम क्षत्रिय हैं, है ना? क्या वेत्रकिया ब्राह्मणों के विषय को नहीं चाहता?’
हम सभी ने इस बचकाने सवाल को नजरअंदाज करने का नाटक किया।
युधिष्ठिर अत्यंत व्याकुल थे। ‘अगर हम भीमसेन को खो देते हैं…’ उन्होंने उदास होकर मेरी ओर देखा। ‘जब भी मैं सिंहासन पर अपना अधिकार स्थापित करने के उपाय सोचता हूँ, तो उनकी शक्ति का विचार ही मुझे सांत्वना देता है।’ अर्जुन ने कहा, 'मेरा बड़ा भाई नहीं हारेगा। वह पराजित नहीं होगा - एकाचक्र के लोग बका से बच जाएं।'

युधिष्ठिर ने सिर हिलाया और कहा, 'और हमें ब्राह्मणों का आशीर्वाद भी प्राप्त होगा।'
मैंने अपने बड़े भाई को मन ही मन प्रणाम किया, क्योंकि उन्होंने कहा था कि वे चारों मेरी शक्ति की छाया में रहते हैं। और अगर मैं जीवित वापस नहीं लौटा, तो भी उन्हें कुछ न कुछ अवश्य प्राप्त होगा: ब्राह्मणों का आशीर्वाद।
बाका का शरीर हिदिम्बा से अधिक मजबूत था। लेकिन उसमें हिदिम्बा जैसी ताकत और फुर्ती नहीं थी, जो घने जंगलों में दौड़ने, शिकार करने और लड़ाइयाँ लड़ने का आदी था।
बाका की गुफा के बाहर इंतजार करते हुए, मुझे शराब की दुर्गंध से घुटन होने लगी। उसके तीन अनुयायी मेरे चारों ओर खड़े थे, मानो मैं बलि का चढ़ावा बनकर आया था, और वे मेरे अच्छे और बुरे गुणों पर बहस कर रहे थे।
उन्होंने मुझे आदरपूर्वक अंदर आने के लिए आमंत्रित किया।
बाका की दाढ़ी तांबे के रंग की थी। उसे बहुत पसीना आ रहा था और शराब से लाल हुए उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी गोल आँखें मुझे व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ देख रही थीं। जब वह उठा, तो उसके शरीर पर मांस की लहरें फड़क उठीं। उसके स्तन किसी स्त्री के समान सुडौल थे और पसलियों पर चर्बी की परतें थीं। उसकी दोहरी ठुड्डी से लटकता हुआ मांस उसकी गर्दन और तांबे के रंग की दाढ़ी से होते हुए उसकी छाती तक फैला हुआ था। शराब और पसीने की दुर्गंध से मुझे उल्टी आने लगी।
मुझे उस लड़ाई का ब्यौरा ठीक से याद नहीं है। मुझे इतना पता है कि शुरुआत शब्दों से हुई थी।
‘क्या तुमने हिदिम्बा के बारे में सुना है? वह पहाड़ की तरह गिर पड़ा; गिद्ध और सियार अभी तक उसे खा नहीं पाए हैं। अगर तुम चाहो तो जाकर उसे देख सकते हो। मैंने ही उस जादूगर हिदिम्बा को द्वंद्वयुद्ध में मारा था।’
यह युद्ध विज्ञान में वर्णित एक रणनीति थी – शब्दों से आक्रमण करके शत्रु को असहाय कर देना। जब उसे यह अहसास हुआ कि मैं वेत्रकिया के यज्ञ स्थल पर अपना सिर कुर्बान करने की तैयारी के बिना आया हूँ, तो निषाद का व्यवहार बदल गया। वह दहाड़ा, और मैंने भी घातक दहाड़ से जवाब दिया।
मुझे पता था कि अगर उसकी भुजाएँ मुझे जकड़ने में कामयाब हो गईं, तो वे मेरा दम घोंट देंगी। मैंने देखा कि आग पर घी से भरा एक तांबे का बर्तन उबल रहा

था। एक भैंस के खाल उतारे और काटे गए टुकड़े ज़मीन पर बिखरे पड़े थे। बाका को उम्मीद नहीं थी कि जैसे ही उसने अपनी भुजाएँ घुमाईं और युद्ध के लिए तैयार हुआ, उबलता हुआ घी और तांबे का बर्तन उस पर गिर पड़ेगा। वह दर्द और गुस्से में जंगली सूअर की तरह दहाड़ा और लड़खड़ाते कदमों से मेरी ओर बढ़ा। मैंने गिरने का नाटक किया। वह उस लात के लिए तैयार नहीं था जो मैंने उसकी विशाल काया के अनुपात में बिल्कुल बेमेल पतली एड़ियों पर मारी।
‘पहले तुम, फिर वेत्रकिया।’
मैंने ज़मीन पर गिरे मांस के पहाड़ को रौंद डाला और मुझे पकड़ने के लिए हवा में बढ़ते हाथों से बच निकला। अपने घुटनों को जमाकर मैंने उन्हें एक महत्वपूर्ण नस पर दबा दिया। मैंने अपने दाहिने हाथ से उसका सिर नीचे दबाए रखा, उसकी चमड़े की बेल्ट पकड़ी, उसकी कमर ऊपर उठाई और अपनी पूरी ताकत से उसे ऊपर की ओर खींच लिया। मैंने महसूस किया कि उसके मांस के ढेरों के अंदर कई अंग ढीले पड़ रहे हैं। बाका चीख उठा। मैंने अपने घुटनों को उसकी गर्दन पर रखा, उसका सिर अचानक ऊपर उठाया और उसे झटक दिया। वह तड़पना बंद कर दिया। जब मैं उठा, तो मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि क्या हुआ था। क्या बाका, जिसने एकाचक्र के लोगों को डरा दिया था, मेरे सामने बस इतना ही विरोध कर सकता था? उसके अनुयायी असमंजस में थे कि क्या करें। मैंने उनसे कहा, 'शव को किसी दूर स्थान पर ले जाओ। और ध्यान रखना कि तुम फिर कभी एकाचक्र में दिखाई न दो।' भय से कांपते हुए वे आदरपूर्वक हाथ जोड़कर खड़े थे। मैं हल्के-फुल्के अंदाज़ में वापस चल पड़ा, मानो अभी-अभी व्यायाम करके लौटा हूँ। माँ बेफिक्र लग रही थीं, मानो मैं किसी जंगल की नदी से पानी लेकर लौटा हूँ। नकुल और सहदेव द्वंद्वयुद्ध के बारे में सुनने के लिए उत्सुक थे। युधिष्ठिर ने राहत की सांस लेते हुए मुझे गले लगा लिया।
अर्जुन ने पूछा, ‘क्या तुमने उसे मार डाला?’
'हाँ'
जब हम दोनों अकेले थे, तो मैंने उसे अपनी रणनीति के बारे में बताया। ब्राह्मण के घर में रहना मुझे बहुत जल्दी ऊब गया। युधिष्ठिर ने हमें बाहर न जाने का निर्देश दिया था। कौरव जासूस ज़रूर आसपास होंगे। विदुर ने स्पष्ट कर दिया था कि दुर्योधन को पूरी तरह यकीन नहीं था कि हम सब वारणवता में मर गए हैं।

जब ब्राह्मणों ने बका को मारने पर कृतज्ञता, खुशी और उपहारों से हमें अभिभूत कर दिया, तो माता ने उनसे कहा, 'मेरा पुत्र मंत्रों के जाप से प्राप्त शक्ति के कारण ही यह कार्य कर सका। इसलिए आपको देवताओं का धन्यवाद करना चाहिए।' हमारे घर के मुखिया ने देवताओं को कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक बकरी अर्पित की।
बाहर जाते समय अपना वेश छिपाना मुश्किल था – मैं अपने विशाल शरीर को पवित्र धागे और राख की पट्टियों से नहीं छुपा सकता था। न ही मेरे चेहरे पर युधिष्ठिर और अर्जुन की तरह मूंछें या दाढ़ी उगती थीं।
युधिष्ठिर ने हमारे ब्राह्मण समूह को जुआ खेलने का खिलाड़ी बनाने का प्रयास किया, लेकिन वे सफल नहीं हुए। उन्होंने वेदों और शास्त्रों पर प्रवचन देना शुरू कर दिया और यही उनका शौक बन गया।
गाँव वालों को लगता था कि हम किसी कुलीन परिवार के सदस्य हैं, जो दुर्भाग्यवश भीख मांगने पर मजबूर हो गए हैं। उनके अनुसार, इस दुर्भाग्य के लिए हम ज़िम्मेदार नहीं थे – बल्कि जिस क्षेत्र में हमारा जन्म और पालन-पोषण हुआ, वही दोषी था। जब भिक्षा देने में सक्षम क्षत्रियों पर बुरा समय आता है, तब ब्राह्मणों को भीख मांगने के लिए बाहर जाना पड़ता है।
हमारे मेज़बान के ज़रिए माँ का कुछ ब्राह्मण पुजारियों से संपर्क हुआ। उनमें से कुछ समय-समय पर उनसे मिलने आते थे और वह हमेशा उनसे निजी तौर पर बात करती थीं।
सहदेव ने मुझसे कहा, ‘वे हमारे बड़े भाई के लिए दुल्हन ढूंढ रहे हैं। मैंने उनकी बातों के कुछ अंश ही सुने हैं।’ माँ उस समय शादी का इंतज़ाम करने के बारे में कैसे सोच सकती थीं, जब हम देश-देश में भटक रहे थे और भीख मांगकर गुज़ारा कर रहे थे? मैंने एक-दो बार उनसे इस बारे में इशारा किया, और उन्होंने कहा, ‘अब तुम्हें शादी के रिश्तों के ज़रिए ही हिम्मत जुटानी होगी। अगर हमारे दोस्त नहीं हैं, तो हमें रिश्तेदार बनाने ही होंगे।’
हम यहाँ कब तक रहेंगे? विदुर का दूत कब दोबारा आएगा? यहाँ हमारी गतिविधियों और अन्य स्थानों की यात्राओं के लिए निर्देश हस्तिनापुरा में महल के ठीक बाहर स्थित एक छोटे से घर से ही आते थे।
युधिष्ठिर ने मुझे एक गुप्त बात बताई। ‘विदुरा के जासूस हमारे लिए काम कर रहे हैं। हमारे बड़े मामा धृतराष्ट्र यह मानने को तैयार नहीं हैं कि हम आग में जलकर मर गए। उन्हें अभी तक यह नहीं पता कि हिडिम्बा मारा गया है। अगर

दुर्योधन को वेत्रकिया के गुर्गे बका की मृत्यु की खबर मिल जाए, तो वह शायद हमारे जीवित होने का अनुमान लगा ले। हमारे मामा को ही हमारे लिए फैसला करने दीजिए।’
उनका मतलब विदुर से था। लेकिन मैं यह मानने को तैयार नहीं था कि जंगली चूहों की तरह मांद में रहना कोई रणनीति थी। क्यों न लौटकर कौरव सरदारों को एक-एक करके द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दी जाए? आखिर यही तो क्षत्रिय कानून था।
इस बीच, हम एकाचक्र नामक गाँव में रुके, जहाँ ब्राह्मणों के लकड़ी के घर चारों ओर फैले हुए थे और वातावरण वैदिक मंत्रों की गूंज से भरा हुआ था। दिन बेहद गर्म थे। हमने शिकार किए गए जानवरों के बजाय भिक्षा में मिले अनाज को खाया।
एक शाम मैं गाँव के बाहर छप्पर वाले घरों के आसपास घूमने निकला। क्या होगा अगर मैं पूरी रात बिना रुके, बिना आराम किए, जंगल की ओर चलता रहूँ? वह जंगल जो मुझे मेरी हर ज़रूरत पूरी कर देगा, जहाँ चंपा के फूल खिलने लगे होंगे। जहाँ वन की अप्सरा, जिसका शरीर नीरमतला के फूलों की कोमलता से भरा था...
जब हमारे शत्रुओं को पता चलेगा कि दूसरे पांडव, उस पराक्रमी योद्धा ने पांडवों को त्याग दिया है, तो वे क्या सोचेंगे?
मैं अंधेरा होने के बाद ही लौटा। कोई सोया नहीं था। मुझे पता था कि वे मेरा इंतजार कर रहे थे। वे अपने चेहरों पर दिख रही बेचैनी को दबाने की कोशिश कर रहे थे।
युधिष्ठिर ने कहा, 'राजा द्रुपद की पुत्री का स्वयंवर होने वाला है, वह अपना दूल्हा चुनने वाली है।'
यह ऐसा मामला नहीं था जिससे मुझे कोई लेना-देना हो, इसलिए मैंने इसमें बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं दिखाई।
अर्जुन और मैंने द्रुपद का महल देखा था। द्रुपद का राज्य पांचाल समृद्ध था और उनका राजा कुरुओं से अधिक शक्तिशाली था।
हमारी पढ़ाई पूरी होने के तुरंत बाद, द्रोणाचार्य चाहते थे कि हम सभी, कौरव और पांडव, एक सेना इकट्ठा करें और द्रुपद का सामना करें। द्रोण और राजा द्रुपद बचपन से मित्र थे, लेकिन किसी समय उनके बीच अनबन हो गई और वे अलग हो गए। द्रोण अपने सर्वश्रेष्ठ शिष्यों और कौरव सेना की सहायता से बदला लेना

उस रात जब हम सोने गए तो हमने द्रुपद के महल में स्थित विवाह कक्ष के बारे में बात की - युधिष्ठिर को छोड़कर हम सभी ने। युधिष्ठिर जागते हुए भी चुप रहे।
नकुल और सहदेव को इस तथ्य के अलावा और कुछ नहीं पता था कि द्रुपद और द्रोण के बीच उनकी पढ़ाई पूरी होने के बाद कुछ हुआ था।
नकुला ने मुझसे पूछा, 'हमारे गुरु और द्रुपद के बीच क्या हुआ? आप दोनों मध्यस्थ थे।'
अर्जुन ने उत्तर दिया, “द्रुपद ने हमारे गुरु के विरुद्ध घोर अपराध किया। युवावस्था में, जब वे सहपाठी थे, तब उसने द्रोण से एक खोखला वादा किया था: “जब मैं राजा बनूँगा, तो आप मेरे खजाने का उपयोग अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।” लेकिन राजा बनते ही वह द्रोण से तंग आ गया, बस इतना ही।” अर्जुन हँस पड़ा।
युधिष्ठिर ने गंभीर स्वर में कहा, 'क्या तुम हमारे ब्राह्मण गुरु का उपहास कर रहे हो?'
‘क्या मैं सही नहीं हूँ? क्या द्रुपद उससे इसलिए नाराज़ नहीं हुए और उसे इसलिए नहीं भगा दिया क्योंकि उसकी ज़रूरतें कभी पूरी नहीं होती थीं, चाहे उसे कितना भी दिया जाए?’
युधिष्ठिर चुप रहे।
सहदेव ने पूछा, 'हमारे गुरु धन क्यों चाहते थे?'
किसी ने उसे जवाब नहीं दिया। यह मानकर कि सब सो गए हैं, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। अर्जुन मेरे करीब आ गया।
‘क्या तुमने वह बात नहीं सुनी जो ब्राह्मण दूत ने द्रौपदी के बारे में कही थी, जिसे कृष्णा भी कहा जाता है?’
'नहीं।'
उन्होंने कहा कि वह बेहद खूबसूरत है।
मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। वह अनेक प्रार्थनाओं और अनुष्ठानों के फलस्वरूप जन्मी थी। मुझे पंचाला की यात्रा के दौरान मिले लोग याद आ गए। वे सभी सुंदर पुरुष और महिलाएं थीं।
‘ब्राह्मण ने हमें कुछ और बताया…’
मैंने मुड़कर अर्जुन के चेहरे की ओर देखा।
‘बेहद खूबसूरत… और उसके पसीने में कमल के फूलों की खुशबू है।’

मुझे पता था कि अर्जुन प्रतियोगिता के बारे में सोच रहा था। हमें नहीं पता था कि कौन-कौन आ रहा है। अगर कर्ण, जिसने कौशल प्रदर्शन के समय सार्वजनिक रूप से अर्जुन को चुनौती दी थी, वहाँ आने वाला था...
नहीं। मैंने अपनी गलती सुधार ली। क्षत्रिय विवाह महल में रथ चालक प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते थे। लेकिन कर्ण को अब अंग के राजा की उपाधि प्राप्त हो चुकी थी। मुझे नियमों के बारे में युधिष्ठिर से पूछना पड़ेगा।
मुझे पता था कि अर्जुन की आंखों में बसी मुस्कान में एक धुंधली छवि समाई हुई थी, एक ऐसी छवि जिसमें कमल के फूलों की सुगंध घुली हुई थी।
किसी कारणवश, उस रात मैंने वैसा सपना नहीं देखा जैसा मैं आमतौर पर देखता था, जिसमें मुझे उस काली सुंदरी की याद आती थी जिसके पसीने में एक सामान्य मानवीय गंध होती थी।

4

विवाह कक्ष में जितने अतिथि थे, उतने ही दूल्हों की भीड़ थी। ब्राह्मण यज्ञ की अग्नि के पास पीछे बैठे थे। पाँचों के समूह में प्रवेश करके ध्यान आकर्षित करने के बजाय, हम सभी अलग-अलग अंदर गए। अर्जुन सबसे अंत में आया और बैठने की जगह ढूंढते हुए मेरे पास ही एक जगह पा ली। हमारे आसपास के लोग उपस्थित राजाओं की पहचान करने की कोशिश कर रहे थे।
दुर्योधन उस समूह के सबसे आगे था जो हमारे ठीक बाद अंदर आया था। अर्जुन ने मुझे यह बताने के लिए मेरे पैर को हल्के से धक्का दिया, लेकिन मैंने उसे पहले ही देख लिया था। शादी के प्रस्ताव देने वालों में बूढ़े, दादा और तीन-चार पत्नियों वाले पुरुष भी थे।
हॉल के बीचोंबीच एक विशाल खंभा था। निशाना उसके शीर्ष पर लगा हुआ था। पुराने समय में, योद्धा का धर्म या तो युद्ध लड़कर कन्या प्राप्त करना था, या स्वयंवर में कन्या द्वारा चुना जाना था। धनी राजा युवा पुत्रियों के पिताओं को दहेज देकर उन्हें विनम्र पुत्रों या युवावस्था पार कर चुके पुत्रों के बदले खरीदते थे। हमारे समय के युवा इस प्रथा को तुच्छ समझते थे।
सूत लगातार गाते रहे, वीणा, बांसुरी और मृदंगम की मधुर संगत में। वे कृष्णा की स्तुति कर रहे थे, जो एक गुणी पुजारी और उसके सहायक द्वारा द्रुपद के लिए किए गए अनुष्ठान की अग्नि से उत्पन्न प्रकाश से प्रकट हुई कन्या थीं। संगीत के साथ-साथ जलते चंदन और अकिल की सुगंध पूरे हॉल में फैल रही थी। जैसे ही द्रुपद हॉल के केंद्र की ओर बढ़े, अचानक सन्नाटा छा गया। विशाल स्तंभों के पार जमा हुए लोग जहाँ तक हो सके आगे बढ़ने लगे।
द्रुपद ने आमंत्रित अतिथियों के साथ-साथ इस आयोजन के बारे में सुनकर आए सभी लोगों का स्वागत किया। उन्होंने बार-बार कहा, 'मैं धन्य हूं।'
सबकी निगाहें हॉल के भीतरी द्वार पर टिक गईं। सबसे पहले मेरी नज़र धृष्टद्युम्न पर पड़ी: वे बहुत युवा, बलवान और सुंदर लग रहे थे। मोतियों से जड़ा सोने का मुकुट उनके माथे पर लहराते बालों को थामे हुए था। उनकी बांह पर बेरिल जड़ा कंगन था, और बीस लड़ियों वाला अर्धगुच्छम हार उनकी छाती पर लटका था। उनकी पीली कमरबंद के ऊपर कमरबंद पर रत्न चमक रहे थे। फिर मेरी नज़र राजकुमार के पीछे खड़ी युवती पर पड़ी। ये द्रौपदी थी! सबसे पहले मेरी

नज़र उसकी काली आँखों पर पड़ी, जो तीरनुमा काजल लगी पलकों के नीचे उसके हार के बीच में चमकते नीलम से भी ज़्यादा दमक रही थीं। उसने सफेद रेशमी वस्त्र पहने थे और हाथ में सोने की शादी की माला थी। हॉल में सन्नाटा छा गया। मैंने अर्जुन को धीरे से कहते सुना, 'हे देवताओं के देव!'
मैंने सोचा, यदि देवताओं के देव इंद्र मेरे छोटे भाई के रक्षक हैं, तो यही वह क्षण था जब उसे उनके पास आना चाहिए था। अर्जुन उस युवती के लिए तीव्र इच्छा से व्याकुल था।
ब्राह्मण दूत ने बिलकुल भी अतिशयोक्ति नहीं की थी। मैंने यज्ञ की अग्नि की लपटों के बीच से द्रौपदी को फिर से देखा। वह अत्यंत सुंदर लग रही थी, मानो उगते सूरज की किरणों से अभी-अभी खिला हुआ नीला कमल हो।
धृष्टद्युम्न ने बताया कि दूल्हों को क्या करना था। खंभे के ऊपर घूमते हुए यांत्रिक पिंजरे में बंद लकड़ी के पक्षी को तीर से गिराना था। पिंजरे की सलाखें बहुत पतली थीं और एक-दूसरे के बहुत करीब लगी थीं। धनुर्धारी को हॉल में रखे विशाल धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ानी थी और निशाना लगाना था।
एक परिचारक ने विशाल धनुष को ढकने वाले रेशमी कपड़े को हटाया। उस पर पीतल की चादरें उकेरी गई थीं, जिनमें से प्रत्येक की लंबाई कम से कम छह भुजाओं के बराबर थी।
घूमते हुए पिंजरे के अंदर लक्ष्य को भेदने के लिए असाधारण कौशल की आवश्यकता होती। और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण, सौभाग्य का साथ भी ज़रूरी था। लेकिन मुझे पता था कि द्रुपद द्वारा तैयार किया गया विशाल धनुष ही धनुर्धारियों के लिए अधिक चिंता का कारण बनने वाला था। निषाद सात और नौ भुजाओं की लंबाई वाले बाँस के धनुषों का उपयोग करते थे। हालाँकि, यह धनुष बाँस का नहीं बना था। द्रुपद के धातु के धनुष का रहस्य उसकी कारीगरी में ही छिपा होना चाहिए।
अगर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते समय ही वह टूट जाए तो क्या होगा? मैंने सुना था कि राम ने जनक के महल में लक्ष्य को दो भागों में बांटने से पहले ही अपना धनुष तोड़ दिया था। अगर अयोध्या के राम धनुष टूटने के बाद भी प्रतियोगिता जीत सकते हैं, तो मुझे भी यहाँ अपने कौशल को परखने का मौका ज़रूर मिलेगा।
दर्शकों का ध्यान अंदर आए दो लोगों की ओर गया। द्रुपद उनकी ओर दौड़े और हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया। मैंने बलराम को तुरंत पहचान लिया। दूसरा

व्यक्ति कृष्ण ही होना चाहिए था। पिता के अंतिम संस्कार के तुरंत बाद बलराम एक बार हस्तिनापुरा आए थे। अब वे अधेड़ उम्र के हो चुके थे। माताजी ने मुझे बताया था कि कृष्ण मुझसे एक साल छोटे हैं। हमने कुछ समय पहले सुना था कि वे मथुरा से द्वारका में अपने नए महल में जाने वाले हैं।
बलराम और कृष्ण प्रतियोगियों में शामिल नहीं होने वाले थे। राजा द्रुपद उन्हें आदरपूर्वक हॉल में ऊंचे स्थानों पर ले गए।
‘कृष्ण! कृष्ण आ गए हैं,’ अर्जुन ने कहा।
मैंने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा, 'मैंने उसे देखा।'
कृष्ण ने दर्शकों और अतिथियों की ओर देखा। प्रतियोगिता के लिए आगे आने वाला पहला राजा कलिंग के राजा का अधेड़ पुत्र था। मगधियों ने उसके गुणों का वर्णन किया। जब उसने धनुष उठाया और उसे ऊपर किया, तो मुझे एहसास हुआ कि वह कितना भारी था। उसे सीधा रखने के व्यर्थ प्रयास में, प्रतियोगी अपना संतुलन खो बैठा और घुटनों के बल गिर पड़ा। दर्शकों में हंसी की लहर दौड़ गई।
मैंने इस धनुष के रहस्य पर विचार किया और अंदाज़ा लगा पाया कि यह क्या हो सकता है। इसे स्पष्ट रूप से निशानेबाजों का मज़ाक उड़ाने के इरादे से बनाया गया था - जानबूझकर संतुलन बिगाड़ने के लिए इसमें बेतरतीब ढंग से पिघली हुई धातु डाली गई थी। यहां तक कि अगर कोई तीरंदाज इसे सीधा पकड़ने और प्रत्यंचा कसने में सफल भी हो जाता, तो भी तीर को सही स्थिति में रखकर निशाना साधते-लगाते वह लक्ष्य से चूक जाता।
हमने कई धनुर्धारियों को बारी-बारी से प्रयास करते देखा, हर कोई असफल होकर प्रतियोगिता से हटता गया। अर्जुन ध्यान से देख रहे थे कि धनुष एक जीवित प्राणी की तरह, एक हाथ से दूसरे हाथ में अजीबोगरीब ढंग से मुड़ता और घूमता था। उनकी निगाहें केवल धनुष पर टिकी थीं, जो प्रत्येक धनुर्धारी के हाथ में अलग-अलग तरह से व्यवहार कर रहा था।
मेरी नज़र युधिष्ठिर पर पड़ी। वे बेहद निराश लग रहे थे। अगला प्रतियोगी दुर्योधन था। उसने धनुष को कमर तक उठाने की कोशिश की, लेकिन फिर प्रयास छोड़ दिया।
जब अर्जुन ने देखा कि दावेदारों के समूह से कोई उठकर धनुष की ओर चल रहा है, तो उसकी सांस थम गई।
मगधों और सूतों ने पुकारा: ‘अंगों के राजा कर्ण।’

अन्य किसी योग्यता का उल्लेख नहीं किया गया, न ही किसी आश्चर्यजनक कारनामे का वर्णन किया गया।
हालांकि वह मेरा सबसे बड़ा दुश्मन था, फिर भी मैं उसकी बेपरवाही की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका। जैसे ही वह सीधा खड़ा होकर आगे बढ़ा, उसका सिर हॉल में लगी झालरों से लगभग छू गया।
मुझे लगा कर्ण को एहसास हो गया था कि धनुष के संतुलन में गड़बड़ी हुई है।
अपनी बाहों की मांसपेशियों में हो रही हलचल को लोगों से छुपाते हुए, उसने आखिरकार धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा दी। इस तरह उसने पहला दौर जीत लिया। दर्शक सांस रोककर आशा और प्रशंसा से प्रतीक्षा कर रहे थे।
धृष्टद्युम्न ने अपना सिर अपनी बहन की ओर झुकाया और उससे कुछ बुदबुदाया। मुझे लगा कि उसके होंठ हिले।
धृष्टद्युम्न तीन कदम आगे बढ़े और बोले, 'रुको! इस प्रतियोगिता में केवल क्षत्रिय ही भाग ले सकते हैं।'
कर्ण ने अपने धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते हुए धीरे-धीरे धृष्टद्युम्न की ओर देखा। वहां मौजूद सभी लोग देख सकते थे कि कर्ण के भीतर क्रोध की ज्वाला ग्रीष्म ऋतु में जंगल की आग की तरह भड़क रही थी।
धृष्टद्युम्न मुस्कुराते हुए आगे बोले, 'मेरी बहन अपने से निचले कुल के किसी भी व्यक्ति को स्वीकार नहीं करेगी। यदि आप इसे केवल अभ्यास के रूप में जारी रखना चाहते हैं, तो आप ऐसा कर सकते हैं।'
मैंने कर्ण के शरीर को देखा, जो पहले धनुष की डोरी की तरह तना हुआ और मजबूत था, धीरे-धीरे सिकुड़ता और छोटा होता गया।
अर्जुन ने राहत की सांस ली।
यह दूसरी बार था जब मुझे अपने शत्रु पर दया आई। वह अब पहले से भी अधिक कमजोर और असहाय दिख रहा था, जबकि पहले वह अधीरता की बाहों में थका हुआ खड़ा था।
पहले से कहीं अधिक कुशलता से उसने धनुष की डोरी खोली और उसे अपने हाथों से नीचे गिरा दिया। वह गिरकर हॉल के पत्थर के फर्श पर खड़खड़ाया और उसकी आवाज़ गूंज उठी। कर्ण सिर झुकाए पीछे के दरवाजे की ओर चल पड़ा। भीड़ की फुसफुसाहट तेज होती चली गई।

चेदि, विदर्भ, वंग, केकय और कामरूप के शासकों की बारी समाप्त हो चुकी थी। कोई और आगे नहीं आया। मगध ने कहा: 'यदि राजाओं ने विश्राम लेने का निर्णय लिया है, तो ब्राह्मण अपनी बारी ले सकते हैं।'
यह घोषणा मात्र एक औपचारिकता थी, उन्हें किसी के आगे आने की उम्मीद नहीं थी। एकमात्र ब्राह्मण धनुर्धर जो ऐसा कर सकता था, वह अश्वत्थामा था, और वह भी नहीं आया था।
हमने एक-दूसरे को देखा। युधिष्ठिर को मेरी निगाहों का एहसास हो गया होगा, क्योंकि वे उठने के लिए तैयार हुए, फिर बैठ गए।
अर्जुन ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'हमारा बड़ा भाई भाग नहीं ले रहा है, इसलिए अब दूसरे भाई की बारी है।'
मैंने उसकी जांघ पर थपथपाते हुए कहा, 'मैं नहीं जा रहा। आपका भाग्य शुभ हो।' अर्जुन खड़ा हो गया। देखने वालों ने सोचा होगा कि वह कोई नासमझ ब्राह्मण लड़का है। हस्तिनापुर में उसे देखने वाला कोई भी व्यक्ति इस काले रंग के ब्राह्मण युवक को नहीं पहचान पाता, जिसके बाल बिखरे हुए थे और गर्दन तक फैले हुए थे, और जिसका चेहरा और शरीर पूरी तरह से पवित्र राख से लिपटा हुआ था। मेरा हृदय संदेह और प्रार्थनाओं से भर गया जब मैंने अपने छोटे भाई को सिर झुकाए, धीरे-धीरे धनुष की ओर बढ़ते देखा। एक कुशल एथलीट की तरह स्थिर और सधे हुए कदमों से न चलना उसके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था।
यज्ञ की अग्नि के पीछे लगे खंभों के कारण द्रौपदी का चेहरा स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था। मुझे केवल उनका एक पैर ही दिखाई दिया, जिस पर सोने की अंगूठियां थीं। मैंने गहरी सांस ली। क्या कमल के फूलों की सुगंध धूप की खुशबू के साथ मिल रही थी? क्या द्रौपदी को पसीना आ रहा था?
हमारे चारों ओर बैठे बुजुर्गों की आवाजें प्रसन्नता से भरी हुई थीं - वे स्पष्ट रूप से राहत महसूस कर रहे थे कि कम से कम एक ब्राह्मण युवक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आगे आया है।
अर्जुन हॉल के बीचोंबीच खड़े हुए और धनुष को ऊँचा उठाकर अपने से काफी दूर रखा। मुझे एहसास हुआ कि उन्होंने धनुष के वजन के बारे में विशेष गणना की थी, जिसका संतुलन उन्होंने बड़ी चतुराई से बिगाड़ा था। ऐसा लग रहा था कि धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाना कर्ण से भी ज्यादा मुश्किल था। जैसे ही धनुष उनके बाएँ हाथ में और कंधे पर स्थिर हुआ, उनके पूर्ण नियंत्रण में और एकदम स्थिर, मैं उत्सुकता से बेताब हो गया। एक सेवक तरकश लेकर उनके पास दौड़ा और

‘जो लोग विजेता को स्वीकार नहीं करना चाहते, वे पहले मुझसे बात करें।’ मैंने धमकी देते हुए लकड़ी का डंडा ऊँचा उठाया। अर्जुन ने बाद में मुझे बताया कि मैं चिल्लाया था।
मेरी ओर उग्र रूप से दौड़े लोगों की भीड़ के बीच, मैंने एक विकृत चेहरा देखा, जिसे मैं किसी भी समय, कहीं भी पहचान लेता। शकुनी। मैं अपने बाएं हाथ से उसे एक जोरदार प्रहार करने की इच्छा को रोक नहीं पाया। वह लड़खड़ाकर कहीं गिर पड़ा।
मैंने कहा, 'आओ। एक-एक करके आओ, या सब एक साथ आओ।'
वह कौन है? वह कौन है? कौन? मैंने एक ही समय में कई आवाजों को सवाल पूछते सुना।
मैंने अपना परिचय दिया। 'एक और ब्राह्मण जिसने शस्त्र विद्या सीखी है।' हमलावर अनिश्चितता की स्थिति में रुक गए।
किसी ने पूछा, 'क्या शादी के हॉल में इस तरह का व्यवहार करना सही है?' मुझे यकीन नहीं था कि वह कौन था, शायद राजाओं में से कोई एक।
अर्जुन की पीछे से रक्षा करते हुए मैंने कहा, 'तो चलिए महल के प्रांगण में चलते हैं।'
दंगाइयों का मनोबल गिर पड़ा। एक वृद्ध राजा की सलाह उपयुक्त सिद्ध हुई: 'यदि द्रुपद अपनी पुत्री को एक घुमंतू ब्राह्मण को देने में प्रसन्न हैं, तो हमें कुछ नहीं कहना।'
प्रदर्शनकारी पीछे हट गए और मैंने द्रौपदी की ओर देखा। यह सोचना कितना गलत था कि बेचारी लड़की डरी हुई होगी। उसकी हल्की मुस्कान से ऐसा लग रहा था मानो उसे फैलते हुए दंगे को देखकर आनंद आ रहा हो; वह और भी दंगा देखना चाहती थी!
सेना बाहर तैयारी कर रही थी। धृष्टद्युम्न महल से जा चुके थे। मैंने व्याकुल द्रुपद से कहा, ‘राजा, भयभीत न हों। यदि केवल ये लोग ही लड़ने वाले हैं, तो आपकी सेना को तैयार होने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम इनसे निपट लेंगे।’
राजा अचंभित दिखाई दिए, मानो उन्हें मेरी बात पर विश्वास ही न हो।
मुझे लगा कि जब हमारे चारों ओर खतरे और हथियार घात लगाए बैठे हों, तो यहाँ रुकना बुद्धिमानी नहीं होगी। मैंने अर्जुन से कहा, 'अपनी दुल्हन को लेकर जाओ। मैं तुम्हारे साथ आऊंगा।'

अर्जुन ने द्रुपद को प्रणाम करते हुए कहा, ‘मुझे जाने की अनुमति दीजिए। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि यदि मैं जीतूंगा तो यज्ञ और पूजा करूंगा। मैं उन्हें संपन्न करने के बाद कन्या को लेकर वापस आऊंगा।’
मैंने राजा से कहा, ‘एक रथ। बाहर एक रथ तैयार रखा जाए।’
नकुल और सहदेव कहाँ थे? मैंने युधिष्ठिर को भी नहीं देखा था। काश वे हमारे साथ होते, ताकि बाहर से हमला होने पर वे दोनों तरफ से और पीछे से हमारी रक्षा कर सकें।
रथ तैयार था। अर्जुन सबसे पहले उसमें सवार हुए, फिर द्रौपदी का हाथ पकड़कर उन्हें ऊपर उठाया। मैं भी कूदकर रथ में सवार हो गया और सारथी के बाईं ओर बैठ गया। चार-पाँच तीर हमारी ओर आए और रथ के पहियों के पास जा गिरे। मैंने सारथी से चाबुक छीन ली, उसे घुमाया और घोड़ों को दौड़ाकर उन राजाओं की कतारों के बीच से निकल गया जो पंचाल के बाहर से आए थे और अब अपनी सेनाएँ जुटाने की तैयारी कर रहे थे।
शहर के बाहरी इलाके में पहुँचते ही मैंने सारथी से रुकने को कहा। हम नीचे उतरे। द्रौपदी हिचकिचाई। अर्जुन ने कहा, 'नीचे उतरो। हमारे लोग यहीं पास में हैं।'
उसने सारथी को महल में वापस लौटने के लिए कहा।
हम चलने लगे। दूर से हमें कुम्हारों का गाँव दिखाई दे रहा था जहाँ हमने पिछली रात बिताई थी। जैसे ही हम गली में मुड़े, अर्जुन रुक गया। ‘राजकुमारी, डरो मत। हम…’
उसने मेरी ओर ऐसे देखा मानो मुझसे बोलने की अनुमति मांग रहा हो।
द्रौपदी ने धीरे से कहा, 'मुझे लगता है मेरे पिता का अनुमान सही था।'
हमें उसकी बात समझ नहीं आई।
‘हम… हम हैं…’
द्रौपदी मुस्कुराई। ‘मुझे पहले से ही अंदाजा था। कुंती का पुत्र अर्जुन।’ उसने मेरी ओर देखा। ‘ब्राह्मणों का खंभे उखाड़कर लड़ना उचित नहीं है। छोटे भाई ने बड़े भाई से बेहतर भूमिका निभाई।’
मैं अपनी हंसी रोक नहीं पाया।
हमारे बीच चलते हुए द्रौपदी ने कहा, “मैंने अपने पिता को प्रतियोगिता की तैयारियों के दौरान यह कहते सुना था: अगर पांडवों को पता चल गया, तो वे अवश्य आएंगे। विशेषकर सभी धनुर्धारियों में श्रेष्ठ अर्जुन।”

ब्राह्मण की भूमिका निभाने की कोशिश करते हुए, मैंने पूछा, 'लेकिन क्या पांडवों की मृत्यु वारणावत या ऐसी ही किसी जगह के जंगल में लगी आग में जलकर नहीं हुई थी?'
‘कौरव भी इस बात पर विश्वास नहीं करते।’
हम कुम्हार की झोपड़ी के सामने रुके, जहाँ हमने पिछली रात बिताई थी। दरवाजे पर पहुँचकर मैंने कहा, 'रुको, चलो माँ को सरप्राइज देते हैं। यही हमारा महल है।'
पांचाल में, द्रौपदी ने युद्ध छेड़ने के लिए तैयार राजाओं के बीच खड़े होकर रक्तपात का दृश्य देखकर भी मुस्कुराया था। अब वह कुम्हार की कुटिया को शांत भाव से देख रही थी, बिल्कुल भी विचलित नहीं थी।
मैंने बंद दरवाजे पर दस्तक दी और पुकारा, 'माँ, दरवाजा खोलो। क्या तुम आज हमें मिली हुई भिक्षा नहीं देखना चाहती?'
मां ने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने दोबारा आवाज लगाई।
मां ने अंदर से कहा, 'इसे आपस में बांट लो, तुम सब।'
द्रौपदी ने अपनी मुस्कान दबा ली। माँ ने दरवाजा खोला और अर्जुन और मैं जोर-जोर से हंसते हुए अंदर आ गए। द्रौपदी को देखकर माँ की आँखें चमक उठीं और उनके होठों पर आश्चर्य से भरी मुस्कान आ गई।
‘देखो हमें कैसी भिक्षा मिली: राजा द्रुपद की पुत्री। वह दुल्हन जिसे अर्जुन ने अपनी धनुर्विद्या से जीता।’
द्रौपदी ने घुटने टेककर माता के चरणों को स्पर्श किया। माता ने उन्हें आशीर्वाद दिया। इसी समय युधिष्ठिर माद्री के पुत्रों के साथ वहाँ पहुँच गए।
मैंने मजाक में कहा, 'देखो, जब मैंने माँ को आज मिले दान के बारे में बताया, तो क्या तुम जानती हो कि उन्होंने क्या कहा, उन्हें मेरे कहने का मतलब समझ नहीं आया था? उन्होंने कहा कि हम सबको दान बाँट लेना चाहिए!'
नकुल और सहदेव जोर से हंस पड़े। माता और द्रौपदी पहले ही अंदर जा चुकी थीं। युधिष्ठिर ने अत्यंत गंभीरता से कहा, “माँ ने ऐसा कहकर कितनी बड़ी गलती की। चाहे उन्होंने इसे कितनी भी हल्के में कहा हो, माँ का आदेश आदेश ही रहता है। धर्म का नियम कहता है कि इसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता।” द्रौपदी ने लौटते समय यह सुना। वह किसी बात पर मुस्कुरा रही थी, लेकिन अचानक उसके चेहरे पर उदासी छा गई।

हम सब चुप हो गए। जीत का जश्न मनाने के क्षण थम से गए।
हाँ, यह जश्न का क्षण होना चाहिए था। केवल राजा द्रुपद की राजधानी में मिली विजय के कारण ही नहीं। अब तक अनाथ रहे पांडव शक्तिशाली रिश्तेदारों के मिलने से बलवान हो गए थे। हस्तिनापुर में कई लोग यह जानकर कांप उठते कि पंचाल अब अपनी विशाल सेना और धन-संपत्ति के साथ हमारा साथ देंगे। वे यह भी सोचने लगते कि क्या गंगा की गहराइयों और लाख के घर से बच निकलने वाले अमर हैं। बड़े-बुजुर्ग कहते कि हमें देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त है। अंधे राजा और उनके पुत्रों को अब चैन की नींद नहीं आएगी।
हम एक ऐसे मोड़ पर आ गए थे जहाँ हमारी मुसीबतों का अंत होने वाला था। और फिर, धर्म के नियमों को लेकर यह बचकाना बहस! बिना कुछ कहे, मैं वहाँ से चला गया।
युधिष्ठिर ने पुकार कर कहा, “भीमसेन, रुको। कृष्ण ने कहा था कि वे आएंगे।
हमारे बड़े भाई बलराम और कृष्ण दोनों आ रहे हैं। रुको!”
मैंने इंतजार नहीं किया।

5

मैं गौशालाओं के पास स्थित सुनसान पत्थर के तालाब के किनारे खड़ा था। मुझे दूर से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ और झुंड से भटक गए बछड़ों के रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
पीछे से आती आहट सुनकर मुझे लगा कि सहदेव या अर्जुन होंगे। लेकिन वह मेरे बड़े भाई थे। हम कुछ देर चुपचाप खड़े रहे।
बलराम बहुत जल्दी चले गए थे। जब मैंने कृष्ण और अर्जुन को जश्न मनाने के लिए शराब ढूंढते देखा, तो मैं वहां से चला गया। तालाब का पानी खरपतवारों से भरा हुआ था। एक मछली खरपतवारों के बीच से निकली, थोड़ा पानी पिया और फिर नीचे चली गई। युधिष्ठिर तालाब के चारों ओर घूमे। फिर उन्होंने गौशालाओं की ओर देखते हुए कहा, 'कहते हैं कि पांचाल के राजा के पास 20,000 गायें हैं।'
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मेरा बड़ा भाई पास आया। ‘अर्जुन भाग्यशाली है। द्रौपदी के लिए बिल्कुल सही वर।’ वह मुस्कुराया। ‘द्रौपदी को देखने के बाद ही मुझे एहसास हुआ कि नीला-काला रंग इतना सुंदर हो सकता है।’
मैंने मुस्कुराने की कोशिश की।
‘अर्जुन को द्रौपदी से विवाह करना ही चाहिए। क्या यही सही नहीं है?’ ‘कितना निरर्थक प्रश्न है!’
और फिर भी माँ इसलिए परेशान हैं क्योंकि उन्होंने वह मूर्खतापूर्ण बयान दिया था।
मैं हिला और दीवार के उस हिस्से पर बैठ गया जो टूटा नहीं था।
उन्होंने कहा, ‘मैंने महाकाव्यों में कई ऐसी पत्नियों के बारे में सुना है जिनके एक से अधिक पति थे। क्या आप जटिला के बारे में नहीं जानते?’
मुझे पता नहीं था। मैं इन पुरानी कहानियों से उतना परिचित नहीं था जितना मेरा बड़ा भाई था।
जटिला सात ऋषियों, सप्तर्षियों की पत्नी थीं। उनके जैसी अनेक उदाहरण हैं। लेकिन द्रौपदी अधिकार से अर्जुन की पुत्री हैं, मुझे इस बात का पूरा यकीन है। माँ उनके कहे शब्दों से परेशान हैं।
अपने बड़े भाई के विचारों से पूरी तरह अवगत होने के बावजूद, मैं दृढ़तापूर्वक चुप रहा।

'अगर दादा कृष्णद्वैपायन या हमारे चाचा विदुर या धर्म के नियमों में पारंगत कोई व्यक्ति आस-पास होता, तो हम उनसे सलाह ले सकते थे।'
‘क्या सलाह?’ मेरी आवाज़ कठोर हो गई थी। ‘द्रौपदी अर्जुन के लिए बनी है। अगर आप चाहते हैं कि उसके एक से ज़्यादा पति हों, तो आप उसे अर्जुन के साथ साझा कर सकते हैं। लेकिन पहले उससे राय ज़रूर ले लें, जिसने अपनी वीरता और बल से यह विजय प्राप्त की है। जहाँ तक द्रौपदी की बात है – हमने कभी महिलाओं की पसंद-नापसंद जानने का रिवाज़ नहीं रखा है, है ना?’
युधिष्ठिर ने उसी प्रश्न को अपने अगले तर्क के लिए आधार बनाया। 'ऐसा कौन कहता है? कुरु वंश ने तो हमेशा से ही महिलाओं का आदर किया है।'
‘हमारी चाची गांधारी को अंधे राजा के लिए खरीदा गया था। शल्य ने माद्री को पांडु को सोने के टुकड़ों और रत्नों के बदले बेच दिया, हालांकि वह जानता था कि पांडु कभी संतान नहीं कर सकते।’
‘हमारे पिता को!’
'हां, हमारे पिता से। मुझे आश्चर्य है कि क्या किसी ने मां माद्री की इच्छाओं पर विचार किया।'
मैंने अपना आपा खोने से रोकने की कोशिश की। चाहे वह वेदों और पवित्र ग्रंथों का कितना भी बड़ा विद्वान क्यों न हो, मुझे लगा कि यह व्यक्ति, जो माँ के शब्दों जैसे खोखले सहारे पर अड़ा हुआ था, केवल तिरस्कार का पात्र था।
उसने आह भरते हुए उठ खड़ा हुआ। अगर वह बहस करता रहा, तो शायद उसका यह मूर्ख छोटा भाई भी पलटवार करने के लिए सही शब्द ढूंढ ले। उसे यह बात समझ आ गई होगी, इसलिए वह बिना कुछ कहे वहां से जाने लगा।
मेरा उसे इतनी आसानी से जाने देने का कोई इरादा नहीं था। ‘रुको।’ मैं उसके पास पहुँचा। ‘मुझे इसमें मत घसीटो। जंगल में एक स्त्री मेरा इंतज़ार कर रही है। वह मेरी संतान को गर्भ धारण किए है। मैं उससे संतुष्ट हूँ, भले ही वह कुरु वंश के साथ रहने के योग्य न हो। और माद्री के बेटों को भी इसमें मत घसीटो, वे अभी विवाह के लिए बहुत छोटे हैं। काश, जटिला को भी हमारे युग में साथी मिल जाएँ।’
उसके जाने के बाद मेरे मन में कड़वाहट भर गई। और बाद में, राहत मिली कि मेरे दिल से एक बोझ उतर गया है। सोचो, वह कह रहा था कि हमें द्रौपदी को साझा

करना होगा, एक ऐसी नन्ही लड़की जिसकी आँखों में बचपन की जिज्ञासा अभी भी कम नहीं हुई थी।
मैं बिना किसी उद्देश्य के चलता रहा। मुझे एहसास हुआ कि मैं अगले गाँव के पास पहुँच रहा हूँ, तभी मुझे आस-पास की झोपड़ियों से लोहारों के धातु के बर्तन पीटने की आवाज़ सुनाई दी। मैं वापस मुड़ा। जैसे ही मैं अँधेरे में अपने कुम्हार की झोपड़ी के पास पहुँचा, मुझे झाड़ियों से एक आवाज़ सुनाई दी। एक कदम की आहट, एक टहनी के टूटने की आवाज़। तो एक नया दुश्मन हमें मिल गया था। मैंने साफ़ देखा कि एक इंसान अँधेरे में रेंगता हुआ खिड़की की ओर बढ़ रहा है। मैं बिना कोई आवाज़ किए उसके पीछे गया। अगर वह दुश्मन नहीं था, तो ज़रूर दुश्मन का जासूस होगा। जैसे ही वह झोपड़ी में घुसने की कोशिश करते हुए आगे बढ़ा, मैंने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया और मेरी पकड़ से छूटने के लिए छटपटाने लगा। मेरा दुश्मन मेरी उम्मीद से ज़्यादा ताकतवर था, लेकिन वह खुद को छुड़ा नहीं पाया। उसे मारना आसान होता, लेकिन मुझे पहले यह जानना ज़रूरी था कि वह कौन है।
‘तुम कौन हो? किसके जासूस हो?’
मैं न तो जासूस हूँ और न ही दुश्मन।
मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं उस चेहरे को जानता हूँ, भले ही वह अँधेरे में था।
मैंने उसे जाने दिया और उसने कहा, 'मैं युवराज धृष्टद्युम्न हूँ। वह कुटिया कौन सी है जहाँ पंचाल आए ब्राह्मण रहते हैं?'
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'इन ब्राह्मणों में से एक आपके सामने खड़ा है। आपका स्वागत है।'
राजकुमार ने मुझे पहचान लिया। 'पिताजी ने मुझे यह पता लगाने के लिए भेजा था कि आप कौन हैं।'
हम पांच हैं। अपने अच्छे दिनों में हमें पांडव कहा जाता था।
‘हमने कई अफवाहें सुनीं। पिताजी बेचैन हो गए और मैंने जासूस बनने की पेशकश की।’
‘मैं भीमसेन हूँ। प्रतियोगिता में द्रौपदी को जीतने वाला धनुर्धारी अर्जुन है। मेरे बड़े भाई युधिष्ठिर और माद्री के पुत्र नकुल और सहदेव हमारे साथ हैं।’

'बिल्कुल वैसा ही हुआ जैसा हमने अनुमान लगाया था। कितनी राहत मिली! हमने सुना था कि वेत्रकिया के गुर्गे को भी एक ब्राह्मण ने ही मारा था। कहते हैं कि उसने मानव बलि की प्रथा का अंत कर दिया।'
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'हां, वह एक ब्राह्मण था।'
और जिसने हिदिम्बा का वध किया, जो पूर्वी जंगलों में घूमता था और ऋषियों के निवासों को तहस-नहस कर देता था…?
‘ब्राह्मण की भूमिका निभाने से पहले वह एक मुसाफिर था।’
धृष्टद्युम्न हंसते हुए प्रणाम किया और फिर मुझे गले लगा लिया। ‘हमें बताइए कि हमें क्या करना चाहिए। हम जानते हैं कि धृतराष्ट्र कितने पक्षपाती हैं। आप जो भी करें, मैं आपके साथ हूं।’
हमें आपकी जरूरत पड़ेगी। हम निश्चित रूप से आपके पास मदद मांगने आएंगे। बहुत जल्द।
उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया। 'आपका स्वागत है। हमेशा।'
मैंने उसे अंदर आकर दूसरों से मिलने और अपनी बहन को देखने के लिए मनाने की कोशिश की।
'अभी नहीं। शादी खत्म होने दो। मुझे जाने दो और अपने पिता को यह खबर सुनाने दो।'
उसके जाने के बाद मैं झोपड़ी में दाखिल हुई। द्रौपदी माँ के चरणों में शांति से सो रही थी। मैं अपने लिए रखे भोजन के सामने बैठ गई। माँ उठीं और एक छोटे से मिट्टी के दीपक की बाती को ऊपर उठाया।
हमें एक भव्य शादी करनी चाहिए।
मैंने घुरघुराहट की आवाज निकाली।
आज शाम को मैंने एक यज्ञ अनुष्ठान किया और एक ब्राह्मण को उपहार दिए, फिर उसी ब्राह्मण को विदुर के पास भेज दिया।
माँ ने मुझे कृष्ण और बलराम के आगमन के बारे में बताया। द्वारका में महल का निर्माण अभी पूरा नहीं हुआ था, लेकिन यादव वहाँ बस गए थे। माँ ने मुझे एक और खबर दी: बलराम कुछ समय तक हस्तिनापुर में रुके थे ताकि दुर्योधन को गदा से युद्ध करना सिखा सकें।
पुरोहितों और विद्वानों का कहना है कि किसी महिला के अनेक पति होना किसी भी प्रकार से पाप नहीं है।

माँ मुझे क्या बताने की कोशिश कर रही थीं? क्या युधिष्ठिर ने उन्हें द्रौपदी के विवाह के बारे में मुझसे दोबारा बात करने के लिए मना लिया था? मैंने उसे विनम्रता से याद दिलाया कि हमें अपने पांचाल रिश्तेदारों के समर्थन से हस्तिनापुरा के सिंहासन पर युधिष्ठिर के अधिकार को स्थापित करना होगा; कि हम किसी भी तरह से द्रुपद को नाराज़ नहीं कर सकते। 'यही वह चीज़ है जिसकी हमें सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, यही वह समस्या है जिससे पांडवों को अब निपटना है - यह बहुपतित्व के मामले से कहीं ज़्यादा गंभीर समस्या है।'
जी हां, बिल्कुल सही। पांडव तभी शक्तिशाली बनेंगे जब आप पांचों आपस में बिना किसी मतभेद के एकजुट रहेंगे। और इसके लिए हमें कई पतियों को रखने की इस प्रथा का पालन करना होगा, जिसकी आप इतनी निंदा करते हैं। शास्त्र इसका समर्थन करते हैं तो ठीक है, लेकिन अगर नहीं भी करते तो भी...
‘लेकिन…’ मैं शब्दों के लिए हड़बड़ा गया। युधिष्ठिर के साथ इतना बातूनी होने के बावजूद, मुझे बोलना मुश्किल लग रहा था।
‘द्रौपदी को देखने वाली हर आंख में वासना थी, यहां तक कि सहदेव की आंख में भी, हालांकि वह अभी बच्चा ही है। मैंने इसे देखा। केवल मैं ही देख सकती थी, क्योंकि मैं एक स्त्री हूं।’
मैं सिर झुकाए बैठा था, अपने खाने को देख रहा था और उदासीनता का दिखावा कर रहा था, मानो उसने जो कहा वह मुझ पर लागू ही नहीं होता हो।
क्या माँ ने भी मेरी आँखों में वासना की ज्वाला देखी थी? किसी तरह, मैं उन्हें चुनौती देने की हिम्मत नहीं जुटा पाया।
मैंने आह भरी। क्या ठंडी हवा में, जिसमें कमल के फूलों की हल्की सी महक थी, कोई कोमल सुंदरता मेरी ओर बह रही थी?
माताजी बहुत ही कोमल स्वर में बोलती रहीं। पांडवों की शक्ति हम पाँचों के एकजुट होने में निहित थी। तब हम रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदल सैनिकों से सुसज्जित पाँच महान सेनाओं से भी अधिक शक्तिशाली होंगे। 'मैं चाहती हूँ कि मेरे पुत्र एक विशाल राज्य पर शासन करें।'
हम करेंगे। इन सब के बिना भी, हम एकजुट होकर जीतेंगे।
माताजी मुस्कुराईं। समय मनुष्य में कितने परिवर्तन ला सकता है। वह नहीं चाहती थीं कि नकुल और सहदेव कभी हमसे दूर हों, क्योंकि वे माद्री के पुत्र थे। वह युधिष्ठिर और मेरे बीच किसी भी प्रकार का मतभेद नहीं चाहती थीं।

उन्होंने इन सभी बातों का ध्यान रखा था जब उन्होंने यह निर्णय लिया था कि द्रौपदी हम पाँचों की पत्नी होंगी।
मैं बचा हुआ खाना फेंकने के लिए बाहर गया था। जब मैं वापस आया तो वह अभी भी उसी जगह पर बैठी थी।
युधिष्ठिर ने कहा कि तुमने उनसे अभद्रता से बात की।
मैंने न तो अपना बचाव किया और न ही मैंने इससे इनकार किया।
'मेरी ओर देखो और मुझे सच बताओ। क्या तुम द्रौपदी को पाने के लिए दूसरे स्थान पर नहीं आना चाहते?'
मुझे माँ की तरफ देखने से डर लग रहा था। मेरे मन में धुंधली छवियों का एक ढेर उमड़ रहा था: सुरमा के तीर, नीले कमल की पंखुड़ियाँ, तिल के फूल, मंदारे की कलियाँ, मदमस्त हाथियों के माथे पर उभरी हुई सूजन...
मैंने माँ की तरफ नहीं देखा। मैंने अपना सिर तभी उठाया जब मुझे यकीन हो गया कि वह उठकर जाने वाली हैं। वह चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिए मेरी तरफ मुड़ीं।
‘मूर्ख, जब मैंने तुम सभी से भिक्षा बाँटने को कहा था, तो मुझे पता था कि यह द्रौपदी ही है!’
मुझे माँ के सामने इतना कमज़ोर होने पर अफ़सोस हुआ। तभी अचानक मुझे हंसी आ गई।
महिलाओं को कई तरह से वर्णित किया गया है: गर्भ धारण करने वाली कोख, केवल बीज बोने के लिए बने खेत इत्यादि। तुम जिन्होंने उन्हें इस तरह वर्णित किया है, तुमने इस स्त्री, मेरी माँ को नहीं देखा है!

□□□ 4

पासे का आकर्षण

1

मैंने दिनों और महीनों का हिसाब रखा। वास्तुकारों और हमारे सहायकों को लगा कि मैं उन आलीशान मकानों के निर्माण की धीमी गति से चिढ़ गया था। पत्थर तराशने वाले और बढ़ई दिन-रात काम करते रहे। खांडवप्रस्थ का वह जंगल, जिसे कोई नहीं चाहता था, एक शहर में तब्दील हो रहा था। जब वह जंगल हमें हमारे हिस्से में मिला और हम वहाँ पहुँचे, तो वैश्यों ने वहाँ व्यापार की संभावनाएँ देखीं और तुरंत घर बसा लिए। अठारह शूद्र परिवार, जिनमें माताजी के कुछ पुराने सेवक भी शामिल थे, वहाँ बस गए और उनके कई रिश्तेदार और परिचित भी उनके पीछे-पीछे आ गए। पेड़ों से इतनी प्रचुर मात्रा में लकड़ी मिलती थी कि घर जादू की तरह बनते चले गए। हम पहले जंगल में बहुत पहले बने चार महलों में रहे। युधिष्ठिर एक विशाल महल में रहे, जो राजाओं के शिकार के लिए आने पर उनके लिए बनाया गया था। माताजी नकुल और सहदेव के साथ दूसरे बड़े महल में रहीं। तीसरा महल अर्जुन को दिया गया, और मैंने जंगल के किनारे स्थित सबसे छोटा घर लिया, जो पहरेदारों के लिए था।
हम राजकुमारों की तरह पूरे वैभव के साथ हस्तिनापुरा लौट आए थे। द्रुपद के महल में धृष्टद्युम्न ने अपने आतिथ्य सत्कार से मुझे अभिभूत कर दिया था। द्रुपद ने हम पाँचों को उपहारों की बौछार कर दी थी।
दुर्योधन और कर्ण ने छुपकर हम पर अचानक हमला कर दिया था, इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए कि दादा भीष्म या विदुर को इसकी भनक न लगे। शकुनि, भूरिश्रवा और जयद्रथ उनके साथ थे। चूंकि यह हमला हमारे उनके पास जाने के दौरान हुआ था, इसलिए धृष्टद्युम्न ने इसे खतरनाक नहीं समझा। उन्होंने इसे महज मनोरंजन मानकर टाल दिया। लेकिन यह मेरी पहली लड़ाई थी। उस दिन अर्जुन का एक भी बाण निशाने से नहीं चूका। पांचाल राजकुमार धृष्टद्युम्न ने अपने रथ से शानदार युद्ध किया था।
हमने उनका सामना किले के द्वार से काफी दूर एक स्थान पर किया था।
पंचाल सेना हमेशा युद्ध के जोश में डूबी रहती थी। दुर्योधन और कर्ण कौरवों की अग्रिम पंक्ति में थे। युद्ध बमुश्किल तीन घंटे चला। हमने कौरवों के साथ आए चालीस सेवकों और छह घोड़ों के शव गिने। हमारे दो जवान घायल हुए और एक सैनिक की मृत्यु हो गई।

अर्जुन ने बताया कि उन्होंने कर्ण को अपने रथ के फर्श पर गिरते देखा।
सारथी ने रथ को इतनी कुशलता से घुमाया और पीछे हट गया कि अर्जुन यह नहीं देख पाए कि कर्ण को कितनी गंभीर चोट लगी थी।
इस घटना के बाद ही अंधे राजा को शांतिपूर्वक और मित्रतापूर्ण जीवन जीने की आवश्यकता का अहसास हुआ।
विदुर एक संदेश लेकर आए थे, लेकिन धृष्टद्युम्न ने उनका उपहास किया। मुझे स्थिति को संभालना पड़ा और धृष्टद्युम्न को याद दिलाना पड़ा कि विदुर एक दूत हैं और हम उनके बहुत ऋणी हैं। यद्यपि हमें केवल एक जंगल ही दिया जा रहा था, फिर भी विदुर ने हमें इसे स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हम वहाँ एक राजधानी बना सकते हैं और जब हस्तिनापुर से लोग आकर बसेंगे, तो वह स्थान एक शहर में बदल जाएगा।
हम धनवान बनकर खांडवप्रस्थ पहुँचे। पंचाल से वास्तुकार आए। द्रुपद ने गधों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों में धन और अनाज भेजा। कृष्ण ने विवाह उपहार के रूप में अनगिनत उपहार भेजे। उन्होंने द्रुपद की उपस्थिति में द्रौपदी और हम सभी को सोना और मोती भेंट किए, और माता की आँखों में खुशी के आँसू भर आए। उन्होंने अपने भाई के पुत्र से इतनी उम्मीद नहीं की थी।
युधिष्ठिर ने पुराने महल में अपना हनीमून शुरू कर दिया था और वे शायद ही कभी बाहर आते थे। मैंने सोचा था कि वे द्रौपदी के साथ कभी-कभार नए शहर को देखने आएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।
द्रौपदी को बारी-बारी से हममें से प्रत्येक के साथ एक वर्ष बिताना था। माता ने एक नियम बनाया कि उस दौरान कोई भी अन्य व्यक्ति उस घर में प्रवेश नहीं कर सकता था जिसमें वह रहती थी। हमें नहीं पता था कि यह नियम युधिष्ठिर ने बनाया था या माता ने। युधिष्ठिर ने हम चारों को बुलाया, 'ऋषियों ने कहा है...' शब्दों के साथ शर्तें बताईं और अंत में कहा, 'सब कुछ हमारे भले के लिए है।'
एक दिन, जब मैं कुछ हाथियों को लकड़ी के लट्ठे खींचते हुए देख रहा था, युधिष्ठिर मेरे पास आए। उन दिनों उनके चेहरे पर हमेशा असंतुष्ट भाव रहता था।
मैंने पूछा, ‘क्या अर्जुन का कोई संदेश है?’

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने पूछा, मानो यह विचार अभी-अभी उनके मन में आया हो, 'क्या अर्जुन तीर्थयात्रा पर गए हैं या महिलाओं की तलाश में किसी साहसिक यात्रा पर?'
मैं उसे पूरी तरह से समझ नहीं पाया, लेकिन मैंने अनुमान लगाया।
मैंने एक नागी लड़की के बारे में सुना था। नाग लोग अच्छे लोग होते हैं। मैंने आपको यह पहले भी बताया है। जब मैं प्रमाणकोटी में नदी के किनारे था…
'जी हां। लेकिन मैंने एक और लड़की के बारे में सुना है, चित्रवाहन की बेटी।
मुझे आश्चर्य है कि क्या वे क्षत्रिय हैं।'
वह असंतुष्ट होकर चला गया।
मुझे इस बात पर आश्चर्य नहीं हुआ था कि अर्जुन को तीर्थयात्रा के दौरान सुंदर युवतियों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।
यह तीर्थयात्रा मेरे छोटे भाई के लिए एक अनावश्यक यातना थी। हम सबने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा। शायद उसे लगा होगा कि खांडवप्रस्थ में जीवन बिताने से तीर्थयात्रा अधिक मनोरंजक होगी।
एक रात हम उत्तर की ओर जंगल साफ़ करने के बारे में बात कर रहे थे। अचानक एक ब्राह्मण हांफता हुआ हमारे पास आया। वह उन लोगों में से एक था जो पहले यहाँ आकर कई गायों के साथ बस गया था। उसकी गायें गायब थीं। लोगों ने जंगली चोरों के एक गिरोह को उन्हें ले जाते हुए देखा था।
अर्जुन तुरंत रवाना हो गया, जबकि ब्राह्मण प्रतीक्षा करता रहा। उसने हमसे कहा, 'तुम्हें उन्हें यह एहसास दिलाना होगा कि अब यहाँ इस स्थान का प्रशासन करने वाला एक शासक है।'
अर्जुन को वापस आने में काफी समय लगा। उसने अपने तरकश को भर लिया था और अपनी कमर में अतिरिक्त बाण भी रख रहा था। उसने मूर्खतापूर्ण मुस्कान के साथ कहा, 'मुझसे गलती हो गई। हथियार बड़े महल में थे। मैं नियमों को भूल गया और अंदर भाग गया। और फिर - यह मेरी गलती थी, मैंने उसे शर्मिंदा कर दिया।' मैंने उसे याद दिलाया कि ब्राह्मण इंतजार कर रहा है, और कहा, 'ठीक है, आपके वापस आने के बाद हम देखेंगे कि क्या करना है।'
मुझे युधिष्ठिर के आने की उम्मीद थी, लेकिन वे नहीं आए। अर्जुन ने गायें चुराने वाले चोरों के गिरोह को पकड़ लिया, उन्हें आत्मसमर्पण करने और

अच्छे व्यवहार का वादा लेने के लिए मजबूर किया। जब तक वह वापस लौटे, तब तक माताजी को उनके द्वारा नियमों का उल्लंघन करने की खबर मिल चुकी थी।
युधिष्ठिर ने कहा, “चिंता मत करो। शास्त्रों के अनुसार, यदि वह अपने बड़े भाई की पत्नी को कम वस्त्रों में देखे तो…”
मां उपस्थित थीं।
अर्जुन ने युधिष्ठिर को इस विषय पर आगे चर्चा करने का मौका नहीं दिया। ‘नियमों के अनुसार, मुझे बारह महीने की तीर्थयात्रा पर जाना है। बस इतना ही, है ना? मैंने जो गलती की है, उसके लिए मुझे दंड मिलना ही चाहिए।’ यात्रा की तैयारी करते हुए उन्होंने कहा, 'मैं काफी समय से घूमना-फिरना चाहता था। यह एक तरह से वरदान साबित हुआ है।'
वह उसी रात चला गया।
हमें जल्द ही पता चला कि उन्होंने उलूपी से शादी कर ली है और कुछ समय बाद चित्रांगदा से भी। इसके लगभग चार महीने बाद, माँ और हम तीनों को हमारे बड़े भाई के महल में आमंत्रित किया गया। हम बाहरी हॉल में इंतज़ार कर रहे थे और वे अंदर आए, बहुत खुश और उत्साहित दिख रहे थे।
'द्वारका से एक दूत अर्जुन का निवेदन लेकर आया है। वह कृष्ण की बहन सुभद्रा से विवाह करने की अनुमति मांगता है।'
माता यह जानना चाहती थीं कि बलराम और कृष्ण ने अपनी सहमति दी थी या नहीं। “कृष्ण ने अपनी पूर्ण सहमति दे दी और वे बहुत प्रसन्न हुए। बलराम को भी सहमत होना पड़ा। सुभद्रा अर्जुन के साथ भागने को तैयार थी, इसलिए उनके पास कोई विकल्प नहीं था।” युधिष्ठिर ने अपनी आदत के विपरीत, आवश्यकता से अधिक ऊँची आवाज़ में बात की।
क्या भीतरी दरवाजे के उस पार से कमल के फूलों की सुगंध आ रही थी? युधिष्ठिर इधर-उधर टहलते हुए धीरे-धीरे बुदबुदाए, कुछ स्वयं से और कुछ हमसे, “कृष्ण अच्छे मित्र हैं और हमारे मामा के पुत्र हैं। आज कोई भी योद्धा चक्रयुद्ध में उन्हें परास्त नहीं कर सकता। यदि कृष्ण और यादव हमारे साथ हैं – माता, आपका क्या निर्णय है?”
मां ने पूछा, 'संदेशवाहक कहां है? हमें उसे उपहार देने चाहिए। उन्हें बता देना कि हम सब उसे और अद्वितीय सौंदर्य वाली सुभद्रा को अपना आशीर्वाद भेजते हैं।'

अर्जुन ने एक ही वर्ष में तीन सुंदर कन्याओं से विवाह किया था। इस बीच, धनुर्विद्या में अपनी अद्भुत कुशलता से जीती हुई पहली दुल्हन का हनीमून अभी समाप्त नहीं हुआ था। उसके विवाह की पहली वर्षगांठ नजदीक आ रही थी। मैं द्रुपद की राजधानी में आयोजित विवाह समारोहों से लेकर अब तक महीनों और दिनों की गिनती कर रहा था।
बरसी से चार दिन पहले, मैंने अपने घर में द्रौपदी को प्रसन्न करने के लिए की गई तैयारियों को बिना किसी को बताए पूरा कर लिया था। पिछवाड़े के आंगन में लगे पौधों में फूल खिल चुके थे। लाल देवदार की लकड़ी से बना एक झूला जंगली लताओं से छत से लटका दिया गया था, और मैंने उस पर गद्दे के रूप में बिछाने के लिए सबसे नरम कुश घास का इंतजाम कर लिया था।
मूर्तिकारों ने विशोका के निर्देशों के अनुसार आंतरिक भाग को सजाया था। बगीचे की योजना बनाने और घर को सजाने में मेरी अचानक रुचि ने विशोका को जरा भी आश्चर्यचकित नहीं किया था।
‘वह दिन नजदीक आ रहा है, है ना?’ उसने लापरवाही से पूछा।
मैंने भी उसी तरह जवाब दिया, 'हां, मुझे ऐसा ही लगता है।'
मुझे लगा कि चौथे दिन की सुबह ब्राह्मणों को बुलाया जाएगा और किसी न किसी प्रकार के अनुष्ठान किए जाएंगे। मैं माँ के आसपास ही रुका रहा, ताकि उन्हें याद दिलाता रहूँ कि मैं वहीं आस-पास हूँ।
हाथियों के लिए नए शेड बनाए जा रहे थे, और जब मैं उनके बगल में खड़ा था, तभी द्रौपदी अचानक मेरे पास आ गई।
पिछले एक साल में मैंने उसे केवल तीन बार देखा था और हर बार दूर से ही।
वह थोड़ी अधिक भरी-पूरी लग रही थी। ऐसा लग रहा था कि उसे अब भी सफेद कपड़े पहनना पसंद है। उसके बालों में चमेली की एक अकेली लड़ी लिपटी हुई थी। उसे इतने करीब से देखकर मुझे लगा कि द्रुपद की राजधानी में मैंने जिस लड़की को देखा था, वह अब एक युवती बन गई है। उसकी बड़ी नीली-काली आँखों में एक मुस्कान चमक रही थी, जो नम लग रही थीं। उसके गले में मोतियों की एक अकेली लड़ी में पहले पहनी हुई पंडानस की माला के कुछ अंश अभी भी लटके हुए थे। उसकी निगाहें मेरे अर्धनग्न शरीर पर टिक गईं, जो कार्यस्थल की धूल से ढका हुआ था। मैंने उसे यह देखने के लिए आमंत्रित किया कि पंचाला से लाए गए हाथियों को कैसे प्रशिक्षित किया जा रहा है।

मेरी एक नौकरानी ने मुझे बताया कि आप एक बेकाबू हाथी से अकेले ही लड़ सकते हैं। क्या यह सच है?
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे अब तक इसकी जरूरत कभी नहीं पड़ी।'
मैंने सुना है कि बाका हर दिन एक पूरी गाड़ी भरकर खाना खा जाता था, साथ ही गाड़ी खींचने वाली दो भैंसों को भी खा जाता था। क्या वह सचमुच इतना क्रूर था?
'बाका के बारे में इस्तेमाल किए गए शब्दों से उसका कद और बढ़ गया। वह तो बहुत ही मामूली लड़ाई थी।'
कहा जाता है कि उसकी अंतिम चीख से पूरा देश भयभीत हो गया था, उसका खून बहता हुआ गंगा तक पहुँच गया था। मुझे ठीक-ठीक बताइए कि यह सब कैसे हुआ।
मुझे शर्मिंदगी हुई। लड़ाई के दौरान इंसान अधमरा ही रहता है। महत्वपूर्ण यह है कि पहले वार करने का मौका किसे मिलता है। जंगल में रहने वाले आदिवासी और निषाद नियमों को नहीं जानते; वे सिर्फ मारना जानते हैं। उनसे लड़ी गई लड़ाइयाँ सूत और मगधों के लिए गाने लायक कहानियाँ नहीं हैं। और न ही वे किसी सुंदर लड़की का मनोरंजन करेंगी।
मैंने कहा, 'किस्मत मेरे साथ थी, बस इतना ही।'
‘मैंने सोचा था कि शादी के हॉल में सचमुच कोई लड़ाई होगी। लेकिन जो हुआ वो बस इतना था कि योद्धाओं ने शब्दों से ही लड़ाई की और फिर भाग गए, है ना?’ वह हंस पड़ी। ‘गंगा में बहता खून, मैं तो यही देखना चाहूंगी!’
लड़ाई-झगड़ों और हत्याओं के वर्णन से बचने के लिए, मैंने पूछा, 'अर्जुन कब वापस आ रहा है?'
उसने खुद को नियंत्रित करने की कोशिश की, लेकिन उसके नीले-काले गालों पर एक तेज लालिमा फैल गई।
‘मुझे नहीं पता,’ उसने धीरे से कहा।
वह लगभग बनकर तैयार हो चुकी एक इमारत की ओर चली और मैं उसके पीछे-पीछे गया। यह युवती, जिसका शरीर हिदिम्बी से कहीं अधिक दुबला-पतला था, मुझे पूरी तरह से असमंजस में डाल सकती थी। मैंने खुद को फटकारा। मैं कोई नौकर नहीं था जो उसकी इच्छाओं की सेवा करता हो - मैं उसका स्वामी, उसका पति था। मैं तब रुका जब हम एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ से मेरा बगीचा दिखाई देता था।
इस पर ध्यान न देते हुए उसने पूछा, 'क्या सुभद्रा सांवली है?'
'मुझें नहीं पता।'

मैंने यादव महिलाओं की प्रशंसा में लिखे गए गीत कभी नहीं सुने।
हम बगीचे से होते हुए झूले के पास से गुजरे, लेकिन उसने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। अचानक, वह चलना बंद कर दी और हंसने लगी।
अब मैं पासे का अच्छा खेल खेल सकता हूँ। मैं अभी भी सीख रहा हूँ।'
मुझे भी हंसी आ गई। जंगल हमारे ठीक सामने था।
द्रौपदी ने पेड़ों की ओर देखा और पूछा, 'वन की स्त्रियाँ किस भाषा में बोलती हैं?'
क्या द्रौपदी को यह एहसास नहीं था कि उसके पीछे स्थित वह घर, जिसे विशोक ने इतनी अच्छी तरह से बनाए रखा था, उसके चारों ओर का बगीचा और यह झूला, सब उसका इंतजार कर रहे थे? मैंने ऐसा दिखाया जैसे मैंने उसका सवाल सुना ही नहीं। ‘आज एक यज्ञ अनुष्ठान करना है। ब्राह्मण आ चुके होंगे। मुझे जाना होगा।’ उसे पसीना आने लगा था। जैसे ही मैंने उसके कंधे पर हाथ रखने और उसके पसीने की मीठी खुशबू लेने के लिए आगे कदम बढ़ाया, वह मुझसे दूर हट गई।
आज की रस्म पुत्र प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए है। क्या आपको नहीं पता कि अर्जुन द्वारा खोया गया वर्ष युवराज के कार्यकाल में जोड़ दिया गया है? वह चली गई, फिर मुड़ी और मुस्कुराई। क्या उसकी आँखों में राहत थी या कोई वादा? या फिर सिर्फ़ करुणा?
मैं अकेला था। मुझे एक रथ के आने की आवाज़ सुनाई दी। तीन रथ बड़े महल के पास आकर रुके। सबसे पहले बलराम उतरे, फिर कृष्ण।
अर्जुन फूलों से सजे दूसरे रथ से उतरे, फिर सुभद्रा उतरीं, जिन्होंने उनकी ओर बढ़ाया हुआ हाथ थाम रखा था। उनके बालों की शुभ मांग के ऊपर लटकी माला में जड़े पन्ना, उनके सिर को आधे ढके हुए कपड़े के नीचे चमक रहे थे। उनकी त्वचा में हल्का लाल रंग था। जैसा कि माताजी ने कहा था, दूर से भी यह स्पष्ट था कि सुभद्रा की सुंदरता अतुलनीय थी।
एक गर्म सांस ने मुझे छुआ। द्रौपदी मेरे बगल में खड़ी यह सब देख रही थी। 'नौकरानियों को मेरी तलाश में परेशान नहीं होना चाहिए। मुझे चले जाना चाहिए।'
जाते हुए उसने मेरी ओर मुड़कर कहा, 'अर्जुन द्रुपद के महल से केवल भीमसेन के हाथों की शक्ति के कारण ही बच पाया था। मैं यह बात हमेशा याद रखूंगी।' वह महल के पीछे गायब हो गई।

मैंने बलराम के चरणों को प्रणाम किया। कृष्ण ने आदरपूर्वक मेरा अभिवादन किया। मैंने अर्जुन का प्रणाम स्वीकार किया। उनका चेहरा और भी काला हो गया था।
सुभद्रा और अर्जुन के स्वागत समारोह और युधिष्ठिर द्वारा पुत्र प्राप्ति के लिए किए जा रहे अनुष्ठान, दोनों ही कार्यक्रम एक साथ, दो अलग-अलग स्थानों पर आयोजित किए गए।
यादवों के सामने शराब के बर्तन रखे गए थे। सहदेव को उनकी देखभाल का जिम्मा सौंपा गया था। मैं दोनों जगहों पर जाकर देखता रहा कि सब कुछ ठीक चल रहा है या नहीं। उत्सव लगभग सुबह तक चलता रहा।
आखिरकार मैं घर लौट आया। यह जानते हुए कि मेहमानों की देखभाल में व्यस्त होने के कारण मैंने खुद कुछ नहीं खाया होगा, विशोका ने मेरे लिए शराब और खाना तैयार रखा था। तेज़ गंध वाली शराब, अंकुरित जौ से बनी हुई।
विशोका ने कहा, 'दोनों अनुष्ठान अच्छे से संपन्न हुए।'
‘भोर होते ही मेरे लिए एक रथ तैयार कर देना।’ रथ चालकों को गंतव्य बताने की आवश्यकता नहीं थी।
विशोका ने हिचकिचाते हुए पूछा, 'क्या आप यादवों के जाने तक अपनी यात्रा शुरू करने के लिए इंतजार नहीं कर सकते?'
'तीन घोड़े और मेरे सभी आवश्यक हथियार। हमें भोर होते ही निकलना होगा।' विशोका चला गया। मैंने शराब खत्म की, लेकिन सोने नहीं गया। मैं बाहर गया और हल्की रोशनी में खड़ा रहा। आज जिस महल में रस्म हुई थी, वहाँ हनीमून का दूसरा चरण शुरू हो रहा था। अर्जुन के महल में दीपक बुझे नहीं थे। एक नई दुल्हन वहाँ अपनी पहली रात बिता रही थी। मैंने देखा कि कैसे एक-एक करके दीपक बुझते गए। रथ के घोड़ों को खोल दिया गया था और मैंने उनके खुरों की आवाज सुनी जब वे आंगन में इधर-उधर घूम रहे थे।
मैं घर के पिछले हिस्से की ओर चला गया। अंधेरा जंगल से निकलकर बगीचे में छा गया था। अंधेरे में, पलंग किसी जंगलवासी के शव की तरह लटका हुआ था, मानो उसे फांसी के तख्ते पर रखा गया हो।
उस पर फैली कोमल कुश घास पर बैठा हुआ, मैं घने पेड़ों के ऊपर अश्वमुख नक्षत्रों को खोज रहा था। अचानक, जंगल आकाश जितना ऊंचा हो गया और आकाश धरती पर उतर आया। तारे फट गए और मेरे सिर के भीतर कहीं टुकड़े-टुकड़े हो गए।

2

मैं कमल के पत्ते के आकार के तालाब के पास रुक गया और नम घास पर कदमों की आहट सुनने के लिए व्यर्थ ही प्रतीक्षा करने लगा। फिर मैं वापस मुड़ा और चट्टानों के नीचे उस स्थान पर पहुँचा जहाँ जंगली बकरियाँ चर रही थीं। मानसून का प्रकोप थम चुका था और जंगल शांत था। एक छोटा हिरण हांफता हुआ मेरे सामने आया और असमंजस में खड़ा रह गया। मैंने उसे जाने दिया, अपने उठाए हुए भाले को नीचे किया और अंजीर के पेड़ की ओर फेंक दिया। मैंने देखा कि पीतल की कीलों से जड़ी उसकी नोक कांप उठी और पेड़ में छह उंगलियों की गहराई तक घुस गई, फिर स्थिर हो गई। इसके बाद मैं जंगल की सीमा की ओर चल पड़ा। विशोका ने घोड़ों को घास और पानी दिया, फिर उन्हें रथ से दोबारा जोड़ा और मेरा इंतजार कर रहा था।
अब आगे कहाँ?
पूर्व दिशा की ओर।
एक लक्ष्यहीन यात्रा। जब मैंने विशोका को बताया कि जंगल में कोई जानवर नहीं हैं, तो वह मुस्कुराया। मेरे सारथी को यह जानने की कोई आवश्यकता नहीं थी कि उसका क्षत्रिय गुरु किसी स्त्री की खोज में गया है। स्त्रियाँ आती हैं, पुरुष का वीर्य ग्रहण करती हैं और चली जाती हैं। उसके बाद उनके बारे में सोचना भी पुरुष के लिए उचित नहीं था।
मैं अनजान इलाकों में सड़क किनारे बनी झोपड़ियों में सोता था। मैं शिकार तभी करता था जब मेरा सारा खाना खत्म हो जाता था।
पहाड़ी इलाका फिर से समतल हो गया और मुझे एक नदी दिखाई दी। यह कौन सी नदी थी?
'फिर से गंगा। हम काशी के पास हैं।'
यह एक छोटा शहर था। सबसे पहले मेरी नज़र एक गली पर पड़ी जहाँ धोबी रंग में डूबे रेशमी कपड़ों को सुखाने के लिए टांग रहे थे। चौराहे पर झंडे और बैनर लहरा रहे थे मानो किसी का स्वागत कर रहे हों। विशोका ने शहर के लोगों से बात करके पता लगाया कि क्या हो रहा है। यह राजा सेनेशा की बहन का स्वयंवर था। एक और स्वयंवर?
इस नीरस यात्रा के बीच में अचानक ही मेरे सामने एक प्रतियोगिता आ गई।

मेरी मंशा थी कि मैं एक भिक्षु की तरह काशी में पैदल चलूं, गंडकी नदी के किनारे-किनारे घूमते हुए कामारूपा तक पहुंचूं और फिर वापस आ जाऊं।
मैंने गंगा में स्नान किया। चूंकि मैं एक राजधानी शहर में प्रवेश कर रहा था, इसलिए मैंने विशोका से कपड़े और बालों की स्टाइल के बारे में सलाह ली। वह एक नाई को लेकर आया और मैंने उससे अपनी बिखरी हुई दाढ़ी कटवाई और नाखून भी कटवाए।
काशी का महल हस्तिनापुरा के महल से आकार में आधा था। भट्टी में पकाई गई ईंटों से बनी उसकी दीवारें देखकर हम दंग रह गए। हम तो आम तौर पर लकड़ी का इस्तेमाल करते थे। बेशक, काशी के लोग अपनी कारीगरी के लिए हमेशा से प्रसिद्ध रहे हैं। उनके बुने हुए रेशम के कपड़े केकया और गांधार तक पहुँचते थे।
महल के बाहरी प्रांगण में तीन और पांच घोड़ों को जोतने वाले रथ प्रतीक्षा कर रहे थे। विशोका ने उन पर लगे झंडों को देखा और कहा, 'इनमें से अधिकतर छोटे देशों के राजा हैं।'
प्राचीन काशी, जहाँ मेरी दादी का जन्म हुआ था। अब यह तीन भागों में बँट चुका था। यहाँ का राज्य हमारे बड़े गाँवों में से एक के आकार का ही था। हमारे रथ और घोड़ों को ले जाने वाला सेवक सांवले रंग का, पतला और लंबा था। मैंने देखा कि यहाँ सभी लोग नियमित रूप से दाढ़ी बनाते थे। दाढ़ी रखने वालों ने उसे बड़े करीने से त्रिकोणीय आकार में ट्रिम किया हुआ था। विशोका ने हमारे घोड़ों की ज़िम्मेदारी संभालने वाले दाढ़ी वाले व्यक्ति से कहा: 'भीमसेन, खांडवप्रस्थ का युवा राजकुमार।' यदि विशोका ने उससे व्यवहार में परिवर्तन और अत्यधिक विनम्रता की अपेक्षा की थी, तो वह निश्चित रूप से बहुत निराश हुआ होगा।
हल्दी और छिले हुए चावल से भरी थालियाँ लिए हुए सेविकाएँ हमारा स्वागत करने के लिए कतार में खड़ी थीं। उन सभी के बालों की मांग में विवाहित महिलाओं का शुभ चिन्ह दिखाई दे रहा था।
यह मानते हुए कि हॉल के बाहर खड़े लोग मंत्री थे, विशोक ने आदरपूर्वक उनका अभिवादन किया और कहा, 'हम खांडवप्रस्थ से आए हैं। मैं भीमसेन हूं।'
एक युवक, जो अपने गले में लटकी मोतियों की माला को दांतों से चबा रहा था, ने मुझे गौर से देखा और आगे बढ़ा।
‘Khandavaprastha? Where is that?’

Vishoka saluted him again. ‘Near Hastinapura.’
उस युवक ने मुझे उदासीनता से प्रणाम किया और कहा, 'भीमसेन? मैंने युधिष्ठिर के छोटे भाई भीमसेन के बारे में सुना है।'
विशोक ने तुरंत कहा, 'यह युधिष्ठिर का भाई है। अर्जुन का बड़ा भाई, भीमसेन।' उस युवक का व्यवहार बदल गया। उसने मुझे फिर से नमस्कार किया। चूंकि हम दोनों एक ही उम्र के थे, इसलिए उसने मुझे गले लगा लिया।
‘मैं सेनेशा हूँ। यह राज्य धन्य है।’ उसने अविश्वास से मन ही मन कहा, ‘अर्जुन का बड़ा भाई, भीमसेन…’
उनका स्वागत इतना सम्मानजनक हो गया कि मैं शर्मिंदा हो गया। लोग अर्जुन के बड़े भाई की एक झलक पाने के लिए मेरी ओर उमड़ पड़े। मुझे एहसास हुआ कि खांडवप्रस्थ में हममें से किसी को भी अर्जुन के सम्मान की गहराई का अंदाजा नहीं था। तब तक महल के सेवक विशोका के चारों ओर जमा हो गए थे, ताकि वे मेरे वीरतापूर्ण कारनामों के बारे में जान सकें। मुझे यह अजीब लगा – यहाँ सभी जातियों के लोग मेरी प्रशंसा में गीत गा रहे थे – न केवल सूत और मगध, बल्कि शूद्र भी!
जब मैं दर्शकों के लिए बनी सीटों की ओर चल रहा था, तो एक बुजुर्ग मंत्री ने मुझे दूल्हों के समूह में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। कई लोगों ने मुड़कर देखा कि आखिर किसे इतना सम्मान दिया जा रहा है।
शंख बजाए गए। अनुष्ठान शुरू हुए। ब्राह्मण पुरोहित ने यज्ञ की अग्नि को पवित्र करने के लिए उस पर घी और तिल छिड़के। सेनेशा ने अपना ऊपरी वस्त्र उतारा, मुकुट पहना, ब्राह्मणों को दान दिया और उनके समक्ष प्रणाम किया। मेरी दिलचस्पी सिर्फ यह देखने में थी कि काशी के रीति-रिवाज पंचाल के रीति-रिवाजों से कितने अलग थे। यह एक साधारण स्वयंवर था, इसमें कोई प्रतियोगिता नहीं थी। गायकों ने आए हुए सभी राजाओं की प्रशंसा में गीत गाए। जैसे ही उन्होंने सेनेशा के पिता की युद्ध में जीत की कहानी शुरू की, महिलाएं हॉल के पिछले हिस्से में दाखिल हुईं। मैंने एक महिला का सिर देखा जो समूह से भी लंबा था, फूलों से इतना ढका हुआ था कि उसका चेहरा दिखाई ही नहीं दे रहा था। सेनेशा उसकी ओर बढ़ा, उसका हाथ पकड़ा और उसे हॉल के बीच में ले गया। उसने परिचारकों द्वारा वहाँ रखे गए उपहार ब्राह्मणों को दे दिए। मैंने पंचाल में यह प्रथा नहीं देखी थी।

दुल्हन को देखकर मैं दंग रह गया। पहली नज़र में मुझे लगा कि यह हिडिम्बी है, जो राजकुमारी की तरह सजी-धजी है। कद-काठी भी वैसी ही थी। लेकिन वह हिडिम्बी जितनी सांवली नहीं थी। उसकी त्वचा शुद्ध जंगली शहद के रंग की थी। उसकी पलकें भी हिडिम्बी की तरह लंबी थीं। और उसकी आंखें भूरी और बड़ी थीं। ‘मेरी बहन बलंधरा, जो दिवंगत राजा देवेश की पुत्री थी।’
जब सेनेशा बोल रही थी, तब कवियों ने उस कन्या के बारे में दो पंक्तियाँ गाईं, जो देवताओं के उदार आशीर्वाद से राजा को उपहार स्वरूप मिली थी। दुल्हन अर्धवृत्त में बैठे प्रत्येक राजा के सामने रुकती रही, जबकि कवियों ने उनके गुणों और विजयों का गुणगान किया। उनके शब्दों ने अज्ञात क्षेत्रों को महान राज्यों में बदल दिया। जिन लड़ाइयों के बारे में मैंने कभी नहीं सुना था और मवेशियों को चुराने के लिए किए गए उग्र कारनामे, देवताओं और राक्षसों के बीच युद्धों में तब्दील हो गए।
पंक्ति में अंतिम राजा के बगल में बैठा, मैं इस तमाशे को उदासीनता से देख रहा था, मानो यह किसी उत्सव में दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए शारीरिक कौशल का प्रदर्शन हो। द्रुपद के हॉल में ब्राह्मणों के बीच बैठा मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था। यहाँ मैं महज़ एक दर्शक था।
दुल्हन मेरे पास आई और कांपती हुई आवाज़ में एक गायक ने मेरा परिचय देना शुरू किया। रिवाज़ के मुताबिक मैं खड़ा हो गया। युधिष्ठिर का छोटा भाई, धर्म का पुत्र। अर्जुन का बड़ा भाई, इंद्र के समान, वह जो नंगी ज़मीन पर अकेला खड़ा रहा, जिसने पूरी यादव सेना से युद्ध किया, उन्हें हराया और कृष्ण की बहन सुभद्रा को अपने साथ ले गया। पांडु का पुत्र, कुरु वंश का रत्न, वह पराक्रमी जिसने एक घोड़े द्वारा खींचे गए रथ पर सवार होकर सभी राज्यों को जीतने का अभियान चलाया!
मैं शर्म से छटपटाने लगा और कवि से प्रार्थना करने लगा कि वह उस श्लोक को समाप्त कर दे जिसमें मैंने हिडिम्बा, बाका और कई अन्य राक्षसों को मार डाला था, जिनके नाम मैंने कभी नहीं सुने थे, और जो रावण के समान ही शक्तिशाली थे। जाहिर है, विशोका निष्क्रिय नहीं रहे थे!
और फिर कुछ अप्रत्याशित घटित हुआ। शर्मिंदगी छुपाने की मेरी कोशिशों के बीच बलंधरा की निगाहें अनिश्चितता से मेरे चेहरे पर घूमती रहीं। सिर ऊपर उठाते हुए उसने मेरे गले में शादी की माला डाल दी।

दर्शकों ने जयजयकार करते हुए बधाई दी, शंखों की ध्वनि और ढोल की थाप पूरे वातावरण में गूंज उठी।
मेरे जीवन में एक और दुल्हन का आगमन हुआ।
बलंधरा को अपने पूर्वजों के लिए यज्ञ करना था। सभा में उपस्थित सभी लोग बिना किसी बहस या व्यर्थ की शेखी बघारे भोज में शामिल हुए। सेवक घी-चावल में पके हिरण के मांस, सरसों के तेल में तली हुई मछली और भुने हुए हिरण से भरे तांबे के बर्तन लेकर आए। शहद से बनी मीठी पायसम और नौ विशेष अनाजों से बनी और फूलों से सुगंधित शराब भी परोसी गई।
विशोका ने मुझे अकेले में पकड़ने के लिए कुछ पल इंतजार किया और फुसफुसाते हुए कहा, 'अच्छा। काशी और कुरु वंश प्राचीन काल से ही घनिष्ठ रहे हैं। हमें यहाँ से कारीगरों को खांडवप्रस्थ ले जाना चाहिए। वे उत्कृष्ट शिल्पकार हैं।'
विशोका को उपहारों का एक उदार हिस्सा प्राप्त हुआ था।
रात के पहले पहर में मैं उस शयनकक्ष में इंतज़ार करता रहा जहाँ घी का दीपक तेज़ी से जल रहा था। दासियों के साथ बलंधरा सिर झुकाए अंदर आई। दासियों के जाते ही उनमें से एक ने धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया। उनकी दबी हुई हँसी और कोमल कदमों की आवाज़ थम सी गई। बलंधरा का चेहरा जले हुए अखिल की लकड़ी की राख की तरह चमक रहा था। उसकी आँखों में शर्मिंदगी नहीं थी, बस जिज्ञासा थी। 'आना।'
मैं उत्तेजित हो गया, मेरे भीतर दबी हुई कामुकता भड़क उठी। मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया। जब मैंने उसका ऊपरी वस्त्र उतारा, तो कस्तूरी की खुशबू मेरी नाक में घुस गई। उसकी निप्पलें मेरी उंगलियों के बीच छोटी पेरुंगल मछली की तरह मुड़ गईं। मैंने उसके होठों पर शहद-आम की मिठास का स्वाद चखा। उस रात किसी समय, मैं जाग गया और अपने बगल में सो रही बलंधरा को देखा। दिन भर की अप्रत्याशित घटनाओं को आश्चर्य से याद करते हुए, मैं अपनी कोहनी पर सिर टिकाए लेटा रहा, और मुझे सुखद थकान का एहसास हो रहा था।
उसने अपनी आँखें खोलीं और हल्की मुस्कान के साथ पूछा, 'जब तुम दूसरी पत्नी के साथ राजधानी लौटोगे तो द्रौपदी क्या सोचेगी?'
मैंने सहज भाव से उत्तर दिया, 'क्षत्रियों के लिए एक से अधिक पत्नियां रखना प्रथागत है।'
और वनपाल की बहन?

मुझे अचानक गुस्सा आ गया। 'वह अब मेरे बच्चे की परवरिश में व्यस्त होगी।' बलंधरा जोर से हंस पड़ी। ‘आज शाम ढलते ही मेरी दासियों ने पांचाली के वैवाहिक समय को लेकर मजाक किया। उनमें से एक ने तो यहाँ तक कह दिया कि उसके हिसाब से तो मुझे लगातार चार साल मिलेंगे!’
घी का दीपक टिमटिमाया और मंद पड़ गया, मानो हमें यह बताने के लिए कि सूर्य के रथ ने अपनी यात्रा शुरू कर दी है।
मैं उठ खड़ा हुआ। 'अब मेरे जाने का समय हो गया है।'
‘तुम्हारे रथ समेत तीन रथ रात के चौथे पहर में तैयार खड़े होते।’ वह भी उठ खड़ी हुई।
बलंधरा के रथ में, जिसे घोड़ियों द्वारा खींचा जा रहा था, चार महिला सेविकाएँ उनके साथ थीं। सेनेशा के उपहार मेरे रथ में लादे गए थे - नक्काशीदार चांदी की थालियाँ, सोने के प्याले, हाथीदांत के संदूक। तीसरे रथ में पानी, शराब और भोजन लादा गया था। बलंधरा के पाँच अंगरक्षक और एक चाचा भी उसमें सवार हुए।
सेनेशा और उनके मंत्रियों ने हमें विदाई दी।
जिस दिन हम खांडवप्रस्थ पहुँचे, शाम ढल चुकी थी। विस्होका ने आश्चर्यचकित होकर उन क्षेत्रों की ओर इशारा किया जो वनभूमि से खुले मैदानों में परिवर्तित हो चुके थे। जैसे ही हम वहाँ से गुजरे, हमने जली हुई झोपड़ियों के अवशेष देखे।
जब हम प्रांगण में पहुँचे तो सहदेव सबसे पहले हमारे पास दौड़कर आए। उन्होंने यात्रा के दौरान किसी भी समय संदेशवाहक न भेजने के लिए हमें फटकारा।
सभी नए मकान बनकर तैयार हो चुके थे। हस्तिनापुरा से और भी लोग आकर बस गए थे
- कुम्हार, रथ बनाने वाले, जौहरी।
सहदेव ने मुझे जंगल में साफ किए गए क्षेत्रों को घूरते हुए देखा और कहा, 'अर्जुन और कृष्ण ने उन क्षेत्रों को साफ किया था। उन्होंने उस काम को एक उत्सव की तरह मनाया था, जिसमें असंख्य सेवक और योद्धा थे और भरपूर भोजन और शराब थी।' उन्होंने इसे इस तरह कहा मानो मैं किसी भव्य उत्सव से वंचित रह गया हूँ।
‘और नागों का क्या?’

‘वे वनवासी आदिवासी? उन्होंने कुछ समय तक विरोध किया, फिर शिकायत करने लगे। जब घरों में आग लगा दी गई, तो वे भाग गए।’
मैंने विशोका से काशी से आए लोगों के लिए आवास की व्यवस्था करने को कहा और सहदेव को बलंधरा के चाचा का ख्याल रखने के लिए कहा।
मां एक नए आलीशान घर में रहने चली गई थीं। उन्होंने मुझे डांटा या शर्मिंदा नहीं किया। उन्होंने बलंधरा का स्नेहपूर्वक स्वागत किया, उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि वह अपना सारा दिन उनके साथ इसी घर में बिताएगी। 'अब से ये महिलाओं के रहने की जगह है। मैं यहाँ इसलिए रहने आई हूँ क्योंकि यह बहुत सुविधाजनक है।'
मेरी तरफ देखते हुए उसने कहा, 'हमें नहीं पता कि और दुल्हनें कब आएंगी।' मुझे पता चला कि अर्जुन के घर पुत्र का जन्म हुआ है और मैं तुरंत उनके महल की ओर चल पड़ा। कृष्ण द्वारका लौट गए थे। अर्जुन ने मुझे अपने साथ आए एक छोटे कद के, दुबले-पतले, कमजोर शरीर वाले व्यक्ति से मिलवाया। ‘मयन। वह दक्षिण का एक वास्तुकार है। वह हमारे लिए एक सभा-महल बनवा रहा है।’
मैंने काशी में मिट्टी की ईंटों से बनी दीवारें देखने का ज़िक्र किया, तो माया ने कहा: 'ये इतनी मज़बूत नहीं होतीं।' उन्होंने रंगीन मिट्टी को पकाकर और मज़बूत बनाकर सुंदर ईंटें बनाने की विधि समझाई। वे हॉल के फर्श पर नीली टाइलें बिछाने वाले थे। उन्हें राल से नए रंग बनाना आता था। उनके कारीगर पत्थरों को लकड़ी के तख्तों से भी पतले टुकड़ों में तराश सकते थे।
मैं नवजात शिशु को देखने अंदर गया और अर्जुन मेरे साथ गया।
सुभद्रा ने बच्चे को गोद में लिए दासी से लेकर मुझे दे दिया। वह सो रहा था।
उसका रंग अर्जुन जैसा और चेहरे की बनावट सुभद्रा जैसी थी।
कृष्ण ने उनका नाम अभिमन्यु रखा।
मैंने सोते हुए बच्चे के सिर को धीरे से चूमा और बाहर चली गई।
मैंने अभी तक युधिष्ठिर से मुलाकात नहीं की थी, हालांकि नियमों के अनुसार मुझे उनसे पहले मिलना चाहिए था। मैंने एक सेवक के माध्यम से संदेश भेजा और उनके महल के भीतरी कक्ष में प्रतीक्षा करने लगा। वे द्वार पर प्रकट हुए और मैंने उनके समक्ष प्रणाम किया।
‘अंदर आइए।’
जब मैं उसके पीछे-पीछे चल रहा था, तो उसने बड़े हर्ष से कहा, “द्रौपदी अपनी दासियों के साथ है, वह गर्भवती है।” उसने आगे कहा, “मैं बलंधरा के मामा से

मिला। वह आज रात यहाँ जुए का खेल खेलने आ रहे हैं। काशी के राजा बहुत ही महान हैं। मैंने सेनेशा के बारे में सुना है।”
बाद में, माता बलंधरा को युधिष्ठिर के पास ले गईं ताकि वे उन्हें प्रणाम करें और उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। उस समय मैं मायान के साथ था, और हम उन महलों को देख रहे थे जो बनकर तैयार हो चुके थे और सभा-महल का निर्माण चल रहा था।
रात में बलंधरा ने मुझसे कहा, 'मैंने द्रौपदी को देखा।'
द्रौपदी ने उससे क्या पूछा होता? उनकी पहली मुलाकात में क्या हुआ होता? मैं जानना चाहती थी, लेकिन मैंने उदासीनता का दिखावा किया।
जब उसने कहा, 'इससे मुझे आश्चर्य नहीं होता...' तो मैंने हैरानी से उसकी ओर देखा।
‘कोई भी आदमी उसके लिए चार साल तक इंतजार करेगा। वह मेरी कल्पना से कहीं ज्यादा खूबसूरत है।’
तो उसने तुमसे क्या कहा?
बलंधरा मुस्कुराई। 'मुझे तो यह भी यकीन नहीं है कि उसने मुझे ठीक से देखा भी था। मुझे ऐसा लगा जैसे वह मुझे धूल के एक कण के समान समझ रही थी जिसने उसकी दृष्टि को धुंधला कर दिया था। सुभद्रा ने मुझसे काफी देर तक बात की।' मैंने उसे बिस्तर पर खींच लिया, ताकि हम द्रौपदी के बारे में बात करना बंद कर सकें।
अगली सुबह, मैंने हाल ही में पुनर्निर्मित हथियारघर देखा। सात घोड़ों को जोड़ने वाले एक विशाल रथ का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका था। मैंने हवा में एक गदा घुमाई। फिर मैंने कुछ देर नकुला के साथ छोटी और लंबी तलवारों से द्वंद्वयुद्ध किया। पैदल सेना में नए-नए शामिल हुए कई युवक मेरे कारनामों को देखने के लिए चारों ओर जमा हो गए।
मायन ने मेरी गदाओं का निरीक्षण किया और कहा, 'मैं तुम्हारे लिए एक उत्कृष्ट गदा बनाऊंगा। यह पूरी तरह से धातु की होगी, लेकिन तुम्हें यह बहुत भारी नहीं लगेगी।'
अपनी तर्जनी उंगली से उन्होंने ज़मीन पर कई सैन्य उपकरणों के डिज़ाइन बनाए जिन्हें वे बनाने वाले थे। हथियारों के बारे में उनका ज्ञान मुझे चकित कर गया। उन्होंने अन्य क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले नए हथियारों के बारे में बताया – भाले जिन्हें केवल एक बार फेंका जा सकता था,

छोटे अर्धचंद्राकार नोक वाले तीर जो किसी का सिर धड़ से अलग कर सकते थे। एक बूढ़ी नौकरानी हमारे पास आई और मुझे बताया कि द्रौपदी मुझसे मिलना चाहती है।
मैं युधिष्ठिर के महल की ओर चला। मेरा बड़ा भाई बलंधरा के मामा के साथ पासा खेल रहा था और उसने अपना सिर तक नहीं उठाया।
मैं हॉल और गलियारे से गुज़री और एक दूसरी नौकरानी मुझे दूसरे दरवाजे तक ले गई। द्रौपदी अंदर बैठी थी।
मैंने गर्भवती महिला को दी जाने वाली प्रथागत शुभकामना दी: ईश्वर करे कि तुम एक वीर बच्चे को जन्म दो।
गर्भावस्था की थकान ने उसके चेहरे की सुंदरता को और भी बढ़ा दिया था। मैंने खुद को फटकारा: 'वह तुम्हारे बड़े भाई की पत्नी है।'
‘राजसूया के बलिदान के बारे में आपने क्या निर्णय लिया है?’
मैंने इसके बारे में थोड़ा-बहुत सुना था, लेकिन मुझे कोई विस्तृत जानकारी नहीं थी। नकुल या सहदेव ने इसका जिक्र किया था, बस इतना ही मुझे पता था। कृष्ण ने कहा कि जब तक हम जरासंध को पराजित नहीं कर देते, तब तक हमें राजसूय अनुष्ठान करने का अधिकार नहीं है। राजा सहमत हो गए। एक बार जब हम इसे संपन्न कर लेंगे, तो हम अनावश्यक युद्धों से बच सकेंगे।
वह उठी, अंदर गई और मोतियों और पन्नों से जड़ी एक माला लेकर वापस आई। 'शादी का तोहफा।'
मैंने उससे वो कपड़ा लिया और अपनी उंगलियों से उसके रेशों को अलग किया। मैं इंतज़ार करती रही, समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।
उन्होंने कहा, ‘न तो कुरुओं को और न ही पांचालों को जरासंध से कोई शिकायत है। हालांकि, सच्चाई यह है कि उसे पराजित किए बिना राजसूय अनुष्ठान करना व्यर्थ होगा।’
ये राज्य से जुड़े मामले थे जिन पर हम पुरुषों को चर्चा करनी थी। द्रौपदी मुझे क्या बताने की कोशिश कर रही थी?
‘तुम्हें पता है खांडवप्रस्थ में एक ऐसा व्यक्ति है जो कृष्ण के कहे अनुसार कुछ भी करने के लिए तत्पर रहता है। जब समय आए, तो तुम्हें अपने छोटे भाई को यादव परिवार की प्रतिशोध की योजनाओं में शामिल न होने की सलाह देनी चाहिए। यही अनुरोध करने के लिए मैंने तुम्हें बुलवाया है।’

इसलिए मुझे इस बात का ध्यान रखना था कि अर्जुन किसी भी प्रकार के खतरे को न मोल लें। मैं खड़ा हो गया।
‘अगर जरासंध द्वंद्वयुद्ध का प्रस्ताव रखे और आप उसे स्वीकार कर लें, तो बात कुछ और हो सकती है। मुझे लगता है कि कृष्ण के युद्ध के अवशेषों को न उठाना ही बुद्धिमानी होगी। मैं सही हो भी सकता हूँ और गलत भी।’
‘मुझे सोचने दो।’ मैं और क्या कह सकता था?
जब मैं जाने ही वाला था, तब द्रौपदी ने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, 'मैं अगली बार कार्तिक महीने की पूर्णिमा के दिन घर बदलूंगी।'
मैं जल्दी से बाहर निकल गया।
द्रौपदी ने मुझे क्यों बुलवाया था? क्या मुझे शादी का उपहार देने के लिए? क्या जरासंध के साथ युद्ध से बचने के लिए? या फिर मुझे यह याद दिलाने के लिए कि चार महीने बाद मेरी बारी आएगी?
उस रात मैं बलंधरा के बगल में लेटा था, ठंड से कांपता हुआ और भावहीन। आँखें खुली रखकर मैं सोच रहा था, और तस्वीर धीरे-धीरे स्पष्ट होती जा रही थी। जरासंध पर युद्ध की घोषणा करना अनिवार्य था। लेकिन राजसूय के लिए शक्ति परीक्षण से युधिष्ठिर को छूट मिल जाएगी। द्रौपदी रानी बनेगी। शक्तिशाली जरासंध का सामना मुझे ही करना था, अर्जुन को नहीं। उसने बलंधरा से विवाह करने के लिए मुझे क्षमा कर दिया था। कार्तिक माह की पूर्णिमा की रात और उसके बाद की रातें जरासंध को मारने के पुरस्कार के रूप में मेरा इंतजार कर रही थीं। सब कुछ एकदम स्पष्ट था।
मैंने उस रात के बारे में घृणापूर्वक सोचा जब मैं खून से सने हाथों से उसके कपड़े उतारूंगा, उन्हें फाड़ दूंगा, फेंक दूंगा और जंगल के किसी आदिवासी की शक्ति के साथ उसका आनंद लूंगा।
क्या होगा अगर द्रौपदी भी अब वही सपना देख रही हो? अगर ऐसा हो तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा।
मैंने बलंधरा को दया भरी नजरों से देखा, जो एक और नया आभूषण गर्व से पहने शांति से सो रही थी।

3

‘उन्होंने अपना मुकुट उतारा, अपने बालों को गूंथा और अपनी शक्तिशाली भुजाओं को लहराया। अपनी छाती और जांघों पर थपथपाते हुए, जरासंध युद्ध के लिए तैयार होकर खड़े हो गए। युद्ध उनके लिए एक उत्सव था। मैं उनकी प्रशंसा करता था, मन ही मन उन्हें प्रणाम करना चाहता था।’
‘बताइए, मैं सुन रही हूँ। मुझे सब कुछ विस्तार से बताइए।’ द्रौपदी बिस्तर पर थकी-हारी लेटी हुई थी, लेकिन जैसे ही मैंने बोलना शुरू किया, उसका आलस्य मानो एक और वस्त्र की तरह उतर गया।
जिस रात द्रौपदी मेरे घर आई थी, तब से ही वो थकी-हारी और कमजोर लग रही थी। जब भी मैं उसे अपने खुरदुरे हाथों में पकड़ता, वो मुझे गिड़गिड़ाती, दया भरी निगाहों से देखती और दूर हट जाती। उसकी आँखें मानो मुझसे विनती कर रही हों कि मैं उसे चोट न पहुँचाऊँ। मैंने अपनी उंगलियों को तितलियों से भी हल्का बनाने की कोशिश की। धीरे से मैंने खुद को समझाया, धैर्य रखो। मैंने अपने भीतर के जंगली आदिम को आदेश दिया: स्वर्ग में संतान के फूल तोड़ती सुंदर कन्याओं की उंगलियों की तरह कोमल, दयालु और नाजुक बनो।
उसने मेरे हाथों को झटक दिया और थकी हुई आवाज़ में फिर कहा, 'नहीं। पहले मुझे द्वंद्वयुद्ध की कहानी सुनाओ।'
मैंने बोलना शुरू किया, ‘जरासंध का देश मगध पाँच पर्वतों – वैहर, वराह, वृष, ऋषि और चैत्यक – के बीच में स्थित है। महल की दीवारों के बाहर पचोत्ति वृक्षों का जंगल है। किले में प्रवेश करते ही एक बाजार है जहाँ खाने-पीने की चीजों से लेकर फूलों की माला और इत्र तक सब कुछ मिलता है।’
मैं रुक गया।
दीपक बुझ गया था क्योंकि मैं उसमें घी डालना भूल गया था। दीवार में बनी छोटी सी खिड़की से पूर्णिमा की रोशनी अंदर आ रही थी: कार्तिक महीने की पूर्णिमा जो चौबीस महीनों के बाद आई थी।
मेरे शयनकक्ष में प्रवेश करते समय उसने मुझे प्रणाम करने से पहले कहा, 'मैं एक भाग्यशाली महिला हूँ।' नौकरानियों के जाते ही उसने कहा, 'आज रात बातचीत करने और मन को शांत करने के लिए है। मुझे बताओ कि तुम लाख के घर से कैसे बच निकलीं।'

जब मैंने वरणवता की कहानी समाप्त की, तो वह और भी थकी हुई लग रही थी। लेकिन उसने कहा, 'मुझे उन युद्धों की कहानियाँ सुनाओ जो तुमने अपनी गदा से लड़े थे।' वह मुझे आगे सुनाने के लिए लगातार प्रोत्साहित करती रही।
मैंने जरासंध की कहानी को आगे बढ़ाया।
'किले के द्वार पर हाथी की खाल से बने तीन बड़े ढोल लटके हुए थे। कृष्ण के निर्देशानुसार हमने प्रवेश करते समय उन्हें जोर-जोर से बजाया। जरासंध हमेशा उन लोगों का हार्दिक स्वागत करता था जो उससे द्वंद्वयुद्ध करने की मांग करते थे।'
'जरासंधा के लिए द्वंद्वयुद्ध एक रोजमर्रा का मनोरंजन था। युद्ध में पराजित राजाओं को उन गुफाओं में भेज दिया जाता था जिन्हें कारागार में परिवर्तित कर दिया गया था, और फिर उनकी बलि दे दी जाती थी।'
बाजार में लोग हमें ऐसे देख रहे थे मानो हम मौत की भीख मांगने आए हों। जब पहरेदार हमारे पास आए, तो कृष्ण ने उनसे कहा: “हमने सुना है कि यहाँ का शासक एक नीच बदमाश है, एक उच्च जाति का आदमी है जो अपनी ही जाति के लोगों की बलि देता है। हम उससे द्वंद्वयुद्ध करने आए हैं।”
‘पहरेदारों ने हमें तिरस्कार भरी निगाहों से देखा और हमें उस हॉल में ले गए जहाँ यज्ञ किए जाते थे। वहाँ विशिष्ट अतिथियों के लिए सीटें थीं। जब भोजन के लिए थालियाँ लगाई गईं, तो अर्जुन क्रोधित हो गए। कृष्ण ने सेवकों को फिर से याद दिलाया: “हम युद्ध करने आए हैं।”’
हॉल में समारोह की देखरेख कर रहे एक बुजुर्ग मंत्री ने कहा, "जो लोग द्वंद्वयुद्ध करने आते हैं, उन्हें आमतौर पर यहीं अंतिम भोजन कराया जाता है।"
सेवकों ने अपनी मुस्कान छुपा ली। जब हम विश्राम कर रहे थे, तब आधी रात को जरासंध हमारे पास आए। वे हमारे मामा धृतराष्ट्र के समान विशालकाय दिखते थे। उनकी भुजाएँ जुए के डंडों की तरह भारी थीं। उन्होंने हमें प्रणाम किया, हमने भी उन्हें प्रणाम किया।
“मैं द्वंद्वयुद्ध में भाग लेने के लिए हमेशा तैयार रहता हूँ,” उसने मुस्कुराते हुए हमारी ओर देखा। “लेकिन तुममें से कोई भी मेरा दुश्मन नहीं है। और न ही मुझे याद है कि मैंने तुममें से किसी को नुकसान पहुँचाया हो।” कृष्ण ने कहा, “तुम मृत्यु के पात्र हो क्योंकि तुम क्षत्रियों की बलि देते हो।”

यद्यपि जरासंध मानव बलि देता था, फिर भी वह कुछ नियमों का पालन करता था। वह बिना किसी कारण के उससे द्वंद्वयुद्ध करने आने वालों को कभी कैद नहीं करता था।
‘मैंने जरासंध के शांत स्वभाव को आदरपूर्वक देखा। वह शांत रह सकता था और अपने विरोधियों के प्रति सभी पारंपरिक शिष्टाचार का पालन कर सकता था क्योंकि उसे अपने हाथों की असाधारण शक्ति पर पूरा भरोसा था।’
“आप कौन हैं? आखिरकार, हमारी पहली परंपरा एक-दूसरे को जानना ही तो है।” कृष्ण ने सबसे पहले अर्जुन का परिचय कराया। फिर उन्होंने मेरी विजयों का वर्णन किया। उन्होंने द्रुपद के दरबार में मेरे द्वारा दी गई चुनौती का वर्णन इस प्रकार किया मानो वह कोई महान युद्ध हो जिसे मैंने अकेले ही जीता हो। उन्होंने कहा कि मैं एक घोड़े द्वारा खींचे गए रथ पर सवार होकर लड़ा, सेनेशा और उसकी विशाल सेना को परास्त किया और दुल्हन को अपने साथ ले गया। उन्होंने हिडिम्बा के वध का उल्लेख नहीं किया, मुझे नहीं पता क्यों। कृष्ण ने अपना परिचय देते हुए कहा: मैं कृष्ण हूँ, यादव वंश के बलराम का भाई…
जरासंध जोर से हंस पड़ा। “मुझे माफ कर दो, मुझे याद नहीं रहा। तुम उस समय बहुत छोटे थे। और फिर, जब तुम हारकर भाग गए, तो मैंने तुम्हें सिर्फ पीछे से ही देखा…”
राजा का शांत स्वभाव अचानक बदल गया। उन्होंने अपने मंत्री से कहा, “द्वंद्वयुद्ध की तैयारी करो – सभी पूजा-पाठ और यज्ञ अनुष्ठानों की व्यवस्था करो। ढोल बजाओ और शहर के लोगों को यह खबर सुनाओ।”
उन्होंने हमारी तरफ देखा और पूछा, "पहले कौन लड़ेगा?"
आप चुन सकते हैं
जरासंध मुस्कुराया और एक बार फिर वही हुआ जिसकी कृष्ण ने भविष्यवाणी की थी।
“अगर मेरे प्रतिद्वंदी में ताकत की कमी हुई तो दर्शक निराश हो जाएंगे। इस युवक का शरीर पहलवान जैसा है। इसलिए भीमसेना को ही विजेता घोषित किया जाए।”
'जरासंध के लिए द्वंद्वयुद्ध उतना ही पवित्र और पावन था जितना कि सोम यज्ञ। हर पल के साथ, मेरी नज़र में उनका नैतिक कद बढ़ता गया।'

भोर होते ही दृश्य सुशोभित हो गया। जरासंध यज्ञ की अग्नि के सामने पुष्पों से सजे, औषधीय लेप से लिपटे हुए बैठे थे। ब्राह्मण पुरोहित ने यज्ञ करने वाले की यश की कामना करते हुए एक अनुष्ठान संपन्न किया। सेवक घावों और बेहोशी के लिए औषधियाँ लेकर कतार में खड़े थे। जरासंध ने अपना मुकुट उतारा, अपने बालों की चोटी बनाई और उठ खड़े हुए।
द्रौपदी अब थकी हुई नहीं थी। उसकी आँखें नीले रंग की तरह चमक रही थीं। वह मेरे बहुत करीब आ गई। उसकी पतली उंगलियाँ मेरे हाथों और गर्दन पर फिरीं, उन्हें सहलाती रहीं, फिर मेरे बालों की लटों में से गुज़रीं, एक मुट्ठी बाल पकड़े और उन्हें चंचलता से मरोड़ दिया। फिर वे मेरे कंधे से होते हुए मेरे हाथों तक वापस आ गईं।
एक तीव्र उत्तेजना ने मेरे शरीर की जंजीरों को वैसे ही खींच लिया जैसे कोई कुत्ता अपने शिकार की गंध सूंघकर उसे जकड़ लेता है।
‘रुको। पहले कहानी पूरी करो। मैं इसे सूतों के मुखिया को सुनाऊंगा, उनसे इस पर सबसे बेहतरीन गीत रचवाऊंगा और उन्हें सोने की चूड़ियों का एक जोड़ा दूंगा ताकि वे इसे पूरे देश में गाते फिरें। और फिर…?’
मैंने जारी रखा।
पहले हमने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा। फिर हमने एक-दूसरे को प्रणाम किया। हम एक-दूसरे के हाथों को ऊपर-नीचे करते रहे, हमले के लिए मौके तलाशते रहे। जरासंध ने अचानक मुझ पर हमला कर दिया और मैं सिर झुकाए उसका सामना करने लगा। जब मैंने उसे बाहों में लेने की कोशिश की, तो वह पीछे हट गया और फिसलकर दूर चला गया। फिर अचानक उसने मुझे एक लात मार दी। मैं ज़मीन पर गिर पड़ा और जैसे ही मैंने संभलने की कोशिश की, उसने कुश्ती की एक तरकीब अपनाई जिससे श्वास नली दब जाती है। मैंने खुद को छुड़ाने के लिए उसके पेट पर एक घूंसा मारा। फिर मैंने उसके पास खड़े होकर लड़ने की कोशिश की, लेकिन उसने मुक्कों से मेरा मुकाबला किया। मैंने उस पर हमला किया, अपनी कोहनियों को उसकी कमर और पसलियों में गाड़ दिया। वह दहाड़ा और मैं उससे भी ज़ोर से दहाड़ा। मुझे बाद में बताया गया कि दर्शक डर के मारे पीछे हट गए थे।
मुझे एहसास हुआ कि वह मुझे अपनी बाहों में कसकर जकड़कर दम घोंटकर मार डालेगा। उसकी पहुँच से बाहर रहकर मैंने उस पर हमला किया। वह गति में मेरा मुकाबला नहीं कर सका। मेरे वार उसके मुक्कों के रोकने से पहले ही उसके शरीर के कमजोर हिस्सों पर पड़े और धीरे-धीरे उसकी गति धीमी हो गई। अर्जुन

और कृष्ण मुझे प्रोत्साहित करने के लिए लगातार चिल्लाते रहे। वह बार-बार बवंडर की तरह मुझ पर झपटता और मुझे अपनी बाहों में जकड़ने की कोशिश करता, लेकिन हर बार मैं उससे बच निकलता। मुझे लगा कि वह किसी तरह मुझे पत्थर के खंभे के सामने लाना चाहता है। घंटे बीत गए और जरासंध को एहसास होने लगा कि यह द्वंद्वयुद्ध किसी उत्सव का आयोजन नहीं था। मेरा मानना है कि यज्ञ-क्षेत्रों में शहीद हुए क्षत्रिय वीरों के कुरु देवताओं ने ही मेरी भुजाओं को बलवान बनाया था।
मुझसे कम से कम चार गुना अधिक आयु के इस शक्तिशाली पुरुष की शक्ति ने मुझे चकित कर दिया। हर उस क्षण जब मुझे लगा कि मैं गिरने ही वाला हूँ, कोई शक्ति मुझे सामर्थ्य प्रदान कर रही थी। वह अब भी मुझे पत्थर के खंभे के सामने ले जाना चाहता था। वह चिल्लाते हुए मेरी ओर बढ़ा, और मैंने अनुमान लगाया कि वह अपनी पूरी ताकत लगाकर मुझे अपनी बाहों में उठा लेगा और खंभे से टकरा देगा। जैसे ही उसने खुद को उठाया और उड़ते हुए पहाड़ की तरह मेरी ओर दौड़ा, मैं अपने बाएँ हाथ पर गिर पड़ा। या यूँ कहूँ कि मैं तेज़ी से नीचे धंस गया, मानो गिर रहा हो। खंभे से अपना सिर बचाने के लिए, जरासंध ने खुद को संभालने के लिए अपना हाथ बढ़ाया और एक पैर पर संतुलन बनाकर खड़ा हो गया। मैंने उसके दोनों घुटने पकड़ लिए, और अपने दाहिने कंधे की पूरी ताकत लगाकर उसे नीचे पटक दिया। वह चीखते हुए मुँह के बल गिर पड़ा। मैं उसकी पीठ पर कूद गया, यह सुनिश्चित करते हुए कि मेरे घुटने उसकी रीढ़ की हड्डियों पर लगें और उनके टूटने की चटकने की आवाज़ सुनी। मैंने उसके बाल पकड़े और उसका चेहरा घुमा दिया। उसके मुँह से खून का एक घड़ा बह निकला। उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं। सच में, मुझे कुछ याद नहीं। मुझे बताया गया कि मैं दहाड़ा था। उसकी गर्दन टूट गई और उसके हाथ बेबस होकर मुड़ते-मुड़ते रहे। मैंने अपने हाथ फिर से उसकी रीढ़ पर रखे और वह हिलना-डुलना बंद कर दिया...
‘अर्जुन ने कहा, मैं फिर से दहाड़ा। मैं अधमरा होकर उठा। अर्जुन मुझे सहारा देने के लिए दौड़ा, लेकिन मैंने उसे धक्का देकर गिरा दिया। मेरा शरीर खून से लथपथ था, जरासंध के खून से... मेरा...’
द्रौपदी मेरे सामने हांफ रही थी। मुझे लगा कि वह पूरी तरह होश में नहीं है। उसके नुकीले दांत मेरी टेढ़ी-मेढ़ी दाढ़ी में धंस गए। वह द्रौपदी कहां गई जो यहां थकी-हारी और उदासीन पड़ी थी? उसका शरीर बवंडर की तरह मेरे चारों ओर घूम रहा था। उसके नाखून और दांत कई जगहों पर मुझे बुरी तरह घायल कर रहे थे।

लेकिन जो मैंने महसूस किया वह दर्द नहीं, बल्कि वासना थी। वासना नहीं, बल्कि वासना की सुस्ती। बाकी की रात मैं इस भावना की ऊंचाइयों पर ऐसे उड़ता रहा जैसे मंथरा पर्वत गरुड़ के पंजों से लटका हुआ उड़ता है, जब उसने उसे धरती से उखाड़ा था।

4

कहा जाता है कि मायां की कारीगरी इतनी उत्कृष्ट थी कि उनके द्वारा निर्मित हॉल देवताओं के हॉलों से प्रतिस्पर्धा कर सकता था। नीली टाइलों से बने क्षेत्र जल के तालाबों की तरह दिखते थे। यही वह हॉल था जहाँ दुर्योधन को अपमानित किया गया था। लोग कहते थे कि राजसूय अनुष्ठान के दौरान जब सफेद संगमरमर के पत्थरों पर रक्त के छींटे पड़ते थे, तब स्थलाभाली (किसी स्थान को पवित्र करने के लिए किया जाने वाला यज्ञ) पूर्ण होता था। इस हॉल की प्रसिद्धि बहुत कम समय में ही आठों दिशाओं में फैल गई।
मैं वहाँ अकेला खड़ा था, जबकि बाकी लोग हस्तिनापुरा जाने की तैयारी कर रहे थे। उस जगह पर घटी घटनाएँ मेरे दिमाग में फिर से ताजा हो गईं।
अपनी ईर्ष्या छुपाते हुए दुर्योधन अपने सेवकों के साथ सभागार का जायजा लेने आया था और पानी वाले हिस्से और ठोस फर्श में अंतर न कर पाने के कारण पूरी तरह भ्रमित हो गया था। देखने वालों को उस पर हंसने का यही पर्याप्त कारण मिल गया। लोगों ने हमें बताया था कि वह आज भी उस घटना का आक्रोश अपने भीतर संजोए हुए है।
राजसूय यज्ञ के लिए आए राजा यहाँ राजाओं के राजा के राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में आयोजित उत्सव में एकत्रित हुए। द्रौपदी ने सभी अनुष्ठानों में भाग लिया। गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों से लाए गए जल से भरे कलश कतार में लगाए गए थे। राज्याभिषेक समारोह के लिए प्रयुक्त कलशों में समुद्र के जल से लेकर ओस की बूंदों तक, अनेक प्रकार के जल भरे गए थे। ब्राह्मणों ने जल में शहद, दूध और घी मिलाया, और फिर उसमें गाय के गर्भ से निकाला गया द्रव भी मिलाया।
राजसूय में अभिषेक समारोह का महत्व यज्ञ अग्नि के चारों ओर किए जाने वाले अनुष्ठानों से कहीं अधिक है। सबसे पहले, समारोह के संचालक का चयन किया जाता है और विधिपूर्वक उनका स्वागत किया जाता है। हममें से अधिकांश लोग तब आश्चर्यचकित रह गए जब भीष्म ने इसके लिए कृष्ण को चुना। कई लोगों ने विरोध जताया, लेकिन चेदि के शिशुपाल ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो खड़े होकर यह पूछने को तैयार थे, 'यादव कृष्ण को यह अधिकार कैसे हो सकता है?'

कई दर्शकों ने इसका आनंद लिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या चेदि के राजा स्वयं इस अधिकार का दावा करेंगे। वास्तव में, सभा में कई ऐसे लोग थे जो कृष्ण से कहीं अधिक इस सम्मान के पात्र थे।
शिशुपाल ने भीष्म से कहा, 'इस सभा में कई लोग मुझसे अधिक योग्य हैं। हे महाराज, मैं आपका नाम प्रस्तावित करता हूँ!'
सभी लोग इस सुझाव के पक्ष में थे। लेकिन हमारे दादाजी कृष्ण के अच्छे गुणों का बखान करने लगे। देखते ही देखते शिशुपाल का क्रोध दादाजी पर भड़क उठा।
“तुमने दूसरों के मामलों में बेवजह दखल देकर और उन लोगों के प्रति वीरता का दिखावा करके खुद को कई बार शर्मिंदा किया है जो इसके लायक नहीं हैं। तुम सबको अंबा याद होगी, जिसने किसी और से शादी करने का वचन दिया था और जिसे तुम जबरदस्ती विचित्रवीर्य के पास लाए थे, जो तपेदिक से मर रहा था। सब जानते हैं कि उसे न तो जन्मस्थान से और न ही उस महल से, जहाँ उसे दुल्हन बनाकर लाया गया था, घर से वंचित कर दिया गया था, और उसने आत्महत्या कर ली थी। इस वीरतापूर्ण कार्य से बस इतना ही हासिल हुआ कि दो विधवाएँ तपेदिक की शिकार से बच गईं!”
भीष्मचार्य चुप हो गए। श्रोता स्तब्ध रह गए। मैं जानता था कि शिशुपाल ने जो कहा था वह सच था। लेकिन मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि क्या उन्हें इतनी बड़ी सभा के सामने यह कहना चाहिए था।
लेकिन शिशुपाला रुकने को तैयार नहीं था। उसने कहा, ‘तो तुमने एक और ऐसा नेक काम किया है जो अच्छे क्षत्रिय परिवारों में पहले कभी नहीं हुआ। तुमने विधवाओं को गर्भवती करने के लिए एक बाहरी व्यक्ति को लाया!’
शिशुपाला के प्रहार ने हमारे वंश की जड़ों पर प्रहार किया।
अर्जुन जल्दी से मेरे पास आया और बोला, 'अब बहस इस बात पर नहीं है कि कृष्ण या भीष्मचार्य में से कौन स्वामी होना चाहिए। शिशुपाल का एकमात्र उद्देश्य राजसूय में तबाही मचाना है।'
मुझे युद्ध के खतरे की आशंका नहीं थी।
सहदेव, जिनमें अब भी युवावस्था का हठ और उग्र स्वभाव था, उठे और सभागार में नीचे गए। “मैं सबसे छोटा पुत्र हूँ। गुरु के चरण धोने और उनका स्वागत करने का दायित्व मेरा है। मैं कृष्ण के लिए यह अनुष्ठान करने जा रहा हूँ। यदि

यहाँ कोई ऐसे लोग हैं जिन्हें यह पसंद नहीं है, तो वे अपने हथियार लेकर आ जाएँ। मैं तैयार हूँ!”
उस दिन तक सहदेव को कभी हथियार उठाने का अवसर नहीं मिला था। उन्होंने हमेशा युधिष्ठिर द्वारा दूत बनाकर भेजे गए राज्यों में उपहार ग्रहण किए थे और स्वागत समारोहों में भाग लिया था, जहाँ उन्होंने राजाओं से राजसूय अनुष्ठान करने के अपने अधिकार को स्वीकार करने का अनुरोध किया था। मुझे बेचैनी होने लगी।
दुर्योधन और उसके अनुयायी, जो अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे, निश्चित रूप से शिशुपाल का साथ देंगे। दादा भीष्म व्यवस्था बहाल करने के असफल प्रयास कर रहे थे।
शिशुपाला युधिष्ठिर पर भड़क उठा और बोला, “जरासंध की मृत्यु के कारण ही तो तुम्हें राजसूय युद्ध आयोजित करने का अधिकार मिला है, है ना? उस विजय के नाम पर इन सभी कायरों ने बिना किसी विरोध के आत्मसमर्पण कर दिया और अब तुम स्वयं को सम्राट समझते हो! क्या तुम इस बात से इनकार कर सकते हो कि तुम सबने ब्राह्मण पुरोहितों का वेश धारण किया, जरासंध का विश्वास जीता और फिर छल से उसकी हत्या कर दी?”
मेरा खून खौल उठा। भीष्म सुलह भरे शब्दों के साथ फिर से शिशुपाल के पास गए थे।
मैंने सहदेव को एक तरफ धकेल कर कहा, 'उसे मेरे भरोसे छोड़ दो। जरासंध से युद्ध तो मैंने ही किया था।' मैं जानता था कि मुझे ही उसका सामना करना होगा।
कृष्ण, जो अब तक उदासीनता से देख रहे थे, उसी क्षण उठ खड़े हुए। उन पर लगाए गए आरोपों और चुनौतियों का उन पर कोई असर नहीं हुआ। मैंने उन्हें अपना चक्र उठाते देखा। उसके बाद मैंने बस इतना ही देखा कि चेदिराज की गर्दन पर खून के छींटे छोटे-छोटे लाल चेति के फूलों की तरह फैल रहे थे। कृष्ण का चक्र इतनी तेज़ी से गया कि आँख उसे देख ही नहीं पाई।
कृष्ण के शांत और गंभीर चेहरे को देखकर मैं दंग रह गया, मानो वे यह जता रहे हों कि उनके किए पर आपत्ति करने वाला कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी भी तर्क से उन पर हमला कर सकता है। कुछ लोग चले गए, लेकिन आगे कोई चुनौती नहीं दी गई। चेदि के अंगरक्षकों द्वारा शव को ले जाने के दौरान, पुरोहितों ने अभिषेक समारोह के लिए मंत्रों का जाप शुरू कर दिया।

उस विशाल हॉल में आयोजित होने वाला यह पहला और आखिरी समारोह था।
विदुर, मामा धृतराष्ट्र का संदेश लेकर आए थे, जिसमें हमें हस्तिनापुरा आने का निमंत्रण था। उन्होंने बताया कि मामा युधिष्ठिर से मिलना चाहते हैं और राजसूय यज्ञ करने के लिए उन्हें आशीर्वाद देना चाहते हैं। वहाँ युधिष्ठिर और दुर्योधन जुए के कुछ खेल खेल सकते हैं। हस्तिनापुरा में जुआ खेलने के लिए एक नया हॉल अभी-अभी बनाया गया था।
विदुर माता से मिलने गए और उनसे काफी देर तक बातें कीं। फिर वे बाहर आए, युधिष्ठिर के पास गए और उन्हें चेतावनी दी, ‘यह जानकर अच्छा लगा कि वे तुम्हारा गर्मजोशी से स्वागत करेंगे और तुम्हें आतिथ्य सत्कार प्रदान करेंगे। लेकिन तुम्हें जुए में हाथ-पैर मारने से बचना होगा।’
युधिष्ठिर हँसे। “क्या क्षत्रियों के लिए जुआ और युद्ध समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं हैं? यदि वे आकर मुझे खेल खेलने के लिए कहें तो क्या मना करना धर्म के विरुद्ध नहीं है?”
विदुर, जो धर्म के अर्थों को अच्छी तरह समझते थे, ने विनम्र होने का प्रयास किया और कहा, 'मैं यह संदेश स्वयं लाया हूं ताकि मुझे आपको सावधान करने का अवसर मिल सके।'
‘मैं खुद खेल का सुझाव नहीं दूंगा। लेकिन अगर कोई मुझे खेलने के लिए कहेगा, तो मैं मना नहीं करूंगा।’ विदुर को सांत्वना देते हुए उन्होंने आगे कहा, ‘दुर्योधन ऊंचे दांव पर भी मुझे कभी नहीं हरा पाएगा, हालांकि मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूं क्योंकि मुझे लगता है कि पासा खेलना अच्छा है।’
मुझे पता था कि युधिष्ठिर को यह जानकर मन ही मन बहुत खुशी हुई होगी कि उन्हें जुआ खेलने का मौका मिलेगा। मैं कल्पना करने से खुद को रोक नहीं पाया कि उन्होंने राजाओं द्वारा दिए गए अधिकांश उपहार जुए में हार दिए होंगे और उदास होकर घर लौट रहे होंगे, बीच-बीच में कुछ दार्शनिक बातें कहते हुए...
विशोका आकर मुझे यह बताने आई कि सब लोग तैयार हैं।
माता और सहदेव रथ में हमारा सामान लादते हुए देख रहे थे। नकुल वहाँ पहुँचे और मैंने उनसे पूछा कि क्या यात्रा के लिए इतनी विस्तृत तैयारियों की आवश्यकता है? वे मुस्कुराए और धीरे से बोले, 'माता को यकीन नहीं है कि हम यहाँ वापस लौटेंगे या नहीं।'

अर्जुन और मैंने सारथी को पहले ही बता दिया था कि हमें किसी हथियार की ज़रूरत नहीं होगी। कौरव जनता की आलोचना के डर से हम पर सीधा हमला नहीं करेंगे। अब जब हर कोई माया द्वारा निर्मित महल के बारे में लगातार बातें कर रहा था, तो खांडवप्रस्थ इंद्रप्रस्थ बन गया था। यादव, पांचाल और कई छोटे-मोटे राजा या तो करीबी रिश्तेदार बन गए थे या दोस्त। इंद्रप्रस्थ हस्तिनापुर के बराबर होने का दावा कर सकता था।
क्या माया के दरबार में अपमानित होने का बदला दुर्योधन किसी न किसी तरह से लेगा? जब उसने नीली टाइलों को पानी समझकर अपने कपड़े ऊपर उठाए थे, तब द्रौपदी ही सबसे ज़्यादा हँसी थी। खैर, मैंने तय कर लिया था कि हस्तिनापुरा पहुँचते ही मैं एक आँख खुली रखूँगा और दूसरी को सोने दूँगा। रथ तैयार थे। युधिष्ठिर बाहर आए और द्रौपदी उनके पीछे-पीछे आईं। मैंने रथ में चढ़ते समय द्रौपदी को देखा – वही द्रौपदी जो सात वर्ष पहले दुल्हन बनकर आई थी। उनमें जरा भी बदलाव नहीं आया था। उन्हें देखकर कोई नहीं कह सकता था कि उन्होंने पाँच संतानें जन्म दी हैं। वे आज भी उतनी ही चमक रही थीं, मानो संध्याकाल में जलता हुआ घी का दीपक। कहते हैं कि देवताओं के कालक्रम में मनुष्य का वर्ष मात्र एक दिन होता है। शायद पंचाल की यह पुत्री पृथ्वी पर दिव्य गुणों के साथ ही जन्मी थी।
हस्तिनापुरा में विदुर और संजय हमारा स्वागत करने के लिए प्रतीक्षारत थे। हमने सबसे पहले अपने दादा भीष्म को प्रणाम किया, फिर आयु क्रमानुसार मामा धृतराष्ट्र के समक्ष प्रणाम किया। उन्होंने हम सभी पर हाथ फेरा और हम सभी की तरक्की देखकर प्रशंसा की। मेरी कलाई और उस पर बंधे कंगन को कसकर पकड़ते हुए उन्होंने मुझे इतनी शक्तिवान बनने पर बधाई दी। मैंने गौर किया कि मामा के हाथ जरासंध के हाथों से लंबे और कठोर थे।
मैं शस्त्रगृह की ओर चला। द्रोणाचार्य और कृपाचार्य विश्राम कर रहे थे। मैं उन्हें परेशान नहीं करना चाहता था, इसलिए मैं शुक्राचार्य से मिलने गया। वे अपना कमरा बदल चुके थे। उनका कमरा हाथियों के बाड़े के बगल में था और उसमें हाथियों के गोबर की गंध आ रही थी। वे बूढ़े और कमजोर हो गए थे।
मुझे देखकर वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसके पास बोलने के लिए शब्द ही नहीं थे।
वह बड़ी मुश्किल से उठा, अपनी दुबली-पतली मुट्ठी भींची और स्नेह से मेरी छाती पर थपथपाया।

उन्होंने कहा, 'मुझे सारी खबरें उन पुराने शिष्यों से मिलती हैं जो समय-समय पर मुझसे मिलने आते हैं।'
मैंने उन्हें इंद्रप्रस्थ आने का निमंत्रण दिया।
'नहीं, मेरे लिए इतना ही काफी है। और कितना समय लगेगा? मुझे तो हाथी के गोबर की गंध भी अच्छी लगने लगी है।'
जब मैंने उनसे विदा ली, तो उन्होंने पूछा, 'क्या आप दुर्योधन के महल गए थे?' 'नहीं।'
वह मुस्कुराया। “दुर्योधन ने पांड्य राज्य के एक मूर्तिकार से अपने लिए एक विशाल धातु की प्रतिमा बनवाई थी। एक सेवक पीछे से पहिए घुमाता है और उसके हाथ-पैर युद्ध की मुद्रा में बहुत तेज़ी से हिलते हैं। इन दिनों दुर्योधन का मुख्य शौक उस प्रतिमा से युद्ध करना है।” बूढ़े ने धीरे से हंसते हुए कहा, “मैंने सुना है कि प्रतिमा बिल्कुल तुम्हारी तरह दिखती है, भीमसेन।”
मैं भी हँस पड़ा। मैंने अपने गुरु को प्रणाम किया और चला गया। पुराने हाथी के बाड़ों में काम करने वाला महावत मर चुका था। मेरे जान-पहचान के अन्य लोग स्नेह और सम्मान से भरे हुए मेरे चारों ओर जमा हो गए।
मैंने भोजन किया, फिर विश्राम किया। एक सेवक नए जुआघर में जाने का बुलावा लेकर आया। मैं पहले अर्जुन की खोज में गया, लेकिन वह नहीं मिला। जब मैं जुआघर पहुँचा, तो मैंने पाया कि जुआघर केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि एक शाही उत्सव के रूप में आयोजित किया जा रहा था। कई अतिथियों को आमंत्रित किया गया था और वे अपनी-अपनी निर्धारित सीटों पर बैठे थे। भीष्म, कृपा और द्रोण धृतराष्ट्र के दोनों ओर बैठे थे। संजय, जो धृतराष्ट्र की आँखों का काम करते थे, उनके ठीक पीछे बैठे थे ताकि राजा को हर क्षण की जानकारी दे सकें।
खेल शुरू होने ही वाला था। मेरे बड़े भाई के चेहरे पर उत्सुकता साफ झलक रही थी। पासे वाले डिब्बे को धीरे से हिलाते हुए वह बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। इसलिए, रास्ते में आराम करते हुए भी उसने जो कहा था कि वह जहाँ तक हो सके खेल से बचने की कोशिश करेगा, वह सचमुच गंभीर नहीं था।
सौबला का पुत्र शकुनी और दुर्योधन सामने की ओर खड़े थे। यह विशेष रूप से उस अवसर के लिए तैयार किया गया था। दोनों ओर बैठने के लिए आरामदायक सोफे थे।
मैंने कौरव भाइयों के बीच दुस्साना के बगल में बैठे कर्ण को देखा।

मेरे बगल में खड़े अर्जुन ने कहा, 'वे बहुत बड़े दांव पर खेल रहे हैं।' इसका मतलब था कि बहुत महंगी वस्तुएं दांव पर लगाई जाएंगी।
दुर्योधन ने कहा, 'मैं शर्त लगाऊंगा और मेरे मामा शकुनि खेलेंगे। सभी लाभ और हानि का निपटारा हम दोनों के बीच होगा।'
तो शकुनी दुर्योधन के लिए जुआ खेलने जा रहा था। यह मुझे ठीक नहीं लगा। मुझे जुए के बारे में कुछ नहीं पता था, लेकिन मैं हमेशा से शकुनी से डरता और घृणा करता था।
युधिष्ठिर ने मुस्कुराते हुए कहा, “एक व्यक्ति का दूसरे के लिए खेलना उचित नहीं है। लेकिन मैं फिर भी खेलूंगा।”
ऐसा लग रहा था मानो युधिष्ठिर वर्षों से इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे इतने आत्मविश्वासी दिख रहे थे कि मुझे लगा शायद वे दुर्योधन को परास्त कर देंगे और उसे अपमानित करेंगे। शायद वे इस अवसर का उपयोग हमें यह साबित करने के लिए कर रहे थे कि उन्होंने इस खेल में जो अनगिनत दिन बिताए हैं, वे व्यर्थ नहीं जाएंगे। उन्होंने चारों ओर देखा कि हम सब देखने आए हैं या नहीं और हमें देखकर मुस्कुराए।
मैंने सुना था कि खिलाड़ियों द्वारा लगाए गए दांवों के अलावा, खेल के प्रति जुनून रखने वाले दर्शक भी आपस में दांव लगाते थे।
दोनों ने यह देखने के लिए पासा फेंका कि खेल कौन शुरू करेगा। युधिष्ठिर ने दो पासे फेंके, छह और छह; शकुनि ने चार और एक फेंके। इसलिए युधिष्ठिर को खेल शुरू करना पड़ा, क्योंकि उन्होंने अधिक संख्या फेंकी थी।
उसने अपने दाहिने हाथ की हथेली में पासा उछाला। फिर उसने अपने बाएं हाथ की उंगलियों से कीमती पत्थरों से जड़े हार के बीच में लगे रत्न को उठाया और कहा: 'सोने में जड़ा यह रत्न अनमोल है। मैं इस हार को दांव पर लगाता हूँ।' दुर्योधन ने कहा, 'मेरे पास बहुत से अनमोल रत्न हैं। मुझे आपकी जीत देखकर प्रसन्नता होगी।'
युधिष्ठिर ने बजाया।
दुर्योधन ने पुकारा, ‘तीन…!’
जब शकुनी ने पासा उछाला, तो अर्जुन ने बुदबुदाते हुए कहा, 'हम्म... मुझे आश्चर्य हो रहा है।'
शकुनी ने अपने फेंके हुए पासे को देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा, 'देखो, मैं जीत गया!'

अब भी मुस्कुराते हुए, युधिष्ठिर ने अपना हार उतारकर जमीन पर रख दिया।
जब युधिष्ठिर ने दोबारा पासा उछाला, तो दुर्योधन ने कहा, 'तुमने यह नहीं बताया कि तुम्हारी शर्त क्या है।'
‘सोने के सौ संदूक!’
दर्शकों में शोर बढ़ने लगा। अर्जुन ने मेरी तरफ देखा। मुझे बेचैनी होने लगी।
दुर्योधन द्वारा शर्त स्वीकार किए जाने की पुष्टि करने के बाद, शकुनि ने खेलना शुरू किया। फिर से बारह! लाभ-हानि की गणना कर रहे मंत्री के परिणाम घोषित करने से पहले ही, मैंने युधिष्ठिर के चेहरे से जान लिया कि वह हार गए हैं।
सोने के सौ संदूक! यह वह संपूर्ण धन था जो हमने राजसूय यज्ञ के लिए विभिन्न राज्यों से एकत्रित किया था। उन्होंने इंद्रप्रस्थ के खजाने में मौजूद सारा सोना दांव पर लगा दिया था।
मैं उठ खड़ा हुआ, जो कुछ हो रहा था उसे देखने में असमर्थ था। सबकी निगाहें खेल पर टिकी हुई थीं। मैं हॉल से बाहर निकला, सीढ़ियों से नीचे उतरा और आंगन में चला गया।
मैंने दर्शकों की गर्जना सुनी। कौन जीता था?
बीच-बीच में मुझे सट्टेबाजों की चीखें सुनाई देती थीं। कौन जीत रहा था, कौन हार रहा था? मैं यह बात स्वीकार नहीं कर सकता था कि जीत और हार का फैसला पासे फेंकने से हो सकता है।
मुझे ऐसी आवाज सुनाई दी मानो पूरी सभा में विस्फोट हो गया हो।
सहदेव दौड़ते हुए आए। उनकी आवाज में क्रोध साफ झलक रहा था, लेकिन सिसकियाँ भी सुनाई दे रही थीं। उन्होंने कहा, “कृपया आकर देखिए। हमारे भाई युधिष्ठिर पागल हो गए हैं। बारह षडयंत्रों में हमने इंद्रप्रस्थ समेत सब कुछ खो दिया है। उनके मुकुट के रत्न भी चले गए हैं। उन्होंने अभी-अभी नकुल को दांव पर लगाया है।”
मुझे एहसास हुआ कि खतरा एक बिल्कुल अप्रत्याशित तरीके से हमारे चारों ओर छा गया है। जुआघर में क्षत्रिय द्वारा दिया गया वचन पवित्र माना जाता है। बचपन में मैंने एक ऐसे राजा की कहानी सुनी थी जिसे एक खेल में धोखा दिया गया था और वह हार गया था। उसे भोजन और आवास के बदले दूसरे राजा के यहाँ रसोइया का काम करना पड़ा था।

भागने का कोई फायदा नहीं था। चूंकि उसने नकुल से शुरुआत कर दी थी, तो यह पागल मुझे भी जल्द ही दांव पर लगा देगा। मैंने सुना था कि कुछ लोग जुए के खेल के सारे रहस्य जानते हैं - शायद शकुनि भी उनमें से एक था। दुर्योधन के पास अपने मामा को अपनी ओर से खेलने के लिए कहने का अच्छा कारण जरूर रहा होगा।
मैं सहदेव के साथ वापस हॉल में गया, तो मुझे पता चला कि उसे भी दांव पर लगा दिया गया है।
युधिष्ठिर ने कहा, ‘मुझे संदेह है कि तुम जीतने के लिए छल का सहारा ले रहे हो। पासे में कुछ गड़बड़ है।’
शकुनी मुस्कुराया और दुर्योधन की ओर देखा, जिसने पूरी सभा को सुनाते हुए जोर से कहा, 'हम आप पर आगे लड़ने के लिए दबाव नहीं डालेंगे। यदि आप स्वीकार कर लें, महाराज, कि आप हार गए हैं, तो हम अपने-अपने रास्ते जा सकते हैं।' शकुनी ने कहा, 'चलो खेलना बंद कर देते हैं। वैसे भी तुम्हारे पास दांव लगाने के लिए कुछ बचा ही नहीं है।'
युधिष्ठिर की आवाज बुलंद हुई, 'मेरी संपत्ति असीमित है। मेरा छोटा भाई अर्जुन, जिसके वीरतापूर्ण कार्यों ने सबको चकित कर दिया है - वही अगला दांव है।'
मैंने धृतराष्ट्र की ओर देखा। पल-पल के लाभ-हानि के बारे में बताए जा रहे उस अंधे राजा की निर्जीव आँखें हँसी से भरी हुई थीं।
शकुनी फिर से जीत गया। अचानक हमने विदुर को धृतराष्ट्र को संबोधित करते हुए सुना, 'महाराज, इस जुए के खेल से कुरु वंश का नाश होने वाला है।'
शकुनी की निगाहें मुझ पर टिकी थीं। उसने युधिष्ठिर से कहा, 'तुम्हारा एक छोटा भाई बचा है, पराक्रमी भीम।'
हमने वास्तव में अपने बड़े भाई को 'हां' कहते हुए नहीं सुना, लेकिन हमने देखा कि खेल फिर से शुरू हो गया था।
शकुनी, जिसे मेरे ख्याल से खेल के सारे राज पता थे, ने वह राउंड भी जीत लिया। 'हम जीत गए। क्या आपके पास दांव लगाने के लिए कुछ और है?'
व्यथित, पीला पड़ा हुआ चेहरा लिए युधिष्ठिर ने चारों ओर देखा। वह जानता था कि वह दर्शकों के लिए उपहास का पात्र बना हुआ है। लेकिन क्रोध ने उसे सब कुछ भुला दिया था।

'अब मेरी बारी है। अगर मैं जीत गया, तो मैं अपना सब कुछ वापस ले लूंगा। अगर मैं हार गया, तो मैं तुम्हारा गुलाम बन जाऊंगा।'
वह वह मैच भी हार गया। वह सोफे पर वापस बैठ गया, मानो बुझी हुई मशाल की नोक पर राख का ढेर हो।
हॉल में छाई खामोशी चीख-पुकार से कहीं ज्यादा भयावह थी।
अतः हस्तिनापुरा में एक सेवक, एक गुलाम के रूप में अपने शेष दिन गुजारना मेरा दुर्भाग्यपूर्ण भाग्य था। मुझे सिर झुकाकर यह स्वीकार करना पड़ा।
विरोध करने का कोई रास्ता नहीं था। मैं दूसरा भाई था।
मैंने शकुनी और दुर्योधन को आपस में फुसफुसाते हुए देखा।
शकुनी ने पूछा, 'क्या आपके पास एक और संपत्ति नहीं है, महाराज? पांडवों की पत्नी पांचाली?'
अब तक चुप रहे दर्शकों में से विरोध की हल्की फुसफुसाहट सुनाई देने लगी। मैंने आवाज़ें सुनीं, 'अन्यायपूर्ण, अन्यायपूर्ण...!'
युधिष्ठिर ने अविचलित होकर कहा, ‘मैं पीछे नहीं हटता। मैं अपनी प्रिय द्रौपदी को दांव पर लगाता हूँ, जो स्वयं देवी लक्ष्मी के समान हैं। अब मेरी बारी है, सौबल!’
इसके बाद छाए गहरे सन्नाटे में पासों की खड़खड़ाहट भी सुनाई दे रही थी। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। सन्नाटा मेरे कानों में गूंज रहा था। दुर्योधन की आवाज सुनकर मैंने अपनी आँखें खोलीं। ‘द्रौपदी को यहाँ लाया जाए। दासी का पुत्र विदुर जाकर उसे ले आए। पांडवों की पत्नी मेरे महल में घरेलू काम करे।’
मैं खड़ा हो गया।

5

विदुर धृतराष्ट्र के पास गए। मैंने उन्हें पहली बार इतनी ऊँची आवाज़ में बोलते सुना था। उनका शरीर बुरी तरह काँप रहा था। विदुर ने दुर्योधन की ओर इशारा करते हुए कहा, “क्या तुम्हें याद नहीं? जब इस पुत्र का जन्म हुआ था, तब सियार महल के प्रांगण में आकर चिल्लाए थे। इसके कारण हस्तिनापुरा जलकर राख हो जाएगा। कुरु वंश का नाश हो जाएगा!”
उसकी अनदेखी करते हुए दुर्योधन ने पास खड़े एक सेवक से कहा, 'प्रतिकामी, जाओ और द्रौपदी को ले आओ।'
मैंने अपने चारों ओर द्रौपदी की प्रतीक्षा कर रहे लोगों को देखा। मैंने सोचा कि उनके मन में कहीं न कहीं यह इच्छा थी कि उन्हें दरबार में लाया जाए, भले ही वे दिखावा कर रहे थे कि जो हो रहा है वह अन्यायपूर्ण है। दुर्योधन थके-हारे पड़े युधिष्ठिर को अनदेखा करते हुए इधर-उधर टहल रहा था। कर्ण और दुस्साना भी उसके पास नीचे आ गए। कर्ण ने दुर्योधन के कान में कुछ फुसफुसाया। दुर्योधन मुस्कुराया और सहमति में सिर हिलाया।
प्रतिकामी अकेले वापस आई और हाथ जोड़कर दुर्योधन के सामने इंतजार करने लगी।
कर्ण ने पूछा, ‘द्रौपदी कहाँ है?’
तो मैंने मन ही मन सोचा, आज कर्ण का दिन है, द्रौपदी से पुराने हिसाब चुकता करने का उसका मौका है।
रानी यह जानना चाहती हैं कि राजा ने पहले किसे दांव पर लगाया, स्वयं को या रानी को। वह यह भी जानना चाहती हैं कि क्या इस सभा में उपस्थित धर्म के नियमों को जानने वाले महान और कुलीन पुरुष इस बात को स्वीकार करते हैं। युधिष्ठिर ने कहा, “द्रौपदी को आने दो। हम सब इन लोगों के धोखे के कारण गुलाम बन गए। सभा इस अन्याय पर ध्यान दे और इन लोगों की निंदा करे।” दुर्योधन चिल्लाया, 'द्रौपदी को आने दो!'
प्रतिकामी कांपते हुए इंतजार कर रहा था। उसने दर्शकों पर नजर दौड़ाई, मुझे देखा और भयभीत होकर मुंह फेर लिया।
दुर्योधन ने कहा, ‘सेविका डरी हुई है। दुस्साना, जाओ और उसे ले आओ।’ दुस्साना ने बड़ी उत्सुकता से अभ्यास किया, उसे यह सुखद कर्तव्य सौंपे जाने पर बहुत खुशी हुई। मैं, जो आमतौर पर अपनी शक्ति पर घमंड करता था,

प्रतीक्षा करते हुए असहाय महसूस कर रहा था और अपनी मुट्ठियों को आपस में रगड़ रहा था। खून का दृश्य और गंध मुझे कभी विचलित नहीं करते थे, लेकिन अब मैं कांप उठा।
तभी मेरे अंदर से एक सिसकी फूट पड़ी। दुस्साना ने द्रौपदी के लंबे बालों को हाथों में कसकर पकड़ रखा था और उसे बलि के लिए तैयार गाय की तरह हॉल में घसीटते हुए ले गया। अपनी ढीली होती कमरबंद को गिरने से रोकने के लिए द्रौपदी ने चारों ओर देखा।
मैंने उसके कांपते पैरों के बीच खून की बूँदें देखीं, मानो सफेद संगमरमर के फर्श पर माणिक बिखरे हों। वह अपने शरीर पर लिपटे एकमात्र कपड़े को खींचकर अपने स्तनों को ढकने की कोशिश कर रही थी। स्पष्ट था कि उसे मासिक धर्म हो रहा था। हजारों आँखें गिद्धों की तरह उसके अर्धनग्न शरीर को घूर रही थीं।
सिसकते हुए द्रौपदी ने पूछा, “क्या मुझे इस हालत में इस सभा में घसीटकर लाना उचित है? क्या यह सभा, जिसमें हमारे दादा भीष्म और ज्ञानी विदुर भी शामिल हैं, यह कहेगी: क्या मैं दासी हूँ?”
उसने चारों ओर देखा, मानो किसी रानी की तरह सिर ऊंचा करके खड़ी हो। उसकी निगाहें सभा में मौजूद चेहरों को निहार रही थीं, मानो कोई ऐसा व्यक्ति ढूंढ रही हों जो उसके पक्ष में बोले। अंत में, उसकी नज़र मुझ पर आकर टिकी। हमें इसे सहना ही होगा, कोई और रास्ता नहीं है। धर्म के पुत्र युधिष्ठिर अपने वचन को सर्वोपरि मानते हैं। इसलिए हम सब उनके गुलाम हैं।
मैं कुछ कदम आगे बढ़ा, युधिष्ठिर की ओर देखा और बोला, ‘वेश्यालयों से भरी गलियों में जुआरी रहते हैं। यहाँ तक कि वे फिजूलखर्च भी अपनी स्त्रियों को दांव पर नहीं लगाते।’ अपने क्रोध पर काबू न रख पाने के कारण मैं चिल्लाया, ‘सहदेव! इससे पहले कि मैं कोई भयानक कार्य करूँ, मुझे आग लाओ। मुझे अपने हाथ जलाने दो। अब मैं केवल स्वयं को ही दंडित कर सकता हूँ।’
अर्जुन ने मेरा कंधा पकड़कर कहा, 'नहीं, नहीं...'
विकर्ण, कौरवों में से एक जिस पर मैंने कभी ज्यादा ध्यान नहीं दिया था, ने कहा, 'द्रौपदी के प्रश्न का उत्तर किसी ने नहीं दिया है, जो यह है: जो व्यक्ति स्वयं को दांव पर लगाकर हार गया हो, वह किसी दूसरे व्यक्ति को दांव पर कैसे लगा सकता है? मैं कहता हूं कि द्रौपदी दासी नहीं है।'

दुर्योधन को चुनौती देने के अलावा, उन्होंने सभा में एक ऐसा तर्क प्रस्तुत किया जो मेरे मन में बिल्कुल भी नहीं आया था। द्रौपदी ने जो प्रश्न पूछा था कि क्या वह दासी है या नहीं, वह कोई मामूली प्रश्न नहीं था।
दुर्योधन की ओर क्रोधित निगाहों को अनसुना करते हुए विकर्ण ने आगे कहा, “शिकार, शराब पीना, जुआ खेलना और स्त्रियों के साथ संबंध बनाना – इनमें से किसी भी चीज की लत लगने पर व्यक्ति धर्म के मार्ग से भटक जाता है। धर्म का नाश तब हुआ जब एक कुलीन स्त्री को भीतरी प्रांगण से केवल एक वस्त्र पहने इस कक्ष में लाया गया।”
क्रोधित होकर कर्ण ने विकर्ण की ओर तीर जैसी उंगली उठाई और बोला, ‘अरे! हम उसे नग्न अवस्था में भी ला सकते थे। पाँच पतियों की पत्नी बनकर रहने वाली स्त्री में क्या श्रेष्ठता है?’ द्रौपदी को तिरस्कार भरी निगाहों से देखते हुए कर्ण दुर्योधन की ओर मुड़ा और बोला, ‘दासों से कहो कि वे अपने सारे वस्त्र और गहने उतारकर तुम्हें दे दें।’
युधिष्ठिर ने अपना ऊपरी वस्त्र उतार दिया। उन्होंने पहले ही अपने आभूषण उतार दिए थे। यह देखकर अर्जुन, नकुल और सहदेव ने भी अपने आभूषण उतार दिए। कर्ण द्वारा आंखों से दिए गए संकेत के जवाब में, दुस्साना ने द्रौपदी के बालों को छोड़ दिया और अपना हाथ उस स्थान पर रखा जहां उसकी कमर पर वस्त्र बंधा हुआ था।
मैं आगे की ओर झपटा और एक आवाज़ निकाली। दुस्साना ने अपना हाथ हटाए बिना मेरी ओर देखा। शायद उसे डर था कि मैं नियमों को तोड़कर उस पर हमला कर दूंगा।
मैंने महल में मौजूद सभी लोगों को, पूरे महल को सुनाते हुए ज़ोर से चिल्लाकर कहा: ‘यहाँ उपस्थित सभी लोगों के समक्ष मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि मैं एक दिन दुस्साना को न मारूँ, उसकी छाती चीर कर उसका खून न पी लूँ, तो मैं भीमसेन नहीं हूँ। मैं अपने पूर्वजों द्वारा अपने अच्छे कर्मों से अर्जित शांति और सुख की कामना नहीं करता!’
दर्शकों में से एक ने टिप्पणी की, 'द्रौपदी के प्रश्न का उत्तर किसी ने नहीं दिया: क्या वह दासी है? भीष्म और विदुर जैसे विद्वान तो यहाँ उपस्थित हैं।'
सभी ने विदुरा की ओर देखा।

विकर्ण की बात में कुछ सच्चाई है। इस समस्या के दो पहलू हैं। एक बार जब प्रह्लाद और कश्यप के बीच बहस हुई थी...
उपस्थित लोगों ने अधीरता से हस्तक्षेप किया। 'भीष्माचार्य को बोलने दीजिए।'
भीष्म, जो अब तक बिना हिले-डुले बैठे थे, बोले, ‘युधिष्ठिर को ही बताना होगा कि द्रौपदी स्वतंत्र है या दासी।’
दुर्योधन को ये बहसें मज़ेदार लग रही थीं। कर्ण स्पष्ट रूप से अधीर था और कुछ बुदबुदा रहा था। दुर्योधन ने उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा, 'भीमसेन, उसके छोटे भाई और द्रौपदी हमें बताएँ कि युधिष्ठिर का उन पर कोई अधिकार नहीं है। तब मैं उन सबको मुक्त कर दूँगा।'
क्या यह प्रश्न दुर्योधन के दिमाग की उपज था या कर्ण के? अब मैं दुविधा में फंस गया था। सबकी निगाहें मुझ पर टिकी थीं। मैंने जरा भी संकोच नहीं किया। युधिष्ठिर हमारे बड़े भाई हैं। वे हमारे राजा और हमारे गुरु हैं। जब वे पराजित हुए, तो हम भी पराजित हुए। अगर वे कहते हैं कि हम गुलाम बन गए हैं, तो हम गुलाम हैं। लेकिन...' कोई पुरानी कहानियां, शास्त्रों की कोई कहावत मेरे काम नहीं आई। मैंने अपनी दाहिनी मुट्ठी भींची और उसे आगे बढ़ाया। 'मेरे हाथ देखो? एक दिन तुम मुझे कौरवों को अपने हाथों से कुचलते हुए देखोगे। मैं अभी भी ऐसा करने के लिए तैयार हूं, मुझे बस युधिष्ठिर से एक शब्द की अनुमति चाहिए।'
हॉल में फिर सन्नाटा छा गया। अपने क्रोध को दबाते हुए कर्ण ने द्रौपदी का उपहास करते हुए कहा, “दासों का धन और स्त्रियाँ उनके स्वामी की संपत्ति होती हैं। तुम अभी से अपने स्वामी के घर में काम शुरू कर सकती हो। वहाँ सुंदर पुरुष भी होंगे, इसलिए तुम्हें पछताने की कोई आवश्यकता नहीं है।” दुर्योधन ने युधिष्ठिर की ओर इशारा करते हुए कहा, “क्या आप कह सकते हैं कि आपने द्रौपदी को दांव पर नहीं लगाया था? तब बहस समाप्त हो जाएगी। न ग्रंथों का हवाला, न पुरानी कहानियाँ। बस मुद्दे की बात। हाँ या ना?” उसने द्रौपदी की ओर देखा, अपनी कमरबंद हटाकर अपनी बाईं जांघ दिखाई, उस पर थपथपाया और उससे कहा, “या फिर आप यह कहें कि युधिष्ठिर आपके पति नहीं हैं, बस इतना ही काफी होगा।”
द्रौपदी ने दुस्साना का हाथ झटककर अलग कर दिया, धृतराष्ट्र के पास दौड़ी और उनके चरणों में गिर पड़ी। तभी हममें से कई लोगों को याद आया कि राजा, जो

अब तक बिल्कुल शांत थे, सभा में मौजूद थे। दुर्योधन के हंगामे में मैं तो उनकी उपस्थिति को पूरी तरह भूल ही गई थी।
हममें से किसी ने नहीं सुना कि उसने उससे क्या कहा। उसने कहा, 'यह स्त्री मुझे बहू के समान प्रिय है। मैं उसे वह वरदान देता हूँ जो वह मुझसे माँगती है। मैं उसे मुक्त करता हूँ।'
द्रौपदी ने उससे फिर कुछ कहा। ‘मैं उसके लिए पांडवों को भी मुक्त घोषित करती हूँ। जो लोग इस बाजी में विजयी होंगे, वही राज्य और उसकी संपत्ति के हकदार होंगे।’
किसी ने विरोध नहीं किया; घोषणा इतनी अप्रत्याशित थी। राहत की वजह से सभा में फिर से शोर मचने लगा।
कर्ण दुर्योधन से कहीं अधिक क्रोधित और निराश था। वह जोर से चिल्लाया, “तो पांडव एक स्त्री के आंसुओं की बदौलत कुछ समय के लिए बच गए। कितने वीर हैं!” राजा के आदेश से हम मुक्त हो गए थे। युधिष्ठिर थके-हारे मेरे पास आए और मैंने उनसे कहा, 'मैं अपनी किसी भी प्रतिज्ञा को नहीं टाल रहा हूँ, क्योंकि अब मैं उन्हें पूरा करने के लिए स्वतंत्र हूँ।'
मुझे पता था कि मुझमें अकेले ही उन सभी का सामना करने की शक्ति है। मेरी दिली तमन्ना थी कि मैं कम से कम तीन से, बल्कि सभी से एक साथ बदला ले सकूँ: कर्ण, दुर्योधन और दुस्साना।
युधिष्ठिर मेरे सामने खड़े हुए और लगभग प्रार्थना के स्वर में मुझसे विनती करने लगे, 'ऐसा मत करो, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए!'
रथ चालकों ने हमारी वापसी यात्रा के लिए रथ तैयार कर रखे थे। मेरे पहुँचने पर सभी लोग रथों में बैठ चुके थे। द्रौपदी माँ के बगल में सिर झुकाए बैठी थी। माँ का थका हुआ चेहरा देखकर मुझे लगा मानो वह अचानक बहुत बूढ़ी हो गई हों।
रथ चालकों में से एक ने कहा, 'एक संदेशवाहक इस तरफ आ रहा है।'
मैंने प्रतिकामी को महल से हमारी ओर दौड़ते हुए देखा।
उन्होंने युधिष्ठिर को प्रणाम किया और कहा, 'यदि आप खेलने के लिए तैयार हैं, तो आपको एक और जुए के खेल में आमंत्रित किया जाता है।'
‘हमें किसने आमंत्रित किया?’
‘The great king, Dhritarashtra.’

मैंने माँ की ओर देखा। उन्होंने गहरी साँस ली और आँखें बंद कर लीं। हम सबने अपने बड़े भाई की ओर देखा। हमने देखा कि उनके अंदर का जुआरी उन्हें इधर-उधर खींच रहा था। जाहिर है, उन्हें अपने सामने सब कुछ वापस पाने का मौका दिख रहा था जो उन्होंने खो दिया था।
अर्जुन ने कहा, 'स्वीकार मत करो।'
युधिष्ठिर हिचकिचाए। प्रतिकामी प्रतीक्षा करता रहा। आखिरकार, वह तो केवल एक असहाय दूत ही था।
‘अब वह शर्त में क्या चाहता है? क्या शकुनि ने तुम्हें नहीं बताया? हमारे कटे हुए सिर?’ सहदेव ने पूछा।
उसने द्रौपदी की ओर रुख किया, उसके चेहरे पर विनती का भाव था, मानो वह उससे कुछ कहने के लिए कह रहा हो, कुछ भी... द्रौपदी अविचलित बैठी रही, दूर तक टकटकी लगाए देखती रही।
अर्जुन ने कहा, ‘रथ को जाने दो…’
‘रुको!’ युधिष्ठिर।
नकुला उसके पास गया। 'जो कुछ हमने खोया है, उसे भूल जाओ। शकुनी के खिलाफ खेलकर तुम कुछ भी वापस नहीं पा सकते।'
युधिष्ठिर ने नकुल की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखी। फिर वे रथ से उतर गए। उनके निर्देश पर सारथी घोड़ों को खोलकर रथ के पीछे-पीछे महल की ओर चल दिए।
जब मुझे यह खबर मिली कि युधिष्ठिर एक के बाद एक युद्ध जीत रहे हैं, तो मुझ पर कोई भाव नहीं आया। नकुल और सहदेव बारी-बारी से मेरे पास जीत और हार की खबर लेकर आते रहे।
मैंने गेस्ट हाउस में प्रवेश करते ही शराब पीना शुरू कर दिया था।
फिर खबर आई कि वह हार रहा है। मैं उदासीन बना रहा। जब दूसरी बार सहदेव के स्थान पर नकुल आया, तो मैंने उससे कहा, 'मुझे बताओ कि क्या अब उसे हमारे सिर सौंपने का समय आ गया है। मैं तैयार हूँ।'
वह मेरे सामने थककर बैठ गया, हाँफते हुए। कुछ देर चुप रहने के बाद उसने कहा, 'शायद यही बेहतर होता। बारह साल जंगल में। फिर एक साल किसी देश में, गुमनाम रहकर। अगर उस साल कोई हमें पहचान लेता, तो बारह साल और जंगल में। अच्छा है ना?'
मुझे अब कोई परवाह नहीं थी।

सहदेव ने कहा, “हे बड़े भाई, मेरा आपसे एक निवेदन है। किसी दिन जब हमें कौरवों को मारने का अवसर मिले, तो उनमें से एक को मेरे हवाले कर देना। वह नीच बदमाश शकुनी!”
मेरा छोटा भाई दुख और गुस्से से कांप रहा था। मैंने उसे अपने बाएं हाथ से अपनी ओर खींचकर गले लगाया और दिलासा देते हुए कहा, 'हमें जरूर मौका मिलेगा। दुखी मत हो। जंगल रहने के लिए इतनी बुरी जगह नहीं है।'
मैंने बची हुई शराब पी ली और खड़ा हो गया।

□□□ 5

कुबेरा के बगीचे में खिले फूल

1

फाल्गुन माह में भी बारिश हुई। पत्तों और टहनियों से बनी हमारी झोपड़ियों में बारिश का पानी कई दिनों तक जमा रहा। हमने अपना अधिकांश समय रसोई की झोपड़ी में बिताया, जहाँ आग लगातार जलती रहती थी। समय-समय पर कोन्ना के पेड़ों से फूल सोने के सिक्कों की बौछार की तरह गिरते थे, मानो हमारे परिसर का मज़ाक उड़ा रहे हों और हमें यह विश्वास दिला रहे हों कि हम अभी भी किसी महल में रह रहे हैं।
सौभाग्य से, माता ने विदुर के साथ रहने का निर्णय लिया था। द्रौपदी हमारे बच्चों के साथ द्रुपद के महल में जा सकती थीं, क्योंकि वनवास की सजा केवल हम भाइयों को ही भुगतनी थी, लेकिन उन्होंने हमारे साथ रहना चुना। उनके पास अब गहने या नौकरानियाँ नहीं थीं। फिर भी, उन्हें सुबह और शाम को वन की धारा में स्नान करने जाते देखकर, जैसे कोई कुँवारी आश्रम में हो, मुझे लगा कि उन्होंने हम सब से कहीं अधिक तेज़ी से हमारे बुरे भाग्य को अपना लिया था। यह स्थान काम्यक वन से कहीं अधिक सुंदर था, जहाँ हम पहले ठहरे थे। यह फूलों से भरे वृक्षों से आच्छादित था। खाने योग्य छोटे जानवर बहुतायत में थे। हालाँकि, युधिष्ठिर को काम्यक वन में राजसी सामंतों के साथ रहना अधिक सुखदायी लगा था। हमारे साथ आए सेवक और दासियाँ हमेशा की तरह उनके आदेशों का पालन करते थे। रिश्तेदार और मित्र हमसे मिलने और सहानुभूति व्यक्त करने आए थे। धृतराष्ट्र से मतभेद होने के कारण, विदुर कुछ दिनों तक हमारे साथ रहे, और अपना समय हमें दार्शनिक सलाह देने या न्याय के बारे में कहानियाँ सुनाने में व्यतीत किया। जब संजय ने आकर उन्हें बताया कि राजा अब उनसे नाराज़ नहीं हैं और उन्हें वापस लौटने का आदेश दिया है, तब वे हस्तिनापुर लौट गए थे।
द्रौपदी का उत्साह फीका पड़ गया था और जब धृष्टद्युम्न और कृष्ण उनसे मिलने आए तभी उनमें फिर से जीवंतता आई। तब तक उन्होंने कभी हमारी आलोचना नहीं की थी, लेकिन उन्होंने उनसे कहा, 'मुझे इन पांचों पुरुषों से और कुछ उम्मीद नहीं है। मेरा एकमात्र सुकून यही है कि मेरे पिता, मेरे भाई और मेरे रिश्तेदार कृष्ण अभी भी मेरे साथ हैं।'

कृष्ण को जुए के खेल, युधिष्ठिर की पराजय और द्रौपदी के अपमान के बारे में घटना घटित होने के बहुत समय बाद पता चला था। उस समय यादव शल्य के साथ युद्ध में लगे हुए थे।
सिर झुकाए बैठे युधिष्ठिर की ओर देखते हुए कृष्ण ने कहा, 'यदि मैं यहाँ होता, तो मैं जुए का खेल होने ही नहीं देता।'
द्रौपदी अक्सर उन अपमानों और कठिनाइयों के बारे में बात करती थी जो उसने सहन की थीं और उन कठिनाइयों के बारे में भी जो उसे, जो पांचाल राज्य में पली-बढ़ी थी और जिसकी सेवा 500 दासियों द्वारा की जाती थी, अब झेलनी पड़ रही थीं।
कृष्ण ने द्रौपदी को दिलासा देते हुए कहा, ‘द्रौपदी, कौरवों के बुरे कर्मों का फल उन्हें भुगतना पड़ेगा, वे पूरी तरह नष्ट हो जाएंगे, मैं यह अपनी आँखों से देखूंगा। यह बात मैं ही तुम्हें बता रहा हूँ, मैं ही भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल देख सकता हूँ।’
द्रौपदी ने उदासीनता से उसकी बातें सुनीं, मानो उसे उस पर विश्वास ही न हो। उन्होंने दृढ़ विश्वास के साथ कहा, 'आकाश गिर जाए, हिमवान पर्वत ढह जाए और समुद्र सूख जाएं, लेकिन कृष्ण के वचन कभी असत्य साबित नहीं होंगे, आज तक तो कभी नहीं हुए।'
द्रौपदी के उदास चेहरे पर एक चमक आ गई। कृष्ण को शब्दों का प्रयोग उतनी ही कुशलता से आता था जितनी कुशलता से वे चक्र चलाते थे।
विशोका, जो बलंधरा के साथ सेनेशा द्वारा काशी ले जाया गया था, वापस आ गया। लेकिन मुझे जंगल में सारथी की कोई आवश्यकता नहीं थी। उसने कहा कि वह इधर-उधर घूमकर छोटे-मोटे काम कर लेगा, लेकिन मैंने उससे काशी लौटने की ज़िद की। जब काम्यका में बारिश शुरू हुई, तो हम द्वैतव वन में चले गए। मैंने सुझाव दिया कि सभी सेवकों को भेज दिया जाए और युधिष्ठिर ने इस पर ज्यादा आपत्ति नहीं जताई। इंद्रप्रस्थ एक लगभग भुला हुआ दिवास्वप्न बन गया।
हम खाने के समय मिलते थे, फिर अपने-अपने रास्ते चले जाते थे। एक-दूसरे से बात करने के मौके धीरे-धीरे कम होते गए।
काम्याका में रहते हुए मुझे एक खबर मिली थी जिससे मैं बेचैन हो गया था: हिदिम्बी मेरा इंतज़ार कर रही थी कि मैं जाकर उसे ले आऊं या किसी नौकर को भेजूं। यह बात किर्मीरा ने मुझे बताई थी – किर्मीरा, जिसकी जान मैंने बचाई थी, हालांकि मैंने उसे द्वंद्वयुद्ध में हराया था।

हमने जिस जगह पर अपना शिविर लगाया था, वह किर्मीरा का शिकारगाह था। एक दिन जब मैं शिकार से लौटा, तो मुझे बताया गया कि एक वनवासी ने दावा किया था कि वह काम्यक और द्वैतव वनों का स्वामी है और उसने युधिष्ठिर पर उन पर कब्ज़ा करने का आरोप लगाया था। उसने हमें अगले दिन भोर से पहले वहाँ से चले जाने का आदेश दिया और अपने अनुयायियों को हमारी झोपड़ियों में आग लगाने के लिए कहा।
युधिष्ठिर ने आदेश दिया: ‘इसे मार डालना ही होगा। ऋषि-मुनि भी इसके अत्याचारों को सहन न कर पाने के कारण वन छोड़कर जाने को विवश हो गए हैं। स्थिति ऐसी हो गई है कि हमें पूजा-अर्चना और अनुष्ठान करने के लिए पुजारी भी नहीं मिल रहे हैं। यह आदिवासी निश्चित रूप से मृत्यु का पात्र है।’ हत्या करना हमेशा से मेरा काम था। हालाँकि, जब मैं किर्मीरा से मिला, तो मुझे पता चला कि वह निषादा जनजाति से था और बाका उसका भाई था। उसने मेरे और उसके भाई के बीच हुए द्वंद्वयुद्ध के बारे में सुना था। जिन सेवकों ने वह द्वंद्वयुद्ध देखा था, उन्होंने उसे बताया था कि मैंने बाका का सीधे सामना किया था और उसे हरा दिया था। किर्मीरा को इस बात से कोई द्वेष नहीं था। वह मुझसे बाका की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए लड़ना चाहता था क्योंकि उसे लगता था कि मैंने हिदिम्बी को छोड़ दिया है।
मैं अचंभित रह गया। हिडिम्बी!
किर्मीरा और हिडिम्बा साथी थे और साथ में शिकार करते थे। जिस समय मेरी मुलाकात जंगल में किर्मीरा से हुई, उस समय हिडिम्बा उससे शादी करना चाहती थी। हिडिम्बा ने मुझ पर जादू-टोना करके उसे बहकाने का आरोप लगाया। किर्मीरा को हिडिम्बा की मृत्यु की खबर उसके मारे जाने के सात महीने बाद मिली, जब वह पूर्वी जंगलों में हाथियों का शिकार करके लौटा। वह हिडिम्बी के पास दौड़ा, इस विश्वास के साथ कि वह उसे स्वीकार कर लेगी क्योंकि अब दुनिया में उसका कोई सहारा नहीं था। लेकिन उसने उसे यह कहकर लौटा दिया, 'जिस पति से मैं प्यार करती हूँ, वह मुझे लेने आया था। मैं उसके बच्चे को अपनी कोख में लिए हुए हूँ।'
किर्मीरा चली गई, लेकिन उससे मिलने आती रही। उसने मुझे बताया कि उसका बेटा बड़ा होकर हृष्ट-पुष्ट और साहसी बन रहा है। उसका नाम घटोत्कच था। मैंने मन ही मन घटोत्कच नाम दोहराया और खुद से कहा कि मुझे इसे भूलना नहीं चाहिए।

किर्मीरा और मैं दुश्मनों के रूप में मिले थे, हमने एक-दूसरे को द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दी थी, लेकिन हम दोस्त बन गए। उसने मुझे खाने पर आमंत्रित किया - चावल में पका हुआ सूअर का मांस, गन्ने के तनों से बनी शराब। जब मैं जाने वाला था, तो उसने मुझे जंगली भैंस के सींग से तराशा हुआ हैंडल वाला एक शिकार करने वाला चाकू उपहार में दिया।
जब मैं वापस लौटा, तो द्रौपदी के चेहरे से मुझे पता चला कि वह किर्मीरा के साथ हुए युद्ध का वृत्तांत सुनने के लिए बेचैन थी। युधिष्ठिर भी इसके बारे में सब कुछ जानना चाहते थे।
मैंने बस इतना ही कहा, 'अब आपको उससे कोई परेशानी नहीं होगी।'
युधिष्ठिर ने मान लिया था कि मैं हार गया हूँ और अपनी जान बचाकर भाग निकला हूँ।
जब हम अकेले रह गए, तो द्रौपदी ने पूछा, 'क्या हुआ?'
हमें आपस में लड़ने की जरूरत नहीं पड़ी। हम दोस्तों की तरह अलग हुए।
‘अरे, आदिवासियों के बीच दोस्ती। जी हाँ, मैं समझ गई…’ उसने इसके बाद कुछ नहीं कहा।
उसके चेहरे के भाव ने मुझे चिढ़ा दिया और बिना किसी कारण के, जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मेरी चिढ़ बढ़ती गई।
अंततः, युधिष्ठिर के विरुद्ध उसका क्रोध अचानक भड़क उठा, जब मैंने उसे ब्राह्मण पुरोहित को प्राप्त करने के तरीकों पर चर्चा करते सुना। वह शिकायतों से भरा हुआ था: वन में कोई ब्राह्मण उपलब्ध नहीं था, पूजा-अर्चना और अनुष्ठान करना संभव नहीं था। नियमित रूप से किए जाने वाले यज्ञ भी नहीं हुए थे। इन सभी बुराइयों का कारण भाग्य था। उसके चेहरे से पता चलता था कि उसे आश्चर्य था कि कोई उसके प्रति सहानुभूति नहीं दिखा रहा था। उसकी आवाज़ आत्म-दया से भरी हुई थी।
मैंने उससे पूछा, 'तो क्या तुमने अपना वचन निभाने के लिए बारह और एक, तेरह साल तक भटकने का फैसला कर लिया है?'
चौंककर उसने मेरी तरफ देखा। 'मैं और क्या कर सकता हूँ?'
‘हमारे कई रिश्तेदार और राजा हैं जो हमारे मित्र हैं। हमें कौरवों से लड़कर उन्हें नष्ट कर देना चाहिए।’
मेरी आवाज सुनकर द्रौपदी बाहर आई। उसने चारों ओर देखा और हल्की मुस्कान के साथ बोली, “एक बार फिर जंगली जड़ वाली सब्जियों का भोजन। पुराने जमाने में,

मैं सभी मेहमानों और भिक्षा मांगने वालों को सोने की थालियों में भोजन कराने के बाद ही भोजन करती थी। हमारा दुर्भाग्य, मैं और क्या कहूँ?” युधिष्ठिर को उसके शब्दों में छिपी व्यंग्यात्मकता समझ में नहीं आई। उसने कहा, 'हमारे छोटे भाई का सुझाव है कि हम बारह साल इंतजार न करें बल्कि अभी युद्ध छेड़ दें। मुझे लगता है कि हमें धैर्यपूर्वक इंतजार करना चाहिए।' द्रौपदी का सौम्य भाव लुप्त हो गया। ‘पांच पति, सभी महान योद्धा! एक भाई जो हजार पुरुषों के बराबर है! एक पिता जिसके पास विशाल सेनाएं हैं, शानदार ढंग से सुसज्जित। और फिर भी, मेरी यह दुर्दशा देखिए!’ युधिष्ठिर ने आह भरी। ‘समय धर्म के मार्ग से भटकने वालों को दंडित करता है। इस विश्वास से स्वयं को सांत्वना दीजिए कि यह ईश्वर की इच्छा है।’
“मुझे जुआघर में घसीटकर ले जाने और निर्वस्त्र करने की धमकी देने वालों की समृद्धि हो। पांडवों की पत्नी को वनवास मिले। यदि यही देवताओं की इच्छा है, तो मैं उन देवताओं को धिक्कारता हूँ। जिस देवता ने ऐसा फरमान सुनाया है, वह लालची, अन्यायी और क्रूर है!”
युधिष्ठिर द्रौपदी को देखकर मुस्कुराए, जो उनके सामने दहकती आँखों और बिखरे बालों के साथ खड़ी थी। फिर उन्होंने मुझसे धर्म और अन्याय, स्वर्ग और नरक की अवधारणाओं के बारे में बात करना शुरू किया…
कुछ देर बाद मैंने कहा, 'भाई, मैंने आपको यह कहते सुना है कि राजा के लिए अपने लोगों, अपने परिवार के सिद्धांतों और अपनी प्रजा की रक्षा करने से बढ़कर कोई गुण नहीं हो सकता।'
उसी समय अर्जुन शिकार से वापस आया और हम दोनों की ओर बारी-बारी से देखने लगा, यह जानने की कोशिश करते हुए कि क्या हुआ था।
‘मैं यहाँ सहन किए जाने वाले तुच्छ कष्टों की बात कर रहा था। पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करने के बाद ही हम देवताओं के चरणों में पहुँचते हैं।’ युधिष्ठिर को अर्जुन में एक सहयोगी मिलने की आशा थी। ‘मैं धर्म और सत्य का त्याग नहीं कर सकता। मैं युधिष्ठिर हूँ, धर्म का पुत्र हूँ। चाहे मुझे कितनी भी पीड़ा सहनी पड़े, मैं धर्म के विरुद्ध नहीं जा सकता।’
अर्जुन ने कहा, “आपका एक आदेश, सिर्फ एक शब्द ही काफी है। मैं और मेरा भाई भीमसेन कौरवों को आग और हवा की तरह राख कर देंगे, जैसे आग और हवा जंगल को नष्ट कर देती हैं।”

द्रौपदी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "लेकिन राजा का अटल निर्णय यह है कि हमें तेरह वर्षों तक धैर्य रखना होगा!"
नकुल और सहदेव आ गए। धर्म, न्याय, कानून पर बहस चलती रही, जब तक कि सहदेव की सहनशक्ति समाप्त नहीं हो गई। 'यदि आप मुझे बता सकें कि पासे के खेल में क्या धर्म है, तो मैं आपका आभारी रहूंगा। जंगल में होने वाली ये संध्याकालीन चर्चाएँ हमारे ज्ञान को बढ़ाने में भी सहायक हों।'
मैंने सोचा, शायद सहदेव को तिरस्कार की तलवार की धार को इतनी तीखेपन से, इतने खुलेआम नहीं दिखाना चाहिए था।
युधिष्ठिर क्रोधित हो गए। ‘जब मैंने तुमसे अपने हाथों को जलाने के लिए आग लाने को कहा था, तब क्या तुम मेरी बात नहीं मान सकते थे? मैं…’
मैंने उसे सुधारा। 'गलत! असल में मैं ही अपने हाथ जलाना चाहता था।'
“तुमने मेरी अनुमति के बिना कौरवों पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट क्यों नहीं कर दिया? मैं तुम्हें रोकता नहीं। अब तुम सब मेरे विरुद्ध हो गए हो।” युधिष्ठिर इतने क्रोधित थे कि उनके पास शब्द नहीं थे।
‘और जब उन्होंने तुम्हें दोबारा खेल के लिए आमंत्रित किया, तो तुम यह जानते हुए भी वापस क्यों गए कि शकुनी धोखा देगा?’ नकुला के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था।
अर्जुन ने कहा, “बड़े भाई, आपने रेड-लाइट इलाकों में जुआरियों का जिक्र किया। मैं जुआरियों की मानसिकता जानता हूँ। नकुल, जो लोग खेल में हार जाते हैं, वे इस विश्वास में वापस खेलने चले जाते हैं कि वे एक ही पल में अपना सब कुछ वापस पा लेंगे। चाहे वे वेश्यालयों में रहें या महलों में, जुआरियों की मानसिकता एक ही तरह से काम करती है।”
अर्जुन जाने लगा, फिर रुका और मेरी ओर मुड़ा। ‘भाई भीमसेन, तुमने कौरवों को मारने की प्रतिज्ञा की थी। चाहे हम वह युद्ध कभी भी लड़ें, तुम चारों को सारथी के पुत्र को बख्शना होगा। कर्ण मेरे हाथों ही मरेगा, यह निश्चित है।’ जैसे ही वह जाने लगा, उसने अपने तरकश से एक तीर निकाला और उसे ऊपर की ओर चलाया। एक जंगली कबूतर हमारे बीच आ गिरा, तीर उसके शरीर को भेदता हुआ आर-पार हो गया। उसके पीछे जंगली फूलों का एक गुच्छा गिरा, कांपती शाखाओं से झटकते हुए, मानो आकाशीय पिंडों ने हम पर फूलों की वर्षा की हो।
रात में अर्जुन मेरे पास आया। ‘मैं जा रहा हूँ।’
'कहाँ?'

'कहीं दूर। मैं इस जगह से तंग आ चुका हूं, यह असहनीय है।'
मैं अनिश्चितता से इंतजार करता रहा।
अर्जुन ने कहा, “मैंने कई तरह के नए हथियारों के बारे में सुना है। लोग ऐसे हथियारों का प्रयोग करने लगे हैं जिनका उल्लेख धनुर्विद्या से संबंधित ग्रंथों में नहीं है। मैं इस समय का उपयोग उनके बारे में और अधिक जानने के लिए कर सकता हूँ।”
‘क्या आपको हमारे बड़े भाई से सलाह नहीं लेनी चाहिए…?’
‘उसे बता दो कि मैं जा चुका हूँ। ये शाही परिसर नहीं हैं। तो औपचारिकताएँ निभाने का क्या फायदा?’
'जाने से पहले उसे बता देना।'
अर्जुन के जाने से मैं व्याकुल थी। उनके पास होने से मेरा आत्मविश्वास हमेशा बढ़ता था। फिर मैंने उस अचानक खुशी की भावना को दबाया जो मुझे यह जानकर हुई थी कि अर्जुन की अनुपस्थिति में द्रौपदी मुझे अधिक महसूस करेगी।
अर्जुन सूर्योदय से पहले ही चले गए। जब मैं सुबह स्नान करके वन की धारा से लौटा, तो मैंने देखा कि युधिष्ठिर चिंतित लग रहे थे।
मैंने कहा, 'अर्जुन तीरंदाजी के ज्ञान के लिए प्रसिद्ध केंद्रों का दौरा करने गया है। मैंने उसे अपना आशीर्वाद दिया।'
‘अर्जुन का पास होना हमेशा राहत की बात होती है। खैर, मुझे खुशी है कि वह कुछ सार्थक उपलब्धि हासिल करने गया है।’
मैंने सोचा कि मैं उस जानवर के पदचिह्नों का पीछा करूँगा जिसे मैंने उस सुबह देखा था, और मैं अपने धनुष-बाण और भाले के साथ निकल पड़ा। मेरा अनुमान सही था, वह एक हिरण था। मैं दबे पांव उसके पास पहुँचने की कोशिश कर रहा था ताकि उस पर अपना भाला फेंक सकूँ। अचानक, मेरे पैरों के नीचे एक टहनी टूट गई। हिरण भाग गया। मैंने उसके कान की नस पर एक तीर का निशाना साधा और जैसे ही मैंने पहला तीर चूकने के डर से दूसरा तीर चलाने की जल्दी की, जानवर गिर पड़ा।
यह बहुत बड़ा था। तीर केवल कान के पीछे लगा था, इसलिए त्वचा सुरक्षित थी – चमकदार और सुंदर। मैं इसे सुखाकर द्रौपदी के लिए एक वस्त्र बना सकती थी। भले ही यह महल में पहने गए रेशमी वस्त्रों जितना सुंदर न हो, लेकिन अगर मैं

इसके भीतरी भाग को कसुम्भा के फूलों के रस से रंग दूं तो यह काफी आकर्षक लगेगा।
मैंने जानवर को अपने कंधों पर लादा और वापस चलने लगा। तीर निकालते समय लगे घाव से उसके खून की बूँदें मेरे सीने पर टपक रही थीं। मैंने द्रौपदी को रास्ते पर खड़े होकर बकुला के फूलों का गुच्छा तोड़ते देखा। जब तक मैं उसके बहुत करीब नहीं पहुँच गया, उसने मुझे नहीं देखा। उसने मेरे कंधों पर पड़े जानवर को देखा।
‘अर्जुन कब लौटेगा?’
मुझे नहीं पता। उन्होंने मुझसे कहा था कि वे समय-समय पर समाचार लेकर संदेशवाहक भेजेंगे।
'मैं इस जंगल में शांति से सोता था क्योंकि मुझे पता था कि वह बाहर अपने सिर पर धनुष रखे लेटा होगा।'
मैंने जानवर को अपने कंधों पर संभाला और उसका खून बह निकला और मेरे शरीर पर धारा की तरह फैल गया। द्रौपदी ने कुछ देर तक उसे देखा, फिर एक शाखा तोड़कर मेरे बिल्कुल पास खड़ी होकर पत्तों से खून साफ किया। उसके बालों से धुएं की गंध आ रही थी। उसने जो हिरण की खाल ओढ़ी थी, उससे उसके कंधे ढके हुए नहीं थे। उसकी नाभि के नीचे, जो मुरझाई हुई अशोक की कली जैसी दिख रही थी, और उसके निर्मल, मजबूत पेट के निचले हिस्से की त्वचा पर, एक मांसपेशी धनुष की डोरी की तरह फड़क रही थी।
मैंने जानवर को नीचे रख दिया और कहा, 'मैं कभी सोता नहीं। जब से मैंने जुआघर में प्रतिज्ञा ली है, तब से एक भी रात मुझे चैन की नींद नहीं आई है। मैं यहाँ पहरा देने के लिए हूँ, आप निश्चिंत होकर सो सकते हैं।'
दुर्योधन के साथ गदा युद्ध, दुस्साना के साथ कुश्ती, उनकी संभावित चालें, और उन्हें अचानक घेरकर जवाब देने की मेरी रणनीतियाँ: रात को सोते समय मैं इन्हीं सब बातों के बारे में सोचता था। पहले तो यह एक सुखद समय था, फिर यह एक आदत बन गई।
जंगली फूलों के आसपास मंडराती ड्रैगनफ्लाई की भिनभिनाहट अब मेरे कानों में गूंज रही थी। मेरे भीतर कामुक ज्वालाएं उठ उठीं।
उसने मुझे डांटा। 'क्या तुम भूल गए हो? अब राजा की बारी है।'
वह चली गई और मैंने जमीन पर पड़े जानवर को उठा लिया।

नियम... हर किसी की बारी तय करने वाले नियम। मैंने सोचा, पहले तो ऐसा कुछ भी नहीं था।
तपस्या करने वाले सभी ऋषियों ने नियमों का उल्लंघन किया था, यहाँ तक कि उन महान ऋषियों ने भी जिन्होंने उन्हें बनाया था। उनमें से अधिकांश इतने दुर्बल इच्छाशक्ति वाले थे कि नग्न स्त्री के शरीर की सुंदरता देखकर उनके वीर्य की बूंदें टपक जाती थीं। शरदवन अपनी प्रार्थना करना भूल गए थे जब उन्होंने कृपाचार्य और द्रोण की पत्नी कृपी को बिना वस्त्रों के देखा था। ऋषि भारद्वाज, द्रोण के पिता, ने घृतची को स्नान करते हुए देखकर उस पर मोहित हो गए थे। मैंने सूतों में सुना है कि कैसे उसी स्त्री को देखकर हमारे दादा कृष्णद्वैपायन का 'सूखा शरीर कांप उठा था, उनका मन भ्रमित हो गया था।' कृष्णद्वैपायन, जो विचित्रवीर्य की विधवाओं के पास अनिच्छा से, घृणा के साथ गए थे, घृतची से उनका एक पुत्र था। उनके बारे में कभी किसी ने बात नहीं की। लेकिन सच्चाई यह है कि हमारा एक और चाचा कहीं था। और अब हम उन पुरुषों द्वारा बनाए गए ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करते हैं।
मैं जानवर को अपने शिविर में ले गया, फिर जंगल की धारा में जाकर उसमें डुबकी लगाई। मुझे पुरोहितों को सिखाई जाने वाली एक बात याद आई, जो मुझे एक मजाक जैसी लगी: अगर उनके शरीर में वासना जागृत हो जाती, तो उन्हें संयम के नियमों को न तोड़ने के लिए ठंडे पानी में खड़े होना पड़ता था।
जब मैं लौटा, तो मैंने युधिष्ठिर को बहुत प्रसन्न पाया। अंततः उन्हें हमारी पूजा-अर्चना करने के लिए एक व्यक्ति मिल गया था – एक वृद्ध ब्राह्मण, धौम्य, जो बहुत यात्रा कर चुका था। वह वृद्ध व्यक्ति अपने द्वारा देखे गए पवित्र स्थलों का वर्णन कर रहा था।
युधिष्ठिर ने पूछा, ‘यहाँ रहने के बजाय क्यों न हम यात्रा करें और पवित्र स्थानों के दर्शन करें?’ मैं सहमत हो गया। यहाँ चुपचाप रहने से बेहतर था घूमना-फिरना और नए देशों को देखना। धौम्य ने कहा कि वह हमारे साथ आएगा। युधिष्ठिर ने कहा कि हमें सौभाग्य समझना चाहिए कि हमारे साथ एक महान ऋषि हैं जो सभी पवित्र जल स्रोतों पर हमारे पूर्वजों के लिए निर्धारित अनुष्ठान करेंगे। माद्री के पुत्र यात्रा को लेकर मुझसे भी अधिक उत्साहित थे।
हमारा अगला पड़ाव ब्रह्मशिरा में था। हमने वहाँ सात दिन बिताए, फिर कौशिकी नदी पार करके ऋषभकूट पहुँचे। वहाँ रहते हुए मैंने एक ऋषि से ऋष्यश्रृंग की

कथा सुनी। एक पड़ोसी देश के राजा ने ऋष्यश्रृंग को बहकाने के लिए एक वेश्या को भेजा था। ऋष्यश्रृंग का पालन-पोषण उसके पिता विभंदक ने इतनी तपस्या से किया था कि उसने कभी किसी स्त्री की गंध तक नहीं जानी थी। उस युवक ने वेश्या को अपनी सहेली समझा और अनजाने में उससे स्पर्श हो गया। जब हम उस बिंदु पर पहुँचे जहाँ ऋष्यश्रृंग ने अपने पिता को बताया कि जब उसने अपनी नई सहेली की छाती में कोमल फल छिपे देखे तो उसे कितना आश्चर्य हुआ, तब हमें कहानी में सचमुच आनंद आने लगा। भरपूर फसल सुनिश्चित करने के लिए, पड़ोसी राज्य लोमपदा, जहाँ से वेश्या आई थी, एक शुद्ध युवक के कुंवारी कन्या के साथ सोने की पहली रात को एक भव्य उत्सव मनाता था। ऋष्यश्रृंग ने बिना जाने ही शराब पी ली थी, और उत्सव के उसके वर्णन ने सहदेव को प्रसन्न कर दिया। द्रौपदी उस युवक द्वारा अपने साथी में खोजी गई अद्भुत विशेषताओं को देखकर प्रसन्न हुई, ऐसी विशेषताएँ जो स्वयं उसमें नहीं थीं। कुछ ऋषि सूतों से कहीं बेहतर कथावाचन कर सकते थे। ब्रह्मशिरा में रहने से हमारा दुख दूर हो गया।
इसके बाद, हमने महेंद्र पर्वत की घाटी में डेरा डाला। वहाँ धौम्या के साथ एक और बुजुर्ग व्यक्ति, लोमेशा नाम का एक पुजारी, आकर मिला। दोनों ने सुझाव दिया कि हम अपने पूर्वजों के लिए व्यथारानी में अनुष्ठान करें।
वैथारानी एक विशाल जलप्रपात था, जिसकी गर्जना दूर से ही सुनाई दे रही थी। लोमेषा ने हमें उस स्थान की कथा सुनाई। कहा जाता है कि जब पृथ्वी की देवी भूमि देवी एक युवती थीं, तब ब्रह्मा ने उन्हें ऐसे विवाह के लिए राजी करने का प्रयास किया जो उन्हें पसंद नहीं था। इसके विरोध में उन्होंने इसी स्थान पर पाताल लोक में प्रवेश किया। दूल्हा कश्यप और ब्रह्मा ने उनसे तब तक विनती की जब तक वे वापस नहीं आ गईं। शिव का बैल नंदी उस युवती की खोज में पहले ही गुफा में आ चुका था।
हमने आयु क्रमानुसार अनुष्ठान किए। पुजारी ने जंबूद्वीप में हमारे पूर्वजों की स्मृति को जगाने वाले मंत्रों का उच्चारण किया, जिसमें भारत की भूमि भी शामिल है, जहाँ हम सभी निवास करते हैं, और हमने उन्हें दोहराया। उसके बाद, हमने प्रत्येक पूर्वज की आत्मा को कुश घास की एक पत्ती के सिरे में समाहित कर दिया।
जब मेरी बारी आई, तो मुझे संदेह हुआ। पूर्वजों का आह्वान करते समय मुझे किसका ध्यान करना चाहिए? पांडु का, जो मेरे रक्त संबंधी नहीं थे, या पवन के

अमर देवता का? युधिष्ठिर की तरह, मैंने महान राजा पांडु का ध्यान किया, फिर विचित्रवीर्य का। लेकिन एक बार फिर, मुझे संदेह हुआ। क्या कृष्णद्वैपायन, जो अभी जीवित थे, को चावल और तिल का अर्पण करने और उन्हें प्रणाम करने की कोई आवश्यकता थी...? फिर शांतनु, प्रदीप, कुरु, ययाति का?
जब अनुष्ठान समाप्त हो गए और हम वैथारानी से ऊपर आए, तो मैंने पुजारी से पूछा, 'यदि हमें वंश के अनुसार पूर्वजों की स्मृति का आह्वान करना ही है, तो क्या हमें राजा शांतनु के पास जाना चाहिए या ब्राह्मण पराशर के पास?' युधिष्ठिर ने हमेशा की तरह कहा, 'मूर्ख, बकवास मत करो!'
उस रात जब मैं वैथारानी की गर्जना सुनते हुए लेटा, तो मेरे मन में कुश्ती के मुकाबलों का ख्याल नहीं आया, जैसा कि आमतौर पर आता था, बल्कि अपनी परदादी सत्यवती का ख्याल आया, जिन्हें मैंने बचपन में सिर्फ एक बार देखा था। मैंने नाव चलाती एक सुंदर युवती की छवि को अपने मन में बसाने की कोशिश की। अगर मैंने जो गीत सुने थे वे सच थे, तो पराशर, वह ब्राह्मण जिसने मछली की गंध वाली उस युवती को, जब वह विशाल नदी के बीचोंबीच अपनी नाव चला रही थी, वश में कर लिया था, अवश्य ही एक असाधारण व्यक्ति रहे होंगे। मैंने उस दृश्य की कल्पना की: एक बिना पतवार वाली नाव उफनती, तेज बहती नदी में बह रही है। मछुआरा लड़की उनका विरोध कर रही है और नाव के तल पर गिर पड़ी है, कीचड़ भरे पानी से उसका दम घुट रहा है और उससे मछली की दुर्गंध आ रही है। उस ब्राह्मण की आत्मा, जिसने अपने हाथों की शक्ति से उसे वश में किया था, कुश घास की पत्तियों पर कम से कम तीन चावल और तिल के गोले रखकर अंतिम संस्कार के योग्य थी। लेकिन जब हमने अनुष्ठान किए, तो किसी ने भी उन्हें याद नहीं किया। पहाड़ की ढलान पर रात बेहद ठंडी थी और हवा झरने से टपकती छोटी-छोटी बूँदें हम पर उड़ा रही थी। मुझे नींद नहीं आ रही थी। यकीनन, ऐसी रात में किसी को पसीना नहीं आएगा। फिर भी बर्फीली हवा कमल के फूलों की खुशबू मुझ तक पहुँचा रही थी।

2

यात्रा के दौरान मुझे समय का ध्यान रखना बंद हो गया था। मुझे बस इतना याद था कि हम हस्तिनापुरा से बहुत पहले निकल चुके थे।
अंततः हमें अर्जुन का संदेश मिला, जो उनसे मिलने वाले एक ऋषि ने हमें दिया था। हमें गंधमादन से आगे एक स्थान पर प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया, जहाँ अर्जुन हमसे मिलेंगे।
लेकिन उस संदेश के मिलने से पहले ही, बलराम, कृष्ण और उनके घनिष्ठ मित्र सत्यकी, जो वृष्णि वंश से थे, एक दिन प्रभासतीर्थ के पवित्र स्थान पर आए। कृष्ण ने हमें माताजी के बारे में जानकारी दी। वे विदुर के घर में सुखी थीं। कृष्ण नियमित रूप से उनके बारे में जानकारी लेने के लिए दूत भेजते रहे थे और एक बार स्वयं भी वहां गए थे। सुभद्रा और अभिमन्यु द्वारका में कुशल मंगल थे।
‘अर्जुन को वापस आने दो, फिर हम तय करेंगे कि हमें क्या करना चाहिए।’
जब हमने कौरवों के साथ युद्ध की बात शुरू की, तो बलराम चुप हो गए। वे किसी का पक्ष नहीं लेना चाहते थे, क्योंकि दोनों गुटों में उनके मित्र थे। फिर भी, उन्हें लगा कि कौरवों द्वारा जुए के खेल में जीत हासिल करके राज्य पर कब्जा करना गलत था।
हम सत्यकी के बहुत जल्दी करीब हो गए। उन्होंने कहा, 'जितना अधिक हम विलंब करेंगे, हमारा शत्रु उतना ही अधिक शक्तिशाली होता जाएगा।' उनका शरीर मेरे जितना ही विशाल था, और हम दोनों को भोजन की भूख भी एक जैसी थी।
हमारे मित्रों के जाने के दो सप्ताह बाद ऋषि की मुलाकात अर्जुन से हुई, और उन्हें अपना संदेश हम तक पहुंचाने में और भी अधिक समय लगा।
ऋषि ने हमें गंधमादन जाने का मार्ग समझाया। हम घने जंगल से ढके एक पर्वत की तलहटी में पहुँचे और समझ गए कि इस पर चढ़कर दूसरी ओर जाना आसान नहीं होगा। जहाँ से पर्वतीय मार्ग शुरू होता था, वहीं हमें एक गुफा मिली जिसमें कोई साधु रहता था। शाम हो चुकी थी, इसलिए हमने उस रात वहीं रुकने का फैसला किया। यह एक अच्छा निर्णय साबित हुआ, क्योंकि उस रात भयंकर आंधी चली और पहाड़ पर भारी बारिश हुई।
हमने सुबह चढ़ाई शुरू की। शुरुआत में, तपस्वियों और तीर्थयात्रियों द्वारा तय किए गए रास्ते पर चलना ज़्यादा मुश्किल नहीं था। कुछ दूर जाने

पर, कल आए तूफान में गिरे पेड़ों ने हमारा रास्ता रोक दिया। हमने दूसरा रास्ता ढूँढा, लेकिन जो रास्ता मिला वह इतना संकरा था कि उस पर पैर रखना भी मुश्किल था। किसी तरह, हम एक और चक्कर चढ़ने में कामयाब रहे। जब हमने ऊपर देखा, तो पहाड़ अब भी हमारे सामने विशाल खड़ा था, मानो आसमान को ढक रहा हो। मैं बाकियों से आगे-आगे चल रहा था और अपने शिकार वाले चाकू से डालियाँ हटा रहा था। नकुल मेरे पीछे थे, फिर सहदेव। द्रौपदी उनके पीछे-पीछे चल रही थीं और युधिष्ठिर सबसे आखिर में थे।
युधिष्ठिर अचानक चिल्ला उठे और मैं रुक गया। द्रौपदी गिर गई थी। मुझे उनके पास नीचे जाने में कठिनाई हो रही थी। युधिष्ठिर ने उसे बैठने में मदद की। द्रौपदी ने मेरी ओर ऐसे देखा मानो कह रही हो, 'यह बहुत कठिन है...'
अचानक, कंधों पर रस्सियाँ लपेटे कुल्हाड़ी लिए कुछ युवा वनवासी दिखाई दिए। मैंने उन्हें रुकने का इशारा किया और उनसे चोटी तक जाने का रास्ता पूछा। उनमें से बड़े मुस्कुराए, लेकिन असमंजस में दिखे, मानो उन्हें मेरी बात समझ नहीं आ रही हो। उनमें से जो सबसे छोटा लग रहा था, उसने कहा, 'गंधमादना पर चढ़ने का यह सही समय नहीं है। अभी और तेज़ हवाएँ और तूफ़ान आने की संभावना है।'
उसका चेहरा तो बच्चे जैसा था, लेकिन उसके गहरे रंग के सुगठित शरीर पर मांसपेशियां उभरी हुई थीं। मुझे लगा कि ये युवक शायद निषाद जनजातियों में से किसी एक के होंगे।
लेकिन हमें आगे बढ़ना होगा।
उस युवक ने द्रौपदी की ओर देखा, जो थकी-हारी, उठने की अनिच्छा से ज़मीन पर बैठी थी। यद्यपि वह बाकियों से छोटा था, फिर भी स्पष्ट रूप से उन पर उसका अधिकार था। उसने पैशाची बोली में जल्दी से कुछ कहा। उसके हावभाव से लग रहा था कि वह उन्हें डांट रहा है। बड़े-बुजुर्ग इधर-उधर भागने लगे। तब तक नकुल मेरे पास आ चुका था।
वे लोग टहनियाँ और लताएँ लेकर लौटे। उन्होंने टहनियों को छाँटा, उन्हें लताओं से आपस में बाँधा और एक पलंग बनाया। नकुला और मैंने एक-दूसरे की ओर देखा और उनकी कारीगरी की प्रशंसा की। उस युवक ने बाकी लोगों को इशारा किया कि पलंग को आगे लाएँ।
'जो महिला चल नहीं सकती, वह इस पर बैठ सकती है और हम उसे ऊपर ले जाएंगे।'

पहले तो द्रौपदी ने मना किया और कहा कि वह खुद चलकर जाएगी। आखिरकार, जब युधिष्ठिर ने भी ज़ोर दिया, तो वह पलंग पर चढ़ गई। युधिष्ठिर आगे जाकर रास्ता साफ़ करने लगा और द्रौपदी आदिवासियों द्वारा बनाई गई अस्थायी पालकी में उसके पीछे-पीछे चली। शुरुआती झिझक दूर होने के बाद, उसे उस साधारण पालकी की सवारी अच्छी लगने लगी। उसने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराया भी।
जब हम काफी दूर चल चुके थे, तब लड़के ने हमें बताया कि हमारे रास्ते से थोड़ी दूर पर एक साफ पानी का झरना है, जिसके किनारे हम चाहें तो ठहर सकते हैं। लेकिन हम चोटी तक जाना चाहते थे। हम जानते थे कि वहाँ प्राचीन काल से प्रसिद्ध आश्रम हैं और उनमें लोग रहते हैं।
चार आदमी पलंग उठाकर ले जा रहे थे। मैंने उन्हें नुकीले पत्थरों पर संभलकर और मजबूती से कदम रखते देखा। आगे चल रहे गाइड ने उन जगहों पर कुल्हाड़ी से पैर जमाने के लिए जगह बनाई जहाँ चलना मुश्किल था। जंगल इतना घना था कि दिन में भी अंधेरा रहता था, धीरे-धीरे कम घना होता गया। घने जंगल की जगह कहीं- कहीं फूल वाले पेड़ दिखाई देने लगे। जब हम शिखर पर पहुँचे तो लगभग सूर्यास्त हो चुका था।
पलंग नीचे उतारा गया, और द्रौपदी नीचे उतरी और आदिवासियों को कृतज्ञतापूर्वक देखकर मुस्कुराई।
दूर से हमें आश्रमों की झोपड़ियों से धुआँ उठता दिखाई दिया और भागीरथी नदी की ढलान से नीचे बहती गर्जना सुनाई दी। चारों ओर फूल और फलों से लदे पेड़ थे। यह ऋषि के वर्णन से भी कहीं अधिक सुंदर था। भागीरथी की एक छोटी सी शाखा, आगे न बढ़ने का निश्चय करके, एक तालाब में मुड़ गई थी। उसके पार हिरण्य पर्वत की बर्फ से ढकी चोटी थी। घने जंगल से होकर दिन भर की चढ़ाई की थकान गायब हो गई जब हमने चारों ओर प्रसन्नता से देखा।
आदिवासी चले गए थे। मुझे याद आया कि हमने उन्हें धन्यवाद का एक शब्द भी नहीं कहा था, इसलिए मैं दौड़कर उनके पास पहुँच गया।
आपने हमारी बहुत बड़ी सेवा की। हमारे पास आपको उपहार देने के लिए कुछ भी नहीं है।
वे मुस्कुराए। गाइड ने कहा, 'हमें किसी चीज की उम्मीद नहीं है।'

‘हम इंद्रप्रस्थ के राजकुमार हैं। यदि आपको कभी पता चले कि हम पर सौभाग्य आया है, तो आप में से कोई एक अवश्य हमसे मिलने आए। हम आपको उपहार देना चाहेंगे।’
वे मुस्कुराए, यह जानते हुए कि ये शब्द केवल एक औपचारिकता थे।
‘मैं भीमसेन हूँ। हम राजा युधिष्ठिर के छोटे भाई हैं।’
उनमें से जो बड़े थे, उन्होंने एक-दूसरे को संदेह भरी नजरों से देखा, मानो उन्हें कुछ समझ ही न आया हो। मैंने मुट्ठी से अपना सीना पीटते हुए कहा, 'मैं महान राजा पांडु का पुत्र भीमसेन हूँ।'
उनके मार्गदर्शक लड़के ने कोमल स्वर में कहा, 'मैं हिडिम्बा वन के निषाद गोत्र का घटोत्कच हूं, हिडिम्बी का पुत्र।'
मेरे शरीर पर रोंगटे खड़े हो गए। मुझे लगा कि जो चेहरा मेरी तरफ मुस्कुरा रहा था, वह उसके शरीर से बिल्कुल मेल नहीं खा रहा था। मेरा मन किया कि मैं उसे गले लगा लूँ, लेकिन मैंने खुद को रोक लिया।
‘मैं… मैं तुम्हारा पिता हूँ।’
'जब मैंने यह नाम सुना तो मुझे भी ऐसा ही लगा।'
वह घुटनों के बल बैठ गया और प्रणाम करते हुए मेरे पैर छुए। मैं भी नीचे झुका, उसके चेहरे को अपने हाथों में लिया और उसे उठा लिया।
घटोत्कच ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं और मेरे साथी इस क्षेत्र में रहेंगे। क्या आप हमसे कुछ और करवाना चाहते हैं?'
मैंने द्रौपदी को दूर से हमें देखते हुए देखा।
'जब तुम बूढ़े हो जाओगे, तब मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत पड़ेगी। युद्ध में।'
उसने मुझे फिर से सलाम किया, अपने दोस्तों के पास जाने के लिए नीचे भागा और मेरी नज़रों से ओझल हो गया। मैंने सोचा, मैंने उससे उसकी माँ के बारे में, हिदिम्बी के बारे में कुछ नहीं पूछा था…
जब मैं वापस लौटा, तो युधिष्ठिर ने पूछा, 'क्या तुम्हारे पास उन्हें उपहार के रूप में देने के लिए कुछ था?'
‘नहीं। और अगर मैंने ऐसा किया भी होता, तो वे इसे नहीं लेते। जो लड़का हमारा मार्गदर्शक था, वह मेरा बेटा है। हिडिम्बी का बेटा, घटोत्कच।’ 'अच्छा। वह एक प्रतिभाशाली बच्चा है।'

रात में, आश्रमों से लोग हमसे मिलने आए। उन्होंने हमें रहने के लिए कुश घास से बनी कुछ झोपड़ियाँ खाली कर दीं। कई दिनों बाद, हमने पका हुआ भोजन खाया।
युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न थे। चैत्र माह की कोमल चाँदनी पीली चमक रही थी। ऋषियों के निवासों से अकिल और चंदन की सुगंध हवा में घुल रही थी। संध्याकालीन प्रार्थना के बाद द्रौपदी ने अपने माथे पर चंदन का लेप लगाया और खुले बालों में फूल गूँथे। मिट्टी के छोटे-छोटे तेल के दीपक तेज रोशनी से जगमगा रहे थे। मैंने द्रौपदी की आँखों में ऐसी कोमलता देखी जो संगमरमर को भी पिघला दे और ऐसा लगा जैसे जंगली पक्षी मेरे टखनों पर अपने पंख फड़फड़ा रहे हों। मैंने युधिष्ठिर की निगाहें वासना से द्रौपदी के शरीर पर घूमती देखीं और तुरंत अपना हिसाब लगाया। नहीं, मुझे अपनी बारी का इंतजार करना था, वह अभी बहुत दूर थी।
अगले दिन मैं उस फूल की खोज में निकल पड़ा, जिसे कथाकारों ने बाद में एक वीरगाथा में रूपांतरित कर दिया। उनके गीतों में कहा गया था कि रास्ते में मेरी मुलाकात हनुमान से हुई, जो त्रेता युग में बहुत पहले रहते थे, और मैंने अकेले ही कुबेर की विशाल सेना से युद्ध किया। महिला कक्ष की दासियों ने बच्चों का मनोरंजन करने के लिए कहानी में कई चुटकुले जोड़ दिए।
यह सब तब शुरू हुआ जब हवा एक फूल को हमारी फूस की झोपड़ी के आंगन में उड़ा ले आई। मैंने ध्यान नहीं दिया कि द्रौपदी ने उसे उठाया और उसकी सुगंध सूंघते हुए आश्रमों में घूमने लगी। कुछ समय बाद जब वह मेरे पास आई, तब भी मैं घाटी में बहती भागीरथी नदी की चांदी जैसी चमक को निहार रहा था। द्रौपदी ने एक छोटा नीला कमल आगे बढ़ाते हुए कहा, “यह सौगंधिका का फूल है। देखने में साधारण लगता है, लेकिन इसकी सुगंध बहुत ही सुंदर और असाधारण है। कहते हैं कि कदली वन के नीचे एक झील है जहाँ केवल यही फूल उगता है, और कुछ नहीं।”
मुझे यह कोई चमत्कार नहीं लगा। मैंने हिडिम्बा वन में एक ऐसा क्षेत्र देखा था जहाँ केवल नीले कमल ही उगते थे। लेकिन यह सच था, इस फूल की सुगंध वाकई बहुत अनोखी थी। जिस झील की उन्होंने बात की थी, वह कुबेर के देश में थी और वहाँ किसी को भी फूल तोड़ने की अनुमति नहीं थी। ऋषियों ने मुझे बताया कि उस स्थान की निगरानी के लिए पहरेदार नियुक्त किए गए थे।
मुझे पता था कि धनी कुबेरा के बगीचे और बाग गंधमादना के पास ही थे।

‘काश मुझे इनमें से कुछ फूल मिल जाते, तो मैं उनका इस्तेमाल अपनी पूजा में और भी कई कामों के लिए कर सकती…’
मैं उसकी इच्छा समझ गया था, लेकिन मैंने उसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई।
‘पहरेदार किसी को अंदर नहीं जाने दे रहे हैं। वरना मैं नकुल या सहदेव को भेज सकता था।’
‘तो आप चाहते हैं कि मैं जाऊं…?’
‘यह मेरी बस एक इच्छा है। चूंकि अर्जुन यहां नहीं है, तो मैं और किससे प्रार्थना कर सकती हूं?’
मुझे पता था कि यह मुझे हटाने की कोई चाल नहीं थी। हममें से किसी ने भी युधिष्ठिर और द्रौपदी को उनके साथ होने पर कभी परेशान नहीं किया था। और अगर वह अपनी चौथी हनीमून यात्रा पर किसी प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर जगह की कामना कर रही थी, तो यह क्षेत्र ऐसी जगहों से भरा पड़ा था।
मुझे एहसास हुआ कि यह शायद एक महिला के अनूठे सपने की तलाश में एक यात्रा होगी। फिर भी, मैंने कहा, 'ठीक है, मैं देखती हूँ कि मैं क्या कर सकती हूँ।' मैंने यह सोचकर चलना शुरू किया कि कदली वन पास ही होगा, लेकिन काफी दूर चलने के बाद ही वह वन मिला। जैसे ही मैं उसमें दाखिल हुआ, पहरेदार शोर मचाते हुए मेरे पास आ गए। मैंने उन्हें बताया कि मैं तो बस एक तीर्थयात्री हूँ जो सौगंधिका के फूलों वाली झील देखने जा रहा हूँ, इसलिए उन्होंने मुझ पर हमला नहीं किया। उन्हें लगा होगा कि मैं पागल हूँ, जो गंधमादन से इतनी दूर इसके लिए आया हूँ। खैर, उन्होंने मुझे सही रास्ता दिखाया और मैंने अपनी यात्रा जारी रखी।
जब आखिरकार मुझे झील दिखाई दी, तो मुझे लगा कि मेरी सारी यात्रा व्यर्थ नहीं गई। सुंदर हरे पानी में हज़ारों गहरे नीले फूल खिले हुए थे। हवा में इतनी तेज़ सुगंध फैली थी कि मुझे चक्कर आने लगे। मैंने सोचा कि पहले थोड़ी देर तैर लूँगी, फिर कुछ फूल तोड़कर वापस आ जाऊँगी। मैं पानी में उतरी और पाया कि पानी गुनगुना था। जैसे ही मैंने तैरना शुरू किया, कोई चीज़ मेरे पैरों के बीच से तेज़ी से गुज़री। वह मछली नहीं थी। मुझे एहसास हुआ कि वह एक भाला था जो किसी ने मुझ पर फेंका था, और मैं तैरकर वापस आ गई।
मैंने सावधानी से, बिना कोई आवाज़ किए, मुड़कर पत्तों के एक झुंड के ऊपर एक दूसरी जगह पर आकर राहत की सांस ली। वहाँ तीन पहरेदार थे, सभी भूरे रंग के,

छोटे कद के पहाड़ी आदिवासी। उनका शरीर नागों जैसा था, लेकिन वे निश्चित रूप से नाग नहीं थे। उन सभी के पास हथियार के रूप में लंबे भाले थे। मैं निहत्था था। वे इस बात पर बहस कर रहे थे कि पानी में डूबने के बाद मैं कहाँ से निकलूँगा। मुझे लगा कि केवल पहरेदारों से लड़ना ज़रूरी नहीं है, इसलिए मैं उस जगह की ओर तैरकर गया जहाँ वे खड़े थे और किनारे पर आ गया। उन्होंने धमकी भरे अंदाज़ में अपने हथियार उठा लिए।
मैंने अनभिज्ञता जताते हुए उनसे पूछा कि यह जगह किसकी है। उन्होंने बताया कि दूर-दूर तक फैला पूरा इलाका धनी कुबेरा परिवार का है और वहां उगने वाले किसी फूल को भी छूना मना है।
किसी भी क्षण अचानक हमले के लिए खुद को तैयार रखते हुए, मैंने तर्क दिया कि पहाड़ पर मौजूद जल स्रोत प्रकृति का हिस्सा हैं और कोई भी उन पर अपनी निजी संपत्ति होने का दावा नहीं कर सकता। मैंने योजना बनाई थी कि ज़रूरत पड़ने पर मैं उनमें से किसी एक से हथियार उठा लूँगा। दूसरे व्यक्ति के भाला उठाने से पहले ही मैं अपना दाहिना पैर उसकी नाभि पर रख दूँगा। नियमों के अनुसार, एक योद्धा को हमेशा तैयार रहना चाहिए।
मुझ पर हमला करने के बजाय, वे आपस में और बारी-बारी से मुझसे भी ज़ोर-ज़ोर से बहस करने लगे। एक और आदमी दौड़कर आया और उस समूह में शामिल हो गया। वह मुझसे लंबा था और निहत्था था, उसके बाल तांबे जैसे रंग के थे जो उसकी गर्दन तक फैले हुए थे। बाकी तीनों उसके चारों ओर जमा हो गए और आपस में एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप और विरोध की फुसफुसाहट जारी रखी।
उस नए व्यक्ति ने मेरी ओर देखा। मैं कौन था? मैं कहाँ से आया था और किसलिए? मैंने कहा कि मैं नरनारायण आश्रम के पास ठहरने वाले तीर्थयात्रियों में से एक हूं, और मैं एक पांडव हूं।
‘हस्तिनापुरा के पांडवों की बात कर रहे हैं?’ उसने आश्चर्य से पूछा। मैंने सहमति में सिर हिलाया। मैंने सच-सच बताया कि हमारे साथ मौजूद महिला ने झील में खिले नीले कमलों के बारे में सुना था और उन्हें चाहती थी, और मैं कुछ तोड़ने आया था। उसने मुझे रुकने का आदेश दिया, पहरेदारों को मुझ पर नज़र रखने का निर्देश दिया और जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से वापस चला गया।
वह वापस नहीं लौटा। मुझे पूरी रात ठंड से कांपते हुए, पहरेदारों के भालों के बीच बैठना पड़ा। मेरे लिए उन्हें मार गिराना और वहां से निकल जाना

बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था। लेकिन उस आदमी ने मुझे रुकने को कहा था। क्या पता... क्या पता कुबेरा खुद उसके साथ वापस आ जाए? फलों के बाग, औषधीय पौधों और सुगंधित जड़ी-बूटियों से भरे जंगल, खदानें - एक बेहद धनी राजा जो दूसरे राजाओं को उधार देता था। मेरे मन में एक उम्मीद थी कि शायद मुझे उसकी एक झलक मिल जाए। इसलिए मैंने जल्दबाजी न करने का फैसला किया।
पहरेदारों ने आग जलाई। उसकी रोशनी में, मैं उनके चेहरों पर साफ देख सकता था कि मेरे बारे में वे क्या सोच रहे थे, क्योंकि मैंने उन्हें यहाँ पहरा देने के लिए मजबूर किया था। मैं जानता था कि वे जरा सी भी उकसाहट का इंतजार कर रहे थे ताकि मुझ पर अपने भाले चला सकें।
युधिष्ठिर आश्रम परिसर में सुरक्षित थे, इसलिए उन्हें किसी बात का डर नहीं था।
जब उजाला हुआ, तो मैंने उस लंबे-चौड़े, तगड़े आदमी को वापस आते देखा, जिससे मैं कल मिला था। उसके पीछे आ रहे लोगों को देखकर मैं दंग रह गया: युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, द्रौपदी और घटोत्कच।
कुबेरा का नौकर उन्हें मेरे पास लाया और मैंने उनकी प्रतिक्रिया देखी। युधिष्ठिर ने कहा, 'जी हां, यह मेरा भाई भीम है।'
झील से थोड़ी दूरी पर कुबेर का एक विश्रामगृह था। उस व्यक्ति ने हमें वहाँ प्रतीक्षा करने के लिए आमंत्रित किया और कहा कि वह उस दिन सूर्यास्त से पहले राजधानी में संदेशवाहक भेज देगा। युधिष्ठिर ने उनकी इस विनम्रता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।
मुझे याद आया कि मैं जिस काम के लिए आया था, उसे पूरा नहीं कर पाया था। घटोत्कच समूह में कैसे शामिल हुआ? जब मैं नहीं लौटा, तो युधिष्ठिर ने नकुल और सहदेव को मेरी खोज में हर दिशा में भेजा। जंगल में सहदेव की मुलाकात घटोत्कच से हुई, जो कुबेर के उद्यानों और इस झील के स्थान को जानता था। जैसे ही वे मेरे पुत्र को मार्गदर्शक बनाकर निकले, मुझे पहरेदारों के पास छोड़ने वाला व्यक्ति यह पता लगाने के लिए आ गया कि जिसे उन्होंने पकड़ा है वह वास्तव में पांडव तीर्थयात्री है या शत्रु।
नकुल के उपहास भरे भावों को अनदेखा करते हुए, मैंने मुट्ठी भर फूल तोड़े और द्रौपदी को दे दिए। मुझे लगा कि झील की सुंदरता उसे मोहित कर देगी, वह इसके बारे में कुछ कहेगी। लेकिन उसने युधिष्ठिर को फूल बिना सूंघे ही दे दिए। युधिष्ठिर ने कुछ बुदबुदाते हुए कहा कि कुछ लोगों की मूर्खता के कारण उसे

मीलों का सफर बेवजह तय करना पड़ा, और आगे बढ़ गया। घटोत्कच वहीं रुका रहा, मानो मेरे आदेश का इंतजार कर रहा हो।
हम भी आगे बढ़ते रहे। रास्ते में मुझे कुछ सौगंधिका के फूल अपनी डंडियों पर लगे हुए जमीन पर पड़े हुए दिखाई दिए।

3

एक दिन मैं शिकार से लौटी तो मुझे ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने की आवाज़ें सुनाई दीं। हमारे पड़ोसी ऋषि-मुनि थे, इसलिए मुझे गंधमादना में किसी खतरे की आशंका नहीं थी। आखिर यह कैसी विपत्ति हो सकती है?
जब मैं शिविर की ओर भागा, तो मैंने देखा कि जंगल के एक आदिवासी ने द्रौपदी को अपने कंधों पर उठा रखा था और मेरे तीनों भाई उसे ले जाने से रोकने की कोशिश कर रहे थे। उस व्यक्ति ने जमीन पर गिरे सहदेव को लात मारी और फिर वहीं लात मारी जहाँ वह गिरा था।
युधिष्ठिर उसके सामने खड़े होकर चिल्ला रहे थे, “अरे दुष्ट! अगर तुझमें हिम्मत है तो मुझे एक हथियार दे, मुझसे लड़ और मुझे हरा दे। तब तू इस स्त्री को ले जा सकता है। यही धर्म है।”
अगर हालात अलग होते तो मैं हंस देता। आदिवासी ने नकुला को नीचे गिरा दिया, जो पीछे से हमला करने का मौका ढूंढ रहा था। वह आदमी निहत्था था, लेकिन यकीनन ताकतवर था।
मैं उत्साहित था। हमारी लंबी यात्रा के बीचोंबीच, द्वंद्वयुद्ध का एक अच्छा बहाना और एक उपयुक्त प्रतिद्वंद्वी मिल गया था। उस व्यक्ति को शायद एहसास हो गया था कि उसे मेरे जैसा प्रतिद्वंद्वी मिल गया है। उसने द्रौपदी को छोड़ दिया और उसने खुद को मुक्त कर लिया।
युधिष्ठिर ने उसे श्राप देते हुए कहा, 'द्रौपदी को स्पर्श करने के कारण तुम्हारा नाश हो!'
उसने अपनी लंबी जीभ बाहर निकाली, अपने निचले होंठ को चाटा और मुझे आक्रामक निगाहों से देखा। वह मुझे परख रहा था, यह समझने की कोशिश कर रहा था कि मैं क्या करने वाला हूँ, और उसमें डर का कोई निशान नहीं था। मेरे पास लगभग तीन भुजाओं जितना लंबा एक भाला था। यह उसकी छाती चीरने के लिए काफी था। हालाँकि, मैंने उसे अपने हाथों से मारने का निश्चय किया और भाला सहदेव के चरणों के पास फेंक दिया।
हमने लड़ाई से पहले कोई औपचारिकता नहीं निभाई, न ही कोई पूजा की और न ही एक-दूसरे को नमस्कार किया। सीधे हाथों से, आमने-सामने की लड़ाई। उसका नाम जड़ा था। बाद में हमें पता चला कि उसने कई बार आश्रमों से महिलाओं को अगवा करने की कोशिश की थी।

मेरे भाई देखते रहे, और मैंने उसके शुरुआती वार सहे, उसकी ताकत का अंदाज़ा लगाने की कोशिश करते हुए। द्रौपदी ने डर से भरी अपनी सिसकी को दबा लिया। हाँ, मैंने मन ही मन उससे कहा, ये है तुम्हारे देखने के लिए एक लड़ाई...
जब वह आदिवासी मुझ पर दोबारा झपटा, तो मैं चुपचाप उसके रास्ते से हट गया और फिर मैंने उस पर हमला बोल दिया। मैंने उसके सीने और गर्दन पर लगातार वार किए। उसे पीटते हुए मैंने उसे कुटिया की सीमा तक धकेल दिया। मैंने उसकी गर्दन पर निशाना साधा और खुद को ऊपर उठाया। उसने मेरे वार रोकने के लिए अपना हाथ नीचे किया। मेरा बायां हाथ, जिसे मैंने तैयार रखा था, उसकी दाहिनी आंख पर जा लगा।
पीड़ा से व्याकुल होकर उसने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। मैं उसकी पीठ पर कूद पड़ा, उसकी गर्दन पकड़ ली, उसे अपने कंधों पर उठाया, फिर उसे उठाकर अपने सामने पटक दिया।
जड़ा पीठ के बल गिर पड़ा था और असहाय था। अगला कदम उसे मार डालना था। यही वह क्षण था जब मुझे होश खोकर दहाड़ मारनी चाहिए थी। युधिष्ठिर और द्रौपदी मुझे देख रहे थे। लेकिन वह आवेग जो मुझे उसकी गर्दन या रीढ़ की हड्डी तोड़ देने के लिए प्रेरित करता, जागृत नहीं हुआ। दर्शकों के सामने हत्या का कृत्य... मेरा हाथ बेजान लटका हुआ था। मैं ऐसा नहीं कर सका।
जाडा ने जब बड़ी कोशिश से उठने की कोशिश की, तब भी मैं टस से मस नहीं हुआ। मेरी आँखों में देखते हुए, वह धीरे-धीरे पीछे हट गया, फिर अचानक दौड़ने लगा।
उसके नाखून से मेरे चेहरे पर खरोंच आ गई थी, और मेरी पसलियों पर एक नीला धब्बा था जहाँ उसकी कोहनी धंस गई थी।
आश्रम के निवासी दौड़ते हुए हमारे पास आए। उनमें से कुछ ने जादा को मुक्त छोड़ने के लिए मुझ पर दोषारोपण किया। उन्होंने कहा कि वह जादू-टोना जानता था और ब्राह्मण का वेश धारण करके भिक्षा मांगने का बहाना करके आश्रमों में जाता था और अत्याचार करता था।
द्रौपदी मेरी ओर ऐसे आई मानो किसी बुरे सपने से जाग उठी हो। मुझे लगा कि वह मुझसे पूछेगी कि मैंने जड़ा को क्यों नहीं मारा, उसे जाने क्यों दिया। युधिष्ठिर ने कहा, “हर जगह आदिवासी हैं, जो हमें परेशान करने के लिए मौजूद हैं।” उन्होंने घटोत्कच को आते हुए देखा और नकुल और सहदेव से कहा, “पता नहीं यह लड़का बड़ा होकर क्या बनेगा?”

घटोत्कच ने सहदेव से बात की। जब उसे घटना का पता चला, तो उसने कहा, 'जड़ा हमारे निषाद वंश का नहीं है। वह असुर वंश का है। मैं उसका ध्यान रखूंगा।' एक बूढ़े ब्राह्मण ने कहा, 'तुम बिलकुल उसी की तरह हो। तुम ब्राह्मणों को परेशान करते हो, पूजा-पाठ होने से रोकते हो, स्त्रियों को चुराते हो, गायों को मारते हो - तुम सब एक जैसे हो।'
किसी ने आशंका व्यक्त की: क्या होगा यदि जादा अपने साथियों के साथ लौट आए? दूसरों ने सुझाव दिया कि सभी लोग अर्शतिशेना के आश्रम में चले जाएं और अगले दिन वहां घास की दो झोपड़ियां बनाने की पेशकश की।
अगले दिन, वहाँ अफरा-तफरी मच गई। हमने लोगों को चिल्लाते हुए सुना कि आदिवासी हम पर हमला करने आए हैं। जब हम बाहर भागे, तो वहाँ घटोत्कच और उसका दल खड़ा था। उनके पास कुल्हाड़ियाँ थीं और लताओं व छल्लों से बनी रस्सियाँ उनके कंधों पर लटकी हुई थीं। वे हमारे पास आए और घटोत्कच ने कहा, 'हम हिडिम्बा के जंगल में वापस जा रहे हैं।'
उन्होंने द्रौपदी को आदरपूर्वक प्रणाम किया और उनके सामने पंडनस के पत्तों में लिपटा एक बड़ा उपहार रखा। फिर वे मेरी ओर मुड़े, हथेलियों को प्रणाम की मुद्रा में जोड़कर, और अपने साथियों के साथ चले गए।
सहदेव ने कहा, 'यह ज़रूर जंगली खीरा होगा।' वह नीचे झुका और पैकेट खोला - और चीख पड़ा। हमने जड़ा का सिर देखा, जिससे अभी भी खून टपक रहा था।

नए शिविर में ज़्यादा लोग थे। हमें भोजन के लिए आश्रम में रहने वालों पर निर्भर रहना पड़ता था। हम जंगल से काफ़ी दूर थे, और वहाँ शिकार करने लायक़ ज़्यादा पक्षी भी नहीं थे।
एक शाम जब मैं इधर-उधर घूमने के बाद देर से लौटा, तो मैंने द्रौपदी को नकुल और सहदेव के साथ हमारी कुटिया में किसी बात पर हंसते हुए पाया।
मेरे अंदर आते ही मेरे भाइयों ने बाहर जाने का बहाना बना लिया। मैं उनके पीछे-पीछे चला गया।
द्रौपदी ने सूंघकर कहा, 'कितनी सुंदर सुगंध है।'
मैंने मजाक में कहा, 'शायद तुम्हें पसीना आ रहा है, द्रौपदी।'

मेरी बात सुनकर द्रौपदी खुश हो गई और उसने हमारे सामने की चोटी की ओर देखा। उसने पूछा, 'क्या तुम जानते हो कि उस चोटी के ऊपर क्या है?'
‘नीले कमल…?’
नहीं। कुबेरा के फूल। यह कोई मज़ाक नहीं है। मैंने आश्रम में सभी को उनके बारे में बात करते सुना। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के फूल स्वर्ग में उगने वाले संताना के फूलों से भी अधिक सुंदर हैं।
कुबेरा के बगीचे से उसके लिए फूल तोड़ने जाते समय मुझ पर भाले ताने जाने की वह रात मेरे मन में अभी भी ताजा थी।
उन्होंने कहा, 'हमें उस चोटी पर चढ़कर नजारा देखना चाहिए। कहते हैं कि वहां से विशाल मेरु पर्वत दिखाई देता है।'
मैं ऐसा करने के लिए तुरंत तैयार हो गया।
'पता लगाओ कि ऊपर कोई ऐसी जगह है जहाँ हम बैठ कर आराम कर सकें।'
मैं यह कल करूंगा।
'कल नहीं, परसों। राजा का कार्यकाल कल समाप्त हो रहा है।'
अगले दिन पहाड़ पर चढ़ाई आसान नहीं थी। मैं अपने साथ अपना गदा ले गया था। मैंने सोचा था कि क्या मैं अपना धनुष और बाण भी ले जाऊं, लेकिन फिर मैंने ऐसा न करने का फैसला किया। जब मैं चोटी पर पहुंचा, तो मुझे चार-पांच चूल्हे मिले, जिनमें जलती राख अभी भी गर्म थी। मैंने अनुमान लगाया कि चट्टानों से बिटुमेन निकालने आए वनकर्मियों ने आग जलाई होगी। मैंने चारों ओर देखा, लेकिन मुझे कोई फूल नहीं दिखाई दिया। न ही मुझे विशाल मेरु पर्वत की झलक मिली। फिर भी, चोटी से नज़ारा बहुत सुंदर था - कोहरे से भरी घाटियाँ और पर्वत श्रृंखलाओं के चारों ओर बादलों की मालाएँ।
वे चट्टानों के पीछे छिपे हुए थे। जब मैंने पुकार कर कहा कि मैं दुश्मन नहीं हूँ, तो वे एक-एक करके बाहर आ गए। वे कुबेरा के सेवक थे - मणिमान, जो शिकारियों का सरदार था, और उसका दल।
मैंने उनसे कुछ दिनों के लिए शिखर से दूर रहने का अनुरोध किया और उन्हें एक कारण बताया: हम पांडवों को उस स्थान पर कुछ यज्ञ अनुष्ठान करने थे।
वे हिचकिचाए और मैंने अपना लहजा बदल दिया, 'मैं कुबेरा के शिकारियों के खिलाफ बल प्रयोग नहीं करना चाहूंगा। आपको यह सुनिश्चित करने में मेरी मदद करनी होगी कि ऐसा करना आवश्यक न हो।'
मणिमान का रुख चुनौती भरा बना रहा।

मैंने पूछा, 'क्या आपने जाडा के बारे में सुना है?'
वे थे।
'भीमसेन के साथ द्वंद्वयुद्ध करने के बाद भी गिद्धों ने उसका शरीर खाना खत्म नहीं किया है।'
हाल ही में मिली जीत को उजागर करने वाली यह चुनौती, जिसका उपयोग हम आमतौर पर द्वंद्वयुद्ध के दौरान चुनौती के रूप में करते हैं, अक्सर कूटनीतिक शब्दों से अधिक उपयोगी होती है।
मणिमान और उसके साथी हमें चोटी सौंपकर चले जाने के लिए सहमत हो गए। उन्होंने द्रौपदी के विश्राम के लिए जगह तैयार करने में मेरी मदद की। हमने उस पर जंगली घास बिछाई और कुल्हाड़ी से सीढ़ियाँ बनाईं ताकि वह ऊपर चढ़ सके। जब तक हमने काम पूरा किया, तब तक अंधेरा होने लगा था।
अगली सुबह, जब मैं अपने आनंदमय सफर के लिए भोजन पैक कर रही थी, तो मैंने कल्पना की कि हम, द्रौपदी और मैं, पर्वत की चोटी के एकांत में एक साथ हैं। यह द्रौपदी का कोई और विचित्र सपना नहीं था, क्योंकि उसने स्वयं यह स्थान चुना था। जब हम चोटी पर पहुँचेंगे, तो द्रौपदी कुबेर के बगीचे के फूलों को भूल जाएगी। जब मैं सोच रही थी कि मैं उसे कौन सी युद्ध कथा सुनाऊँ जिससे उसके भीतर की मोहक स्त्री एक शेरनी में बदल जाए, तभी वह एक जंगली कबूतरी की तरह हंसते हुए दौड़ी आई।
‘अर्जुन यहाँ है! क्या आपको पता नहीं था?’ उसने ध्यान से उन पैकेजों को देखा जो मैंने पहाड़ पर ले जाने के लिए बनाए थे। ‘आज रात हम उसकी यात्राओं के बारे में सब कुछ सुनेंगे।’
मैंने बाहर छोड़े हुए हथियारों का बंडल खोला। तब तक अर्जुन नकुल और सहदेव के साथ कुटिया में पहुँच चुके थे।
अर्जुन ने प्रणाम करते हुए मेरे पैर छुए। मैंने उनके सिर को चूमा और आशीर्वाद देकर उनका स्वागत किया। रात को हम अग्नि के चारों ओर बैठकर अर्जुन की बातें सुनने लगे। उन्होंने सबसे पहले नए हथियारों के बारे में बताया। ऐसे बाण जिनके सिरे पर साँप का विष छिपा होता था या जो लक्ष्य के पास पहुँचते ही धधकते फास्फोरस को छोड़ देते थे, शक्तिशाली भाले जैसे बाण जो अगर अपने लक्ष्य पर न लगते तो वापस लौट आते थे, ऐसे बाण जिनका प्रयोग केवल एक निश्चित समय पर ही किया जा सकता था, जो लोहे के कवच को भी भेद सकते थे...

नकुला अपने साथ लाई गई हर चीज को एक साथ देखना चाहता था।
युधिष्ठिर ने कहा, 'हम कल तक इंतजार करेंगे।'
नकुल ने आग में नई लकड़ियाँ डालीं। अर्जुन ने जिन स्थानों को देखा था, वहाँ कितने विचित्र लोग रहते थे! उसने बताया कि कुछ ऐसे क्षेत्र थे जहाँ स्त्रियाँ शिकार करती थीं और अनाज उगाती थीं, जबकि पुरुष घर पर बैठे रहते थे। एक ऐसा देश भी था जहाँ स्वयंवर विवाह एक भाग्य का खेल होता था – दुल्हन एक झोपड़ी के अंदर बैठती थी और विवाह योग्य आयु के युवक एक पर्दे के पार से बाण चलाते थे। दुल्हन एक बाण पकड़ लेती थी और सौभाग्य उसके स्वामी का साथ देता था।
हम खूब हंसे।
युधिष्ठिर ने कहा, 'यह दुर्भाग्य भी हो सकता है!'
द्रौपदी ने पूछा, 'क्या लंगड़े और अंधे लोग भी अपनी किस्मत आजमाने के लिए कतार में खड़े होते हैं?'
कुछ देशों में लोगों के प्रार्थना करने के तरीकों के बारे में सुनकर हम स्तब्ध रह गए। कुछ स्थान ऐसे थे जहाँ इंद्र, अग्नि और रुद्र की पूजा नहीं की जाती थी। यह जानकर हमें गहरा सदमा लगा कि कुछ लोग लिंगम और योनि की पूजा करते हैं।
अर्जुन को रास्ते में किसी गंभीर संघर्ष का सामना नहीं करना पड़ा था। उन्होंने कालकेय नामक एक कबीले के सरदार से लड़ाई की थी, बस इतना ही। द्रौपदी हिल गई। 'हमें इसके बारे में बताओ।'
अर्जुन ने इस मामले को हल्के में लेते हुए कहा, 'बताने लायक कुछ नहीं है। एक आदिवासी सरदार था। मैंने उसे मार डाला।'
‘कलाकेया… हमें सब कुछ बताओ कि क्या हुआ।’
आग को और तेज जलाने के लिए उसमें लकड़ी डालते हुए, द्रौपदी इस तरह खिसकी ताकि वह अर्जुन का चेहरा और अधिक स्पष्ट रूप से देख सके।
युधिष्ठिर उठे। उन्होंने कहा, 'हमें काम्यक वन वापस जाना होगा।'
उन्होंने समझाया कि काम्यका में रथों के चलने के लिए पर्याप्त चौड़े रास्ते हैं, इसलिए हस्तिनापुरा और पांचाल के लोगों के लिए हमारे पास आना आसान होगा। वहां से यादवों से संपर्क करना भी हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

युधिष्ठिर के जाने के बाद, अर्जुन हमें उन लोगों की कहानियाँ सुनाने लगा जिन्होंने उसका पीछा किया था। आदिवासियों ने मेरा पीछा हर जगह किया, लेकिन अर्जुन का पीछा सुंदर स्त्रियों ने किया था। द्रौपदी उठ खड़ी हुई, अब उसकी रुचि समाप्त हो गई थी, और वह कुटिया में चली गई। आज मेरी बारी थी उसके साथ सोने की।
अर्जुन ने शिकायत की कि उन्हें कोई शराब नहीं मिली। आश्रमों में केवल सोम रस ही उपलब्ध था, चावल से बनी शराब नहीं।
‘यहां क्या हो रहा है?’
हम तीर्थयात्रा पर गए थे, हमने सभी पवित्र जल स्रोतों का दर्शन किया।
अर्जुन ने कुछ क्षेत्रों में शराब बनाने की विधि का वर्णन करना शुरू किया।
द्रौपदी अंदर इंतजार कर रही थी और लगभग आधी रात बीत चुकी थी, मुझे लगा।
मुझे पता ही नहीं चला कि घंटे कितनी जल्दी बीत गए।
चार साल बाद द्रौपदी फिर से मेरे साथ होगी।
मैं उठा और झोपड़ी के अंदर गया। धुंधले अंधेरे में मैंने देखा कि वह सो गई थी। मैं नीचे झुका और उसके चेहरे को देखा। उसके होठों पर एक हल्की सी मुस्कान थी।
मैंने गला साफ किया और उसका नाम पुकारने ही वाला था कि उसने आँखें खोले बिना धीरे से कहा, 'कालकेया की हत्या। मुझे पूरी कहानी बताओ...'
मैंने खुद को ऊपर उठाया।
नहीं, आज रात मुझे उसके ठंडे शरीर की कोई इच्छा नहीं थी, जब वह अर्जुन के सपने देख रही थी।
मैंने घास की एक चटाई उठाई, बाहर गया और आग के आसपास के उस इलाके में उसे बिछाने के लिए जगह ढूंढने लगा जहाँ मेरे छोटे भाई सोते थे।

4

जब हम काम्यक वन में वापस लौटे, तो भविष्य बताने वाले ऋषि-मुनि युधिष्ठिर से मिलने आए। उनसे बातचीत करना युधिष्ठिर के लिए मनोरंजन और सुकून दोनों साबित हुआ।
हस्तिनापुरा पहुँचते ही, खोई हुई सभी अच्छी चीज़ों की यादें हमें सताने लगीं। एक ब्राह्मण दूत ने हमें बताया कि माता जी स्वस्थ हैं। विदुर ने उनके माध्यम से द्रौपदी के लिए एक सेविका और हमारे लिए दो परिचारिकाएँ भेजी थीं। इसी बीच, द्वारका भेजे गए हमारे दूत ने लौटकर हमें बताया कि सुभद्रा और अभिमन्यु स्वस्थ हैं।
विदुर ने यह संदेश भी भेजा कि उन्हें आशंका है कि दुर्योधन राजसूय यज्ञ करने जा रहा है और इससे वह और अधिक शक्तिशाली हो जाएगा।
'काय करते?'
'जंगल में हमारा निर्वासन काल लगभग समाप्त हो गया है। हमें अभी एक और साल कहीं गुमनाम रहकर गुजारना होगा।'
मेरे प्रिय सहदेव ने मासूमियत से कहा, मानो मेरे मन से ही यह विचार निकाल लिया हो, 'जब यह सब खत्म हो जाएगा और हम वापस चले जाएंगे, तो क्या होगा अगर शकुनि हमें फिर से जुए के खेल के लिए आमंत्रित करे, धोखा दे और जीत जाए? फिर से वही जंगल होगा!'
कई दिनों बाद कृष्ण आए। उन्होंने अर्जुन को गले लगाया और युधिष्ठिर और मुझे आदरपूर्वक प्रणाम किया। माद्री के पुत्रों ने भी उन्हें प्रणाम किया। अर्जुन और कृष्ण की मुलाकात लंबे समय बाद हुई थी; उन्होंने हाथ पकड़े और बाहर चले गए।
सत्यभामा कृष्ण के साथ आई थीं, जिससे द्रौपदी बहुत प्रसन्न हुईं। दोनों स्त्रियाँ कुटिया के अंदर रुक गईं और बातें करने लगीं, या यूँ कहें कि धीरे-धीरे फुसफुसाने और खिलखिलाने लगीं।
जब कृष्ण और अर्जुन वापस आए, तो यह स्पष्ट था कि वे अपने पुनर्मिलन का जश्न मना रहे थे।
कृष्ण ने कहा, ‘तुम्हें यादवों का पूरा समर्थन प्राप्त है। मैंने अर्जुन को बता दिया है कि तुम्हें वह वर्ष कहाँ बिताना है जहाँ तुम्हें गुमनाम रहना है।’

'क्या हमें वह वर्ष पूरा करना ही होगा?'
जी हाँ। यह शर्तों में से एक थी। यह स्थान विराट का राज्य है। राजा विराट धनवान और शक्तिशाली सेना वाले हैं, और मुझे पूरा विश्वास है कि वर्ष समाप्त होने तक वे आपके रिश्तेदार बन जाएंगे। मैंने अर्जुन को यह सब विस्तार से समझा दिया है।
जब कृष्ण अपने दल के साथ चले गए, तो आसपास का वातावरण शांत और वीरान प्रतीत हुआ।
हस्तिनापुरा से फिर दूत आए। उन्होंने कहा, ‘राजा धृतराष्ट्र समय-समय पर वन में पांडवों के भाग्य पर शोक मनाते हैं और अपने दुष्ट पुत्रों को फटकारते हैं।’
मैंने अर्जुन की ओर देखा। तो वह अंधा व्यक्ति अभी भी अपनी भूमिका निभा रहा था। मैं यह कभी नहीं भूला था कि उसे अपने बेटों को जुए में जीतते देखना कितना अच्छा लगता था।
राजसी रीति-रिवाज के अनुसार, युधिष्ठिर ने पूछा, 'क्या मेरे दयालु चाचा ठीक हैं? और मेरी चाची गांधारी कैसी हैं?'
मैं उस बूढ़े व्यक्ति के दुःख का कारण लगभग समझ गया था। द्रुपदों और यादवों ने बड़ी सेनाएँ जुटा ली थीं। मैंने अपने भाइयों को संकेत दिया कि संभवतः वह अर्जुन की यात्राओं से और भी अधिक दुखी थे। उन्हें डर होगा कि अर्जुन ने उन दिव्य शस्त्रों और सैन्य रणनीतियों के रहस्य जान लिए हैं जिनके बारे में हस्तिनापुर के लोगों को कुछ भी पता नहीं था। अर्जुन ने इस बात से सहमति जताई कि यह सच हो सकता है।
सहदेव ने कहा, ‘मैं तुम्हें बताता हूँ कि उसमें राजसूय यज्ञ करने का साहस क्यों नहीं है। कोई भी राजा उस राजा द्वारा किए गए राजसूय यज्ञ को मान्यता नहीं देगा जिसने पांडवों को पराजित नहीं किया हो।’
हममें से कोई भी यह नहीं भूला था कि द्रौपदी को मासिक धर्म के दौरान जुआघर में घसीटकर ले जाया गया था और उसे कितनी शर्मनाक तरीके से अपमानित किया गया था। यह युद्ध में लगे उस गहरे घाव की तरह था जो कभी नहीं भरेगा, एक ऐसा घाव जिसे हममें से हर कोई एकांत में सह रहा था।
युधिष्ठिर ने हमें दिलासा देते हुए कहा, ‘महान विद्वान और ऋषि मार्कंडेय ने हाल ही में कहा था कि हमारे लिए अच्छे दिन आने वाले हैं। देखो, धौम्य आ रहा है। वह भविष्य भी देख सकता है।’

युधिष्ठिर की यह आदत थी कि हम पर आई सारी विपत्तियों का कारण कुरु वंश पर लगे श्राप को बताते थे – एक ऐसा श्राप जिसके बारे में मैंने अक्सर सोचा था कि वह पूरे भारत देश को प्रभावित करता है। हममें से कोई भी उनसे बहस नहीं करता था, क्योंकि कोई फायदा नहीं था। वे हमेशा किसी न किसी प्राचीन कथा का हवाला देते थे जिसमें किसी दैवीय आदेश का जिक्र होता था, ताकि मृत्यु, जन्म, हार या जीत की व्याख्या कर सकें। मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर फिर से जुए का दौर शुरू हो जाए…
मैंने बस इतना ही कहा, 'हमने पवित्र स्थल, पवित्र जल स्रोत, अनगिनत जंगल देख लिए हैं। अब बेहतर होगा कि हम धौम्या से पूछें कि अगले बारह वर्षों में हमें किस प्रकार के अच्छे कर्म करने चाहिए।'
धौम्या चुप रही।
मेरी व्यंग्यात्मक शैली को अनसुना करते हुए युधिष्ठिर ने कहा, 'जीवित रहने का उद्देश्य क्या है? अच्छे कर्म करना और स्वर्ग प्राप्त करना। यही प्रत्येक मनुष्य का परम और एकमात्र लक्ष्य है।'
सहदेव ने कहा कि उन्हें नहीं पता कि स्वर्ग क्या होता है।
‘स्वर्ग केवल उन्हीं के लिए है जो धर्म का पालन करते हैं, जो आत्मसंयमित और शांत रहते हैं, जो दानशील हैं, जो भिक्षा देते हैं और जो साहसी हैं – यही मैंने अपने दादा कृष्णद्वैपायन को कहते सुना है। आखिरकार, उन्होंने ही शास्त्रों का संहिताकरण किया था, इसलिए इन बातों को उनसे बेहतर कोई नहीं जानता।’
धौम्या ने सहमति में सिर हिलाया।
युधिष्ठिर ने हमारे ज्ञान को और समृद्ध करते हुए कहा, 'मेरु के ऊपर हजारों- हजारों मील में फैले दिव्य उद्यान हैं... क्या आप सुन रहे हैं?'
'हां हां।'
नकुल और सहदेव पास आ गए। अर्जुन ने बाणों में पंख बांधने का अपना काम रोक दिया।
द्वार पर खड़ी द्रौपदी ने युधिष्ठिर की बातों में असामान्य रुचि दिखाई: 'बताइए, हमें बताइए। मैं सचमुच सुनना चाहती हूं।'
युधिष्ठिर प्रसन्न थे: पहली बार उनके परिवार के सभी सदस्य उनके ज्ञान को साझा करना चाहते थे।

‘स्वर्गीय उद्यानों में न भूख लगती है, न प्यास; न कुछ मुरझाता है, न दुःख, न सर्दी, न गर्मी, न भय। वे सुंदर सुगंधों और मनमोहक धुनों से भरे हुए हैं। न थकान, न आँसू, न कुछ नष्ट होता है। न पसीना, न दुर्गंध, न मूत्र, न मल। वहाँ के फूलों में दिव्य सुगंध होती है और वे कभी मुरझाते नहीं। वस्त्रों पर धूल कभी नहीं जमती…’
वहाँ विभिन्न लोक हैं, जैसे हमारे यहाँ जाति व्यवस्था है। ऋषि ब्राह्मण लोक को प्राप्त करते हैं और देवताओं का लोक उससे भी ऊपर है। वहाँ धन के लिए कोई होड़ नहीं होती, स्त्रियाँ कलह उत्पन्न नहीं करतीं। वहाँ परोसा जाने वाला भोजन अमृत समान होता है। उस दिव्य लोक में केवल दिव्य प्राणी ही निवास करते हैं, जिस पर हमारे तैंतीस देवता शासन करते हैं। वहाँ न दुःख है, न सुख, न आनंद। सभी बुद्धिमान लोग जो स्वर्ग प्राप्त करते हैं, देवताओं के चरणों में पहुँच जाते हैं।
“ये स्वर्ग के गुण हैं। अब मैं तुम्हें इसकी कमियाँ बताऊँगा। स्वर्ग में भी हर किसी को अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। यदि उनके द्वारा धारण की गई मालाएँ मुरझा जाएँ, तो उन्हें पृथ्वी पर लौटकर मनुष्य के गर्भ से पुनः जन्म लेना होगा।”
ब्रह्मा का लोक देवताओं के लोक से परे है। इस लोक के समाप्त होने तक सभी दोष विद्यमान रहते हैं। केवल एक ही लोक है जहाँ दोष नहीं हैं और वह है ब्रह्मा के लोक से परे, जहाँ विष्णु के चरण स्थित हैं। वह शुद्ध, प्रकाशमान और शाश्वत है। जो लोग इंद्रिय सुखों में फँसे हैं, वे इसे कभी प्राप्त नहीं कर सकते। केवल वे ही इसे प्राप्त कर सकते हैं जो अपनी इंद्रियों का त्याग कर गहन ध्यान में मृत्यु को स्वीकार करते हैं…
हमने उनकी बातें ध्यान से सुनीं। मुझे पता था कि मैं कभी विष्णु के चरणों तक नहीं पहुँच पाऊँगी। मैं कामुक इच्छाओं में जकड़ी हुई थी। लेकिन जब मैंने दूसरे स्वर्गों के बारे में सोचा…
एक ऐसा स्वर्ग जहाँ भूख और पसीना न बहाना पड़े... मैंने एक शंका व्यक्त की। 'क्या कभी किसी ने स्वर्ग का त्याग किया है?'
धौम्या ने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया। 'हाँ, एक बार। मुलगाला नाम के एक महान ऋषि।'
‘उसने ऐसा क्यों किया?’

धौम्य को यह बात पता नहीं थी। युधिष्ठिर तब तक पाप और पुण्य कर्मों के बारे में बोलते रहे जब तक हम शाम की प्रार्थना के लिए उठ नहीं गए।
अगले दिन, विदुर द्वारा भेजा गया एक दूत एक घोड़े द्वारा खींचे गए रथ में तेजी से आया। उसने युधिष्ठिर से बात की।
दुर्योधन जानता था कि हम काम्यका में हैं। उसने कर्ण, शकुनी, अपने भाइयों और परिवार के साथ एक विशाल जुलूस निकालते हुए इस रास्ते से आने की योजना बनाई थी। रसोइये, संगीतकार और वेश्याएँ भी उनके साथ थीं। राजा आम तौर पर साल में एक बार इस तरह का जुलूस निकालते थे ताकि जंगल में मौजूद मवेशियों को इकट्ठा करके भगाया जा सके।
युधिष्ठिर ने कहा, 'विदुरा कहते हैं कि हमें बहुत सावधान रहना चाहिए।' ‘कौरव अपने वैभव और प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करते हुए जुलूस में हमारे सामने से गुजरना चाहते हैं, जबकि हम यहां वनवासियों की तरह रहते हैं, है ना?’ नकुला ने नाराजगी से पूछा।
मुझे यकीन नहीं था कि वे बस इतना ही चाहते थे। अगर यहाँ कोई टकराव होता, तो बाहर किसी को पता नहीं चलता। काम्यक वन में पड़े पाँच शवों की किसी को परवाह नहीं होती। अगर उनकी पहचान पांडवों के रूप में भी हो जाती, तो लोग यही मानते कि डाकुओं या आदिवासियों ने उन्हें मारा है।
अर्जुन ने मेरी बात से सहमति जताई। 'ऐसे जुलूसों के दौरान जब जंगल में अफरा-तफरी मची होती है, तब भटकते हुए तीरों से घायल होकर अक्सर लोग मर जाते हैं।'
युधिष्ठिर ने कहा, “चलो हम अपना रोज़मर्रा का काम जारी रखें। अगर वे यहाँ आते हैं, तो हम ऐसा व्यवहार करेंगे मानो वनवास का हम पर कोई असर नहीं हुआ हो, और उनका सहर्ष स्वागत करेंगे। शास्त्रों में लिखा है कि चाहे कोई भी अतिथि हो, उसका पाँच उपहारों से स्वागत करना चाहिए: पहले उसके पैर धोना, फिर उसे अपनी आँखें, कान, हृदय और भोजन देना। यही नियम है।” उन्होंने अपने राख और काले रंग के हिरण की खाल के वस्त्र पर चिपके हुए छोटे-छोटे रुई के दानों को निकालकर फेंक दिया।
हमने तय किया कि हम चारों अलग-अलग जगहों पर खड़े होकर कौरवों की गतिविधियों पर नजर रखेंगे।

एक दिन, हमें दूर से चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें, हथियारों की खड़खड़ाहट और घोड़ों के खुरों की आहट सुनाई दी। हमने ध्यान से सुना। नहीं, वे इस दिशा से नहीं आ रहे थे। आवाज़ें धीरे-धीरे मंद पड़ गईं।
उस रात, हमें इंसानी आवाज़ें सुनाई दीं। आधी नींद में ही मैं जल्दी से जाग गया। द्रौपदी ने मुझसे कुछ पूछा, लेकिन मैंने बिना रुके अपना गदा और भाला उठाया और बाहर निकल गया। मैंने अर्जुन को बाहर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते देखा। एक गड्ढे में सुलगती आग की हल्की रोशनी में हमने तीन सैनिकों को अपनी ओर आते देखा, जिनके हाथ फैले हुए थे, मानो वे हमसे लड़ने नहीं आ रहे हों। नकुल और सहदेव आए और आग को तब तक तेज़ किया जब तक वह भड़क उठी।
वे दुर्योधन के सैनिक थे। वे अंत में पहुंचे युधिष्ठिर के सामने घुटने टेककर उन्हें प्रणाम किया।
‘हमें बचाओ!’
हमारे उठे हुए भाले और तख़्ते लगे धनुष उन पर नज़र रखे हुए थे।
उन्होंने हमें बताया कि वे न तो जासूस थे और न ही शत्रु। जुलूस के दौरान, दुर्योधन और उसके साथियों का सामना किसी दूर देश के एक सैनिक से हुआ। मनोरंजन के मूड में दुर्योधन ने उसे बांधने का आदेश दिया। कौरवों को यह एहसास नहीं था कि चित्रसेन के अनुयायी पास ही एक झील के किनारे विश्राम करने के लिए रुके हुए थे। इससे पहले कि वे अपने हथियार निकाल पाते, कौरवों को घेर लिया गया और बंदी बना लिया गया।
चित्रसेना और उसके अनुयायी सुबह तड़के कौरवों को बंदी बनाकर निकलेंगे। सैनिक मदद की गुहार लेकर आए थे।
‘यह हस्तिनापुरा और पूरे कुरु वंश के लिए कलंक है। हम दयालु पांडवों से हमारी सहायता करने की विनती करते हैं।’
‘चित्रसेना ने दुर्योधन और उसके गिरोह को तब भी बंदी बना लिया जब कर्ण उनके साथ था? अविश्वसनीय! यह चित्रसेना कौन है?’
सैनिकों को पूरा यकीन था कि चित्रसेना और उसके अनुयायी जादूगर थे। उनकी सैन्य रणनीतियाँ विचित्र थीं। वे तो अपनी इच्छा से गायब भी हो सकते थे। हम पांचों इस मामले पर चर्चा करने के लिए एक तरफ हट गए।
‘चित्रसेना ने वही किया जो हमें करना चाहिए था। हमें उन्हें प्रणाम करना चाहिए, बधाई देनी चाहिए, उन्हें अपना सहयोगी बनाना चाहिए। हम और क्या कर सकते हैं?’ अर्जुन हँसे।

मैंने भी यही सोचा था कि अब हमें सैनिकों को भेज देना चाहिए, सो जाना चाहिए और सुबह चित्रासेना से मिलना चाहिए।
लेकिन युधिष्ठिर हमारे उत्सव में शामिल नहीं हुए। उन्होंने कहा, 'हम आपस में झगड़ सकते हैं या शत्रु हो सकते हैं। लेकिन क्या यह धर्म है कि हम चुपचाप खड़े होकर किसी नीच बदमाश को अपने ही कुल पर हमला करते हुए देखें? हमें इसी बात पर विचार करना चाहिए।'
अर्जुन ने कहा, ‘मैं इस चित्रसेना को जानता हूँ। अगर मेरा अनुमान सही है, तो वह चित्रांगदा के पिता का करीबी रिश्तेदार है। वह न तो जादूगर है, न ही अछूत है और न ही आदिवासी है।’
स्पष्ट रूप से बेचैन दिख रहे युधिष्ठिर ने अपनी लंबी दाढ़ी में उंगलियां फिराईं और जमीन की ओर देखते हुए खड़े रहे। 'यह सच है कि दुर्योधन ने हमारे विरुद्ध एक गंभीर पाप किया है। फिर भी, मुझे लगता है कि हमें उसकी मदद करनी चाहिए।'
माद्री के बेटों ने एक साथ विरोध जताया।
मेरे बड़े भाई ने मेरी तरफ देखा। 'तुम्हें फैसला करना होगा।'
मैं दुविधा में था। 'मेरे लिए यह धर्म, दया या पारिवारिक प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं है।'
युधिष्ठिर अपनी मुट्ठियाँ भींचते और खोलते हुए इधर-उधर टहल रहे थे। “जब लोगों को पता चलेगा कि पांडवों ने, जिन्होंने उनके हाथों इतना कष्ट सहा, संकट के समय उनकी सहायता की, तो हम में से कौन अधिक शक्तिशाली दिखेगा, वे या हम? यह केवल धर्म का मामला नहीं है, इसमें राजनीतिक रणनीति भी शामिल है।”
मुझे अचानक एहसास हुआ कि मेरा बड़ा भाई कोई कमज़ोर नहीं था। वह कायर भी नहीं था, जो जंगल में भटकता रहे और अपनी मूर्खता के कारण सब कुछ खो देने के बाद भाग्य को दोष देता रहे। वह अब भी राजा की तरह गर्व से सिर ऊंचा करके खड़ा रह सकता था।
मैंने अर्जुन से कहा, ‘वह सही कह रहा है, युधिष्ठिर की बात सही है।’
अर्जुन तुरंत रवाना हुए। वे अगली शाम चित्रसेना और चार सैनिकों के साथ लौटे। दुर्योधन उनके पीछे खड़ा था, उसके हाथ जंगली लताओं से बंधे थे, सिर झुका हुआ था, मानो वह एक कैदी हो। उसने कोई आभूषण नहीं पहना था, न ही उसके पास कोई हथियार था।

चित्रसेना ने अपने अनुयायियों को दुर्योधन के हाथों की गांठें खोलने का आदेश दिया। उन्होंने उसके टखनों को बांधने वाली चमड़े की पट्टी काट दी। दुर्योधन सिर झुकाए खड़ा रहा और अपनी कलाईयों पर पड़े नीले निशानों को सहलाता रहा।
युधिष्ठिर ने कहा, ‘दुर्योधन, फिर कभी इतनी जल्दबाजी मत करना। जल्दी से हस्तिनापुर लौट जाओ।’
दुर्योधन हमें धन्यवाद या प्रणाम किए बिना ही जल्दी से चला गया। चित्रसेना मुस्कुराई। 'मैं उसे आपकी उपस्थिति में रिहा करना चाहती थी। मैंने उसके अत्याचारों के बारे में सुना है।'
हमने चित्रसेना से दुर्योधन की इस स्थान की यात्रा के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि चित्रांगदा के पिता चित्रवाहन को संदेह था कि कौरव जुलूस के दौरान हम पर हमला करेंगे, इसलिए उन्होंने चित्रसेना को सैनिकों के साथ काम्यका भेजा और उनसे कहा कि वे वहाँ आनंद यात्रा का बहाना बनाकर प्रतीक्षा करें।
हम उत्साह से भरे हुए थे। हम, पांडव, अकेले नहीं थे, विभिन्न स्थानों पर हमारे मित्र और रिश्तेदार हमारे बारे में सोच रहे थे, हमारी रक्षा कर रहे थे। इंद्रप्रस्थ केवल जंगल में बसा एक गाँव नहीं था।
चित्रसेना ने अर्जुन को एक बार फिर गले लगाया, हमें प्रणाम किया और हमारे आतिथ्य सत्कार के प्रस्तावों को विनम्रतापूर्वक और स्नेहपूर्वक अस्वीकार कर दिया। वह अपने सैनिकों के साथ वापस चले गए।
मैंने युधिष्ठिर की ओर देखा। वह अपनी मुस्कान छिपाने की कोशिश कर रहे थे।

5

दुर्योधन ने एक भव्य पूजा का आयोजन किया था जिसमें कई राजाओं ने भाग लिया था, हालांकि यह राजसूय पूजा नहीं थी। कर्ण ने कई देशों का दौरा किया था और उनसे अनुरोध किया था कि यदि कौरवों को आवश्यकता हो तो वे उन्हें सेना और सहायता प्रदान करें। उनका हर जगह ऐसा स्वागत हुआ मानो उन्होंने शानदार विजय प्राप्त की हो। हस्तिनापुर से आए एक ब्राह्मण ने हमें यह समाचार दिया।
युधिष्ठिर ने मुस्कुराते हुए कहा, “उसने जो कहा वह सही ही होगा। वह हमारे चाचा विदुर द्वारा नियुक्त एक भाड़े का जासूस है।” उन्होंने आगे कहा, “हमारे जासूस अब कई जगहों पर मौजूद हैं।”
युधिष्ठिर ने एक बार फिर मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। जब वे ऋषियों के साथ बैठकर ग्रहों की स्थिति का अवलोकन करते हुए भविष्यवाणियाँ करते थे, जब वे अपनी दुखद परिस्थितियों का बखान करते थे, तब ऐसा लगता था मानो वे दादाजी जितने बूढ़े हो गए हों। उनकी कोमल आवाज़ में शब्द धीरे-धीरे, विचारपूर्वक उच्चारित होते थे। वे अक्सर बड़बड़ाते हुए चलते थे, मानो स्वयं से ही बातें कर रहे हों। लेकिन कभी-कभी, जब उनका चेहरा लाल हो जाता था और वे आकाश की ओर देखते थे, तब वे अजेय प्रतीत होते थे।
जब दूसरी घटना घटी, तो हमें यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या काम्याका का जंगल हमारे दुश्मनों का ठिकाना बनता जा रहा है।
उस समय युधिष्ठिर ऋषि भद्र से मिलने उनके आश्रम गए हुए थे, और हम चारों जंगल में शिकार करने गए हुए थे।
द्रौपदी अपनी दासी के साथ पराग वाले फूल ढूंढने जंगल गई थीं ताकि उन्हें चंदन के पेस्ट के साथ पीस सकें। जंगल में शिकार करने आए एक राजा ने उन्हें कोई सुंदर आदिवासी लड़की समझकर एक सिपाही को उन्हें लाने के लिए भेजा। द्रौपदी ने सिपाही को खूब खरी-खोटी सुनाई और उसे भगा दिया। फिर उन्होंने एक मूर्खतापूर्ण काम किया: आश्रम लौटने के बजाय, दोनों स्त्रियाँ जंगल में भटकती रहीं। इस बार तो शिकारी खुद उन्हें लेने आ गया।
यह घोषणा करते हुए कि वह कोई निषाद स्त्री नहीं है, द्रौपदी ने उसे बताया कि वह कौन है।

राजा हँस पड़ा। उसने कहा, 'तो और भी अच्छा है। फिर तुम मेरे महल में महिलाओं के कमरे में रह सकती हो।'
फिर हाथापाई शुरू हो गई। नौकरानी चीखती हुई हममें से किसी एक को ढूंढने और घटना बताने के लिए भागी। आश्रम में केवल धौम्या ही था। मैंने उसे कोसते हुए और नौकरानी को विलाप करते हुए सुना। उस समय मैं हिडिम्बी द्वारा सिखाए गए तरीके से एक जंगली खरगोश का पीछा कर रहा था, एक ऐसा अभ्यास जिसने जंगल में इस निर्वासन के दौरान मेरी ताकत और गति बनाए रखने में मदद की।
मैं कुछ चट्टानों पर चढ़ गया और देखा कि क्या हुआ था। द्रौपदी अभी-अभी अपने बंदी बनाने वाले के चंगुल से छूटी थी और उसके रथ से कूदने की कोशिश कर रही थी, जो चलने लगा था। उसी क्षण अर्जुन दूसरी दिशा से वहाँ पहुँचे। वे अक्सर कहते थे कि वे खतरे को देखने या सुनने से पहले ही भांप लेते थे।
मैं चट्टानों से नीचे कूद गया। कुछ ही मिनटों में, मैंने तलवार खींचे हुए एक सैनिक को धक्का देकर हटा दिया, सारथी की गर्दन पर पड़ी चाबुक को कसकर पकड़ा, उसे ऊपर उठाया, ज़मीन पर पटका और रथ में कूद गया। बंदी बनाने वाले ने द्रौपदी को छोड़ दिया और नीचे कूद गया। मदद के लिए तेज़ी से आ रहे एक रथ को पकड़कर वह उसमें चढ़ गया। सारथी ने कुशलता से घोड़ों को मोड़ा और उन्हें दौड़ाया, लेकिन अर्जुन के अचूक बाण का शिकार हो गया। द्रौपदी बच गई थी, लेकिन हम उस दुष्ट को भागने नहीं दे सकते थे। उसे यह नहीं पता था कि जंगल में वह चाहे जिस भी अनजान रास्ते पर चले, मैं उसके रथ तक पहुँच जाऊँगा। मुझे पता था कि धौम्य द्रौपदी का ख्याल रखेगा। और अर्जुन उसके पीछे छोड़े गए किसी भी साथी का मुकाबला करने में सक्षम था।
जंगल के ऊबड़-खाबड़, घुमावदार रास्तों पर रथ को इतनी तेज़ी से चलाना किसी के लिए मुमकिन नहीं था। मैं जंगली सूअर से भी तेज़ दौड़ा, घनी झाड़ियों को रौंदता हुआ। उनसे आगे पहुँचकर मैं एक विशाल अश्वत्थ वृक्ष के पीछे छिप गया। इससे पहले कि घोड़े मोड़ पर मुड़कर अपनी गर्दन फैला पाते, मैं चिल्लाते हुए रास्ते के बीचोंबीच कूद पड़ा। उस आदमी ने लगाम कसकर पकड़ ली, लेकिन घोड़े अपना संतुलन खो बैठे और उछल पड़े। वह असमंजस में था, तय नहीं कर पा रहा था कि घोड़ों को काबू में करने की कोशिश करे या मुझसे भिड़े। इससे पहले कि वह लगाम छोड़ पाता और अपना धनुष-बाण उठा पाता, मैंने उसे खींचकर ज़मीन पर पटक दिया। वह उठने की कोशिश करने लगा, लेकिन मैंने अपनी कोहनियों से उसकी छाती पर वार किया। मैं यहीं रुक सकता था। लेकिन मैंने

उसकी चमड़े की बेल्ट पकड़ ली, जिस पर छोटी-छोटी सोने की घंटियाँ सिली हुई थीं, और उसे घसीटकर अपने शिविर में ले आया। तब तक अर्जुन भी वहाँ पहुँच चुके थे।
उनके देर से आने से नाराज होकर नकुल और सहदेव ने कैदी को अपने कब्जे में ले लिया और उसके हाथ पीछे की ओर बांध दिए।
उसके सैनिकों और सहायकों का क्या हुआ?
अर्जुन ने कहा, 'मैंने उन्हें छोड़ दिया और सारथी के शव सहित दोनों रथों को वापस भेज दिया।'
युधिष्ठिर हमारे पास आए, कैदी को देखा और आश्चर्य से बोले, 'सिंधु का राजकुमार?'
क्रोध से आग बबूला होकर जयद्रथ ने बारी-बारी से हम सभी की ओर देखा।
सिंधु के राजकुमार जयद्रथ, जिनका विवाह कौरवों की बहन दुशाला से हुआ था। मैं उनसे पहली बार मिल रही थी। वे दुर्योधन के बहनोई थे। इस खुशी के अवसर पर मैंने उनके कानों पर बार-बार हाथ के पिछले हिस्से से थप्पड़ मारे। बाद में मैं उन्हें अतिथि के लिए निर्धारित पाँच पारंपरिक उपहार दूंगी। Yudhishtira said, ‘Don’t, Bhimasena, don’t …’
‘रावण के इस नए अवतार ने द्रौपदी को अपने रथ में ले जाने का साहस किया। उस पर दया क्यों दिखाई जाए?’
जयद्रथ की आंखों में आक्रोश साफ झलक रहा था।
मैंने उसे दोबारा मारने के लिए झपट्टा मारा, और युधिष्ठिर ने सख्ती से आदेश दिया: 'नहीं!'
मैं गुस्से से आग बबूला हो गया। 'मैंने इससे भी कम कारणों से बेवकूफ आदिवासियों को मार डाला है।'
युधिष्ठिर के रवैये से अर्जुन भी परेशान थे। उन्होंने सुझाव दिया कि पहले अपराधी से उसका गुनाह कबूल करवा लें, फिर उसे जाने दें। सहदेव अपना सिर मुंडवाना चाहते थे। नकुल का मानना था कि मुंडन के बाद उसके सिर पर पाँच छोटी-छोटी लटें छोड़ दी जानी चाहिए, ताकि यह साबित हो सके कि उसने गुनाह किया है।
मैंने कहा, 'हम उसे तभी जाने देंगे जब वह हमारे लिए सौ घोड़े और एक हजार गायें भिजवा देगा। सिंधु राज्य में एक दूत भेजो, जिसके पास उसके द्वारा स्पष्ट रूप से बताया गया संदेश हो।'

इत्र का प्रयोग करना होगा। मुझे अपना सिर ढकना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि बोलते समय मेरी सांसों से मीठी सुगंध आए। चलते समय मेरी कमर थिरकनी चाहिए। आसान है!”
मुझे पता था कि कुछ महलों में हिजड़े पहरेदार के रूप में काम करते हैं। हस्तिनापुरा में हमारे यहाँ कोई हिजड़ा नहीं था, लेकिन बचपन में मैंने हाथियों के बाड़े में काम करने वालों को उनके बारे में अश्लील चुटकुले सुनाते सुना था।
इसके बाद युधिष्ठिर ने नकुल के बारे में बात की। उन्हें अस्तबल में घोड़ों की देखभाल करने वाले के रूप में नौकरी मांगनी थी, क्योंकि वह घोड़ों के गुणों का आकलन कर सकते थे और उन्हें प्रशिक्षित करना सीख चुके थे।
सहदेव, जिसके पास कोई विशेष विशेषज्ञता नहीं थी, पशुओं के बाड़े में काम कर सकता था।
उसी समय द्रौपदी हमारे साथ आ गईं। युधिष्ठिर सहदेव के बारे में बात करते रहे। उन्होंने कहा कि विराट के गौशालाओं में अनगिनत मजदूर होते थे, और अगर उनमें से कोई अनुभवहीन भी होता तो किसी को पता नहीं चलता था। ‘हम सबको यही कहना चाहिए कि हमने इंद्रप्रस्थ में युधिष्ठिर के अधीन काम किया है। इससे हस्तिनापुर या इंद्रप्रस्थ के बारे में पूछे जाने पर जवाब देना आसान हो जाएगा। मैं युधिष्ठिर की पसंद-नापसंद और यहां तक कि उनकी मूर्खताओं के बारे में भी सच्चाई से बता सकता हूं।’
अभी भी बेहद गंभीर दिखते हुए युधिष्ठिर ने कहा, 'कृष्ण ने विराट से पहले ही अनुरोध किया है कि वे उन लोगों के एक समूह को नियुक्त करें जिन्होंने युधिष्ठिर के बुरे दिनों में उनकी सेवा छोड़ दी थी। इसलिए आप में से किसी को भी यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि आपको अस्वीकार कर दिया जाएगा।' ‘द्रौपदी का क्या हुआ?’ नकुल ने पूछा।
उसे कहना होगा कि वह पांडवों की पत्नी द्रौपदी की दासी थी। वह विराट की पत्नी के लिए चिकना, सुगंधित चंदन का पेस्ट पीसेगी और उसकी सेविका बनकर रहेगी।
सहदेव ने हमारे बड़े भाई को याद दिलाया कि उन्होंने अभी तक मेरा जिक्र नहीं किया था।

युधिष्ठिर ने सहदेव की ओर गंभीरता से देखा। ‘क्या मुझे तुम्हें बताना पड़ेगा कि हमारा मूर्ख वृकोदरा क्या करेगा? वह तो रसोइया ही बनेगा, बिलकुल!’
युधिष्ठिर को छोड़कर हम सब हंस पड़े। उन्होंने उसी गंभीर स्वर में आगे कहा, 'जुए के खेल के दौरान, मुझे राजा के खाए हुए अवशेष मिल सकते हैं। रसोइए के लिए यह बात ध्यान में रखना उपयोगी होगा।'
जब हम सब दोबारा हँसे, तो युधिष्ठिर ने अपना बनावटी गंभीर रवैया छोड़कर हमारे साथ हँसना शुरू कर दिया।
हमें इतना प्रसन्न करने का कारण केवल यह विचार नहीं था कि जंगल में हमारा निर्वासन समाप्त हो रहा था। हम एक बार फिर महल में रहने वाले थे।
काम्यका में दिन की शुरुआत अप्रिय रही और एक क्षण ऐसा लगा मानो हमारे चारों ओर मंडरा रहा खतरा किसी आपदा में परिणत हो जाएगा। हालांकि, इसका अंत हंसी-खुशी में हुआ।
इसके बावजूद, जब मैं सोने गया, तो जयद्रथ की नाग विष से भरी आँखें मुझे याद रह गईं। कौरवों में हमारा एक और शत्रु था जिससे हमें डरना था - दुर्योधन का बहनोई, जिसे अपने पाँच छोटे बालों के गुच्छों के साथ भागना पड़ा।

भाग 6

विराटा का राज्य

NARENDRA

1

विराटा में अपने प्रवास के दौरान, मुझे एक बार फिर एहसास हुआ कि शारीरिक शक्ति वरदान और अभिशाप दोनों हो सकती है।
मैंने विराटा में वल्लव के रूप में प्रवेश किया, जो कभी युधिष्ठिर के महल में मुख्य रसोइया हुआ करता था।
जब किसी रसोइए के पास काम नहीं होता था, तो वह महल में इधर-उधर घूम सकता था, यहाँ तक कि महिलाओं के कमरों के बिल्कुल पास तक भी। और अगर विराट की पत्नी की दासी मालिनी किसी रसोइए से थोड़ी देर बात करती, तो किसी को शक नहीं होता। न ही दूसरी दासियों को जलन होती अगर सुंदर मालिनी, भद्दे शरीर, बिखरे हुए तांबे जैसे बालों और बिना संवारी दाढ़ी वाले, गंदे काले कपड़ों में वल्लव से बात करती। मैं कभी-कभी सहदेव से पशुओं के बाड़े में और नकुल से अस्तबल में मिल लेता था। लेकिन युधिष्ठिर से अकेले मिलना मुश्किल था। मत्स्य राज्य के राजा विराट, युधिष्ठिर के बताए अनुसार जुए के कहीं अधिक शौकीन थे। उनके नए सेवक कंका को अपना काम बहुत पसंद था और वह अक्सर राजा से भी अधिक खेल जीतता था। एक बार जब युधिष्ठिर और मुझे कुछ समय अकेले में मिला, तो उसने मुझे बताया कि वह कभी-कभी राजा को जीतने देता था ताकि उन्हें बुरा न लगे।
राजकुमारी उत्तरा का महल महल के मुख्य भाग से सटा हुआ था, और नृत्य कक्ष उसके बगल में था। संगीत और नृत्य सिखाने आई बृहन्नला के लिए कक्ष के ठीक आगे रहने की व्यवस्था की गई थी।
शुरू में द्रौपदी को ज़्यादा शिकायतें नहीं थीं। उन्होंने मुझे बताया कि रानी सुदेशना ने अपनी नई सेविका की स्वच्छता और शालीनता को देखकर उसे सहेली की तरह मानना शुरू कर दिया था। उन्होंने यह भी बताया कि रानी का भाई, जो अक्सर अपनी बहन से मिलने आता था, अपनी सेविका को भावपूर्ण निगाहों से देखता था।
मैंने कहा, ‘जब नौकरानी इतनी खूबसूरत हो तो यह कोई असामान्य बात नहीं है,’ मानो यह कोई मामूली बात हो। ‘कई जगहों पर नौकरानियों का काम रानी के भाइयों या वयस्क बेटों के लिए ही होता है।’
'राजा द्रुपद के महल में ऐसी बात कभी बर्दाश्त नहीं की जाती।'
लेकिन यह तो विराट का महल था।

द्रौपदी ने कहा कि उसे पता चला है कि दासियाँ नकुल को प्रसन्न करने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा कर रही हैं, और उसे सहदेव के लिए दुख हुआ।
द्रौपदी ने सबको बताया था कि उसका एक पति है, इस उम्मीद में कि महल के पुरुषों का मनोरंजन करने के लिए विवाहित महिलाओं को नहीं बुलाया जाएगा। मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम्हें कंका की कोई खबर मिलती है?'
'इन चार महीनों में उनकी निजी संपत्ति में वृद्धि हुई है।'
मैंने हंसते हुए कहा, 'क्या आपको लगता है कि विराटा अपने देश को दांव पर लगा देगा?'
जल्द ही राज्य में वार्षिक उत्सव का समय आ गया। महल के प्रांगण में एक मंच बनाया गया। जादूगर, कलाबाज, गायक और नर्तक आए। पहलवान भी मौजूद थे। सभी ने अपने कौशल का प्रदर्शन किया और पुरस्कारों के लिए प्रतिस्पर्धा की। विराट की सेना के बलवान और तगड़े नौजवानों को अखाड़े में भेजा गया ताकि वे बाहर से आए एथलीटों से मुकाबला कर सकें। बाहर से आए एथलीटों में से एक, जिसने अपनी बाहों और कलाईयों पर कंगन पहन रखे थे, तिरस्कारपूर्वक अलग खड़ा रहा और अखाड़े में प्रवेश करने से इनकार कर दिया। जाहिर तौर पर, उसने घमंड से कहा था कि उसे नहीं लगता कि उसे यहाँ कोई ऐसा प्रतिद्वंद्वी मिलेगा जो उसका मुकाबला कर सके, और वह अपने हाथों की ताकत से किसी आसान शिकार को हराने के विचार को पसंद नहीं करता था।
मैं उन नौकरों में से था जो कुश्ती के मुकाबले देखने गए थे।
तिरछी आंखों वाले दुकानदार ने मुझे चिढ़ाया। 'यह वल्लावा उससे लड़ सकता है; शारीरिक बल में वह उसका एकदम सही मुकाबला होगा।'
राजा भी यह सोचकर हैरान था कि वह उस एकांतप्रिय और विद्रोही पहलवान की वीरता को देखने का प्रबंध कैसे कर सकता है, तभी उसे किसी कारणवश अपने रसोइए का ख्याल आया।
मुझे बुलाया गया। मैं राजा के सामने आदरपूर्वक खड़ा हुआ और सिर झुकाकर प्रणाम किया। मैंने कहा कि मैंने बचपन में कुश्ती के बारे में काफी कुछ सीखा था, लेकिन रसोइया बनने के बाद मैं सारे दांव-पेच भूल गया था।
राजा ने मेरे विशाल शरीर को देखकर कहा, 'बस कुछ देर के लिए इसे रोके रखो, उसके बाद तुम हार मानकर पीछे हट सकते हो। मैंने सुना है कि इस जीमूथा के हाथों हार भी तुम्हें प्रसिद्धि दिलाएगी।'

उन्होंने देखा कि मैं हार मानने ही वाली थी। नौकर-चाकर तुरंत मेरे चारों ओर जमा हो गए, मेरे काले रसोई के कपड़े उतार दिए और मेरी कमर पर बाघ की खाल बांध दी। उनमें से एक ने मेरे बाल बांधने में मेरी मदद की। रसोई के कर्मचारी और अन्य नौकर मुझे तैयार होते देखने के लिए बाहर आ गए।
उनमें सबसे बड़े निरथन ने मेरी छाती पर हाथ रखकर कहा, 'मैं वल्लवा पर पांच चांदी के सिक्कों की शर्त लगाता हूं। कोई इससे बेहतर शर्त लगा सकता है?' मैं राजा विराट को प्रसन्न करने के लिए ही अखाड़े में उतरा था। जीमूथा ने मेरी ओर देखकर सहमति में मुस्कुरा दिया।
मेरी ताकत का अंदाज़ा लगाने के लिए उसने पहले मुझे अपनी हथेली से एक प्रहार किया। जानबूझकर अपनी गति धीमी करते हुए, मैंने उसे कई प्रहार करने दिए। उसकी मुद्रा और चालों को देखकर मैंने अनुमान लगाया कि उसकी शैली यवन थी। इसका मतलब था कि वह मुझे किसी भी क्षण गिरा सकता था, और मुझे अपने पैरों की पिंडलियों की रक्षा करनी थी। एक पहलवान अपने प्रतिद्वंद्वी का आकलन सिर से सिर, हाथ से हाथ, कंधे से कंधे के टकराव में करता है। जीमूथा की यवन शैली हमारी शैली के समान थी, जो टखनों से की जाती थी।
मेरी नज़र के कोने से, मैंने अखाड़े के एक तरफ़ महिलाओं के एक समूह को कतार में खड़े देखा, जिनमें द्रौपदी भी शामिल थीं। जब जीमूथा ने पहले मेरे सीने पर हाथ से मारा और फिर जब उसने मुझे अपनी ओर खींचने की कोशिश की, तो मैंने हारने का नाटक किया। रसोई के कर्मचारी बारी-बारी से वल्लव को डांटने और प्रोत्साहित करने लगे। मैं निरथन की आवाज़ साफ़ सुन सकता था: उसके शब्दों से पता चलता था कि वह भूल गया था कि यह एक शाही अखाड़ा है।
जब मुक्केबाजी शुरू हुई, तो मैंने अपनी पूरी ताकत अपने हाथों में लगा दी और जीमूथा के चेहरे पर आश्चर्य के भाव देखे। देखने वाले खुश हो गए। निरथन चिल्लाने लगा। इससे पहले कि जीमूथा अपने आश्चर्य से उबर पाता और अपनी रणनीति बदल पाता, मैंने उसकी गर्दन पर हमला कर दिया। मेरे विशाल दाहिने हाथ ने उसके बाएं कान के ठीक नीचे वार किया और वह लड़खड़ा गया।
‘उसे मार डालो!’ यह निराथन की ही चीख रही होगी।
मैंने अपनी छाती और गर्दन को जकड़ लिया और कोहनी से उसे अगला वार किया; वह झुक गया। उसने अपना शरीर घुमाया, मानो किसी और वार की उम्मीद कर रहा हो। मैंने उसकी गर्दन पकड़ी, उसका संतुलन बिगाड़ा, कमर से उठाकर उसे तेज़ी से घुमाया। मैंने अपने पैर के अंगूठे ज़मीन में गाड़ दिए, पैर ऊपर उठाए, कंधों

से हिलाया और फिर उसे नीचे पटक दिया। जैसे ही वह मेरे सामने गिरा, मैंने अपने हाथ पोंछे। दर्शक तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठे।
अत्यंत प्रसन्न होकर राजा ने मुझे सौ सिक्के देने का आदेश दिया। मैं लोगों के एक समूह से घिरा हुआ था, जिन्हें स्पष्ट रूप से विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं महज़ एक बूढ़ा योद्धा हूँ जिसने कभी ये युद्ध कौशल सीखे थे और फिर भूल गया था। अपने पूर्वजों के आशीर्वाद को अपनी जीत का श्रेय देते हुए मैं धीरे से वहाँ से चला गया।
द्रौपदी दौड़कर मेरे पास आई। ‘तुम्हें उसे मार डालना चाहिए था! तभी तो वल्लवों को डर लगने लगेगा।’
‘यह तो सिर्फ विराट का मनोरंजन करने के लिए था, है ना? वैसे भी, वह मेरा दुश्मन नहीं है, तो मैं उसे क्यों मारूंगा? मैंने जो किया वह काफी था।’ मैं रसोई की ओर चला गया।
इसके बाद, रसोई के मुखिया ने मेरे किसी भी काम में कोई कमी नहीं निकाली, कभी शिकायत नहीं की कि मैं आलसी हूँ। मुझे विशेष व्यंजन परोसे जाते थे, और अगर मैं लंबे समय तक बाहर घूमने चला जाता था तो मुझे डांट नहीं पड़ती थी। जीमूथा की हार की खबर सुनकर कुछ और पहलवान मुझे ढूंढते हुए आए। मैंने उनसे बचते हुए कहा कि मैं दोबारा अपनी किस्मत आजमाने के लिए तैयार नहीं हूं। अन्य राजधानियों के विपरीत, विराटा में घर एक-दूसरे से सटे हुए नहीं, बल्कि दूर-दूर बने हुए थे। राजा के सेवकों ने मुझे बताया कि उनके पास 40,000 गायें थीं। जंगल में कई गौशालाएँ थीं, और एक ग्रामीण ग्वालों की देखरेख करता था। सहदेव महल की नीची दीवार और किले की दीवार के बीच बनी पाँच गौशालाओं में से एक में काम करते थे। एक दिन मैं उन्हें वहाँ ढूँढ़ने गया, लेकिन वे नहीं मिले।
मैं किले के द्वार से बाहर निकला। पहरेदारों ने स्नेहपूर्वक मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा कि मैं कैसा हूँ। वल्लव प्रसिद्ध हो चुका था। अपने वस्त्र बदलकर अलग-अलग नामों से महल में प्रवेश करने से पहले, हमने अपने हथियार राजमार्ग से काफी दूर उगने वाले एक ऊँचे पेड़ की शाखाओं से बाँध दिए थे। सहदेव ने जंगल में मिले एक कंकाल को पेड़ की एक शाखा पर लटका दिया था, ताकि चरवाहे, पेड़ पर फांसी लगाने वाले व्यक्ति के भूत के डर से, उस रास्ते से न गुजरें।

मैंने यह सुनिश्चित किया कि आस-पास कोई नहीं है और पेड़ पर चढ़ गया। कंकाल अभी भी एक शाखा से लटका हुआ था। मैंने जाँच की कि क्या वे हथियार, जिन्हें मैंने जानवरों की खाल के थैले में लपेटकर तीन शाखाओं के मिलन बिंदु पर एक दरार में छिपा रखा था, अभी भी वहीं हैं। मैंने सोने के हैंडल वाला अपना धनुष, बाघ की खाल के म्यान में अपनी कटार और माया द्वारा मेरे लिए बनाई गई लोहे की गदा उठाई और उन्हें अपने हाथों में पकड़ लिया। मैंने यह भी सुनिश्चित किया कि मेरे भाइयों के हथियारों वाले बंडल भी सुरक्षित हैं। जब मैं रसोई में लौटा, तो वहाँ के नौकर आपस में मज़ाक कर रहे थे, यह इशारा करते हुए कि मैं महल के बाहर रहने वाली किसी महिला से मिलने गया हूँगा। मैं संध्याकाल में द्रौपदी से मिलने के लिए महिलाओं के कमरे के पास इंतजार कर रहा था। उसने मुझे बताया कि सहदेव कुछ गायें देने आए थे, जो ब्राह्मणों को उपहार स्वरूप दी जानी थीं। वह दुखी लग रही थी।
‘सहदेव कमजोर और थका हुआ लग रहा है। जब हम जंगल के लिए निकले थे, तब माँ ने उसे मेरे हवाले करते हुए कहा था कि मुझे उसकी देखभाल ऐसे करनी है जैसे वह मेरा बेटा हो। अब मैं क्या करूँ?’
उसने अर्जुन के भाग्य पर शोक व्यक्त किया, जिसे विराट की पुत्रियों को शिक्षा देनी पड़ी थी। उसे रेशमी वस्त्र पहनने और हिजड़े की तरह सिर ढकने के लिए मजबूर किया गया था। इंद्र के समान शक्तिशाली पार्थ का कितना बुरा हाल हो गया था!
मुझे आश्चर्य इस बात का है कि लड़कियां इस शिक्षक को बहुत पसंद करती हैं जो न तो पुरुष है और न ही महिला!
उसकी शिकायत नकुला के बारे में यह थी कि उसने उससे बात करने का मौका ढूंढने की कोई कोशिश नहीं की।
मैंने पूछा, ‘रानी सुदेशना कैसी हैं?’
उसने मुझे अपने हाथ दिखाए। ‘क्या तुम देख नहीं सकते? चंदन का पेस्ट पीसने के कारण मेरे हाथ सख्त हो गए हैं – राजा द्रुपद की पुत्री के लिए यह कैसा काम है! मुझे आश्चर्य है कि क्या हमारे पासा खेलने वाले कंका को मेरे कष्टों का कोई अंदाजा है।’ उसने कुछ नौकरानियों को उस तरफ आते देखा और जल्दी से वहाँ से चली गई।
मुझे समझ आ गया था कि कृष्ण ने हमें विराट के महल में आने की सलाह क्यों दी थी। राजा स्पष्टवादी और खुले विचारों वाले थे। सेना बहुत अच्छी तरह से

प्रशिक्षित नहीं थी, लेकिन संख्या बल से भरपूर थी। चूंकि सेनापति अपने सैनिकों के साथ साधारण ग्वालों जैसा व्यवहार करते थे, इसलिए उनमें से कई फुर्तीले या ऊर्जावान नहीं थे। लेकिन मैंने देखा कि उनमें जोश भरा था और बस उस जोश को प्रज्वलित करने की जरूरत थी। द्वारका और विराट के बीच बहुत अच्छे संबंध थे। विराट निस्संदेह युद्ध की तैयारी के लिए सबसे अच्छी जगह थी।
रात में एक-दो नौकरानियाँ यह जानने के लिए आईं कि मैं आराम से हूँ या नहीं। उनमें से किसी ने भी मेरे मन में कोई भावना नहीं जगाई। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उन्होंने बाद में आपस में पूछा होगा कि पहलवान वल्लवा नपुंसक है या नहीं। जब मैंने तीसरी नौकरानी को भी बिना छुए ही भगा दिया, तो उसके बाद कोई भी मुझे परेशान करने नहीं आया।
रानी के भाई, सेनापति कीचाका, उत्सव के दौरान यात्रा पर थे। लौटने पर उन्होंने मुझे बुलवाया। मैंने उनके समक्ष आदरपूर्वक प्रणाम किया। ग्रेनाइट की तरह काले रंग के कीचाका मुझसे लगभग पाँच उंगल लंबे थे। शराब के नशे में उनकी आँखें लाल थीं, पलकें सूजी हुई थीं और आवाज़ भारी थी। उन्होंने मेरे शरीर पर एक नज़र डाली और सहमति जताते हुए सिर हिलाया।
उसने अपने पीछे खड़े अनुयायियों से कहा, 'जब मेरे हाथ सुन्न पड़ जाते हैं, तो वह उन्हें गर्माहट देने के लिए काफी है। अब जाओ। जब मुझे तुम्हारी जरूरत होगी, मैं तुम्हें बुला लूंगा।'
अगले कुछ दिनों तक मैं दिन-रात रसोई में इतना व्यस्त रहा कि द्रौपदी से मिलने का समय ही नहीं मिला। हमें कीचक के साथ आए लगभग सौ लोगों के लिए रसोई से भोजन भेजना था।
एक दिन, जब मैं वध के लिए बकरियों का चयन करने के बाद रसोई में वापस जा रहा था, तो एक नौकरानी आई और मुझसे बोली, 'मालिनी आपसे मिलना चाहती है।'
विराटा और रानी रात में नृत्यशाला में आकर अपनी बेटियों को बृहन्नला द्वारा सिखाए गए नृत्य चरणों का अभ्यास करते हुए देखा करते थे। मैंने कहा कि मैं उस समयशाला के बाहर इंतजार करूंगा।
मैंने देखा कि घी में भीगी मशालें और हॉल की दीवारों पर लगे छोटे पत्थर के तेल के दीपक जलाए जा रहे थे। वीणा और मृदंगम को ट्यून किया जा रहा था। जैसे ही मैंने पायल की झंकार और नर्तकियों के संगीत की धुन पर थिरकते कदमों की आवाज सुनी, मैं पीछे के धुंधले आंगन में चला गया।

द्रौपदी वहां प्रतीक्षा कर रही थी।
‘कीचका मुझे लगातार परेशान करता रहता है। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। वह मुझे प्रलोभन देता है: सौ सोने के सिक्के, मेरी सेवा के लिए नौकर, घोड़ियों द्वारा खींचा जाने वाला रथ।’
'उसके बारे में रानी को बताओ।'
मुझे उस पर भरोसा नहीं है। मैंने उसे कई बार आगाह किया। वह कहती है कि यह शर्मनाक, अन्यायपूर्ण वगैरह है। लेकिन जब भी वह अपनी बहन से मिलने आता है, वह जोर देती है कि मैं उसकी सेवा में रहूँ।
‘युधिष्ठिर से बात करने के बारे में क्या ख्याल है? वह राजा को इसके बारे में बता सकता है।’
एक बार जब द्रौपदी ने अपने दुर्भाग्य का विलाप करना शुरू किया, तो उसे रोकना असंभव हो गया। वह द्रुपद की राजधानी में अपने बचपन को याद करती, फिर जुआघर में हुए अपमान और वनवास की घटनाओं का जिक्र करती। इसलिए मैंने उसे सांत्वना देने के लिए तुरंत कहा, 'मैं इसे संभाल लूंगी। मुझे अब वापस जाना होगा, मुझे रसोई में काम है।'
अगले दिन, मैं उस हॉल के आसपास मंडराता रहा जहाँ राजा पासा खेल रहे थे, इस उम्मीद में कि मुझे अपने बड़े भाई से मिलने और उन्हें सारी बात बताने का मौका मिल जाए। मैंने द्रौपदी को अकेले ही सेनापति के घर जाते देखा, वह चांदी का बड़ा घड़ा ले जा रही थी जिसमें शराब परोसी जाती थी। घड़ा स्पष्ट रूप से खाली था। अगर उसे उसमें शराब भरनी होती, तो भंडार रसोई के पास ही था।
मैंने उसके बाहर आने का इंतज़ार किया। इसी बीच मैंने देखा कि कंका राजा से एक खेल हार गई और दो जीत गई। पासे की खड़खड़ाहट ने एक भयानक सपने को फिर से जगा दिया जो अब तक सुप्त पड़ा था – हस्तिनापुरा का जुआघर। दर्शकों की फुसफुसाहट, पासों की खड़खड़ाहट, दुस्साना द्वारा द्रौपदी को उसके बालों से घसीटना। ठंडे सफेद संगमरमर के फर्श पर खून की बूँदें टपकना। हँसती हुई आँखें खूनी चोंचों में बदल जाती थीं जो लाशों को खा जाती थीं…
मेरे मन में विचारों का सैलाब उमड़ पड़ा जब मैंने जिन शेरों को सुलाया था, उन्होंने अपने सिर उठाए और उनकी दहाड़ की आवाज मेरे भीतर गूंज उठी। मेरे हाथों की मांसपेशियां फड़कने लगीं।

द्रौपदी हांफती हुई दौड़ती हुई बाहर आई, कीचक उसके पीछे-पीछे था। उसने हाथ बढ़ाकर द्रौपदी के बाल पकड़ लिए। वही द्रौपदी, जिसने अपनी कमर की पट्टी को कसकर पकड़ रखा था ताकि वह नीचे न खिसक जाए। वही पासे...
द्रौपदी चीख पड़ी। गिरते ही कीचक ने उसे लात मारी। मैं सुन नहीं सका कि उसने उससे क्या कहा। युधिष्ठिर मेरे सामने खड़े थे, मेरा रास्ता रोक रहे थे, जब मैं उसकी ओर दौड़ा। मैं दीवार पर सजावट के तौर पर टंगे चांदी के लंबे भाले को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा, तभी मुझे युधिष्ठिर की आवाज सुनाई दी, जो मुझे डांट रही थी, 'मूर्ख, यह रसोई के लिए नहीं है। कहीं और से लकड़ी ढूंढो।'
राजा भी आ गया था।
द्रौपदी रोते हुए उठी और बोली, “रानी ने मुझे शराब लाने भेजा था। यह आदमी…”
कीचाका ने महिला नौकरानियों की पवित्रता के बारे में कुछ बुदबुदाया, मुड़ा और चला गया।
राजा ने कहा, 'अपनी इन झंझटों भरी हरकतों के लिए कोई और जगह ढूंढ लो। चलो खेल जारी रखते हैं।'
युधिष्ठिर ने सिर झुकाया और राजा के पीछे-पीछे हॉल में चले गए। द्रौपदी ने एक नज़र उन पर डाली, फिर मेरी ओर बड़ी-बड़ी आँखों से घूरने लगीं। फिर वह आंगन के दूसरी ओर चली गईं और खंभों के पीछे ओझल हो गईं।
उस रात, जब मैं रसोई में लेटी थी, द्रौपदी मेरे पास आई। मुझे उसके कदमों की आहट सुनाई नहीं दी। उसकी जानी-पहचानी खुशबू से मेरी नींद खुली। वह मेरे पास बैठ गई।
‘क्या तुमने नहीं देखा? क्या तुम सब वहाँ खड़े होकर देखते नहीं रहे?’
उसने अपना सिर मेरे कंधे पर टिका दिया और गर्म आंसू मेरी छाती पर बहने लगे। ‘मेरे पास अपना दुख बांटने के लिए कोई और नहीं है। यहाँ तक कि अगर जुआरी अपनी आँखों के सामने कुछ होते हुए भी देख ले, तो वह ऐसा दिखावा करता है जैसे उसने कुछ देखा ही नहीं। जहाँ तक हमारे वीर योद्धा की बात है, वह विराटा की बेटियों की खिलखिलाहट देखने में इतना मशगूल है कि उसके पास मेरी बात सुनने का समय ही नहीं है…’
मैंने उसे दिलासा देने की पूरी कोशिश की। हम सब बेबस थे। मैंने उसे याद दिलाया कि अगर इस अहम साल में किसी ने भी हमें पहचान लिया, तो हमें फिर से

जंगल में निर्वासन झेलना पड़ेगा। यहाँ तक कि लोहे के मूसल की तरह मजबूत मेरी विशाल भुजाएँ भी अब बेबस हो चुकी थीं।
मैंने पूछा, ‘मैं क्या कर सकता हूँ?’
द्रौपदी उठी और हांफते हुए मेरे पास खड़ी हो गई। ‘मैं तुम्हें बताती हूँ कि तुम्हें क्या करना चाहिए। उस कीचक को बुरी तरह मारो, उसे तब तक पीटते रहो जब तक वह पत्थर पर पटक कर चूर-चूर न हो जाए। मुझे नहीं पता कि तुम यह कब और कैसे कर पाओगे। अगर वह परसों सूर्योदय तक जीवित रहा, तो मैं विष खाकर इसी रसोई में मर जाऊंगी, कसम से!’
मैं सोचता रहा। हालांकि मैं बहुत परेशान था, फिर भी मेरे दिमाग में एक चाल चलने की योजना बन गई।
'कल सुबह जब तुम कीचाका से मिलो तो मुस्कुरा देना। उसे बताना कि तुम इसलिए भाग गई क्योंकि तुम्हें डर था कि लोग जाकर तुम्हारे पति को तुम्हारे और उसके बारे में बता देंगे। उसे रात में सुनसान डांस हॉल में आने का न्योता देना।'
वह समझ नहीं पाई।
‘डांस हॉल सबसे अच्छी जगह है। बाहर कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती। उसे मनाओ और उसे अकेले वहाँ आने के लिए राजी करो। उसके आने पर मैं ही उसका स्वागत करूँगी। अब जाओ और चिंता मत करो।’
उसके चेहरे पर बारिश के बाद निकलने वाले सूरज जैसी चमकती मुस्कान खिल उठी। अगली शाम, जब दिन भर नाचती हुई लड़कियाँ हॉल से चली गईं, तो मैं अंदर गया और एक नज़र डाली। एक कोने में लोहे का पलंग था, जो सुविधाजनक जगह थी। जब मैं बाहर आया, तो मैंने द्रौपदी को फूलों की टोकरी लिए हुए जाते देखा। उसके साथ कुछ और नौकरानियाँ भी थीं। उसने मुझे एक ऐसी नज़र से देखा, जिसका मतलब था: 'सब ठीक है!'
जैसे ही अमावस्या की रात का अंधेरा आंगन में फैल गया, मैं खाली नृत्य कक्ष में दाखिल हुआ और तेल से भरे छोटे-छोटे दीपों को एक-एक करके बुझा दिया। जैसे ही मैंने अपना वजन लोहे के पलंग पर डाला, वह धीरे से चटक गया।
मुझे बहुत शांति महसूस हो रही थी। मैं इस हत्या के कृत्य का आनंद लेने वाला था। ऐसे अंधेरे में नियमों का पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। मैंने कुश्ती सिखाने वालों द्वारा वर्णित पैशाचिका शैली के बारे में सोचा, एक ऐसी लड़ाई जिसमें दांत और नाखून तक का इस्तेमाल किया जाता है।

एक घंटा बीतने में मानो सदियां बीत गईं। फिर मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। वह झिझका, फिर आगे बढ़ा। मुझे चंदन के लेप में मिली कस्तूरी की खुशबू महसूस हुई। उसने शराब की बदबू मिटाने के लिए इसे खूब लगाया होगा। यह कीचाका ही था। मेरी एक खासियत जिस पर मुझे गर्व था, वह थी अंधेरे में देख पाने की क्षमता। मैंने उसके बालों में गुंथे सफेद फूल, उसकी बालियों में जड़े लाल पत्थरों की चमक और उसकी कलाई पर सोने की चूड़ियों की दमक देखी।
उसने मेरी आकृति को परछाई की तरह देखा और धीरे से पुकारा, 'मालिनी...?' मैंने पलंग पर अपनी जगह बदली। वह धीरे से हँसा, इस बात से खुश था कि सुंदर नौकरानी ने अपना वादा निभाया था। वह झुका और मैंने उसके बाल पकड़ लिए। अचानक मुझे लगा कि काश मैं द्रौपदी की आवाज़ में बोल पाती। नाटक को खत्म करते हुए, मैंने अपनी कर्कश आवाज़ में कहा, 'मैं, एक नौकरानी, ने आपके जैसा सुंदर पुरुष कभी नहीं देखा!'
खतरे को भांपते ही कीचाका ने मेरा हाथ पकड़ लिया और खुद को छुड़ाने की कोशिश की। उसकी मुट्ठियाँ मेरे शरीर पर नुकीले नाखूनों की तरह पड़ीं, लेकिन मैंने उसके बाल नहीं छोड़े।
फिर उसने मुझे कसकर पकड़ने और मेरी सांसें रोक देने की कोशिश की। उसके दांत मेरी गर्दन में धंस गए।
कीचक बलवान था, हिडिम्बा और जटा से भी अधिक बलवान, लेकिन जरासंध के सामने कुछ भी नहीं था। इस ज्ञान ने मुझे साहस प्रदान किया।
मैंने उसके बाल छोड़ दिए और उसके मुंह और नाक को कसकर पकड़ लिया, जिससे मेरी गर्दन की त्वचा में धंसे उसके दांत बाहर निकल आए। फिर मैंने उसकी कमर पकड़ ली। उसने मेरे टखनों पर ज़ोर से लात मारी। मैंने उस पर अपनी पकड़ ढीली नहीं की। अचानक ही उसने अपने सिर से मेरी छाती पर हमला कर दिया और मैं नीचे गिर पड़ी।
कीचाका हांफ रहा था और खुद से कुछ बुदबुदा रहा था। जब उसने देखा कि मैं गिर गया हूँ, तो वह खुशी से कराहते हुए नीचे झुका, ताकि मुझे उठाकर फिर से नीचे फेंक सके। यही तो मैं चाहता था। मैंने उसकी गर्दन पकड़ी और उसे पीछे की ओर फेंक दिया।
मैं उसकी छाती पर कूद पड़ा और अपनी पूरी ताकत लगाकर उन हाथों को खींचकर अलग कर दिया जो उसकी गर्दन को बचाने की कोशिश कर रहे थे।
उसने पूछा, 'तुम कौन हो? मैं कीचाका हूं, सेना का सेनापति!'

‘[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[!’ [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[, [[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[, ‘[[[[[[[[[[’
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[

2

महल की नौकरानियाँ यह बात फैला रही थीं कि कीचक की हत्या एक गंधर्व ने की है, लेकिन किसी भी पुरुष को इस पर विश्वास नहीं हुआ। मुझे लगा कि सब मुझे शक की निगाहों से देख रहे हैं। एक मंदबुद्धि वल्लव का नाटक करते हुए, मैंने भी बाकी सब की तरह आश्चर्यचकित होने का दिखावा किया।
किसी ने भी द्वंद्वयुद्ध की आवाज नहीं सुनी थी। सेनापति अपने महल में सो गया था, और अगली सुबह उसका शव खाली नृत्य कक्ष में मिला था। जाहिर है, कीचक को आसानी से पराजित नहीं किया जा सकता था। अंततः, लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि केवल एक गंधर्व ही खलनायक हो सकता था जो पिछले जन्म के किसी प्रतिशोध को मिटाना चाहता था।
महल में शांति छा गई। कंका और राजा जुआ खेलने लौट गए। नृत्य सीख रही लड़कियाँ एक बार फिर नृत्यशाला में जमा हो गईं। सब कुछ पहले जैसा ही था। एक दिन एक ग्रामीण दौड़ता हुआ महल में यह खबर लेकर आया कि त्रिगार्थ उत्तर के एक देश से लोगों के एक समूह के साथ आया था, एक चरागाह के चारों ओर लगाई गई बाड़ को तोड़कर 5,000 गायों को लेकर भाग गया था।
राजा ने कीचका के उनके साथ न होने पर शोक व्यक्त किया और कहा कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि क्या करें।
पासा खेलने वाले कंका ने सुझाव दिया, 'सैनिकों को अपने हथियारों के साथ आंगन में आने के लिए कहो। वह वल्लव व्यक्ति अभियान का नेतृत्व कर सकता है।' रसोई में दौड़ते हुए आए सैनिकों से ही मुझे पता चला कि त्रिगार्थ और उसके गिरोह ने गायें चुराई थीं। यह पहला सैन्य अभियान था जिसका नेतृत्व मैं करने जा रहा था...
मैं महल गया। कंका हथियार बाँट रहा था। राजा भी वहीं थे; मुझे देखकर उनका चेहरा खिल उठा। मैंने बैल की खाल से बनी ढाल, तलवार और लोहे के हैंडल वाला धनुष चुना। काश, मेरे पास माया द्वारा मेरे लिए बनाया गया गदा और मेरा अपना धनुष होता! हमारे लिए रखे गए गदाओं में से मुझे कोई भी पसंद नहीं आया। सैनिक ऊब चुके थे और लंबे समय से अपनी शक्ति और पौरुष दिखाने का अवसर न मिलने से परेशान थे, लेकिन युद्ध के विचार से उनमें जोश भर गया। सहदेव गौशाला से आए, क्योंकि उन्हें पता चला था कि चोरी हुई गायों को वापस लाने के लिए एक सेना निकल रही है। नकुल ने रथों को बांधने के लिए सबसे तेज़

घोड़ों का चयन किया। वन क्षेत्र में चलने वाले रथ विशेष प्रकार के थे।
उनकी छतें छोटी थीं, जुए की लंबाई छियासी उंगलियों के बराबर थी और धुरी अस्सी-आठ उंगलियों के बराबर लंबी थी।
हमारे लिए रास्ता साफ करने वाले गाइडों ने आगे बढ़कर नेतृत्व किया।
रथ में चढ़ते हुए मैंने सैनिकों से मजाक में कहा, 'याद रखना, यहाँ कैदियों को रखने की कोई जगह नहीं है। अगर हम उन्हें वापस ले गए, तो वे रसोई कर्मचारियों के लिए और अधिक काम बढ़ा देंगे!'
युवकों ने खुशी से चिल्लाते हुए कहा, उन्हें अपने मनपसंद का नेता मिल गया था।
जब कंका और राजा को ले जाने वाला रथ निकला, तो मैंने कहा, 'हमें आगे चलना होगा।'
घोड़े बेचैनी से उछल पड़े और चाबुक घूमने लगे। हम तेज़ी से निकल पड़े। चरागाहों को पीछे छोड़ते ही हमें मवेशियों के रंभाने की आवाज़ सुनाई दी। धूल का एक बादल बवंडर की तरह उनके चारों ओर मंडरा रहा था। त्रिगार्थ के सैनिक गायों के ठीक पीछे थे, उन्हें आगे धकेल रहे थे और दोनों तरफ से उन्हें नियंत्रित कर रहे थे। 20,000 खुरों की गड़गड़ाहट से धरती कांप उठी।
जैसे ही उन्होंने हमें, यानी दुश्मन को देखा, उनके समूह में युद्ध के नारे गूंज उठे। पहले तीर हवा में उड़े और मैंने पुकार कर कहा, 'अभी नहीं। मैं तुम्हें बताऊंगा कब।' दुश्मन हमसे इतनी दूरी पर था कि हमारे तीर उस तक नहीं पहुंच सकते थे।
मवेशियों के झुंड के साथ आगे बढ़ रहे दुश्मन अचानक अपने रथों को घुमाकर युद्ध के लिए तैयार हो गए। राजा और उनके दल को उन पर हमला करने के लिए दाईं ओर मुड़ते देख मुझे राहत मिली। मुझे डर था कि दुश्मन की एक टुकड़ी मवेशियों की आड़ में हमारे पीछे आ जाएगी। अपने नए धनुष का वज़न और हाथ में उसकी पकड़ परखने के लिए, मैंने तीन घोड़ों द्वारा खींचे जा रहे रथ में खड़े होकर निशाना साध रहे एक दुश्मन तीरंदाज की छाती पर निशाना साधा। मैंने धनुष को कान के पास रखकर तीर छोड़ा। चील के पंख से जड़ा तीर उसकी गर्दन पर लगा। वह गिर तो गया, लेकिन मैंने सोचा कि मुझे धनुष पर अपनी पकड़ आधी उंगली जितनी कम करनी होगी।

उसी क्षण युधिष्ठिर का रथ आ पहुँचा। राजा खड़े हो गए, उनकी क्षणिक कमजोरी गायब हो गई थी।
युधिष्ठिर ने कहा, “उसे मत मारो। उस दुष्ट को जाने दो।” यह विराट का युद्ध था और उसने अपनी गायें वापस पा ली थीं। “यदि वह राजा के पैर छूकर अपने अपराध के लिए क्षमा मांग ले, तो वह जा सकता है।”
त्रिगार्थ के पास आज्ञा मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।
लेकिन जब हम महल लौटे, तो विजय का नशा अचानक उतर गया। राजा थक चुके थे। यह जानकर कि हम त्रिगर्थ का सामना करने गए थे, दुर्योधन और कौरवों ने पश्चिम से प्रवेश करके 10,000 गायें चुरा लीं।
युधिष्ठिर ने कहा, ‘दुर्योधन ने इसकी योजना बनाई थी। त्रिगर्थ दक्षिण से और वह स्वयं पश्चिम से…’
जब राजा को पता चला कि उनके युवा पुत्र उत्तारण ने बचे हुए कुछ सैनिकों को इकट्ठा किया है और दुर्योधन और उसके साथियों की खोज में निकल गए हैं, तो वे सदमे से बेहोश हो गए।
‘वह तो बस एक बच्चा है। उसने आज तक कभी किसी लड़ाई में हिस्सा नहीं लिया है। हथियारों के बारे में उसे बस उतना ही पता है जितना उसने उन्हें इस्तेमाल करने के प्रशिक्षण के दौरान सीखा था।’
हमें पता चला कि उत्ताराण के साथ कितने लोग गए थे। उस समूह में कोई भी अनुभवी योद्धा नहीं था।
किसी ने कहा, 'वह नृत्य शिक्षक बृहन्नला रथ चलाने में माहिर होने का दावा करता है और उसके सारथी के रूप में उसके साथ गया है।'
युधिष्ठिर ने राहत की सांस ली: 'राजा, भयभीत न हों। उत्तरन बिल्कुल सुरक्षित लौट आएगा। बृहन्नला एक अत्यंत कुशल सारथी है, जिसने घोड़ों की सवारी के तरीके सीख लिए हैं।'
जब मैंने सुना कि यह नौकरानी मालिनी ही थी जिसने जोर देकर कहा था कि बृहन्नला, उत्ताराण के साथ जाए, तो मैंने अपनी मुस्कान छिपा ली।
उत्तरन और उसके साथी शाम ढलने तक विजयी होकर लौट आए।
मैंने बृहन्नला को उस समय रोक लिया जब वह लड़कियों के पास जाने ही वाला था।
अर्जुन की आँखें अभी भी युद्ध के उत्साह से चमक रही थीं। उसके हाथ में एक बड़ा सा गठ्ठा था।
‘दुर्योधन के साथ कौन-कौन थे?’

‘सभी लोग। यह कौरवों और पांडवों के बीच एक दिन होने वाले युद्ध के दृश्य जैसा था। द्रोण, कृपा, भीष्म और अश्वत्थामा वहाँ थे। कर्ण भी।’
राजाओं के लिए गायों की चोरी करना अपनी प्रतिष्ठा प्रदर्शित करने का एक तरीका था। मुझे यह जानकर सचमुच आश्चर्य हुआ कि भीष्म सहित सभी शिक्षकों ने इस अभियान में भाग लिया था।
“जिन्होंने यह मान लिया था कि उन्हें उत्तरन से डरने की कोई जरूरत नहीं है, उन्हें वही मिला जिसके वे हकदार थे। घावों से लथपथ कर्ण खून बहते हुए भाग गया। द्रोणाचार्य भी घायल हुए होंगे। लेकिन मेरी शक्ति की परीक्षा उन्होंने नहीं ली।”
‘Bhishmacharya?’
मुझे पता था कि नब्बे वर्ष से अधिक आयु के भीष्मचार्य अब भी एक दुर्जेय योद्धा थे। किसी भी युवक में उनसे मुकाबला करने का साहस नहीं था।
नहीं। भीष्मचार्य पीछे ही रहे। कृपाचार्य ही असल में मेरे बराबर के प्रतिद्वंद्वी साबित हुए।
मैंने अपने हृदय में अर्जुन को प्रशंसा और स्नेह से आलिंगन किया।
आज मैंने उनके हाथों और हथियारों की ताकत देखी। याद रखो, मैं अकेला था, मेरे साथ कोई सहारा नहीं था। हमें अब लड़ने की तैयारी करनी होगी। उस जुआ विशेषज्ञ से कहो कि हमें लुका-छिपी का यह खेल बंद कर देना चाहिए।
मैंने कहा कि त्रिगार्थ पर हमारे हमले में कंका ने मेरी तरफ से एक सच्चे योद्धा की तरह लड़ाई लड़ी थी।
अर्जुन जाने ही वाला था कि मैंने उसके हाथ में मौजूद बंडल की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'यह क्या है?'
‘मेरे शिष्यों ने मुझसे मजाक में कहा था कि जो लोग आत्मसमर्पण करें, उनसे जितने अच्छे कपड़े मिल सकें, ले लो। शिष्यों की यही इच्छा थी – मैंने सोचा कि मुझे इसे पूरा करना चाहिए।’ वह मुस्कुराए और चले गए।
दुर्योधन की सेना इतनी शक्तिशाली थी, यह जानते हुए कौन विश्वास करेगा कि उत्तरन और उसकी सेना ने उन्हें हरा दिया और अपने मवेशी वापस ले लिए? कौरव भी इतने मूर्ख नहीं थे। त्रिगर्थ को हराने वाले दल में एक वल्लव और उत्तरन के साथ एक सारथी था जो दोनों हाथों से बाण चला रहा था!
लगभग तीन दिनों तक, उत्ताराण ने यह दिखावा किया कि उसने अपनी सेना को विजय दिलाई है, और फिर राजा को सच्चाई बताई। कि वास्तव में युद्ध उसके सारथी ने

जीता था। राजा स्तब्ध रह गया। बृहन्नला, जो न तो पुरुष था और न ही स्त्री, एक योद्धा और धनुर्धर जो दोनों हाथों से तीर चला सकता था?
द्वार पर तैनात पहरेदार यह खबर लेकर दौड़े कि एक और हमला होने वाला है। कंका ने कहा, 'यह कोई दुश्मन नहीं है। अगर मेरा अनुमान सही है, तो आप इस अतिथि का स्वागत सोने और फूलों से करेंगे।'
पहरेदारों की चिंता भरी निगाहों के बीच, रथ किले के प्रवेश द्वार पर रुक गए। कृष्ण यादवों के साथ नीचे उतरे।
राजा के अभिवादन स्वीकार करने से पहले, कृष्ण ने बृहन्नला को गले लगाया। फिर उन्होंने राजा का अभिवादन ग्रहण किया और आदरपूर्वक कंका के चरणों को स्पर्श किया। सत्यकी रसोई के कर्मचारी वल्लव को ढूंढने चले गए।
कृष्ण ने अचंभित राजा को हमारे असली नाम बताए और हमारा परिचय कराया।
आश्चर्यचकित और प्रसन्न विराट ने बच्चे की तरह ताली बजाई। स्वागत और भोज की तैयारी के निर्देश प्राप्त सेवक खुशी से इधर-उधर दौड़ने लगे।

3

हम उत्तम वस्त्रों से सजे हुए श्रोता कक्ष में बैठे थे।
कृष्ण ने कहा, ‘कौरवों को पता है कि तुम कहाँ हो। गुरुओं ने अर्जुन के बाण चलाने का तरीका देखकर तुरंत ही अनुमान लगा लिया होगा। वह मूर्खतापूर्ण वेश उन्हें कभी धोखा नहीं दे सकता था।’
अपनी उंगलियों पर हिसाब लगाते हुए, युधिष्ठिर व्याकुल दिखाई दिए, उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि क्या कौरव यह तर्क देंगे कि पांडवों को वर्ष समाप्त होने से पहले ही मान्यता मिल चुकी थी।
कृष्ण ने कहा, ‘यहाँ आने से पहले मैंने समय की गणना की थी। चंद्र पंचांग के अनुसार, वर्ष समाप्त हो चुका है। अतिरिक्त महीने का हिसाब रखना होगा। भीष्मचार्य को कम से कम इसकी जानकारी तो होगी ही।’
‘अरे, वो अतिरिक्त महीना… मैं भूल ही गया था।’ युधिष्ठिर ने राहत भरी आवाज में कहा।
अगले दिन विराट राज्य के लिए किसी उत्सव के समान थे। कृष्ण, विराट और सत्यकी ने युधिष्ठिर से कई विचार-विमर्श किए, जिनमें विराट की पुत्री राजकुमारी उत्तरा के विवाह का प्रस्ताव भी शामिल था। कृष्ण ने पांडवों से कहा कि इससे विराट के साथ संबंध और मजबूत होंगे। यह सोचकर कि वह स्वयं ही दूल्हा बनने वाले हैं, अर्जुन ने मन ही मन मुस्कुरा दिया।
कृष्ण ने उनसे कहा, “तुमने अभिमन्यु को बड़े होने के बाद नहीं देखा है, है ना? वह अब एक युवक है। उत्तरा हर तरह से उसके लिए आदर्श दुल्हन होगी। चूंकि तुम उसके गुरु हो, इसलिए अब तुम उसके लिए पिता समान हो।”
अर्जुन ने स्वीकार किया कि यह सही था।
कृष्ण ने गर्व से कहा, 'अभिमन्यु अपने पिता और अपने चाचाओं से भी अधिक बलवान हो रहा है।'
विराटा ने खुशी-खुशी विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और बात पक्की हो गई।
इसके बाद उन्होंने घोषणा की कि पांडव अपने महल, अपनी सेना और अपने धन का उपयोग अपनी इच्छानुसार किसी भी तरह से कर सकते हैं ताकि वे उस राज्य को वापस पा सकें जिसके वे हकदार थे।

द्रुपद और धृष्टद्युम्न आ गए, जिससे हमारे करीबी रिश्तेदारों की सूची पूरी हो गई। धृष्टद्युम्न का रूप पूरी तरह बदल गया था। उनका शरीर अब मेरे जितना ही विशाल हो गया था और उनके चेहरे पर परिपक्वता की गंभीरता झलक रही थी। मैंने और उन्होंने मिलकर विराट सेना को प्रांगण में पंक्तिबद्ध किया और उनमें से जो बलहीन और बहुत बूढ़े हो चुके थे, उन्हें अलग कर दिया। हमने शेष सैनिकों को कई पंक्तियों में अलग किया और उन्हें प्रशिक्षण शुरू करने का आदेश दिया। सत्यकी ने शस्त्रगृह में और अधिक श्रमिकों को नियुक्त किया और नई कार्यशालाओं से लपटें और धुआँ उठने लगा।
धृष्टद्युम्न ने चेदि के दृष्टकेतु और मगध के जयसेना जैसे विभिन्न राजाओं के पास दूत भेजे जो हमारी सहायता कर सकते थे।
सत्यकी और मैं लोहारों को काम करते हुए देख रहे थे, जबकि द्रुपद, युधिष्ठिर और कृष्ण सभाघर में चर्चा कर रहे थे।
सत्यकी ने कहा, ‘मैं पूरी तैयारी के साथ आया हूँ। मेरी सेना कल सुबह भोर में पहुँचेगी और हाथी उत्सव स्थल पर डेरा डालेगी।’ उसने धृष्टद्युम्न को हमारी ओर आते देखा और पूछा, ‘क्या उनकी बातचीत अभी तक समाप्त नहीं हुई?’ धृष्टद्युम्न ने कहा, 'मेरे पिता कौरवों के पास एक दूत भेजने वाले हैं, जो उनसे कहेंगे कि यदि वे पांडवों को आधा राज्य दे दें, तो हम सुलह कर सकते हैं। यह एक शिष्टाचार होगा।'
सत्यकी ने कहा, ‘क्षत्रियों में यह नियम है कि जो राजा से पहले मदद मांगेगा, उसे राजा का समर्थन और सेना मिल जाएगी। जब तक उनके बीच संदेशों का आदान-प्रदान होगा, कौरव सभी शक्तिशाली सेनाओं पर कब्जा कर चुके होंगे। ये लोग यह बात नहीं समझते। हमें सबसे पहले सेना को इकट्ठा करके तैयार करना होगा। सुलह के लिए शिष्टाचारपूर्ण बातचीत बाद में की जा सकती है।’ धृष्टद्युम्न ने कहा कि उसके सभी दोस्तों ने उसे वचन दिया था कि वे मदद करेंगे।
हमें पता था कि कौरव अपने पक्ष में कई राजाओं को शामिल करेंगे। शस्त्रों और संख्या बल में वे निस्संदेह हमसे श्रेष्ठ होंगे। सैन्य रणनीति में पारंगत सभी शिक्षक उनके साथ थे। हमें पूरा विश्वास था कि दादा भीष्म और द्रोणाचार्य तटस्थ रहेंगे।
सत्यकी ने संदेह व्यक्त करते हुए कहा, 'लेकिन वे कौरवों के साथ थे जो गायों को चुराने आए थे।'

‘शिकार की तरह, गायों की चोरी क्षत्रियों के लिए मनोरंजन का साधन है। इसके अलावा, ये विराट की गायें थीं। मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि शिक्षकों को विराट के प्रति कोई स्नेह क्यों होगा।’
धृष्टद्युम्न को लगा कि द्रोण कौरवों की ओर से इसलिए लड़ेंगे क्योंकि द्रुपद पांडवों के पक्ष में थे। फिर भी, उनका आत्मविश्वास नहीं डिगा। उन्होंने कहा, 'यह युद्ध गुरु नहीं लड़ेंगे और न ही जीतेंगे, बल्कि हम नौजवान लड़ेंगे।'
मुझे विदुर का ख्याल आए बिना नहीं रहा। शायद वे धृतराष्ट्र और दुर्योधन दोनों को युद्ध न करने की सलाह देते। दादा भीष्म और धृतराष्ट्र के बाद कौरव राज्य में सर्वोच्च अधिकार विदुर का ही होना चाहिए था। पांडु की मृत्यु के बाद, उन्हें स्वाभाविक रूप से राजा बनना चाहिए था। लेकिन किसी ने इस बात को याद तक नहीं रखा। क्या यह इसलिए था कि वे एक दासी के पुत्र थे, इसलिए किसी ने उन्हें सत्ता के लिए नामांकित नहीं किया? लेकिन आम तौर पर, माता के परिवार या जाति को ध्यान में नहीं रखा जाता था। विचित्रवीर की माता का मछुआरा होना उनके राज्याभिषेक में बाधा नहीं बना। मैंने इस उत्तर से खुद को तसल्ली दी: शायद शास्त्रों के ज्ञान से अधिक शस्त्र-प्रबंधन को महत्व दिया जाता था।
हम सभी यह सुनने के लिए सभाघर गए कि ब्राह्मण दूत क्या उत्तर लेकर आया है। ये दूत दिए गए संदेशों को शब्दशः दोहराने में माहिर थे।
मैं धृतराष्ट्र की राजधानी गया और महान राजा और भीष्मचार्य को प्रणाम किया। मैंने यह संदेश दिया: “आप सभी जानते हैं कि राजा का धर्म क्या होता है। फिर भी, मैं आपसे दोहराता हूँ: धृतराष्ट्र और पांडु एक ही पिता के पुत्र हैं। पिता की संपत्ति पर उनका समान अधिकार है। ऐसा कैसे हुआ कि जब धृतराष्ट्र के पुत्रों को उनके पिता की संपत्ति मिली, तो पांडु के पुत्रों को नहीं मिली? धृतराष्ट्र ने न केवल उन्हें उनका हक नहीं दिया, बल्कि उन्हें मारने के तरीके भी खोजे। वे अब केवल इसलिए जीवित हैं क्योंकि उनका जीवित रहना नियति में लिखा था। आपके नीच कार्यों से आपने उस देश पर भी कब्जा कर लिया जिसे उन्होंने समृद्ध बनाया था। अब जब उन्होंने आपकी शर्तें पूरी कर ली हैं और तेरह वर्ष तक आपके देश से बाहर रहे हैं, तो वे सब कुछ भूलने को तैयार हैं यदि आप उन्हें उनका हक देने को तैयार हों।”

राजा द्रुपद ने अधीरता से पूछा, 'उत्तर क्या था? धृतराष्ट्र ने क्या उत्तर दिया?'
वे आपस में बहस करने लगे। भीष्मचार्य ने कहा कि अनुरोध उचित था, इसलिए उन्होंने उन्हें और बोलने नहीं दिया। कर्ण, जो सबसे अधिक बहस करने वाला था, ने मुझे यह कहकर वापस भेज दिया कि वे संजय को उत्तर के साथ भेजेंगे। उन्होंने मुझे अच्छा भोजन और सौ सिक्के दिए।
द्रुपद ने ब्राह्मण पुरोहित से जाने की अनुमति मांग ली। उम्र के कारण उनके बाल सफ़ेद हो गए थे, फिर भी द्रुपद की हर हरकत में गरिमा और पुरुषत्व झलकता था। यादवों ने उनका बहुत सम्मान किया।
जब हम बुदबुदाते हुए खड़े थे, तो उसने हमारी ओर देखा और कहा, 'संदेश भेजना और युद्धविराम की बातें करना जारी रह सकता है। लेकिन युद्ध की तैयारी बंद मत करो।'
अगले दिन, धृतराष्ट्र के मुखपत्र के रूप में कार्य करने वाले मंत्री संजय आ पहुँचे। उन्होंने भोजन किया, विश्राम किया, फिर सभा-महल में आए, जहाँ तब तक सभी लोग एकत्रित हो चुके थे। रिवाज़ के अनुसार, युधिष्ठिर ने अपने मामा और उनके सभी बच्चों के परिवारों के बारे में जानकारी ली। क्या पोते- पोतियाँ स्वस्थ हैं? क्या ब्राह्मण नियमित रूप से अनुष्ठान कर रहे हैं? क्या सेवक सभी बुजुर्गों की अच्छी देखभाल कर रहे हैं?
इस तरह के शिष्ट प्रश्न निश्चित रूप से औपचारिकता का हिस्सा थे, लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या गायों से अच्छी मात्रा में दूध मिल रहा है या नहीं जैसी अप्रासंगिक बातों को शामिल करने के लिए उन्हें लंबा खींचना वास्तव में आवश्यक था।
सत्यकी ने अधीरता से कहा, 'आइए सुनें कि अंधे राजा ने क्या कहा।'
हॉल के पीछे देवदार की लकड़ी से बने नक्काशीदार पर्दे के पीछे से मुझे गहनों की हल्की झंकार सुनाई दी और मैंने द्रौपदी की पायल की झंकार पहचान ली। तो वह संजय का प्रवचन सुनने आई थी।
संजय ने कहा, “धर्मपुत्र, धृतराष्ट्र के वचन सुनो। पांडवों, कृष्ण, सत्यकी, शिणु पुत्र, और पूज्य द्रुपद और विराट, आप भी सुनो। धृतराष्ट्र ने कहा: “तुम सब श्रेष्ठ पुरुष हो, बुरे कर्म करने में असमर्थ। पाप तुम पर सफेद वस्त्रों पर दीपक के कालिख के दाग के समान स्पष्ट दिखाई देगा।”

“मैं तुम्हें बताता हूँ कि युद्ध शुरू करने की जल्दबाजी करने पर क्या होगा। यदि यादव, पांचाल और विराट तुम्हारी सहायता के लिए आ जाएँ तो तुम अजेय हो जाओगे। परन्तु जब तक उनके साथ द्रोण, भीष्म, कृपा और शल्य हैं और कर्ण उनका नेतृत्व कर रहे हैं, तब तक मुझे नहीं लगता कि कौरवों को कोई हरा सकता है। मुझे किसी भी पक्ष की जीत या हार में कोई लाभ नहीं दिखता। पांडवों को ही शांति स्थापित करनी होगी। मैं प्रार्थना करता हूँ कि दोनों पक्षों का भला हो।” संजय रुक गए।
फिर उन्होंने अपनी ओर से यह बात जोड़ते हुए कहा, 'महान राजा ने भीष्मचार्य की उपस्थिति में यह संदेश दिया था।'
शायद मैं मंदबुद्धि था, जैसा कि युधिष्ठिर हमेशा कहते थे, क्योंकि मैं इस संदेश को पूरी तरह से समझ नहीं पाया। 'चाचा जी का असली मतलब क्या है? मुझे समझ नहीं आ रहा।'
धृष्टद्युम्न मुस्कुराए। “मीठे शब्दों का आवरण हटाकर देखें तो उनके कहने का सार यह है: जहाँ चाहो, किसी भी जंगल में पड़े रहो और सड़ते रहो, लेकिन कौरवों को परेशान मत करो। शांति स्थापित करने के लिए कहने का उनका यही तात्पर्य है।”
मैंने पायल की आवाज सुनी और मुड़कर देखा। द्रौपदी मेरी ओर देख रही थी। संजय उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब युधिष्ठिर इस मामले पर दोबारा चर्चा करने के लिए कृष्ण के पास गए, तो मैंने कहा, 'अब शांति का कोई सवाल ही नहीं उठता। उन्हें बता दीजिए कि पांडव युद्ध के लिए तैयार हैं।' युधिष्ठिर मुझे हैरानी से घूर रहे थे। कृष्ण, अर्जुन, नकुल और सहदेव भी प्रश्नवाचक दृष्टि से मेरी ओर देख रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि उत्तर देना मेरा काम नहीं था, बल्कि युधिष्ठिर का काम था। मैंने एक नियम तोड़ दिया था।

4

राजा द्रुपद खड़े हो गए। वे मेरी ओर आए, अत्यंत असंतुष्ट दिख रहे थे। मुझे लगा कि वे मुझसे, दूसरे भाई से, बिना अनुमति के बोलने के लिए दोष लेंगे। उन्होंने कहा, ‘मैं बातचीत में माहिर नहीं हूँ। मैं अब जा रहा हूँ। जब भी आपको मेरी ज़रूरत हो, आप गेस्ट हाउस में आकर मुझे बुला सकते हैं। फिलहाल, मैं भी शांति बनाए रखता हूँ…’
बूढ़े व्यक्ति की आँखों में मनोरंजन की झलक थी। सभागार के बीचोंबीच संजय और युधिष्ठिर अगल-बगल बैठे आपस में कुछ बुदबुदा रहे थे। कृष्ण चुपचाप अर्जुन के पास खड़े थे। अंत में, संजय उठे और बाहर चले गए।
मैं शस्त्रगृह की ओर चल पड़ा। नकुला मेरे पास पहुँच गया और कहा कि युधिष्ठिर मुझसे मिलना चाहते हैं। मैं वापस सभागार में चला गया। युधिष्ठिर ने कहा, “मैं युद्ध से बचने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ। आदर्श समाधान यह होगा कि हमें आधा राज्य मिल जाए, जिसमें इंद्रप्रस्थ भी शामिल हो। या कम से कम पाँच गाँव…”
मुझे गुस्सा आ गया, 'कौन तय करता है कि पांच गांव काफी होंगे?'
'जी हां, मुझे अधिकार है। अगर आपको इस पर शक है, तो पांडवों के बीच ही तुरंत युद्ध शुरू हो जाएगा।'
युधिष्ठिर के शब्द खाली सभाघर में गूंज रहे थे। मैंने उनकी आँखों में चुनौती देखी। बड़ी मुश्किल से मैंने अपना सिर झुकाया और वहाँ से चला गया। मैं लेट गया और लोहारों द्वारा लोहे की चादरों को समतल करने की आवाज़ें सुनने लगा। धृष्टद्युम्न मुझे ढूंढते हुए आए और मैं उठ गया। मैंने उन्हें युधिष्ठिर की स्थिति के बारे में कुछ नहीं बताया। वे बहुत प्रसन्न प्रतीत हो रहे थे।
उसने उस मदिराप के घड़े से शराब पी, जिसे परिचारक ने भरकर मेरे पलंग के पास रख दिया था, और कहा, 'मैंने हस्तिनापुरा में एक जासूस भेजा था। वह वापस आ गया है।'
अब मेरी दिलचस्पी उसमें जाग उठी थी। विदुर और धृतराष्ट्र के बीच लंबी बहस चल रही थी। भीष्मचार्य तटस्थ भाव से अलग-थलग बैठे थे। कृष्णद्वैपायन और गांधारी यह समझकर कि उनकी बातों का कोई असर नहीं हो रहा है, वहाँ से चले गए थे।

‘कर्ण का क्या हुआ?’
‘कर्ण और भीष्मचार्य के बीच तीखी बहस हुई, पता नहीं किस बात पर। कर्ण को बुरा लगा, वह वहां से चले गए और फिर वापस हॉल में नहीं लौटे। तब से वह अपने घर से बाहर नहीं निकले हैं।’
उसने शराब का बर्तन एक बार फिर उठाया।
धृतराष्ट्र पांडव पक्ष के एक व्यक्ति से बहुत भयभीत हैं। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वह कौन है?
इसका अनुमान लगाना मुश्किल नहीं था। यह अर्जुन ही होना चाहिए था, जिसने नए हथियार प्राप्त किए थे, जो दोनों हाथों से बिना निशाना चूके बाण चला सकता था।
‘नहीं,’ उसने मेरी छाती पर हल्के से थपथपाते हुए कहा। ‘वह जिससे डरता है, वह यह वृकोदरा है। क्या तुम जानते हो राजा ने क्या कहा था? “वह मेरे बेटों को मार डालेगा। मैं इसके बारे में सोचता रहता हूँ और पूरी रात जागता रहता हूँ, गर्म आहें भरता रहता हूँ।” तुम्हारा क्या कहना है?’
मैं फिर सोचने लगा। पांडवों का सरदार एक ऐसा व्यक्ति था जिसे अपने ही भाइयों की शारीरिक शक्ति या अपने रिश्तेदारों की सेनाओं की ताकत का अंदाजा नहीं था…
'दुर्योधन लगातार अपने पिता को दिलासा देने की कोशिश करता रहता है, यह कहते हुए कि वह गदा युद्ध में अकेले ही भीम को हरा सकता है।'
धृष्टद्युम्न उस युद्ध-घोड़े की तरह थे जो सारथी द्वारा रथ की गति कम करते ही अधीर हो जाता है। वे अत्यंत बेचैन थे और एक पल के लिए भी शांत नहीं बैठ पा रहे थे। वे जल्दी से बाहर निकल गए और कहने लगे कि वे सत्यकी को ढूंढने जा रहे हैं।
शाम होने से पहले एक दूत फिर आया। मुझे सभाघर में बुलाया गया।
जब मैं अंदर गया तो मेरे तीनों छोटे भाई वहीं थे। कृष्ण, धृष्टद्युम्न और सत्यकी युधिष्ठिर के सामने बैठे थे। मेरे छोटे भाई आपस में थोड़ी दूरी पर खड़े होकर मुझे देख रहे थे। वे असहज महसूस कर रहे थे। द्रुपद और विराट दोनों ही हॉल में नहीं थे।
‘मैंने फैसला किया है कि हम युद्ध को टालने का एक और प्रयास करेंगे।’ युधिष्ठिर ने बोलते हुए मेरी ओर देखा। ‘हम एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति को दूत बनाकर भेजेंगे। कृष्ण जाने के लिए सहमत हो गए हैं।’

कृष्णा के चेहरे और झुके हुए सिर से मैं समझ गया था कि यह भूमिका उन पर थोपी गई थी।
मेरे भाई ने कहा, 'मैंने आप लोगों को इसलिए बुलवाया ताकि पता चल सके कि आपमें से हर एक क्या सोचता है। यह एक महत्वपूर्ण निर्णय है।'
मैंने अपने गुस्से को दबाया, खुद को यथासंभव शांत करने की कोशिश की और कहा, 'इस समय हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हमारे किसी भी राजवंश का विनाश न हो। इसके लिए जो भी करना पड़े, मैं करने को तैयार हूं, यहां तक कि दुर्योधन का सेवक बनने को भी।'
मुझसे अपशब्द सुनने की उम्मीद कर रहे कृष्ण ने मेरी ठंडी और संयमित आवाज़ सुनकर अविश्वास भरी निगाहों से मेरी ओर देखा। उन्हें नहीं पता था कि युधिष्ठिर मुझसे पहले बहुत क्रोधित थे, और लगभग मुझे चुनौती देने ही वाले थे। मैंने इस बारे में किसी को नहीं बताया था।
‘एक शक्तिहीन व्यक्ति के शब्द! क्या युद्ध नजदीक आने पर तुम कायर बन रहे हो, भीमसेन?’ कृष्ण ने पूछा।
‘अगर तुमने नपुंसक पांडु के पुत्रों से और अधिक अपेक्षा की थी, तो यह तुम्हारी गलती है।’ मैंने बिना किसी क्रोध के कहा।
मेरे भाई चौंक गए। कृष्णा तुरंत शांत हो गया, उसे एहसास हुआ कि मेरे शब्दों के पीछे कुछ ऐसा छिपा हुआ है जिसे वह नहीं जानता।
'मैंने जो कहा उसका मेरा वह मतलब नहीं था। यह एक हानिरहित मजाक था।'
अब अर्जुन की बोलने की बारी थी। उन्होंने नकुल की ओर देखा, फिर सहदेव की ओर, शायद इसलिए क्योंकि वे दूसरों के बोलने के बाद ही बोलना चाहते थे। वे चुप रहे, मानो उनके निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हों।
‘अर्जुन, तुम्हारा क्या कहना है?’ युधिष्ठिर ने फिर पूछा।
मैं इसलिए परेशान हूँ क्योंकि हमारे शिक्षक विरोधी पक्ष में हैं।
आख़िरकार, युद्ध और चोरी हुए मवेशियों को वापस लाना एक जैसा नहीं है। अगर संधि संभव हो तो यह सबके लिए अच्छा होगा।
नकुला ने उसकी बात से सहमति जताई।
बुलाए जाने से पहले ही सहदेव आगे आ गए। उनका चेहरा लाल था। ‘भीम, अर्जुन, युधिष्ठिर, ये सभी संभवतः धर्म के महान अनुयायी हैं। नकुल का कोई ऐसा मत नहीं है जिसे वह अपना कह सके। लेकिन मैं उनकी तरह नहीं सोचता।’

वह रुका और कृष्ण की ओर मुड़ा। ‘मैंने द्रौपदी को दांव पर लगाते और फिर उसे जुआघर से घसीटते हुए देखा, ऐसा दृश्य कोई भी मनुष्य सहन नहीं कर सकता। जब तक मैं उन्हें नष्ट नहीं कर देता, तब तक मुझे चैन नहीं आएगा। मैं शकुनि को अपने हाथों मार डालूंगा। मुझे युद्ध चाहिए। कृष्ण, यदि आप चाहें, तो आप मान सकते हैं कि सहदेव धर्म के विरुद्ध है।’
सत्यकी ने सहदेव को आलिंगन में भर लिया। सहदेव उस समय से ही क्रोधित थे जब उन्हें निश्चित रूप से पता चल गया था कि माद्री के भाई और उनके मामा शल्य कौरवों का साथ देंगे।
सहदेव की बातों पर ध्यान न देते हुए युधिष्ठिर ने कहा, 'चलो अब हम सब चलते हैं। कृष्ण हमारा संदेश लेकर अपनी यात्रा पर निकल सकते हैं।'
लकड़ी के पर्दे के पीछे से एक धीमी सी आवाज सुनाई दी। 'रुको। मुझे कुछ कहना है!'
द्रौपदी बाहर आई। हम सबको अनदेखा करते हुए वह कृष्ण के पास गई। “मुझे पता है कि यहाँ किसी ने भी मेरी राय नहीं पूछी है। आखिर शर्त के पात्र के पास बोलने के लिए जीभ तो होती ही नहीं।”
युधिष्ठिर ने गंभीर स्वर में द्रौपदी को याद दिलाया, 'यह राज्य के मामलों पर चर्चा है।'
कुरु कबीले में जीवित रहने के लिए महिलाओं को अंधा या गूंगा होना पड़ता है। कल और आज पूरे दिन मैंने सुलह की बातें सुनी हैं। सुलह की भीख मांगने जाने से पहले इसे देख लीजिए।
उसने अपने बाएं हाथ से अपने खुले बालों को कंधे पर फैला लिया।
जब दुस्साना ने मुझे बालों से घसीटा, तो मेरे बाल खुल गए और तब से मैंने उन्हें कभी नहीं बांधा। इन तेरह वर्षों में, मैंने अपने भीतर जल रही आग को जीवित रखा, अपने आँसुओं को उसे बुझाने नहीं दिया। और अब, जिसने अकेले ही सभी कौरवों को मारने की कसम खाई थी, वह भी धर्म का अनुयायी बन गया है! मैंने कृतिया के बारे में सुना था, जो एक संरक्षक देवी थीं और जिनका आह्वान गुप्त मंत्रों के माध्यम से किया जाता था। द्रौपदी की मुद्रा, हाथों में शाप के बीज लिए और आँखों में विनाश की ज्वाला लिए, कृतिया के समान थी। द्रौपदी का क्रोध अचानक शांत हो गया, उसने अपना चेहरा ढँक लिया और रोने लगी।

कृष्ण उसकी ओर बढ़े और बोले, ‘रोओ मत। मैंने तुमसे जो पहले कहा था, उसे मत भूलो। मेरी कल्पना में, तुम्हारे शत्रु नष्ट हो चुके हैं, तुम अपने पतियों के साथ समृद्धि में राज कर रही हो।’
हममें से किसी की ओर देखे बिना, द्रौपदी दृढ़ कदमों से चली गई।
उसने मुझे ही निशाना बनाया होगा क्योंकि मैंने कहा था कि मैं अपने शत्रुओं का सेवक बनने को भी तैयार हूँ। वह महान योद्धा जो अपनी प्रतिज्ञा भूल गया! यहाँ तक कि सहदेव की आँखों में भी मुझे देखकर आक्रोश था। क्या सत्यकी और धृष्टद्युम्न को शक था कि युद्ध नजदीक आने पर मैं कायर बन रहा हूँ? अगर धृष्टद्युम्न जैसा व्यक्ति भी ऐसा सोचे तो...
जब राजा द्रुपद ने अपनी पुत्री को पाँच पतियों के साथ साझा करने के लिए विदा करना अनुचित बताया था, तब धृष्टद्युम्न ने ही उनसे तर्क किया था और उनकी आपत्तियों को दूर किया था। उन्होंने ज़ोर देकर कहा था कि मैं अर्जुन के समान ही, बल्कि उससे भी अधिक, एक उपयुक्त दामाद हूँ। क्या धृष्टद्युम्न, जो मुझसे प्रेम करते थे, अब मुझे कायर समझेंगे?
मैं चलते-चलते हाथियों के बाड़े तक पहुँच गया। मैंने देखा कि वहाँ दंगा छिड़ गया था। एक हाथी बेकाबू होकर महावत पर हमला कर बैठा, जिसने उसके पैरों को बांधने के लिए एक जंजीर लादी। महावत ज़मीन पर गिर पड़ा था, और अब हाथी किले की ग्रेनाइट की दीवार को तोड़ने की कोशिश कर रहा था। लोगों का एक समूह लंबी लाठियों और भालों से लैस होकर अलग खड़ा था।
मैं हाथी की ओर बढ़ा और महावतों ने मेरा रास्ता रोक दिया। 'इसके पास मत जाओ, यह बेकाबू हो गया है!'
मैंने एक महावत से भाला छीना, उसे ज़मीन में गाड़ दिया जिससे उसकी नोक कुंद हो गई, फिर उसे उसी सिरे से पकड़कर आगे बढ़ गया। हाथी अचानक घूम गया। मैंने जानवर से उसकी समझ में आने वाली भाषा में कहा, 'शांत हो जाओ, शांत हो जाओ।' उसने अपनी सूंड मोड़ी और अपने दोनों दांत आकाश की ओर उठा लिए। मैंने भाला उसके माथे के ठीक बीचोंबीच स्थित महत्वपूर्ण बिंदु पर फेंका; भाला निशाने पर लगा। हाथी अपने झुके हुए अगले पैर पर बैठ गया और जोर से चिंघाड़ते हुए उसके सामने मैं पागलों की तरह खड़ा रहा और चिल्लाया: 'क्या तुम द्वंद्वयुद्ध चाहते हो? भीमसेन तैयार है!'
जानवरों में एक अचूक सहज प्रवृत्ति होती है। आधा पागल हाथी पूरी तरह से पागल आदमी के सामने कांप उठा। मैं उसके दांतों के बीच खड़ा हुआ, अपनी

मुट्ठियाँ भींचीं, उनसे उसके माथे पर प्रहार किया और उससे फिर पूछा, 'क्या तुम लड़ना चाहते हो?'
महावत जंजीरें लेकर आए और उन्होंने जानवर के पैरों को बांध दिया। तब तक वह शांत हो चुका था।
मैं क्रोधित होकर मुड़ा और वहाँ से चला गया। तभी मैंने देखा कि हाथियों के बाड़े में शोर सुनकर दौड़ते हुए लोगों की भीड़ में धृष्टद्युम्न भी थे। द्रौपदी भी उनके साथ थीं। वे सब मेरे पास आ पहुँचे।
धृष्टद्युम्न ने पूछा, 'तुम किससे नाराज़ हो? मुझे पूरा यकीन है कि तुम हाथी से नाराज़ नहीं हो।'
मैंने कुछ भी नहीं कहा।
द्रौपदी ने कहा, 'यह सौभाग्य की बात है कि आज सुबह तुमने अपने बड़े भाई से द्वंद्वयुद्ध नहीं किया।'
उसने मेरी तरफ मुस्कुराया। और मेरे अंदर का पुरुष शांत हो गया।
कृष्ण के लौटने तक हम सब बेचैन रहे। सेना के जवानों का उत्साह फीका पड़ गया, हालांकि किसी ने उन्हें कुछ बताया नहीं था। कार्यशालाओं में उत्पादन धीमा हो गया। विराट की सेना के वे नौजवान, जो युद्ध की गंध में डूबे हुए थे, अब उदासी से भर गए थे। कई लोग मेरे पास आए और मुझसे पूछा कि क्या संधि का फैसला हो गया है। मैंने उन सबको एक ही जवाब दिया: कृष्ण के आने का इंतजार करो, फिर हम फैसला करेंगे।
कृष्ण संतुष्ट होकर लौटे, और हमने अनुमान लगाया कि दुर्योधन हमें आधा राज्य देने के लिए सहमत हो गया है। मैंने रास्ते में उनसे कुछ और जानकारी लेने के लिए रोका, लेकिन उन्होंने मुझे स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। उन्होंने टालमटोल भरे लहजे में कहा, 'राज्य से जुड़े मामलों पर चर्चा केवल सभाघर में ही की जा सकती है।'
जब हम सब दोबारा वहां एकत्रित हुए, तो द्रुपद, विराट और विराट के पुत्र उत्तरन सभी हॉल में मौजूद थे। सत्यकी के तीनों सेनापतियों को भी बुलाया गया था, ताकि यदि सेनाओं को भंग करना पड़े तो युधिष्ठिर स्वयं उन्हें निर्देश दे सकें।
कृष्ण ने अपनी बात को लंबा नहीं खींचा, जैसा कि ब्राह्मण दूत और संजय ने पहले किया था।

‘दुर्योधन तुम्हें आधा राज्य, पाँच गाँव या एक घर भी देने को तैयार नहीं है। क्या तुम उसके शब्द सुनना चाहते हो? उसने कहा कि वह पांडवों को राज्य में एक सुई की नोक जितनी जगह भी नहीं देगा!’
मां ने क्या कहा? यही सवाल सबके मन में उठ रहा था: जब आपने मां को देखा तो उन्होंने क्या कहा?
‘उसके शब्द सुनने के लिए ही मैंने आप सभी को इस हॉल में बुलाया था। उसने कहा: “मैं यह बात भूल सकती हूँ कि मेरे बेटों ने अपना राज्य खो दिया, कि उन्होंने जंगल में अनगिनत पीड़ाएँ सहीं। लेकिन मैं यह कभी नहीं भूल सकती कि मेरी बहू को खून से सना हुआ कपड़ा पहने, अनाथ की तरह जुआघर में खड़ा रहना पड़ा और पीड़ा सहनी पड़ी। अगर मेरे बेटों को विदुला की कहानी नहीं पता है, तो उन्हें बताएँ।”’
कृष्ण रुक गए और द्रौपदी की ओर देखने लगे, जो अपनी आंखों से खुशी के आंसू पोंछ रही थी।
फिर उन्होंने कहानी को अपने शब्दों में सुनाया: ‘विदुला एक क्षत्रिय स्त्री थीं, जिन्होंने अपने बेटे को युद्ध के मैदान में वापस भेज दिया जब उसने युद्ध के डर से भागकर छिपने की कोशिश की। विदुला ने उससे कहा कि बिना किसी उद्देश्य या साहस के प्रेम केवल एक गधी के काम आता है।’
हम सब चुप थे, अपनी माँ के बारे में सोच रहे थे। सभी लोग सांस रोककर इंतज़ार कर रहे थे कि युधिष्ठिर क्या कहेंगे।
कृष्ण ने आगे कहा, ‘तुम्हारी माता ने भीम और अर्जुन को एक विशेष संदेश भेजा था। कि वे युद्ध जीतें, अपने बड़े भाई को राजा बनाएं और उनका राज्याभिषेक करें।’
उन्होंने युधिष्ठिर की ओर मुड़कर कहा, “अब बस वही बात बाकी है जो उसने मुझसे तुम्हें बताने को कहा था। उसने तुम्हें यह संदेश भेजा है: “जो राजा अपने राज्य और प्रजा की रक्षा करना नहीं जानते, वे वीरों के स्वर्ग में नहीं, बल्कि नरक में जाने के लिए अभिशप्त हैं।””
युधिष्ठिर चिंतन में लीन हो गए। सत्यकी और धृष्टद्युम्न उठकर इधर-उधर टहलने लगे। द्रुपद और विराट युधिष्ठिर को लगातार देखते रहे।
हॉल में व्याप्त पूर्ण सन्नाटे को भंग करने वाली एकमात्र ध्वनि द्रौपदी के चलने पर उसकी पायल की झंकार थी।
युधिष्ठिर ने आह भरी और पूछा, 'अभिमन्यु के विवाह का क्या होगा...?'

कृष्णा ने ऐसा दिखाया जैसे उसने सवाल सुना ही न हो। सन्नाटा छाया रहा। अंत में, कृष्ण ने पूछा, 'तो अब आपने क्या निर्णय लिया है कि हमें क्या करना चाहिए?'
युधिष्ठिर ने अपना सिर उठाया और हमारी ओर देखा। असीम शांति के साथ उन्होंने एक शब्द में उत्तर दिया:
'युद्ध!'

भाग 7

फटे -पुराने कपड़े

1

सबसे पहले, हमने कब्रिस्तान के लिए जगह अलग रखी। हमने जो जगह चुनी, वह चट्टानों और कंटीली झाड़ियों से ढकी हुई थी और हिरणवती नदी के किनारे स्थित थी।
इसके बाद कुरुक्षेत्र में जगह-जगह सैन्य शिविर लगाए गए। ऋषियों और पुरोहितों के लिए तुरंत तंबू लगाए गए। राजाओं के लिए बने सैन्य आवासों के बीचोंबीच सबसे आखिर में विशाल राजसी तंबू बनाया गया, जिसमें यज्ञ अनुष्ठान करने की सुविधा थी। युधिष्ठिर ने उसमें निवास किया और वहीं सैन्य रणनीतियों पर चर्चाएँ होती थीं। ब्राह्मणों के घरों के पास बच्चों के लिए घर बनाए गए। कुरुक्षेत्र में घास और जलाऊ लकड़ी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे।
सात राजाओं के अधीन युद्ध कर चुकी सेनाओं को सात समूहों में बाँटा गया।
बड़ी-बड़ी आग के चारों ओर बैठे सैनिकों ने अपने हथियारों को तेज किया।
सत्यकी ने उनकी देखभाल में विशेष ध्यान रखा।
श्मशान के आगे नदी किनारे एक स्थान पर घोड़ों और हाथियों को रखा गया था।
युद्ध रथ मुख्य तम्बुओं के बीच और उनके सामने खड़े थे। धृष्टद्युम्न ने दूसरे आक्रमण दल को रवाना करने वाले रथों को यज्ञ स्थल के पीछे एक स्थान पर स्थानांतरित कर दिया।
विराट की राजधानी में तैयारियाँ और चर्चाएँ हुईं। सर्वोच्च सेनापति के रूप में किसे चुनना सबसे अच्छा होगा, इस पर अलग-अलग मत थे; उसे सभी सैनिकों को एक ही उद्देश्य के लिए एकजुट करने में सक्षम होना चाहिए था। सहदेव ने आवेग में विराट का नाम लिया। नकुल का सुझाव अधिक सोच-समझकर दिया गया था और उनकी बात में समझदारी थी: चूंकि भीष्म, द्रोण और कृपा जैसे वरिष्ठ गुरु विपरीत पक्ष में थे, इसलिए द्रुपद का हमारी ओर से नेतृत्व करना सर्वोत्तम होगा।
मैंने एक ऐसा नाम सुझाया जिसकी किसी ने उम्मीद नहीं की थी: शिखंडी। मैंने द्रुपद के इस बड़े पुत्र को पहली बार तब देखा जब वह अभिमन्यु के विवाह के लिए विराटा आया था। वह एकांतप्रिय था, यहाँ तक कि धृष्टद्युम्न से भी बात नहीं करता था। वह कई देशों में घूम चुका था, शिकार करता था या किसी भी ज़रूरतमंद की मदद के लिए युद्ध लड़ता था। वह दुबला-पतला था, चेहरे पर कोई

मुस्कान नहीं थी और आँखें धँसी हुई थीं। किसी तरह मुझे यह आभास हुआ कि उसे हत्या करने में आनंद आता था। मैंने उसे अभ्यास सत्रों में देखा था और जानता था कि वह सभी हथियारों में समान रूप से कुशल था।
मुझे लगा कि जब हमारा सामना उन विरोधियों से होगा जो हमारे शिक्षक और दादा- दादी थे, तो उनके साथ हमारे पुराने संबंधों और उनके प्रति हमारे ऋणों की यादें हममें से अधिकांश को परेशान करेंगी। इसीलिए मैंने सोचा कि शिखंडी को हमारा नेता चुनना एक बुद्धिमानीपूर्ण सैन्य रणनीति होगी।
चूंकि कृष्ण ने सभी व्यवस्थाओं की देखरेख की थी, इसलिए युधिष्ठिर को लगा कि अंतिम निर्णय उन्हीं पर छोड़ देना चाहिए।
तीनों व्यक्ति हर तरह से इस पद के लिए समान रूप से योग्य हैं। हालांकि, दूसरी तरफ हमसे कहीं अधिक सेना है, इसलिए हमें एक युवा और शक्तिशाली व्यक्ति की आवश्यकता है। मैं एक ऐसे व्यक्ति का नाम प्रस्तावित करता हूँ जो आक्रमण करते समय आक्रामक हो और प्रत्येक अवसर के अनुरूप सही रणनीति का प्रयोग करना जानता हो: धृष्टद्युम्न।
सभी ने इस सुझाव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। किसी ने भी उनका नाम प्रस्तावित नहीं किया था, क्योंकि उन्हें डर था कि वरिष्ठ नेताओं की उपेक्षा का आरोप लग सकता है। ब्राह्मणों ने यज्ञ अनुष्ठान संपन्न कर धृष्टद्युम्न को हमारे सेनापति के रूप में अभिषेक किया।
खजाना और यंत्रवत हथियार अगले दिन गधों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों में पहुंचे। युधिष्ठिर ने आदेश दिया कि उनके पीछे आने वाले चिकित्सकों के लिए आवास बनाए जाएं। सबसे अंत में मगध के गायक और संगीतकार पहुंचे, जो हमारे सैनिकों को युद्ध के लिए रवाना होते समय प्रोत्साहित करने और रात को लौटने पर उनकी थकान दूर करने के लिए वीरगाथाएं गाते थे।
यह तय किया गया कि द्रौपदी नदी के उस पार स्थित एक अतिथि गृह में ठहरेगी, जो विराट की सीमाओं के भीतर स्थित था।
पहरेदार मीनार की छत पर खड़े होकर युधिष्ठिर तैयारियों की निगरानी कर रहे थे।
मैंने हाथियों पर ध्यान केंद्रित किया। मैंने रखवालों से उनके माथे पर लगे सजावटी सामान को हटाकर नुकीली धातु की प्लेटें लगाने को कहा, जिससे आक्रमण करते समय उनकी शक्ति और बढ़ जाएगी – रथों को चकनाचूर करने में ये

प्लेटें और भी उपयोगी साबित होंगी। अर्जुन हथियारगृहों में आते-जाते निर्देश देते रहे।
जासूसों ने खबर दी कि सेना हस्तिनापुरा से आगे बढ़ चुकी है।
जब मैं युद्धक्षेत्र से अपने तम्बू में लौटा, तो मैंने देखा कि कोई मेरा इंतज़ार कर रहा था। वर्षों ने विशोका में कोई बदलाव नहीं लाया था। उसकी हंसी वैसी ही कोमल थी, उसके चेहरे पर विनम्रता का भाव था जो शरारत की एक झलक छुपाए हुए था। उसने युद्ध की खबर सुनी थी और काशी से आया था।
उन्हें देखकर मुझे राहत मिली। उनकी उपस्थिति से मुझे शक्ति मिली। मेरे विशाल रथ का सारथी, जो बीच में खड़ा होगा, कुशल होना चाहिए था। कृष्ण अर्जुन के रथ को चलाएंगे।
दुर्योधन के उकसावे पर गुरुओं ने जोर देकर कहा कि कृष्ण के लिए युद्ध में भाग लेना उचित नहीं है, क्योंकि शांति वार्ता में मध्यस्थ के रूप में वे दोनों पक्षों के मित्र थे। धृतराष्ट्र ने भी यही बात कही। इसलिए कृष्ण ने शस्त्र धारण न करने का वचन दिया, क्योंकि वे भली-भांति जानते थे कि युद्ध में सारथी की कुशलता ही विजय या पराजय का निर्धारण कर सकती है। धृतराष्ट्र उनके वचन से प्रसन्न हुए। कृष्ण की अपनी यादव सेना शत्रु पक्ष में थी, क्योंकि बलराम ने पहले ही ऐसा वचन दे दिया था। यद्यपि कृष्ण स्वयं यादव सेना की सामर्थ्य के बारे में कोई विशेष राय नहीं रखते थे। बलराम ने शत्रु सेना को विदा किया और तटस्थ रहने का संकेत देने के लिए एक तरफ हट गए। इस भय से कि यदि वे वहीं रुके रहे तो किसी एक पक्ष की ओर आकर्षित हो सकते हैं, वे तीर्थयात्रा पर निकल पड़े।
एक बड़े रथ के साथ हमेशा एक-एक घोड़े द्वारा खींचे जाने वाले दो रथ चलते थे, एक रथ के दोनों ओर पहियों की सुरक्षा के लिए और एक रथ रथ के आगे चलता था। रथों से युद्ध करते समय चारों रथों को एक साथ चलना पड़ता था। इनकी गति को मुख्य रथ में बैठे सारथी द्वारा नियंत्रित किया जाता था, जिसे सेनापति के विचारों का अनुमान लगाकर उन पर अमल करना होता था।
सेनेशा ने 300 घोड़े और 51 रथ भेजे थे।
चालीस वर्ष से अधिक आयु के विशोका ने मुझे संकेत दिया कि पैंतीस वर्ष की आयु में मैं उनसे अधिक उम्र का दिखता हूँ।
दो महावत और मुख्य रसोइया मुझसे मिलने आए।

विशोका ने कहा, 'आप व्यस्त हैं। आपके काम खत्म होने तक मैं बाहर इंतजार करूंगी।'
महावत खाने को लेकर नाखुश थे; खाने की ठीक से देखरेख नहीं हो रही थी। मैंने समस्या का समाधान किया और उन्हें भेज दिया। मैं बैल की खाल से बने कुछ कवच एक-एक करके देख रहा था, तभी एक नौकर आया और उसने तेल के दीपक जला दिए।
बाहर जाते समय उसने कहा, 'बाहर एक राजकुमार इंतजार कर रहा है।'
मैंने मान लिया कि यह सेना में भर्ती हुए युवा रंगरूटों में से एक था।
एक बलवान, सुंदर युवक अंदर आया। उसके घने बाल उसके सिर पर सजे आभूषण के नीचे सीधे लटक रहे थे, और उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में जंगलों की हरियाली झलक रही थी। उसकी ठुड्डी के नीचे तांबे जैसे रंग के बालों का एक गुच्छा था। मुझे लगा जैसे मैंने उसका चेहरा कहीं देखा हो। उसने प्रणाम करते हुए मेरे पैर छुए।
‘मैं सर्वदा हूं, आपका पुत्र। बलंधरा मेरी माता हैं।’
मैंने उसे गले लगा लिया, मन ही मन अपनी निर्ममता पर शर्मिंदा था। हम राजकुमार अक्सर दूसरे स्थानों पर पल रहे अपने बच्चों को भूल जाते थे। यहां तक कि जब विशोका ने कहा कि वह काशी से आया है, तब भी मैंने उससे बलंधरा के बेटे का हालचाल पूछना नहीं चाहा। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या केवल हम कुरु वंश के लोग ही ऐसे होते हैं।
मैंने द्रौपदी से उत्पन्न अपने पुत्र सुतसोमा को शिशु अवस्था में देखा था, और फिर केवल तब देखा जब हम विराट से कुरुक्षेत्र के लिए रवाना हो रहे थे। और जब अभिमन्यु उत्तरा से विवाह करने आया, तो अर्जुन उसे पहचान नहीं पाया। सर्वदा को देखकर मैंने खुद को फटकारा। भीम का वीर पुत्र अभी युद्ध लड़ने लायक उम्र का नहीं हुआ था; फिर भी, वह आ गया था। बलंधरा का पुत्र, जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था, जिसे मैंने ऐसे ही लापरवाही से छोड़ दिया था जैसे कोई यात्री खाने के पैकेट का बचा हुआ खाना रास्ते में छोड़ देता है। लेकिन नहीं, एक क्षत्रिय को कभी भी रक्त संबंधों से कमजोर नहीं पड़ना चाहिए: यही बात हमारे बचपन में हमें सिखाने आए शिक्षकों ने हमारे मन में बिठाई थी।
सर्वदा ने कहा, 'मेरी मां बाहर इंतजार कर रही हैं।'
एक बार फिर मैं अचंभित रह गया। मैं बाहर गया और बलंधरा को देखा, जो मेरे पैर छूने के लिए झुकी हुई थी।

मैंने उसका कंधा पकड़कर उसे ऊपर उठाया और कहा, 'आओ, अंदर आओ।'
वह अंदर आई और बारी-बारी से सर्वदा और मुझे देखा। उसकी मुस्कुराती हुई आँखें नम थीं।
जब बलंधरा काशी में थी, तब मैंने कभी उसका हालचाल नहीं पूछा, न ही वहाँ कोई दूत भेजा। फिर भी, वह मेरे सामने मुस्कुराती हुई खड़ी थी, मानो कल ही हमारी मुलाकात हुई हो। कुरु वंश में विवाह करने वाली महिलाओं में बहुत धीरज होना चाहिए, जैसा कि हमारी चाची गांधारी ने एक बार हमसे कहा था। नहीं, यह बात द्रौपदी ने कुछ दिन पहले कही थी। द्रौपदी ने, गांधारी ने नहीं।
मैंने एक नौकर से कहा कि वह सर्वदा को उस तम्बू में ले जाए जहाँ प्रतिविंध्य और सुतसोमा रहते थे।
‘मैं लड़ने आया हूँ। मेरी चिंता मत करो,’ सर्वदा ने आदरपूर्वक कहा।
मैंने बलंधरा को हिरणवती नदी के उस पार महिलाओं के लिए हमने जो व्यवस्था की थी, उसके बारे में बताया। महिलाएं कभी भी योद्धाओं के तंबुओं में नहीं सोती थीं।
‘मैं माँ के साथ विदुर के घर में रहूँगी।’ उसने अपने ऊपरी वस्त्र की एक गाँठ खोली। ‘हम जो पूर्व से हैं, युद्ध से पहले रुद्र और दुर्गा की बलि देते हैं।’
उसने मुझे जो अंजीर का पत्ता दिया था, उस पर लाल सिंदूर और बलि के रक्त में भीगे हुए सफेद फूलों की पंखुड़ियां पड़ी थीं।
मैंने देखा कि विशोका अंधेरे में छुपकर मेरे आदेशों की प्रतीक्षा कर रही थी।
मैंने उससे कहा, 'चलो विदुरा के घर चलते हैं।'
बलंधरा ने मुझे रोका। 'जिस रथ में मैं आया हूँ, वह इंतजार कर रहा है।' सर्वदा ने कहा कि वह उसके रथ के बगल में चलेगा और मुझसे विदा ली।
विशोका मेरे पास आया। ‘मेरे अब तीन बच्चे हैं। हस्तिनापुरा की जिस स्त्री से मैंने विवाह किया था, उसकी मृत्यु हो जाने के बाद, मैंने काशी की एक स्त्री से विवाह किया और उससे मुझे एक पुत्र हुआ।’
मुझे पहले पता नहीं था कि उसके दो बच्चे हैं। रथ चालकों से उनके परिवार के बारे में कोई कभी नहीं पूछता।
विशोका ने पूछा, 'आपके बड़े बेटे के बारे में क्या खबर है?'

मेरा सबसे बड़ा बेटा। वो घटोत्कच था। सारथी इतने अनुमान लगाने योग्य होते थे, वे बातचीत के लिए, सवाल पूछने के लिए हमेशा एक ही विषय चुनते थे…
वन में रहने वाले आदिवासी, रथ चालक और निम्न जाति के लोग पारिवारिक संबंधों को बहुत महत्व देते हैं। मुझे किर्मीरा की याद आई, वह आदिवासी जो मुझसे बदला लेने आया था क्योंकि मैंने उसकी प्रेमिका के भाई की हत्या कर दी थी।
मां ने हमें विदुला की कहानी इसलिए सुनाई थी ताकि हमें याद दिलाया जा सके कि सरल प्रेम, वह प्रेम जो बदले में कुछ नहीं मांगता, केवल एक मादा गधे के लिए ही होता है।
हमारे सामने और भी दुविधाएँ थीं। जिस युद्ध के लिए हम तैयार हो रहे थे, वह एक ऐसे राजा के बीच था जिसने एक स्त्री को दांव पर लगाया था और एक ऐसे राजा के बीच जिसने उसका दांव स्वीकार कर लिया था। मैंने गुस्से में मन ही मन कहा: स्त्रीएँ या तो खेल में मोहरे होती हैं, या फिर खाने के पैकेट की तरह जिन्हें रास्ते में खाकर छोड़ दिया जाता है।
जैसे-जैसे मैं इन बातों के बारे में सोचता गया, मेरी बेचैनी बढ़ती गई और मुझे खुद से नफरत होने लगी। मैंने विशोका से जल्दी से शराब का एक बर्तन लाने को कहा।

रात के समय, सैन्य शिविर से आने वाली आवाजें पूर्णिमा की रात को समुद्र की गर्जना जैसी लगती थीं।
युद्ध सुबह शुरू होगा। धृष्टद्युम्न शिविर और तंबुओं में आते-जाते रहे, शांत और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति पूर्ण रूप से सचेत दिखाई दे रहे थे।
कृष्ण बधाई के पात्र थे कि उन्होंने इस युवक को सेनापति चुना, जो अत्यंत सौम्य शब्दों में आदेश देने में सक्षम था।
पहले दिन सैन्य अभियान आमतौर पर शांत रहते हैं। द्वंद्वयुद्ध की तरह, दोनों पक्ष एक-दूसरे की कमजोरियों का आकलन करने का प्रयास करते हैं।
धृष्टद्युम्न ने आदेश दिया कि प्रत्येक सैनिक एक प्रतिद्वंद्वी का चयन करे और उस पर हमला करे।

नकुला ने कसम खाई कि उसका निशाना उसका चाचा शल्या होगा, जो विरोधी पक्ष में था।
युधिष्ठिर ने उसे चेतावनी देते हुए कहा, 'इस तरह की शपथ मत लो। शल्य एक दुर्जेय व्यक्ति है।'
अर्जुन को पूरा यकीन था कि उसका निशाना कर्ण ही होगा। सहदेव ने शकुनी को बहुत पहले ही चुन लिया था। त्रिगर्थ कोई महान योद्धा नहीं थे, और प्रतिविंध्य, सुतसोमा और सर्वदा जैसे युवा योद्धा उनका सामना कर सकते थे। सिंधु के राजा जयद्रथ एक दुर्जेय शत्रु थे। सत्यकी उनका पीछा करेंगे। अभिमन्यु कर्ण के पुत्र वृषसेन पर आक्रमण करेंगे। धृष्टद्युम्न ने हमसे द्रोण को उनके हवाले करने को कहा था।
बिना बताए ही सबको पता था कि मैं अपना हमला दुर्योधन पर करूंगा।
सभी महत्वपूर्ण विरोधियों का सामना करने के लिए योद्धाओं का चयन कर लिया गया था, सिवाय एक के। वह नाम भीष्म का था। कोई भी उनसे लड़ने के लिए आगे नहीं आया।
‘मैं उसे मार डालूँगा।’ हमला नहीं, बल्कि जान से मार डालूँगा – शिखंडी, जो तब तक चुप था, बोला। हम सब उसे घूरने लगे।
शिखंडी ने उदासीनता से कहा, 'तीर दादाओं या गुरुओं के कवच को नहीं पहचानते।' उसकी आँखों की पुतलियाँ, किसी मृत व्यक्ति की तरह स्थिर थीं, जो मुझे मृत्यु के दूतों की याद दिलाती थीं।
अर्जुन, जो हमारी सैन्य रणनीतियों का निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार थे, ने कहा कि आक्रमण के लिए सेनाओं को हीराकार संरचना में संगठित करना सर्वोत्तम होगा। उन्होंने उंगली से रेत पर संरचना का रेखाचित्र बनाया। आक्रमणकारी दल की अग्रिम पंक्ति में कौन खड़ा होगा और संचालन का निर्देशन करेगा? जो भी वह होगा, वह पूरी सेना के लिए ढाल का काम करेगा।
युधिष्ठिर ने चिंता से पूछा, 'वह कौन होगा? कौन?'
अर्जुन रोते हुए बोला, ‘पूछने की ज़रूरत ही क्या? मेरे बड़े भाई भीमसेन से!’
युधिष्ठिर ने राहत की सांस ली।
मैं भोर से पहले ही जाग गया। युधिष्ठिर एक घोड़े द्वारा खींचे गए रथ में बैठकर कौरव शिविर के लिए निकल चुके थे, ताकि हमारे गुरुओं को प्रणाम कर

युधिष्ठिर ने उन्हें सुधारा - शल्य ने ही उत्तरन पर आक्रमण किया था, और उत्तरन ने पलटवार करने के लिए शल्य की ओर छलांग लगाई थी। उत्तरन ने एक योद्धा की मृत्यु पाई।
युद्धक्षेत्र में सैनिकों की दूसरी पंक्ति के सामने खड़े होकर मुझे पता चला कि अर्जुन दूर से दादा भीष्म और अपने गुरुओं को देखकर बहुत व्याकुल हो गए थे। उन्होंने सत्यकी से यह बात स्वीकार भी की। उन्होंने कृष्ण से अपना रथ वापस मोड़ने का अनुरोध भी किया था। कृष्ण को उनके अचानक भय को शांत करने और उन्हें फिर से लड़ने का हौसला देने के लिए उन्हें काफी देर तक समझाना पड़ा। कृष्ण ने अर्जुन को दृढ़ता से समझाया कि यदि युद्ध में उनके गुरुओं या दादाओं में से कोई शहीद हो जाता है, तो यह उचित और न्यायसंगत है। जो व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन करता है, उसे उस कर्म के फल की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक जन्म लेने वाले को मरना ही है; जो मर जाते हैं वे फिर से जन्म लेते हैं। हत्यारा और मारा गया: इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं है। आत्मा कभी नष्ट नहीं हो सकती। कृष्ण ने कहा कि आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करती है, जैसे मनुष्य पुराने कपड़ों को त्यागकर नए कपड़े धारण करते हैं, और इसमें शोक करने का कोई कारण नहीं है।
मेरे रथ के बाएँ पहिये की रखवाली करने वाले युधमन्यु ने कृष्ण की सारी बातें सुन ली थीं। उन्होंने आदरपूर्वक कहा, “कृष्ण ने अर्जुन को बहुत देर तक उपदेश दिया। उन्होंने गहन दार्शनिक सिद्धांतों की बातें कीं। मुझे उनकी बहुत सी बातें समझ नहीं आईं।”
मृत्यु शरीर के कपड़े बदलने जैसी थी! मैंने शोकग्रस्त विराट की उदास आँखों और झुके हुए सिर को देखा।
जब मैं हिरणवती नदी के किनारे कंटीली झाड़ियों में गया, तो पहले दिन आत्माओं द्वारा त्यागे गए सभी फटे-पुराने वस्त्रों में आग लग गई थी।

2

उस दिन सेना को उड़ते हुए क्रौंच पक्षी के आकार में व्यवस्थित किया गया था। मैं और मेरा समूह चोंच थे। धृष्टद्युम्न अभिमन्यु, नकुल और सहदेव के साथ बाएँ पंख पर थे। अर्जुन, सत्यकी और द्रुपद दाएँ पंख पर थे। यह हीरे के आकार की संरचना से बेहतर था। सर्वदा, रुक्मी और पांचाली के पुत्रों ने पक्षी के पैर बनाए, और युधिष्ठिर ने गर्दन।
उस दिन कलिंग के राजा और उनके पुत्रों का पतन हो गया। वे कुशल योद्धा थे; उनके आगे हाथियों की सेना भेजने का निर्णय ही उनकी हार का कारण बना। उन्हें यह उम्मीद नहीं थी कि मैं सेना का नेतृत्व कर रहे हाथी की गर्दन पर कूद पड़ूँगा। मैंने उसके माथे पर एक महत्वपूर्ण बिंदु पर प्रहार किया – यह हाथियों को वश में करने की तकनीक का हिस्सा था। हाथी दर्द से कराहते हुए बेतहाशा घूम उठा। बाकी सभी हाथी चिंघाड़ते हुए भाग गए। कई लोग हाथियों के पैरों तले कुचलकर मर गए। जब तक मैं अपने रथ पर वापस चढ़ा, कलिंग पूरी तरह से बिखर चुके थे।
हम रात में शिविर में एकत्रित हुए और दिन भर के अपने नुकसान और लाभ का हिसाब लगाया, और पाया कि युवा अभिमन्यु ने ही शत्रु को सबसे भीषण विनाश पहुंचाया था।
अभिमन्यु की आंखें सुभद्रा जैसी थीं; पलकें झपकते देख ऐसा लगता था मानो वह कोई लड़की हो। जब बड़ों ने उसकी तारीफ करना शुरू किया, तो वह चुपके से निकल गया। मैं भी निकल गया।
अभिमन्यु मेरे पास आया और बोला, 'चाचा जी, सर्वदा एक अद्भुत योद्धा है! जब मैंने उसे त्रिगर्थ की सेना को तितर-बितर करते देखा तो मैं दंग रह गया। मुझे आशा है कि उसे चाचा नकुल के पास भेजा जाएगा - क्योंकि यही हमारी एक कमजोरी है।'
उनमें कितना आत्मविश्वास था! अभिमन्यु, सर्वदा, प्रतिविंध्य, सुतसोमा – हम उनके सामने कुछ भी नहीं थे। मैंने मन ही मन सोचा: जब ये पंद्रह-सोलह साल के लड़के बड़े होंगे, तो कुरु वंश की प्रसिद्धि पूरे भारत में फैल जाएगी। शायद एक दिन सूत गाथाओं में हमें इन लड़कों के पिता के रूप में याद किया जाएगा।
अभिमन्यु मेरे साथ चलकर मेरे तम्बू तक आया।

अगले दिन, सेना को अर्धचंद्राकार रूप में व्यवस्थित किया गया। दोनों पक्षों को कोई खास सफलता या हार नहीं मिली। उस रात, गंभीर चर्चा हुई। हमारे जासूसों से हमें कुछ अच्छी खबर मिली: कौरवों को शीघ्र विजय की उम्मीद थी, और दुर्योधन इस बात से क्रोधित था कि ऐसा नहीं हुआ। कर्ण अभी भी आराम से अपने तम्बू में बैठा था, हथियार उठाने से इनकार कर रहा था। दुर्योधन ने सबके सामने भीष्मचार्य की सेनापति के रूप में अक्षमता का बखान किया था। और जब तक भीष्मचार्य अपना नेतृत्व नहीं छोड़ते, तब तक कोई और सेना का नेतृत्व नहीं कर सकता था।
अर्जुन ने टिप्पणी की कि कृष्ण, अपनी प्रतिज्ञा को भूलकर, हथियार उठाने के लिए हाथ बढ़ा रहे थे, तभी उनकी नज़र भीष्मचार्य पर पड़ी जो निहत्थे खड़े थे, उनके चारों ओर रथों का कोई सुरक्षात्मक घेरा नहीं था और न ही उनके आगे सैनिकों की कोई पंक्ति थी।
कृष्ण ने कहा, “क्या मैंने तुम्हें शुरू में ही नहीं बताया था कि युद्ध में न गुरु होते हैं, न शिष्य। न ही रक्त संबंध। मुझे उस क्षण यह आभास हुआ कि अर्जुन जानबूझकर भीष्म पर आक्रमण करने से खुद को रोक रहा था।”
चौथे दिन मुझे दुर्योधन से सीधे सामना करने का मौका मिला। मैंने देखा कि वह जानबूझकर विशोक पर एक के बाद एक बाण चला रहा था। हर बाण को निकालते हुए विशोक ने साहसपूर्वक कहा कि घाव गहरे नहीं हैं। मैंने उससे कहा कि वह मेरे रथ को दुर्योधन के चारों ओर घुमाए। उसकी रक्षा कर रहे रक्षकों की गति धीमी हो गई और मैं उस पर तेज़ी से तीन बाण चलाने में सफल रहा। बाणों से उसका कवच फट गया होगा। मैंने देखा कि उसका रथ घूम गया और मैं उसका पीछा करने लगा, लेकिन भगदत्त का हाथी मेरे सामने एक विशाल किले की तरह खड़ा हो गया, जिससे मेरा दृश्य अवरुद्ध हो गया। मैंने देखा कि दुर्योधन के सहयोगी, जो किनारों पर लड़ रहे थे, उसे घृणा से देख रहे थे जब उसने अपना रथ पीछे हटने के लिए मोड़ा।
अपने तम्बू में बैठे-बैठे मैंने सोचा कि पिछले तीन दिनों में किसी भी पक्ष ने कुछ भी हासिल नहीं किया है। सेवकों ने भोजन परोसना शुरू कर दिया। विशोका पट्टी बंधे हाथ के साथ वहाँ पहुँचा और बोला, 'क्या तुमने शोर नहीं सुना? एक और व्यक्ति सेना लेकर हमारे साथ शामिल होने आया है।'
मुझे दूर से तेज आवाजें सुनाई दीं। ‘वे बैलगाड़ियों में आए हैं। सैनिक उन्हें देखने के लिए उमड़ रहे हैं। वनवासियों की एक सेना।’

मैं उठा और बाहर जाने ही वाला था कि मुझे अंधेरे में एक आवाज सुनाई दी। 'मैं आ गया हूँ। घटोत्कच.'
जब वह अंदर आया तो मैं दंग रह गया – कुछ साल पहले मेरे सामने कुल्हाड़ी और रस्सियों के साथ खड़ा लड़का अब एक आदमी बन चुका था। ऐसा लग रहा था मानो उसका सिर तंबू की छत को छू जाएगा। उसकी कमर और छाती पर तेंदुए की खाल लिपटी हुई थी। उसने मेरे पैरों पर लेटकर प्रणाम किया, फिर उठा और बोला, ‘मुझे देर हो गई। मुझे क्षमा करें। जंगल तक खबर पहुंचने में समय लगता है।’
मैंने गौर किया कि उसकी आवाज मर्दाना हो गई थी और उसकी भाषा अधिक परिष्कृत हो गई थी। वह पर्याप्त संख्या में हथियार और अनुयायी साथ लाया था, साथ ही भोजन के लिए भैंस और बैल भी।
मैंने कहा कि हम उनके लिए शिविर में तंबू लगा देंगे, लेकिन उन्होंने ज़िद की: 'हमें नंगी ज़मीन पर सोना ज़्यादा अच्छा लगता है। हमारी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने में समय बर्बाद मत करो।'
यह कहते हुए कि वे अगली सुबह भोर से पहले तैयार हो जाएंगे, वह वापस अंधेरे में चला गया।
अगले दिन, मेरी शक्ति और धैर्य की परीक्षा लेने वाला कोई धनुर्धारी या योद्धा नहीं था, बल्कि एक हाथी था। वह हाथी प्राग्ज्योतिष के भगदत्त का था।
जब भगदत्त अपने हाथी पर सवार होकर मेरी ओर बढ़ा, तो मुझे एहसास हुआ कि यह एक ऐसा जानवर है जिससे डरना चाहिए। कल इसने कितनी जल्दी दुर्योधन को आँखों से ओझल कर दिया था... इसके पैरों तले धरती काँप उठी। मैंने अब तक जितने भी हाथी देखे थे, उनमें यह सबसे बड़ा हाथी था।
मैंने रथों की रक्षा के लिए छलांग लगाई। विशोका ने मेरी ओर तीन भाले फेंके, जिन्हें मैंने हाथी पर चलाया, लेकिन वे उसके माथे पर लगी लोहे की थाली से टकराकर फिसल गए। हाथी ने उन्हें इतनी कुशलता से रोका कि रथ पर सवार योद्धा भी अपनी ढाल से उन्हें नहीं रोक पाता। मेरा निशाना हाथी के कान के ठीक पीछे का स्थान था।
हाथी ने मुझ पर हमला किया, मुझे पैरों तले कुचलने की कोशिश की, और मैं बचने के लिए उसके नीचे कूद गया। उसके पैरों के बीच से रास्ता बनाते हुए, मैं उसके पेट के नीचे छिप गया। हाथी के अस्तबल में बचपन में सीखे सबक मेरे काम आए। जब हाथी मुझे पकड़ने के लिए घूमा, तो मैं भी उसके साथ घूम गया। मैं

निहत्था था, इसलिए मुझे पता था कि मैं लुका-छिपी का यह खेल ज्यादा देर तक नहीं खेल सकता। भगदत्त अपने तीरों से मेरी मदद के लिए आने वालों को भगाता रहा। उस पर हमला करने वाले पांच सैनिकों में से तीन गिर गए। हाथी पर बैठा भगदत्त मेरी इस खतरनाक स्थिति का आनंद ले रहा था। तभी मैंने एक ऐसी गर्जना सुनी जिससे कुरुक्षेत्र का पूरा इलाका कांप उठा। हाथी पर बैठा एक सैनिक मेरी मदद के लिए आया था - घटोत्कच। ऐसा लगा जैसे उसने और हाथी ने एक साथ चिंघाड़ा हो।
पर्वत आपस में टकराए। भगदत्त का हाथी दूर जा गिरा। मैं स्तब्ध खड़ा था, मानो कोई गुफा से निकलकर तेज रोशनी का सामना कर रहा हो।
Ghatotkacha cried, ‘Here, here!’
भाले की नोक को पकड़कर, जिसे उसने नीचे उतारा था, मैं ऊपर चढ़ गया और उसके पीछे बैठ गया। अपना हाथी मुझे सौंपकर, वह बड़ी आसानी से उन दो हाथियों में से एक पर कूद गया, जिन्हें उसकी सहायता के लिए आए एक सहायक ने लाया था। भगदत्त के सैनिकों ने उस पर बाण और भाले बरसाए। घटोत्कच युद्ध का आनंद ले रहा था। मैंने दूर से तीन विशाल रथों को हमारी ओर आते देखा, मैं कूदकर नीचे उतरा और अपने रथ में सवार हो गया। भीष्मचार्य आ चुके थे।
यह हमारा पहला आमना-सामना था। मेरी ओर आए बाणों की पहली बौछार ने मेरे ध्वजदंड को तोड़ दिया। पचानवे वर्षीय भीष्मचार्य के हाथों की फुर्ती और निशाना साधते समय उनकी तीक्ष्ण दृष्टि ने मुझे चकित कर दिया। लेकिन भीम को अभी बहुत कुछ करना बाकी था – उन्हें जीतना ही था, चाहे उनका प्रतिद्वंदी उनका गुरु हो या उनका दादा।
मुझे ऐसा लगा मानो मेरा धनुष जीवित हो उठा हो। मैंने अपनी उंगलियों को जरा भी आराम नहीं दिया और वे लगातार धड़कते हुए धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाती रहीं। मैंने घटोत्कच और उसके वनवासियों के युद्धघोष सुने और वे मुझे मगध के गीतों से भी अधिक मधुर लगे।
दादा भीष्म ने अपना रथ घुमाया और पीछे हट गए, लेकिन मेरा क्रोध कम नहीं हुआ था। भगदत्त के हाथी के पैरों के नीचे बिताए उन कुछ पलों को छोड़कर, कुल मिलाकर वह दिन मेरे लिए संतोषजनक साबित हुआ।
दिन बीतते गए, और हमें कोई ठोस विजय प्राप्त नहीं हुई। सैन्य रणनीतियों पर होने वाली चर्चाएँ एक-दूसरे पर दोषारोपण करने के मंच में तब्दील हो गईं। युधिष्ठिर ने भीष्म को भागने देने के लिए शिखंडी को दोषी ठहराते हुए कहा

कि किसी भी सेना की पराजय की पहली सीढ़ी उसके सेनापति का पतन होता है।
शिखंडी ने अपनी निर्जीव आँखों में कोई भाव नहीं दिखाया और यह सब सुनते रहे।
हमारे बेटों में से अभिमन्यु ही एकमात्र ऐसा था जिसने चर्चाओं में भाग लिया। उस शाम भी वह मेरे साथ मेरे तम्बू तक आया।
अभिमन्यु ने कहा, 'पिछले सात दिनों में हमें बहुत नुकसान हुआ और कई लोग शहीद हो गए। लेकिन हमें एक बड़ी उपलब्धि हासिल हुई है। इसे उपलब्धि कहना उचित नहीं होगा। यह सौभाग्य की बात है।'
मुझे लगा कि वह कर्ण के बारे में बात कर रहा था, कि कैसे उसने दूसरों से असहमति जताई थी और कार्रवाई से अलग खड़ा था।
नहीं, मेरा मतलब वनवासियों के आगमन से था। जी हाँ, घटोत्कच के आगमन से! वह योद्धा जो इंद्र के सामने भी नहीं डगमगाएगा, जबकि इंद्र उसी पौराणिक शस्त्र से सुसज्जित हैं जिससे उन्होंने वृत्र का वध किया था। घटोत्कच के लिए सभी शस्त्र एक समान हैं। उनके रथ जंगली घोड़ों द्वारा खींचे जाते हैं। वे कितनी तेज़ी से चलते हैं! चाचा जी, उनके सामने हम सब तुच्छ प्रतीत होते हैं।
एक प्यारी सी मुस्कान के साथ, उन्होंने धीरे से कहा, 'मैं यह नहीं कहूंगा, आप सभी।'
आठवें दिन भीष्मचार्य ने दुर्योधन को मुझसे बचाया। अर्जुन की तरह, जब मैंने अपने गुरु का सामना किया, तो मुझे धर्म के विरुद्ध जाने से डर नहीं लगा। मुझे डर इस बात का था कि किसी भी क्षण वे मुस्कुराकर कह दें, जैसा कि वे मेरे बचपन में कृपाचार्य को मुझे सिखाते हुए अक्सर कहते थे, 'ऐसे नहीं, मूर्ख, ऐसे...'
जिस दूरी से मैं तीर चला रहा था, वहाँ से उस सफ़ेद दाढ़ी से घिरे चेहरे के भाव स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहे थे। फिर भी, मैं आगे बढ़ा और पूरी ताकत से लड़ने लगा। कौरव भाइयों ने दोनों ओर से हमला किया, वे वृकोदरा को मारकर यश प्राप्त करने के लिए बेताब थे।
विशोका ने रथ को एक तरफ मोड़ दिया, ताकि युवकों को लगे कि वह उनसे पीछे हट रहा है। जीत की आहट सुनकर वे सब एक साथ चिल्लाते हुए आगे बढ़े। मैं इसी का इंतज़ार कर रहा था। मैंने अपने बाणों से पहले तीन को मार गिराया। अपनी

अज्ञानता में वे सब मेरी ओर दौड़ पड़े, हाथों से हमला करने को तैयार। लगभग आधे घंटे में बारह शरीर ज़मीन पर गिर पड़े।
मैंने अपनी पीठ और छाती को ढकने वाले बैल की खाल से तीर निकाले। मुझे बस बाएं कंधे पर एक घाव लगा था जिससे खून बह रहा था।
उस दिन जब मैं वापस लौटा, तो मैंने सैन्य रणनीति पर हुई चर्चाओं में भाग नहीं लिया।
अभिमन्यु मुझसे यह पूछने आया कि क्या मुझे कोई गंभीर चोट लगी है। मैंने उसे आश्वासन दिया कि मुझे कोई चोट नहीं लगी है। तब उसने मुझे बताया कि अर्जुन का उलूफी से उत्पन्न नाग पुत्र इरावा मर गया है। उसने उस युवक की प्रशंसा की, जो शकुनी के भाइयों को मारने के बाद मारा गया था।
दुर्योधन के पक्ष में वनवासियों के एक समूह में से एक, अलंबुष ने इरावा की हत्या कर दी थी। बाद में, घटोत्कच ने अलंबुष की हत्या कर उसका सिर काट दिया। जब वह अर्जुन को सिर अर्पित करने ही वाला था, तब अभिमन्यु ने उसे ऐसा करने से रोक दिया, और घटोत्कच ने उसे दुर्योधन के रथ में फेंक दिया।
अगले दिन, घटोत्कच ने युद्ध रेखाओं में तबाही मचाकर अपनी विशिष्टता साबित की, वह बार-बार उन पर ऐसे टूट पड़ा जैसे कोई उग्र हाथी बाँस के जंगल को रौंदता हुआ आगे बढ़ रहा हो। एक बार मैं उसकी मदद के लिए गया।
कृष्ण ने कहा, “दादा भीष्म भले ही लगभग पचानवे वर्ष के हों, लेकिन उनकी रणनीति से कई लोग बच निकलते हैं। आज भीष्म को अकेले पाकर अर्जुन फिर डगमगा गया। मैंने तो उन पर हमला करने के लिए अपना कोड़ा उठाने का भी सोचा था, लेकिन अर्जुन ने मुझे ऐसा करने नहीं दिया। मैंने शस्त्रों का प्रयोग न करने का वचन लिया था, लेकिन आखिर कोड़ा तो शस्त्र है नहीं।”
अर्जुन ने अपनी आक्रमण रणनीति बदल दी। उन्होंने युधमन्यु को अपने बाईं ओर, उत्तमौजव को दाईं ओर और शिखंडी को अपने सामने तैनात किया। दुर्योधन के पुत्र तब तक भीष्मचार्य की रक्षा कवच की तरह कर रहे थे। हमारे जासूसों ने हमें बताया कि दुस्साना को भी इस कार्य पर लगाया गया था।
उस दिन, जब हम वापस लौट रहे थे, अभिमन्यु ने कहा, 'कल भीष्मचार्य का पतन होगा।'
‘आपको इतना यकीन कैसे है?’
‘नई स्थितियाँ। मैंने अपने पिता की आँखों में दृढ़ संकल्प भी देखा। हमारे गुरु को मेरे पिता के बाणों से मार गिराया जाएगा, लेकिन लोग सोचेंगे कि

शिखंडी ने उन्हें गिराया है।’ अभिमन्यु ने समझाया, ‘पिता दुस्साना का सामना करेंगे और शिखंडी भीष्मचार्य का। लेकिन किसी क्षण वे अपने लक्ष्य बदल लेंगे। देखते रहिए।’
अभिमन्यु की दूरदर्शिता ने मुझे चकित कर दिया।
दसवें दिन, जब युद्ध अपने चरम पर था, युधिष्ठिर ने स्वयं भीष्मचार्य का सामना किया और ऐसे साहस से युद्ध किया जिसकी किसी ने उनसे अपेक्षा नहीं की थी। फिर, जब शिखंडी और अर्जुन आक्रमण करते हुए आगे बढ़े, तो उन्होंने उनके लिए रास्ता बनाने के लिए पीछे हट गए। दुर्योधन के रथ के घोड़ों को उस दिन आराम नहीं मिला क्योंकि वह कौरव सेना के बीच से तेज़ी से गुज़रते हुए उन्हें फटकार और उपदेश देकर उनमें साहस भरने का प्रयास कर रहा था।
उस दिन मेरे हाथों और हथियारों की शक्ति की भी पूरी परीक्षा हुई। यदि पांडव उस दिन भीष्म को मारने की तैयारी में आए थे, तो अब ऐसा लग रहा था मानो कौरवों ने मुझे मारने की कसम खाई हो। भगदत्त युद्धघोष करते हुए मेरी ओर बढ़ा और मैंने उसका सामना किया। कृपाचार्य, शल्य और कृतवर्मा भी उसके साथ शामिल हो गए। कृतवर्मा कृष्ण के दूर के रिश्तेदार थे, और मैंने सुना था कि वे सुभद्रा से विवाह करना चाहते थे।
कौरवों की ताकत बढ़ाने के लिए नए समूह उनसे जुड़ गए - जयद्रथ और सिंधु और अवंती के योद्धा।
जब अनेक शत्रु अपने रथों में सवार होकर युद्ध में शामिल हो जाते हैं, तो धर्मयुद्ध के नियमों का पालन करना व्यर्थ हो जाता है। मैं जानता था कि जयद्रथ नियमों को तोड़ने में संकोच नहीं करेगा। मैंने उसके रथ और घोड़ों को नष्ट कर दिया, और वह दुर्योधन के भाई चंद्रसेन के रथ में सवार हो गया। मेरे दोनों ओर लड़ रहे विराट के सैनिकों ने मौत को चुनौती दी। उनमें से एक ने मुझे उस पंखयुक्त भाले से बचाया जिसे जयद्रथ ने मेरे सिर पर निशाना बनाया था।
इसी बीच, भगदत्त और उसका दल लगातार करीब आता गया। अभिमन्यु के नेतृत्व में रथों का एक समूह मेरी सहायता के लिए तेजी से आया।
मुझे सोलह वर्षीय योद्धा और पैंतीस वर्षीय योद्धा के बीच का अंतर समझ में आया। यदि युद्ध हमारे लिए पेशा और कर्तव्य था, तो अभिमन्यु के लिए यह एक शौक और मनोरंजन था। उसने कृपाचार्य के कमजोर निशानेबाजी कौशल का उपहास किया। कृतवर्मा दुम दबाकर भाग गया। भगदत्त पीछे हट गया।

जब उसे थोड़ी राहत मिली, तो अभिमन्यु ने कहा, 'लोग पिताजी के तीरंदाजी कौशल की बहुत तारीफ करते हैं। चाचा जी, अब तक तो मुझे यही लगता था कि आप सिर्फ गदा और हाथों से ही कुशल हैं। सच में, आपने मुझे चकित कर दिया!'
मुझे पता था कि मैं अपने भीतर की युवा पीढ़ी से मिली इस प्रशंसा को एक गुप्त खजाने की तरह संजो कर रखूंगा। 'वे सात थे।'
‘सात नहीं, दस, जिनमें विंदा, अनुविंदा और विकर्ण भी शामिल हैं। ये सभी दस ही शक्तिशाली पुरुष हैं। चाचा जी, आपके अलावा यहाँ कौन है जो अकेले ही दस पुरुषों से लड़ सकता है?’
प्रसन्न होकर मैंने कहा, 'ये रहे अर्जुन। और फिर आप।'
मैं दौड़कर उस जगह पहुँचा जहाँ अर्जुन युद्ध कर रहे थे। आधे रास्ते में ही मुझे कौरव सेना की गर्जना सुनाई दी। मैं और करीब गया। जब धूल छँटी, तो मेरी दृष्टि स्पष्ट हुई और मैंने देखा कि उस स्थान पर युद्ध समाप्त हो चुका था। मैंने जमीन पर पड़े योद्धा को देखा। भीष्मचार्य। उनका कवच फट चुका था और उनका पूरा शरीर बाणों से भेदा हुआ था। अर्जुन उनके सामने अपराधबोध से व्याकुल खड़े थे।
युद्ध की समाप्ति का संकेत देते हुए ढोल की थाप हवा में गूंज उठी। मैंने कौरवों के रथों को अपने गिरे हुए सेनापति की ओर तेजी से बढ़ते देखा और पीछे मुड़ गया।
सफाईकर्मी जाति के सदस्य शवों को ले जाने के लिए गधों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों के साथ युद्ध के मैदान में चले गए।

3

हमने सोचा था कि दादा भीष्म के पतन के बाद कर्ण सेनापति बनेगा। लेकिन हमें पता चला कि इस पद के लिए द्रोण को चुना गया है।
भीष्म युद्ध के मैदान में नहीं मरे थे। हमें पता चला था कि वे मृत्यु के बहुत करीब थे, और किसी भी क्षण उनकी मृत्यु हो सकती थी। जासूसों ने हमें बताया कि जब द्रोण ने कमान संभाली, तो उन्होंने युधिष्ठिर को जीवित पकड़ने का वचन दिया था। इसलिए हमने युद्ध के दौरान युधिष्ठिर की कड़ी सुरक्षा करने का निर्णय लिया।
लगातार तीन मोर्चों पर युद्ध करने के बाद, दोपहर में मेरा भगदत्त से फिर भयंकर संघर्ष हुआ। यह जानते हुए कि मैं रथ में कमजोर हूँ, वह युद्ध के नशे में चूर अपने तुरही बजाते हुए हाथी पर सवार होकर मुझ पर टूट पड़ा। निचले रैंक के कई सैनिक मारे गए। उस दिन सभी मोर्चों पर भयंकर युद्ध हुआ। कर्ण युद्ध के मैदान में था; द्रोण अग्रिम पंक्ति में थे।
युधिष्ठिर के अलग-थलग पड़ जाने के डर से अर्जुन ने मुझे उनकी सहायता के लिए भेजा और स्वयं भगदत्त का कार्यभार संभाल लिया। हम किसी भी कीमत पर युधिष्ठिर को बंदी नहीं बनने दे सकते थे। धृष्टद्युम्न को दक्षिणी मोर्चे की ओर बढ़ते देख अर्जुन ने मुझसे युधिष्ठिर की सहायता के लिए जाने का आग्रह किया।
जब मैं युधिष्ठिर के पास पहुँचा, तो वे खतरे को भांपते हुए शिविर की ओर लौट रहे थे। राजमहल के पास पहुँचते ही मुझे संगीत सुनाई दिया – यह उनके लौटने का संकेत था – और मैं अन्य मोर्चों पर समाचार जानने की उत्सुकता में अंदर चला गया। अचानक, शंख, मृदंग और वीणा की ध्वनियाँ अचानक रुक गईं, मानो कोई अपशगुन हो। मैं अपने रथ से उतरा और युधिष्ठिर की ओर चल पड़ा।
वह तब तक बिना हिले-डुले खड़ा रहा जब तक कि उत्तरी मोर्चे से आए सैनिक, जिन्होंने उसे यह खबर दी थी, दुखी होकर चले गए।
अभिमन्यु की मृत्यु हो गई!
सैनिकों ने बस इतना ही कहा था कि अभिमन्यु मर गया है। धृष्टद्युम्न और सत्यकी के आने पर ही हमें युद्ध का पूरा ब्यौरा मिला। द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को पकड़ने के लिए चक्राकार सेना बनाकर आगे बढ़ रहे थे। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि इस सेना को तोड़ना ज़रूरी है। अभिमन्यु ने साहसपूर्वक

घोषणा की कि वह सेना में घुसकर वहीं से लड़ेगा। अभिमन्यु के सेना में प्रवेश करते ही जयद्रथ अपने एक घोड़े द्वारा खींचे गए रथ पर सवार होकर आगे बढ़ा, अगल-बगल से आने वालों को रोककर उसे घेर लिया। फिर द्रोण, कृपा, अश्वत्थामा, कर्ण और शल्य ने अभिमन्यु को घेर लिया, इस बात को नज़रअंदाज़ करते हुए कि युद्ध के नियमों के अनुसार, बालक के साथ आगे या बगल में जाने के लिए सैनिक होने चाहिए थे। कई सैनिक बड़े कौरव योद्धाओं की मदद के लिए आगे आए। अभिमन्यु ने अपना रथ और घोड़ा खो दिया और नंगे मैदान पर खड़े होकर अपने शत्रुओं से लड़ा। जब उससे उसके धनुष और बाण छीन लिए गए, तो उसने अपनी तलवार और गदा से लड़ाई की, फिर अपने रथ के पहिए से। अंत में, वह बेहोश होकर गिर पड़ा, और किसी ने उसका सिर कुचलकर उसे मार डाला।
धृष्टद्युम्न ने हमें बताया कि दुस्साना के पुत्र लक्ष्मण ने, जो अभिमन्यु की ही उम्र का था, उसकी हत्या की थी। मैंने इस बात पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया कि उसकी हत्या किसने की थी। द्रोण और कृपा समेत छह लोगों ने उस लड़के पर हमला किया था जो नंगी ज़मीन पर डटकर लड़ रहा था।
सत्यकी के सेनापति ने टिप्पणी की कि आज तो शत्रु शिविर में भी मगध लोग अभिमन्यु के वीरतापूर्ण कार्यों के गुणगान करेंगे।
धृष्टद्युम्न ने हमें याद दिलाया कि सभी ने धर्मयुद्ध के नियमों का उल्लंघन किया था, यहाँ तक कि द्रोण और कृपा ने भी, और जयद्रथ तो उनसे भी बड़ा दुष्ट था। उसने एक ऐसे बुनियादी नियम का उल्लंघन किया था जिसका पालन वनवासी भी करता।
मैंने चुप बैठे युधिष्ठिर की ओर देखा और कहा, ‘वही जयद्रथ एक बार मेरे सामने कैदी बनकर खड़ा था, उस पर ऐसा अपराध का आरोप था जिसकी सज़ा मृत्युदंड थी। अगर मैं तुम्हें बता दूँ कि वह अपराध क्या था, तो तुममें से कोई भी मेरे बड़े भाई को माफ़ नहीं करेगा। मैंने उसे जाने दिया – मेरे बड़े भाई ने ज़िद की कि मैं उसे जाने दूँ, धर्म के नाम पर या मानवता के प्रेम के नाम पर या कुछ इसी तरह के कारण…’
युधिष्ठिर ने कुछ नहीं कहा।
उसी क्षण कृष्ण और अर्जुन वहाँ आए। कृष्ण का चेहरा पीला पड़ गया था। मैंने सोचा, जब खून के रिश्ते और पारिवारिक बंधन शामिल होते हैं, तो हम अपने शरीर की तुलना उन फटे-पुराने कपड़ों से करना भूल जाते हैं जिन्हें हम उतारने को तैयार रहते हैं।

कुरुक्षेत्र में घूमते हुए, इस खूबसूरत युवती ने मेरे मन का एक हिस्सा चुरा लिया था।
रात गहरी होती जा रही थी। जब गिद्ध मेरे चारों ओर मंडराने लगे तो मैं अपने विचारों से जाग गया।
लौटते समय, मैं द्रौपदी के पुत्रों और सर्वदा के तम्बू के पास से गुजरा और नदी की ओर बढ़ा। मैंने एक विशाल रथ देखा, जिस पर गिद्ध का झंडा लहरा रहा था। उसमें कोई बैठा था, उसका पैर जुए के ऊपर फैला हुआ था। घटोत्कच।
मुझे देखते ही वह नीचे आ गया।
अभिमन्यु चला गया।
उसके लिए मृत्यु एक ऐसी घटना थी जिसने बदला लेने की तीव्र इच्छा को जगा दिया।
‘मैं अभिमन्यु के सबसे करीब था। अब से मैं उसके लिए हत्या करूंगा। वे शिक्षक हम वनवासियों से भी बदतर हैं!’
मैंने कोई जवाब नहीं दिया।
“कल से वे रात में लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। यही तो मैं चाहता हूँ।
निषादों के लिए अंधकार से बेहतर कोई कवच नहीं है।” घटोत्कच मुस्कुराया। मैं नदी पर जाए बिना वापस अपने तम्बू में चला गया।
वनवासियों से भी बदतर! मुझे घटोत्कच के शब्द याद आ गए। आज अस्सी वर्षीय द्रोण ने सत्रह वर्षीय युवक की हत्या का निरीक्षण किया, जिसका हनीमून केवल इक्कीस दिन ही चला था। ब्रह्मा द्वारा सृजित अदृश्य सौंदर्य ने यह सब प्रसन्नतापूर्वक देखा।
जब मैं लौटा तो धृष्टद्युम्न मेरा इंतजार कर रहा था, शराब के नशे से उसकी आँखें लाल हो गई थीं। युद्ध की थकान का उस पर कोई असर नहीं हुआ था।
मैं द्रोण को मार डालूंगा। दुर्योधन अग्रिम पंक्ति में नहीं आएगा। कर्ण को द्वंद्वयुद्ध के लिए उकसाओ। वह अवश्य स्वीकार करेगा।
मैंने उसे याद दिलाया कि अर्जुन ने कर्ण को मारने की प्रतिज्ञा ली थी। ‘यहाँ शपथ लेना एक आम बात हो गई है। केवल एक मूर्ख ही सैनिकों के सामने यह शपथ लेता है कि यदि वह कल सूर्यास्त तक जयद्रथ को नहीं मारता है, तो वह स्वयं मर जाएगा। मैंने अभी-अभी किसी को ऐसा कहते सुना।’
'कौन कौन?'

‘अर्जुन, और कौन? युद्ध के मैदान में किसी को छुपाना कितना आसान है। और वह बिना सोचे समझे ही शपथ ले लेता है! कौरव अब उस पर हंस रहे होंगे।’
वह काफी देर तक मेरे साथ रहा, लेकिन कुछ नहीं बोला। फिर वह उठा, मुझसे विदा ली और बाहर चला गया। हालाँकि उसने खुलकर यह नहीं दिखाया, लेकिन मैं जानता था कि वह बहुत परेशान था।
विशोका ने यह आदत बना ली थी कि जब तक मैं सोने नहीं जाती, वह दरवाजे के बाहर ऐसी जगह पर बैठता था जहाँ से मैं उसे देख सकूँ। रसोई से मेरे लिए भेजे जाने वाले भोजन के अलावा, उसने शिकारियों से विशेष मांस भेजने की व्यवस्था की थी, जिसे वह मेरे लिए खुद पकाता था।
विशोका ने कहा कि अभिमन्यु की मृत्यु से रसोई में काम करने वाले कर्मचारियों तक सभी गहरे शोक में डूबे हुए थे। सैनिकों के शिविरों में भी हंसी-मजाक का माहौल नहीं था।
मैंने उसकी बात सुनी और सोचा: किसी की भी मौत से शिविरों में मनोबल नहीं टूटना चाहिए।
शायद मेरी उदासी दूर करने के लिए, विशोका ने पूछा, 'क्या आप कर्ण के भाले के बारे में कुछ जानते हैं?'
मैंने मना कर दिया।
लोग तरह-तरह की बातें कहते हैं। कुछ कहते हैं कि यह इंद्र द्वारा व्यक्तिगत रूप से उन्हें उपहार में दिया गया एक दिव्य हथियार है। अन्य कहते हैं कि इसे अंग राज्य के एक शिल्पकार ने उनके लिए बनाया था।
हमने यह बात फैला दी थी कि अर्जुन को उसके सारे हथियार इंद्र ने ही दिए थे।
लोग इस बात पर विश्वास कर लेते, क्योंकि इंद्र उसके पिता थे।
मैंने विराट में रहते हुए कर्ण के भाले के बारे में सुना था। कहा जाता था कि इसे वापस नहीं लिया जा सकता, जबकि कृष्ण के चक्र को वापस लिया जा सकता था।
'क्या यह हाथ से इस्तेमाल किया जा सकने वाला भाला है या यांत्रिक भाला?' विशोका ने कहा, “कुछ भाले हाथ से पकड़े जा सकते थे, कुछ को हाथ से पकड़ने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। संभवतः कर्ण का भाला रथ से जुड़ा हुआ है। कोई भी कारीगर साधारण भाला बना सकता है। मैंने अंग के एक कारीगर के बारे में सुना है। उसने जो भाला बनाया है, वह शायद रथ से जुड़े किसी उपकरण से निकलता है।”

यह विशोका का अनुमान था। मुझे याद आया कि माया सभ्यता ने ऐसे हथियार का जिक्र किया था।
मुख्य शत्रु के विरुद्ध प्रयोग के लिए विशेष रूप से निर्मित ऐसे हथियार थे जो कभी भी अपने लक्ष्य से नहीं चूकते थे। जैसे कृष्ण का चक्र, अश्वत्थामा का नारायण बाण, अर्जुन का पशुपति बाण जिसमें सर्प विष भरा जा सकता था, और ऐसे ही कई अन्य हथियार।
विशोका ने सोचा कि यदि कर्ण का भाला किसी एक विशेष व्यक्ति के विरुद्ध प्रयोग करने के लिए बनाया गया होता, तो उसमें हीरे से बना और विष से भरा हुआ ब्लेड लगा होता। ब्लेड शरीर में प्रवेश करते ही टूट जाता और उसे निकालना असंभव होता। भले ही घाव गहरा न हो, विष की शक्ति से प्रतिद्वंद्वी की मृत्यु हो जाती। यदि वह कवच को भेदकर गहराई तक प्रवेश कर जाता, तो संभवतः वह एक यांत्रिक उपकरण होता।
ये सब विशोका के अनुमान थे। उनमें एक अद्भुत गुण था: वे किसी बात के पक्ष और विपक्ष दोनों में तर्क देते थे, फिर किसी निष्कर्ष पर पहुंचते थे। मैंने धीरे से कहा, 'हो सकता है कि कल उसे भाला निकालना पड़े।'
सब जानते थे कि कर्ण इस हथियार का इस्तेमाल अपने कट्टर शत्रु अर्जुन के खिलाफ करने वाला था। लेकिन अगले दिन कर्ण का सामना मैं ही करने वाला था। मुझे दैवीय हथियारों की ज़रूरत नहीं थी, मेरे खाली हाथ ही काफी थे। विशोका ने कुछ देर तक मुझे लगातार देखा, फिर आह भरी और अपना सिर झुका लिया। अगले दिन, कौरवों ने जयद्रथ को घेरे में रखकर युद्ध किया। जैसा हमने अनुमान लगाया था, वैसा ही हुआ – जब धृष्टद्युम्न द्रोण का सामना कर रहे थे, तब अर्जुन ने दुर्योधन की सेना में घुसपैठ करने का प्रयास किया। कर्ण को दुर्योधन के पीछे से रथ लेकर सीधे द्रोण के आक्रमण क्षेत्र में आते देख, हम तुरंत आगे बढ़े और विपरीत दिशा में पंक्तिबद्ध हो गए। कर्ण ने शायद सोचा होगा कि मैं अर्जुन की सहायता करने जा रहा हूँ।
उसने जोर से पुकारा, 'वृकोदरा, तुम कायर हो, क्या भाग रहे हो?'
हमने उसके किनारों पर खड़े सैनिकों को हंसते सुना। कर्ण के तीर, जिनके पंख मोर के पंखों से बने थे, गिद्धों की तरह मेरे चारों ओर मंडरा रहे थे। अर्धचंद्राकार और नाग के सिर वाले तीरों ने मेरे कवच को भेद दिया। मैंने कर्ण पर चील के पंखों से बने तीर चलाए, उसे हराने की कोशिश में। विशोक मेरे तरकश को खाली होते ही भरता जा रहा था। इस सारथी के पुत्र को आज यह सीखना

होगा कि क्षत्रिय के रक्त में तीरंदाजी का विज्ञान बहता है, भले ही वह नियमित रूप से तीरंदाजी प्रतियोगिताओं में भाग न लेता हो। युद्ध के नियमों के अनुसार, कर्ण के किनारों पर खड़े सहायकों ने तीन बार उससे धनुष बदलने का समय मांगा। मैंने सोचा था कि आज मुझे निश्चित रूप से पता चल जाएगा कि पहले कौन थकेगा - शक्तिशाली सारथी कर्ण या भीम, जो गदा चलाने में माहिर था।
कर्ण उस समय आश्चर्यचकित रह गया जब थकने पर उसकी सहायता के लिए दौड़े कौरव मेरे बाणों से गिर पड़े। मैंने उसका उपहास नहीं किया। मैंने सोचा, अगर वह शब्दों की लड़ाई में मुझसे बेहतर है, तो ठीक है। आखिर जुए के अखाड़े में तो उसने ही शब्दों और स्पष्टीकरणों से विजय प्राप्त की थी।
जब कर्ण ने अपना चौथा धनुष उठाया, तो मैंने उसका सामना किया और उससे कहा, 'चलो हम दोनों द्वंद्वयुद्ध करते हैं। तुम जिस भी हथियार से चाहो।'
उसने जो जवाब दिया, वह एक तीर चलाना था जो मेरी गर्दन को छूता हुआ निकला, मेरे पीछे रथ में जा धंस गया और वहीं कांपता हुआ पड़ा रहा।
हमारे बीच की दूरी कम होती जा रही थी। काश मेरे पास दो हाथों से ज़्यादा हाथ होते। मैं ज़ोर से चिल्लाया, मुझे पूरा यकीन था कि कुरुक्षेत्र में यह मेरी आखिरी लड़ाई है। मैंने आठ हाथों से मेरी ओर बढ़ाए गए बाणों को खींचा और उन्हें अपने धनुष से निकलते हुए सुना। मैंने देखा कि कर्ण थकने लगा है और अपने रथ के एक खंभे को सहारा देने के लिए पकड़ रहा है, और मैंने खुद से पूछा: 'अब? अब? अब?'
अगर मैं दस कदम आगे बढ़ पाता, तो मैं उसकी गर्दन पर तीर चला सकता था। मेरा प्रतिद्वंदी एक बार फिर लड़ने के लिए तैयार था। मैं नियमों का उल्लंघन नहीं करूँगा। मैं उसे अगले कुछ ही पलों में मार डालूँगा। गिद्ध के पंख से जड़ा लंबा तीर मेरी उंगलियों पर कांप रहा था। अब...
विशोका चिल्लाई, 'नहीं। तुम्हें उसे नहीं मारना चाहिए!'
उसकी आवाज़ में अप्रत्याशित रूप से दर्द का भाव था। मैंने हैरानी और गुस्से से उसकी ओर देखा।
विशोका ने बहुत ही कोमल स्वर में कहा, “तुम्हें उसे नहीं मारना चाहिए। यह बहुत बड़ा पाप होगा। वह तुम्हारा बड़ा भाई है। वह सूत का पुत्र नहीं है, वह कुंती देवी का ज्येष्ठ पुत्र है।”

मैंने अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। क्या उसे अपने शब्दों का अर्थ पता था?
‘कर्ण पांडवों में सबसे बड़े हैं!’
मेरा सारा साहस खत्म हो गया, मैं असहाय होकर अपने रथ में खड़ा रहा, फिर नीचे गिर पड़ा।
मेरी कमजोरी देखकर कर्ण ने अपना जोश फिर से पा लिया और मेरे रथ के पास आकर मेरा उपहास उड़ाते हुए बोला, “अरे मूर्ख! न तो तुम मर्द हो, न औरत, युद्ध का मैदान तुम्हारे लिए नहीं है!” उसने अपने धनुष की नोक से मेरे कंधे पर प्रहार किया, फिर रथ से सिर बाहर निकालकर चिल्लाया, “मैंने तुम्हारी माँ को वचन दिया था कि मैं तुममें से केवल एक को मारूंगा। और वह तुम नहीं होगे। भाग जाओ और कहीं छिप जाओ, अपने तोंद और कम दाढ़ी के साथ!”
मैंने उसके द्वारा तिरस्कारपूर्वक बोले गए हर शब्द को सुना और एक पल के लिए उसका चेहरा देखा, जो उपहास से विकृत था।
अर्जुन की मदद के लिए जाते समय, विशोका ने मानो मेरे अनकहे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा, 'युद्ध शुरू होने से पहले, तुम्हारी माता ने सूर्य देव से अपने उस पुत्र से, जो कुंवारी अवस्था में ही उनसे उत्पन्न हुआ था, पांडवों से जुड़ने की विनती की थी। दुर्भाग्यवश मैंने उनकी बातें सुन लीं।' ‘माँ…माँ ने ये बात कर्ण से सीधे कही?’
विशोक ने रथ रोक दिया। सेनेशा द्वारा भेजे गए रथों और घोड़ों के साथ दक्षिणी काशी से आते समय, उन्होंने गंगा के किनारे डेरा डाला था। विशोक ने भोर में नदी के किनारे कुंती देवी को देखा और कई वर्षों बाद उन्हें प्रणाम करने के लिए उनके पास गए। लेकिन पास पहुँचते ही वे रुक गए। कुंती देवी अकेली नहीं थीं। वे कर्ण के बगल में खड़ी थीं, जो सूर्य देव को सुबह की प्रणाम कर रहे थे।
कर्ण ने तिरस्कार भरे लहजे में कहा, 'मैं अब क्षत्रिय नहीं बनना चाहता। सूतों ने मेरा पालन-पोषण किया है। मेरी पत्नी और बच्चे सूत वंश के हैं।' विशोका उनकी बातें सुनकर बहुत परेशान हो गई थी।
‘मेरे बेटे, तुम्हें पांडवों के साथ खड़ा होना चाहिए। मैंने इतने समय तक सच्चाई को छिपाए रखा, क्योंकि मुझे डर था कि लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे।’ वह सिसकते हुए बोली।
Vishoka said that Karna had laughed.

‘चूंकि तुम मुझसे विनती करने आए हो, मैं तुम्हें खाली हाथ नहीं लौटाऊंगा। मैं तुम्हारे केवल एक पुत्र को मारूंगा: अर्जुन को।’ वह और जोर से हँसा, फिर खुद को संभालते हुए बोला, ‘चाहे वह मरे या मैं, तुम्हारे पास फिर भी पाँच पुत्र रहेंगे। क्या यह काफी नहीं है?’
मैंने विशोका की सारी बातें सुनीं, लेकिन एक शब्द भी नहीं बोला।
विशोका ने लगाम ढीली कर दी और घोड़े दौड़ने लगे। जब हम अर्जुन के पास पहुँचे, तो युधमन्यु ने मुझसे पूछा कि क्या हुआ था। मैंने बस इतना कहा कि कर्ण ने मुझे हरा दिया था।
सूर्यास्त से पहले, कृष्ण ने अर्जुन को निराश होकर वापस लौटने का आदेश दिया, यह जताते हुए कि उसने जयद्रथ को मारने का अपना वचन तोड़ दिया है और युद्ध रोक दिया है। अर्जुन ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। कृष्ण ने देखा कि जयद्रथ बड़े धूमधाम से दुर्योधन की ओर पीछे से आ रहा है। रथ की गति से सभी को चकित करते हुए, कृष्ण अर्जुन को जयद्रथ के सामने ले आए। अर्जुन ने अपना वचन पूरा किया।
लेकिन मुझे यह दिखाई नहीं दिया। मेरी दृष्टि अब स्पष्ट नहीं थी। मुझे आस-पास की आवाज़ें भी दूर से आती हुई सुनाई दे रही थीं। मेरे सामने केवल कर्ण का चेहरा था, जो मेरा मज़ाक उड़ा रहा था। कर्ण, सूत का पुत्र। वही कर्ण जिसे मैंने उस दिन शर्मिंदा किया था जब हमने अपनी कला का प्रदर्शन किया था, और उससे कहा था कि उसके लिए सबसे उपयुक्त हथियार कोड़ा है। कुंती का सबसे बड़ा पुत्र। सूर्य देव का पुत्र, हस्तिनापुर के सिंहासन का उत्तराधिकारी! विदुरा के घर में बैठी मेरी माँ के दिल में और कितने रहस्य छिपे हुए थे?

4

सूर्यास्त के बाद भी युद्ध जारी रहा। दुर्योधन ने द्रोण पर अपने शिष्यों के विरुद्ध अपनी सभी ज्ञात रणनीतियों का उपयोग न करने का आरोप लगाया, इसलिए द्रोण ने रात भर युद्ध जारी रखने का निर्णय लिया।
मैंने रात की शुरुआत युधिष्ठिर के साथ रहकर की, जो अश्वत्थामा पर आक्रमण कर रहे थे। ब्राह्मण अश्वत्थामा शस्त्रों का प्रदर्शन करके युधिष्ठिर को पराजित करने का प्रयास कर रहा था, जिसे देखकर अर्जुन चकित रह गए। अंततः, मैं उसे पीछे हटने पर मजबूर करने में सफल रहा।
जब युधिष्ठिर को पता चला कि सत्यकी ने सोमदत्त की हत्या कर दी है, तो वह द्रोण पर आक्रमण करने के लिए निकल पड़ा। कृष्ण ने एक दूत भेजकर युधिष्ठिर को चेतावनी दी कि वह स्वयं को खतरे में न डाले, क्योंकि संभवत: द्रोण द्वारा युधिष्ठिर को बंदी बनाने की प्रतिज्ञा ने ही रात में युद्ध जारी रखने के उसके निर्णय को प्रभावित किया हो।
रात के घने अंधेरे में हिरणवती नदी से कोहरा उठता था और कुछ भी दिखाई देना असंभव हो जाता था। घने अंधेरे में भी समय-समय पर एक भयंकर युद्धघोष सुनाई देता था: घटोत्कच का। उसके और उसके साथियों के लिए, रात में युद्ध करना एक आनंददायक अनुभव था।
धृष्टद्युम्न ने पुकार कर कहा, 'मशालें लाओ! मशालें लाओ!'
सैनिकों ने वही नारा दोहराया। पांडव सैनिकों के जलते ही विरोधियों ने भी मशालें जला लीं। हजारों मशालें अचानक जलने लगीं और युद्धक्षेत्र में रोशनी फैल गई।
एक समय ऐसा आया जब युधिष्ठिर को लगा कि कृतवर्मा और द्रोण मिलकर उन्हें घेर लेंगे और पकड़ लेंगे, तब उन्होंने सोचा कि सबसे व्यावहारिक उपाय वापस लौटना है और उन्होंने अपने रथ को तम्बुओं की ओर मोड़ दिया।
मेरी दुर्योधन से थोड़ी देर के लिए आमना-सामना हुआ। मेरी तरह उसने भी सोचा होगा कि टकराव को टालने का कोई फायदा नहीं है। हाथ में गदा लिए वह अपने रथ से कूद पड़ा। यही तो मैं चाहता था। कुछ लोग हमारे बीच आ गए और मेरे वारों से उनके सिर चकनाचूर हो गए। एक सटीक वार दुर्योधन के डरे हुए घोड़े के फैले हुए सिर पर लगा। दुर्योधन पीछे मुड़ा और अपने रथ पर चढ़ गया।

इसी बीच अश्वत्थामा और घटोत्कच आपस में लड़ रहे थे। घटोत्कच के वनवासियों का दल, जिसमें मुश्किल से सौ लोग थे, एक ऐसी भयंकर आग में बदल गया जिसने एक हजार सैनिकों की सेना को नष्ट कर दिया।
सहदेव मेरे पास आया, उसका कवच फटा हुआ था और कई जगहों पर तीर लगने से खून बह रहा था। अत्यंत दुखी होकर उसने नाराज़गी से कहा, 'कर्ण ने मेरा उपहास किया और मुझे अपमानित किया। मैं केवल इसलिए बच पाया क्योंकि सत्यकी ने मेरी मदद की।'
अश्वत्थामा और घटोत्कच के बीच हुए संघर्ष से भी कहीं अधिक भयंकर संघर्ष पश्चिमी मोर्चे पर धृष्टद्युम्न और द्रोण के बीच हो रहा था। सहदेव ने मुझे बताया कि कर्ण इस युद्ध में शामिल हो गया था।
दुर्योधन के चले जाने और उस रात मेरे पास करने को कुछ और न होने के कारण, मैंने रथ को वापस शिविर में लाने का आदेश दिया। मैंने अर्जुन को वहाँ विश्राम करते हुए पाया। जयद्रथ को मारने के बाद वह युद्धक्षेत्र में वापस नहीं गया था।
हमारे तरकश भरने आए एक सैनिक ने हमें बताया, 'कर्ण के विरुद्ध युद्ध में धृष्टद्युम्न कमजोर होता जा रहा है।'
Krishna asked, ‘Where is Ghatotkacha?’
मैंने कहा, 'जहाँ तक मुझे पता है, वह अश्वत्थामा की सेना को नष्ट कर रहा है।' कृष्ण खड़े हुए और युधिष्ठिर से बोले, “घटोत्कच को अग्रिम पंक्ति में भेजकर कर्ण का सामना करवाओ। तुरंत सैनिकों को आदेश देकर भेजो।” फिर उन्होंने मुझसे कहा, “रात्रिकाल में युद्ध में घटोत्कच का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। वही एकमात्र ऐसा योद्धा है जो कर्ण को परास्त कर सकता है।” सैनिक आदेश लेकर तेजी से चले गए और कृष्णा बाहर निकल गया।
मैं अपने तंबू के सामने खड़ा था। दूर से मशालें जल रही थीं। मुझे घोड़ों के खुरों की आवाज़, रथों के चलने की आवाज़ और कभी-कभी चीखें सुनाई दे रही थीं। विशोका ने कहा कि वह रथ में बैठकर खबर का पता लगाने जाएगा और मैं सहमत हो गया।
युद्धक्षेत्र में शोर बढ़ता जा रहा था। युद्ध में और अधिक रथ शामिल हो रहे थे और रथों के पहियों की गड़गड़ाहट बारिश के बादलों में गरजने वाली बिजली जैसी लग रही थी। मैंने आग के गोले तेजी से गुजरते देखे - आग से लड़ना वनवासियों की एक खास कला थी।

बुझी हुई मशालों से घना धुआं फैलने लगा तो अंधेरा और भी गहरा हो गया। मैंने देखा कि विशोका वापस आ गई है, और मैं खबर जानने के लिए जल्दी से भागा।
उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'आज रात घटोत्कच की है। कौरव सेना का आज अंत हो जाएगा। वह धधकती आग की तरह, बवंडर की तरह लड़ रहा है!'
‘उसके साथ कौन-कौन हैं?’
‘वह अकेला है। जहाँ तक मैं देख सका, उसे किसी साथी की आवश्यकता नहीं है।’ और दूसरी तरफ?
‘घटोत्कच और राक्षसों का मुकाबला करने में सक्षम अलयुध मर चुका है। अब कर्ण है, और कौरव सेना उससे इतना भयभीत है कि भागने की हिम्मत नहीं कर पाती।’
विशोका युद्ध के मैदान में वापस चला गया।
मैं सोच रहा था कि घटोत्कच की सहायता के लिए जाऊं या नहीं। मुझे अंदाजा था कि कर्ण उस पर किस तरह के नए ताने बरसाएगा।
अचानक, मेरे मन में बिजली की तरह एक सवाल कौंधा। मैं किसकी मदद करने जा रहा था? घटोत्कच और उसके वनपालों की, या कर्ण की?
योद्धाओं की गर्जना मेरे कानों में गूंजती रही।
आग के गोले ऊपर की ओर उठे और बिखर गए, जिससे चिंगारियां बिखर गईं। सैकड़ों आवाजों से उठी एक चीख में से मैंने घटोत्कच की युद्धघोषणा को पहचाना।
और फिर अचानक, पूरी तरह सन्नाटा छा गया।
कौरव मोर्चे से ढोल की थाप सुनाई दे रही थी, मानो घोर अंधेरी रात में दिल की धड़कनें गूंज रही हों। फिलहाल लड़ाई रुक गई थी…
मैं कर्ण की मृत्यु की खबर सुनने के लिए तैयार होकर धीरे-धीरे युधिष्ठिर के तम्बू की ओर बढ़ा। रथ युद्धक्षेत्र से लौट रहे थे।
विशोका का रथ मेरे सामने आकर रुका। ‘अंततः कर्ण को अपना नया भाला, विजयंती, उठाना पड़ा। यह एक यांत्रिक उपकरण है। घटोत्कच वहीं गिरकर मर गया।’
मैंने गौर किया कि विशोका के लहजे में छिपी राहत साफ झलक रही थी।
चमकीले झुमके पहने और लाल होठों पर मुस्कान लिए उस सांवली-लाल रंग की सुंदरी ने आज घटोत्कच को चुन लिया था। घटोत्कच, जिसके लिए युद्ध एक रोमांचकारी अनुभव रहा था।

युधिष्ठिर के तम्बू में उजाला था। मैं अंदर गया और वहाँ नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्न को पाया। दूत उन्हें यह खबर लेकर आए थे। युधिष्ठिर ने मुझे देखा और अपना सिर उठाया।
मैं इस दुःख को सहन नहीं कर सकता। गंधमादन में हमारा साथ देने आया वह बालक, पांडवों का प्रथम पुत्र… पहले अभिमन्यु, अब घटोत्कच…
मैंने उन सबके चेहरों पर शोक की छाया देखी।
उसी क्षण कृष्ण अर्जुन के साथ जल्दी से अंदर आए। उन्होंने युधिष्ठिर को देखा, जिनका सिर शोक से झुका हुआ था, और अन्य लोगों के दुखी चेहरों को भी देखा।
‘तुम शोक क्यों मना रहे हो?’ उसने पूछा। ‘कर्ण ने घटोत्कच पर अर्जुन के विरुद्ध उस भाले का प्रयोग किया जिसे उसने अंतिम उपाय के रूप में रखा था। क्या तुम समझते नहीं? अर्जुन बच गया – इसलिए पांडव शिविर में शोक मनाने का नहीं, बल्कि उत्सव मनाने का समय है।’
मुझे नहीं पता कि कृष्ण ने मुझे आग की रोशनी से परे, छाया में खड़े देखा या नहीं। मैं चुपचाप बाहर निकल गया।
जब मैं बाहर खड़ा था, तो मुझे फिर से कृष्ण की आवाज सुनाई दी: 'हमें उत्सव मनाना चाहिए। मगध और ढोल बजाने वाले कहाँ हैं? और वे मूर्ख सूत गान गाने वाले कहाँ हैं?'
मुझे समझ नहीं आया कि युधिष्ठिर ने जवाब में क्या कहा।
कृष्ण ने फिर कहा, “वह भले ही भीम का पुत्र रहा हो, पर वह वनवासी था और उसमें राक्षसी स्वभाव था। वह यज्ञ अनुष्ठानों और ब्राह्मणों का शत्रु था। एक दिन हमें उसे मारना ही पड़ता। दोनों ही दृष्टियों से उसका मर जाना हमारे लिए सुविधाजनक रहा।” मैंने उसे हंसते हुए सुना। “मैंने उससे यह कहा था कि तुम ही हमारी एकमात्र आशा हो और उसे कर्ण का सामना करने के लिए भेजा था, और यह बात मैंने व्यर्थ नहीं कही थी।”
मैं वहां से चला गया। मैंने उन वाद्ययंत्रों की आवाज़ सुनी जो तब तक शांत थे, फिर से बजने लगे। उत्सव शुरू हो चुका था। मैं अंधेरे में अकेला खड़ा रहा। ढोल की थाप से मुझे पता चल गया कि दोनों सेनाओं ने लड़ना बंद कर दिया है और सोने जा रही हैं। तंबू और शिविर शांत हो गए। सैनिक रथों के फर्श पर और हाथियों के सिर पर सिर रखकर आराम करने लगे।
मैं चलता रहा।

कुरुक्षेत्र के अंधकारमय आकाश में चांदनी की किरणें पहुंच गईं और अंधेरे के उग्र हाथी रात के तूफान से भाग निकले। चांदनी नवविवाहित दूल्हा-दुल्हन की मुस्कान की तरह कोमल थी, शिव के सुंदर बैल की तरह दूधिया सफेद थी, जो विशाल आकाश में फैल गई।
मैंने उसका मृत शरीर देखा, अंधकार का एक धब्बा जो समय रहते भाग नहीं पाया था। उसके सीने को भेदने वाले भाले का लोहे का तख़्ता तेज़ी से आकाश की ओर उठा हुआ था। एक गिद्ध उसके सिरे पर बैठा था और लालच भरी निगाहों से नीचे पड़े शरीर को घूर रहा था।
वनवासी के लिए चिता बनाने की कोई आवश्यकता नहीं थी; वह योद्धाओं के स्वर्ग का हकदार नहीं था। गधे की गाड़ियाँ और चांडाल विश्राम कर रहे थे। गिद्धों के पंखों की फड़फड़ाहट तेज होती जा रही थी।
मैं वापस पैदल चला गया।
जैसे ही मैं तंबुओं के पास पहुंचा, मगधवासी थके हुए सैनिकों को सांत्वना देने के लिए अपने गीतों की शोकपूर्ण लय को एक खुशनुमा धुन में बदल रहे थे।
मुझे नींद नहीं आई। सुबह की रोशनी हवा में फैल गई, एक नए दिन की शुरुआत।
हमने यज्ञ स्थल पर विजय के लिए प्रार्थना की। युधिष्ठिर ने हमेशा की तरह ब्राह्मणों को उपहार दिए।
जब हम रवाना हुए, तब धृष्टद्युम्न ने कहा, 'द्रोण... द्रोण का पतन अवश्य होगा।'
पांचाल सेना ने द्रोण से युद्ध करने के लिए मोर्चा संभाला। मैंने अन्य कौरवों पर आक्रमण किया और उनके रथों को नष्ट करने पर ध्यान केंद्रित किया। कौरवों की चौथी बटालियन, जिसमें शुरुआत में अधिक पैदल सैनिक थे, अब कमजोर पड़ गई थी। इसके लिए पांडव घटोत्कच के आभारी थे।
युधिष्ठिर पीछे रहकर द्रोण और धृष्टद्युम्न के बीच की लड़ाई देख रहे थे। हमें लगातार घटनाक्रम की खबरें मिलती रहीं। द्रोणाचार्य एक चतुर और कुशल नेता थे। यह महत्वपूर्ण था कि धृष्टद्युम्न ने उन्हें प्रारंभ से ही अपना कट्टर शत्रु माना था, क्योंकि द्रोणाचार्य की तुलना में भीष्माचार्य एक कमजोर नेता थे।
हमें लगातार दो मौतों की खबर मिली। राजा द्रुपद और राजा विराट मारे गए थे। दोनों को द्रोणाचार्य ने मार गिराया था। युधिष्ठिर अपने रथ में बेचैनी से पांचाल सेना के पीछे और उसके किनारों पर चक्कर लगाते रहे।

अश्वत्थामा के विरुद्ध युद्ध की राह पर निकले अर्जुन ने अपना रथ घुमाया और हमारी ओर बढ़े।
कृष्ण ने कहा, 'यदि हम यह अफवाह फैला दें कि अश्वत्थामा मर गया है, तो बूढ़ा व्यक्ति निराश हो जाएगा और असहाय और कमजोर हो जाएगा।'
अर्जुन ने कहा, 'हमारे सैनिक यह जयजयकार करते हुए पांचाल सेना में प्रवेश करें कि अश्वत्थामा मर गया है।'
युधिष्ठिर को संदेह हुआ, 'क्या हमारे गुरु उन पर विश्वास करेंगे?'
‘यदि तुम स्वयं जाकर, हर्षोल्लास से यह समाचार सुनाओगे, तो वह अवश्य आएगा।’ ‘झूठ बोलूं…?’ युधिष्ठिर चिंतित हो गए।
कृष्ण ने किसी तरह अपने क्रोध पर काबू पाया। ‘यह युद्ध है, जुए का खेल नहीं। द्रुपद, विराट, हमारे सभी योद्धा एक-एक करके गिर रहे हैं। हम उस बूढ़े व्यक्ति के सामने ऐसे गिर रहे हैं जैसे बाघ के सामने मवेशियों का झुंड।’
कृष्ण ने उस हाथी की ओर इशारा करते हुए, जिसे मेरी गदा ने एक महत्वपूर्ण अंग पर घायल कर दिया था और गिरा दिया था, क्रोधित होकर कहा, “देखो, उस हाथी को जिसे भीम ने मारा था – मैं उसका नाम अश्वत्थामा रखता हूँ और कहता हूँ, “अश्वत्थामा मर गया”। मैं सच कह रहा हूँ। अश्वत्थामा मर गया है!”
जब अर्जुन का रथ और मेरा रथ युधिष्ठिर के रथ के साथ पंचाल सेना के किनारों की ओर तेजी से बढ़े, तो हमने चिल्लाकर कहा: 'अश्वत्थामा मर गया!' द्रोणाचार्य ने दुस्साना को निर्देश देना और अपने रथ को सही जगह पर रखना अभी-अभी समाप्त किया ही था कि उन्होंने हमारी आवाज सुन ली।
युधिष्ठिर भी चिल्लाए, ‘अश्वत्थामा मर गया!’ फिर उन्होंने अपने अंतरात्मा को शांत करने के लिए धीरे से सच कहा: ‘हाथी, अश्वत्थामा।’
पंचालों ने एक साथ हर्षोल्लास करते हुए आगे बढ़कर आक्रमण किया। चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। युद्ध के नारों और विलाप की आवाज़ें गूंज उठीं। जब धूल छटी, तो मैंने द्रोण को उनके रथ के फर्श पर पड़ा देखा, उनका सिर धड़ से अलग हो गया था। धृष्टद्युम्न उनके ऊपर खड़े थे, उनकी तलवार से खून टपक रहा था और उनके चेहरे पर कठोर भाव थे।
सेनापति के पतन के साथ ही युद्ध समाप्त हो गया। धृष्टद्युम्न रक्तरंजित तलवार लिए अपने रथ पर सवार होकर अपने तम्बू में लौट आए, और हम उनके पीछे- पीछे चले।

कृष्ण का कंधा थामकर अर्जुन धृष्टद्युम्न के तम्बू के सामने अपने रथ से कूद पड़े और बोले, 'यह ठीक नहीं था। उसका सिर काटना ठीक नहीं था।'
सत्यकी दूसरे रथ में तेजी से आया और धृष्टद्युम्न पर क्रोधित होकर बोला, “अरे नीच दुष्ट! द्रोण ब्राह्मण तो थे ही। युद्ध में उन्हें मार गिराना तो उचित था, पर उनका सिर काटने की तुम्हारी क्या इच्छा थी?” फिर उसने मन ही मन कहा, “हाँ, पंचाल तो ऐसा ही सोचते। शिखंडी और तुम दोनों ही निर्दयी पापी हो।”
मुझे सत्याकी से ऐसी फटकार, ऐसे गुस्से की उम्मीद नहीं थी।
धृष्टद्युम्न ने क्रोध का कोई निशान न दिखाते हुए उसका सामना किया और तिरस्कारपूर्वक कहा, 'हत्या तो हत्या ही होती है। मैंने धर्म के नियमों के अनुसार हत्या करने का कोई पाठ नहीं लिया है।'
सत्यकी ने बुदबुदाते हुए कहा, 'वह शत्रु पक्ष में था, लेकिन वह एक शिक्षक था। और एक ब्राह्मण भी।'
‘और हे सत्यकी, तुम्हारा धर्म कहाँ था, जब तुमने भूरिश्रवा का सिर काट दिया, जबकि उसका हाथ कटा हुआ था?’
लेकिन सत्यकी ने केवल इतना ही दोहराया, 'वह एक ब्राह्मण थे। एक गुरु थे।' धृष्टद्युम्न ने अपना तिरस्कारपूर्ण रवैया त्याग दिया और क्रोध से सत्यकी की ओर मुड़ते हुए कहा, 'जब उस बूढ़े ने छह आदमियों को लेकर निहत्थे, सोलह वर्षीय अभिमन्यु को घेरने का आदेश दिया, तब उसकी ब्राह्मण चेतना कहाँ थी?'
स्वयं को शांत करने का प्रयास करते हुए, उन्होंने युधिष्ठिर की ओर मुड़कर कहा, “मैं आपके जितना बुद्धिमान नहीं हूँ। परन्तु मैंने भी यह सीखा है कि ब्राह्मण के कर्तव्य भिक्षा माँगना, अध्यापन करना, यज्ञ करना, दान ग्रहण करना और अध्ययन करना हैं। जिस क्षण मैंने उस महान ब्राह्मण का वध किया, उस समय वह इनमें से किस कर्तव्य में लीन थे?”
वह मेरी प्रतिक्रिया जानने के लिए मेरे पास आया।
मैंने कहा, 'मेरे दोस्त, मैं तुम्हें गले लगाता हूँ और बधाई देता हूँ।' लेकिन सत्यकी ने अपनी बात पूरी नहीं की थी। ‘ब्राह्मण गुरु को उनके बालों से उठाकर उनका सिर काटने के लिए? भीम, उसे जाने दो। वह दुष्ट क्षत्रिय नहीं है!’

सत्यकी आगे की ओर झपटा और धृष्टद्युम्न ने भी उसी प्रकार प्रतिक्रिया दी, और हथियारों से बहस को समाप्त करने का निर्णय लिया।
युधिष्ठिर ने रास्ता रोकते हुए विनती की, ‘नहीं! मेरे साथ केवल आप पांचाल और यादव ही हैं। यदि आप आपस में लड़ने लगेंगे तो मैं क्या करूँगा?’ युधिष्ठिर ने सात्यकि को एक ओर खींच लिया, मैंने धृष्टद्युम्न के साथ भी वैसा ही किया।
हम व्याकुल मन से युद्ध के मैदान में लौट आए, हमारे कदम तालमेलहीन थे, और अश्वत्थामा के नेतृत्व में हुए हमले के सामने हमारा प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा। राहत की बात यह थी कि उस दिन का युद्ध समाप्त हो गया। मुझे लगा था कि कृपा अगला सेनापति होगा। या फिर वे अश्वत्थामा को चुनेंगे, जो द्रोण की मृत्यु का बदला लेने के लिए बेताब था। लेकिन हमें पता चला कि उनमें से कोई नहीं, कर्ण ही सेनापति था।
उस संक्षिप्त अंतराल में, हमने एक बार फिर मृतकों की संख्या का जायजा लिया। कौरव पक्ष ने भीष्म, द्रोण, जयद्रथ, भगदत्त, भूरिश्रवा और दुर्योधन के कई भाइयों को खो दिया था, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण विकर्ण और चित्रसेन थे।
मगधों ने पहले ही उन लोगों के लिए गीत रचे थे जिन्हें हमने खो दिया था। उत्तरन, अभिमन्यु, इरावा, द्रुपद, विराट। मैंने गौर किया कि नामों को जोड़ते समय उन्होंने एक नाम छोड़ दिया था। वनवासी की मृत्यु किसी वीरगाथा का विषय नहीं थी।
उस रात हम युधिष्ठिर के सामने कर्ण को मारने की रणनीति पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हुए। अर्जुन ने रेत के एक विशाल मैदान पर सेना की स्थिति का रेखाचित्र बनाया, फिर उसे मिटाकर दूसरे रेखाचित्र बनाए।
मैंने उन्हें याद दिलाया, 'कर्ण को मारने की जल्दबाजी में, द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा को मत भूलो, जिसने बदला लेने की शपथ ली है।'
मुझे उसकी खूबियों और कमियों का पता है। पहले, कर्ण!
मैंने युधिष्ठिर और अर्जुन को कर्ण के वध की योजना बनाते हुए देखा और चुप रहा, क्योंकि मैं जानता था कि मैं कुछ बोल नहीं सकता। यह एक ऐसा रहस्य था जिसे माँ ने अब तक छुपा रखा था। मुझे इसे प्रकट नहीं करना चाहिए। भगवान करे मुझे कभी इसे प्रकट करने की नौबत न आए, मैंने खुद को चेतावनी दी।
युद्ध के सत्रहवें दिन, मैंने अश्वत्थामा को युद्ध के लिए चुनौती दी।

अश्वत्थामा की युद्ध गर्जना, जिसका उद्देश्य अपने शत्रु को निहत्था करना था, जंगली घोड़े की हिनहिनाहट जैसी थी। बचपन में किसी ने इसी विचित्र गर्जना के कारण उसका नाम अश्वत्थामा रख दिया था। वह द्रोणाचार्य से भी तेज गति से चल सकता था और कर्ण से भी अधिक कुशल था। परन्तु मेरे पक्ष में विशोक की विशेषज्ञता और सौभाग्य था। जैसे ही मेरा शत्रु थकने लगा, अर्जुन आ गया। ‘अब तुम इसे ले सकते हो। मैंने इसकी आधी हिम्मत बुझा दी है।’
सहदेव का दुस्साना से युद्ध हुआ। जब अर्जुन अश्वत्थामा की ओर बढ़े, तो कर्ण आगे आया, नकुल को मूर्ख बनाया और उसे जाने दिया। मैंने सुतसोमा को शकुनि से बहादुरी से लड़ते देखा। उनके ठीक पीछे, शिखंडी कृतवर्मा से पराजित होकर पीछे हट गया था।
सर्वदा ने मुझे बताया कि युधिष्ठिर दुर्योधन से युद्ध कर रहे हैं। मैं अपने रथ पर सवार होकर तुरंत उस स्थान की ओर भागा। युधिष्ठिर ने राहत भरी निगाहों से मेरी ओर देखा और मैंने कहा, 'वह मेरा है। वापस जाओ, मैं आ गया हूँ।'
जैसे ही मैं आगे बढ़ा, दुर्योधन दाईं ओर मुड़ा और मध्य पंक्तियों में शामिल हो गया। सत्यकी ने कर्ण को दुर्योधन के साथ आते देखा और अर्जुन को अश्वत्थामा से अलग करने के लिए आगे की ओर छलांग लगाई।
उस शाम किसी ने ज्यादा कुछ नहीं कहा। किसी ने अश्वत्थामा के साथ हुई लड़ाई के लिए मेरी प्रशंसा की। कई नेताओं की मृत्यु से आहत हृदयों में प्रतिशोध की भावना सुलग रही थी।
अगले दिन कर्ण ने पांडव सेना पर बवंडर छोड़ दिया। शल्य उसका सारथी था – दुर्योधन की यह एक रणनीतिक चाल थी, क्योंकि शल्य अर्जुन के सारथी की गति और नियंत्रण का मुकाबला करते हुए कर्ण की शक्ति को और बढ़ा रहा था। अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न पर आक्रमण किया, तेज बाणों से उसकी कवच को चीर डाला और उसे असहाय कर दिया। इसी बीच, कर्ण युधिष्ठिर को अपने पास लाने में कामयाब रहा। फिर जब उसने अर्जुन को धृष्टद्युम्न की सहायता के लिए दौड़ते देखा, तो वह आगे की ओर कूद पड़ा।
उस समय मैं दुर्योधन की अग्रिम पंक्ति पर हमला कर रहा था।
ऐसा लग रहा था मानो कर्ण ने पूरे युद्धक्षेत्र को घेर लिया हो। मुझे बाद में पता चला कि उसने लगभग युधिष्ठिर को मार ही डाला था और इसी के परिणामस्वरूप दंगा भड़क उठा था।

युधिष्ठिर घावों से लथपथ होकर अपने तम्बू में लौटे। जब अर्जुन वहाँ पहुँचे, तब तक सेवक और चिकित्सक उनकी सेवा कर रहे थे। युधिष्ठिर उठ बैठे, उन्हें पूरा विश्वास था कि कर्ण मारा जा चुका है।
मुझे पता था कि कर्ण को केवल तुम ही हरा सकते हो।
जब अर्जुन ने युधिष्ठिर को बताया कि वह कर्ण के अत्याचारों का अंत करने के लिए वापस जा रहा है, तो युधिष्ठिर का चेहरा उतर गया।
‘तुम भीम को अकेला छोड़कर यहाँ आ गए? नहीं, तुम कर्ण से डरकर भाग गए होगे।
देखो, मेरे शरीर को देखो, कर्ण के बाणों से छलनी हो गया है। कौरव सेना ने मेरा उपहास उड़ाते हुए मुझ पर हँसा।’
युधिष्ठिर ने अर्जुन के इस दावे पर इतना भरोसा करने के लिए खुद को फटकारा कि वह कर्ण को आसानी से हरा सकता है।
फिर उसने क्रोधित होकर कहा, ‘यदि तुम कर्ण से डरते हो, तो अपना गांडीव धनुष कृष्ण को दे दो। मुझे पूरा विश्वास है कि कृष्ण उसे परास्त कर देंगे। तुम्हें बस रथ चलाना है। युद्ध के शेष समय में सारथी बनकर रहो!’ उसने उपस्थित लोगों की ओर मुड़कर कहा, ‘तेरह वर्षों तक उसकी शेखी पर विश्वास करना मेरी मूर्खता थी!’
अर्जुन के काले चेहरे पर पसीने की बूँदें थीं। उन्होंने अपने तरकश की गाँठ खोली और वह खनकती हुई ज़मीन पर गिर गया। उन्होंने सोने की डंडी वाला धनुष उठाया और कृष्ण पर फेंक दिया। फिर उन्होंने अपनी तलवार निकाली और चिल्लाए, 'तुम्हारा सिर कटते ही यह युद्ध समाप्त हो जाएगा!'
जब अर्जुन क्रोधित होकर युधिष्ठिर पर झपटा, तो कृष्ण ने उसका मार्ग रोक दिया और उसे चेतावनी दी: 'क्रोध में वह तुमसे जो कुछ भी कहे, वह तुम्हारा बड़ा भाई और राजा है। यह मत भूलो!'
अर्जुन अब भी क्रोधित थे। ‘एक कायर, जो हमेशा युद्धक्षेत्र से कम से कम आधा मील दूर खड़ा रहता है! उसे बस एक ही बात आती है, जुआ खेलना, नीच जाति के लोगों का पेशा! वह राजा बनने के योग्य कैसे है? वह एक कायर है जिसे द्रौपदी के बिस्तर पर सोने का भी अधिकार नहीं है!’ उन्होंने कृष्ण पर प्रहार किया, जो अब भी उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे थे: ‘अगर मेरे बड़े भाई भीम, जो अकेले ही हज़ार शत्रुओं का सामना कर सकते हैं, मुझे कायर कहें तो मैं स्वीकार कर लूंगा। लेकिन इस आदमी को ऐसा कहने का क्या अधिकार है? वह पांडवों पर अभिशाप है, आज ही उसका नाश होना चाहिए!’

कृष्ण, उनके सेवकों और दो वृद्ध ब्राह्मणों ने किसी प्रकार अर्जुन को वश में कर लिया।
बाद में, युधिष्ठिर ने हार के भय से आवेग में आकर बिना सोचे-समझे बोले गए शब्दों के लिए क्षमा मांगी। तब तक शांत हो चुके अर्जुन ने भी युधिष्ठिर से क्षमा मांगी। कृष्ण ने अर्जुन को युद्धक्षेत्र में वापस जाने के लिए राजी किया।
शिविर में इस सारी अफरा-तफरी के बीच मैंने देखा कि कर्ण कौरवों की मदद के लिए फिर से आगे आ गया है। मैंने देखा कि कर्ण के बाएँ हिस्से की रक्षा कर रहा दुस्साना एक बड़े रथ में सवार होकर सत्यकी की ओर तेजी से बढ़ा और मैंने विशोक से हमारे रथ से उसका रास्ता रोकने को कहा।
‘दुस्साना!’ मैंने चिल्लाकर कहा, ‘मैं आ रहा हूँ!’
वह रुका, फिर अपना रथ मेरी ओर मोड़ा। हम दोनों अकेले थे। मैंने अपनी खुशी को काबू में रखा। मैं रथ के फर्श पर खड़े होकर, उसकी गलती का इंतज़ार करते हुए लड़ाई जारी नहीं रखना चाहता था। मेरी यही उम्मीद थी कि, जैसा उसने दावा किया था कि वह गदा चलाने में दुर्योधन जितना कुशल है, वह अपना धनुष छोड़कर गदा उठा लेगा।
तीसरी बार जब मैंने हमला किया, तो उसका गदा उसके हाथ से छूट गया। मैंने अपना गदा ज़मीन पर फेंक दिया।
‘निःसंकोच, दुस्साना, निःसंकोच। द्रौपदी के लिए, मेरे लिए… जो भी याद रखे कि मैंने तुम्हारा सीना चीरकर तुम्हारा खून पीने की प्रतिज्ञा की थी, वे आकर देखें!’
मैंने उसकी आँखों में डर देखा।
उसने केवल निषादों के बीच पले-बढ़े और निहत्थे रहकर युद्ध करने वाले भीम के बारे में सुना था। अपने पहले ही जोश में आकर वह मुझ पर झपटा, अपने पैरों, हाथों और सिर को गदा की तरह इस्तेमाल करते हुए। फिर मैंने शुरुआत की... दुस्साना धीरे-धीरे कमजोर होता गया क्योंकि मैं उसके माथे, सिर और बाएं कान पर बार-बार वार कर रहा था। मैंने अपने बाएं हाथ से उसकी मुट्ठियों को रोका और उसकी छाती पर एक जोरदार प्रहार करके उसे नीचे गिरा दिया। मैं उस पर झपटा, अपना पैर उसकी गर्दन पर रखा, और जैसे ही मेरी उंगलियां उसकी पसलियों में गहराई तक धंस गईं, उसकी आंखें बाहर निकल आईं और मुझे दबी हुई कराहें सुनाई दीं।

अपनी पूरी ताकत लगाकर मैंने अपना हाथ उसकी पसलियों पर दबाया और मुझे पेड़ की छाल फटने जैसी आवाज़ सुनाई दी। गर्म खून की एक धारा मेरे चेहरे पर छलक पड़ी, मानो प्रतिशोध की माला हो, अशोक के फूलों की तरह लाल। खून। वही खून जिसका स्वाद मैंने हज़ारों रातों तक गुस्से में अपने होंठ काटते हुए चखा था। विनाशक को अर्पित किया जाने वाला उत्सव का पेय।
मैं खड़ा हो गया, अपने हाथों और चेहरे पर खून की हल्की गर्माहट महसूस कर रहा था।
जब बचे हुए कौरव पास आए, तो मैंने उनसे कहा, ‘आओ। नरसंहार केवल रक्तपान के बाद ही होगा। आज भीम को राजसी भोज मिलेगा!’
वे रुक गए। उनमें से कुछ ने मुझे पुकारा। मैं वहाँ से आगे बढ़ गया, गिरे हुए, बेजान शरीरों के बीच से रास्ता बनाते हुए। किसी का सिर का आभूषण मेरे पैरों तले कुचल गया और खून से सने मोती ज़मीन पर बिखर गए।
मैंने मन ही मन सोचा, मौत, वो भूरी-लाल सुंदरता, कहीं खड़ी होकर देख रही होगी…
मुझे इस बात का दुख हुआ कि एक और खूबसूरत महिला, जो हमेशा युद्ध की कहानियों से रोमांचित होती थी, आज इसे देखने के लिए वहां मौजूद नहीं थी...

5

मैंने सात रथों को एक साथ शिविर की ओर दौड़ते हुए देखा और सोचा कि कुछ महत्वपूर्ण घटना अवश्य घटी होगी।
विशोका मेरे शरीर से खून पोंछ रही थी।
मैं युधिष्ठिर के तम्बू की ओर चला। मुझे देखते ही अर्जुन अपने रथ से कूदकर मेरी ओर दौड़ा।
‘मैंने कर्ण को मार डाला, मैंने उसे मार डाला!’ खुशी से झूमते हुए उसने अपनी बाहें मेरी ओर फैला दीं, मानो मेरे आलिंगन की प्रतीक्षा कर रहा हो।
मैंने आह भरी और अपनी आंखें बंद कर लीं जब वह मेरी बाहों के घेरे में आ गया।
उसके साथ आए सभी लोग खुशी से एक-दूसरे को बधाई दे रहे थे।
अर्जुन ने पुकार कर कहा, ‘संगीत कहाँ है? सूत और मगध कहाँ हैं? कर्ण मर गया!’ युधिष्ठिर उत्सव में भाग लेने के लिए दौड़ पड़े।
दूर से कौरव शिविर से शोकगीतों की आवाज़ें हमारी ओर आने लगीं। वे पांडवों के गायकों द्वारा अचानक गाए जाने वाले स्तुतिगानों के साथ बजने वाले विभिन्न वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनि में विलीन हो गईं।
युधिष्ठिर दौड़ते हुए संगीतकारों को उत्साहित करने लगे: ‘गाओ, मगधियों, कर्ण मर गया! अर्जुन, जो कुशल धनुर्धर, विजयी योद्धा और इंद्र के समान था, ने उसे मार डाला। पूरे स्वर से गाओ!’
युधिष्ठिर ने अर्जुन को याद दिलाया कि इंद्र और अन्य सभी देवताओं के आशीर्वाद से ही उसे वह महत्वपूर्ण क्षण प्राप्त हुआ था जब कर्ण के रथ का पहिया धरती में धंस गया था, जिससे वह असहाय हो गया था।
वे कर्ण के अंत का वर्णन करते रहे।
धार्मिक युद्ध के नियमों का हवाला देते हुए कर्ण ने युद्ध जारी रखने से पहले अपना चक्र बदलने के लिए समय मांगा था। अर्जुन ने हमसे कहा, 'मैंने उनसे कहा कि भीष्मचार्य के पतन के साथ ही धार्मिक युद्ध समाप्त हो गया था। मैंने उनसे पूछा कि कुरुक्षेत्र में अभिमन्यु पर आक्रमण करते समय उन्होंने किन नियमों का पालन किया था।'
युधिष्ठिर अपने रथ की ओर चलते हुए बोले, “अपनी तसल्ली के लिए मुझे उस सूत के पुत्र का शव उसके रथ में पड़ा हुआ देखना आवश्यक है। आगे बढ़ो!”

मुझे उत्सवों में भाग लेने की कोई इच्छा नहीं थी। मेरा युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ था। धृतराष्ट्र का एक पुत्र अभी जीवित था। दुर्योधन की खोज में गए सैनिकों और जासूसों ने बताया कि वह हस्तिनापुर में नहीं है।
इसी बीच, उत्सव के उपलक्ष्य में तंबुओं और शिविरों में खोले गए शराब के बर्तन झागदार होकर छलकने लगे।
मुझे अकेले बैठे देखकर विशोक ने कहा, 'दुर्योधन ज्यादा दूर नहीं गया होगा। जब हमने उसे आखिरी बार देखा था, तब वह बिना रथ या घोड़े के भाग रहा था।' मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं थी, इसलिए मैंने विशोका को उत्सव में शामिल होने की अनुमति दे दी।
लेकिन जब वह दो शिकारियों के साथ लौटा तो मुझे पता चला कि वह जश्न मनाने नहीं गया था। उनमें से एक मुझे जाना-पहचाना लगा। मैंने उसे तब देखा था जब वह एक बार नदी के किनारे शिकार करके लाया हुआ मांस लेकर आया था। वह अधेड़ उम्र का आदमी था और दूसरा युवक उसके बेटे जैसा दिखता था।
उन्होंने बताया कि नदी के किनारे शिकार करते समय उन्होंने नदी के गहरे हिस्से के पास तीन पुरुषों को आपस में बात करते देखा था। उनमें से एक व्यक्ति हथियारबंद था, हालांकि वह ब्राह्मण था। शिकारी के विवरण से मुझे पता चला कि वह अश्वत्थामा था। बाद में स्पष्ट हो गया कि बाकी दो कृपा और कृतवर्मा थे।
विशोका ने शिकारियों को एक तरफ ले जाकर उनसे दोबारा पूछताछ की। फिर, मेरी अनुमति से, उसने उन्हें सौ-सौ सिक्के दिए और उन्हें विदा कर दिया।
नदी किनारे खड़े तीन आदमियों का आपस में बातचीत करना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। आश्चर्य की बात तो यह थी कि वे एक अदृश्य व्यक्ति से बात कर रहे थे। चौथा व्यक्ति कौन हो सकता था, सिवाय दुर्योधन के जो छिपकर बैठा था? विशोक ने कहा कि अब स्पष्ट हो गया है कि हमारे शत्रु का ठिकाना कहाँ स्थित है।
अर्जुन मुझे ढूंढते हुए आया क्योंकि उसने मुझे उत्सव में नहीं देखा था। मैंने उससे कहा, 'एक व्यक्ति अभी भी बाकी है। मैं उससे निपटने के बाद जश्न मनाऊंगा।'
धृष्टद्युम्न शराब और जीत दोनों के नशे में चूर होकर अंदर आया और मुझे स्नेहपूर्वक मेरी सीट से उठा लिया।

मैंने कहा, ‘दुर्योधन देश छोड़कर नहीं गया है। वह नदी के गहरे हिस्से में छिपा हुआ है।’
यह सुनकर धृष्टद्युम्न का स्वभाव बदल गया। वह दौड़कर बाहर निकल गया। कृष्ण, युधिष्ठिर और सत्यकी अर्जुन द्वारा चलाए जा रहे रथ में सवार हो गए। नकुल और सहदेव मेरे रथ में बैठ गए। मैंने स्वयं रथ की लगाम संभाली और विशोक को एक छोटे रथ में आगे भेज दिया ताकि वह हमें रास्ता दिखाए।
द्वैपायन नामक स्थान पर नदी शांत और बहुत गहरी थी। वहाँ दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था। नदी के मुहाने पर, पानी में फैले अट्टुवनजी वृक्षों के बीच गुफाएँ थीं। विशोक ने कहा कि दुर्योधन संभवतः उनमें से किसी एक गुफा में था।
युधिष्ठिर ने एक योजना बनाई। हम उसे अपशब्द कहकर और अपमानित करके बाहर आने के लिए उकसाएंगे: 'दुर्योधन, हम युधिष्ठिर और पांडव हैं!'
कोई जवाब नहीं था।
‘क्या तुम छिप रहे हो, कायर? कुल का नाश करने वाले, बाहर आओ, क्षत्रिय की तरह लड़ो। या तो जीतो और वीर बनो, या अपनी अंतिम नींद सो जाओ।’
पहले हमें गुफा के चारों ओर गंगा की गहराई से आती हुई पानी की धीमी आवाज सुनाई दी।
उसके बाद दुर्योधन की आवाज आई, “मुझे राज्य नहीं चाहिए। मैं उस देश को क्यों चाहूँ जहाँ मेरे सभी रिश्तेदार और मित्र मर चुके हैं और केवल उनकी विधवाएँ ही बची हैं? मैंने हिरण की खाल धारण करके जंगल में जाकर जीवन भर तपस्या करने का निश्चय किया है। मुझे मुक्त कर दो!”
युधिष्ठिर ने पुकार कर कहा, 'मैं तुम्हें परास्त किए बिना राज्य पर अधिकार नहीं करूंगा। हे नीच दुष्ट, मर्द बनकर बाहर आओ और लड़ो।'
'क्या मुझसे, जो लड़ाई से थक चुका हूं और निहत्था भी हूं, चुनौती देना मर्दानगी है?'
दुर्योधन की बातों से युधिष्ठिर क्रोधित हो गए। उन्होंने चिल्लाकर कहा, “अगर हिम्मत है, अगर तुम मर्द हो, तो बाहर आओ! तुम हम में से किसी से भी, अपनी पसंद के किसी भी हथियार से लड़ सकते हो। अगर तुम जीत गए, तो तुम राजा बनोगे!”

युधिष्ठिर की इतनी जल्दबाजी भरी बातें सुनकर कृष्ण कांप उठे। मैंने अपनी बेचैनी छुपाई। युधिष्ठिर की ओर इशारा करते हुए कृष्ण कुछ कहने ही वाले थे कि उन्होंने खुद को रोक लिया।
जैसे ही दुर्योधन झाड़ियों से रेंगता हुआ बाहर आया, पेड़ हिलने लगे। उसका मैला शरीर घावों से भरा हुआ था। उसने झूठ बोला था जब उसने कहा था कि उसके पास कोई हथियार नहीं है। सोने की जड़ाई वाली गदा, जिसे वह कभी अपने से अलग नहीं करता था, उसके हाथ में थी। उसने कहा, 'मैं तुम्हारी शर्तें स्वीकार करता हूँ।'
अपने क्रोध पर काबू न रख पाने के कारण कृष्ण युधिष्ठिर की ओर मुड़े। ‘कितनी मूर्खतापूर्ण बात कही तुमने! कि वह जिससे चाहे उससे लड़ सकता है और उसे हराने पर राज्य का मालिक बन जाएगा! अगर वह तुम्हें लड़ने के लिए कहे तो क्या होगा? अगर वह नकुल, सहदेव या अर्जुन को गदा से लड़ने की चुनौती दे तो क्या होगा?’ उसने हताशा से कहा, ‘मुझे तो शक है कि भीम भी उसका मुकाबला कर पाएगा।’
युधिष्ठिर व्याकुल थे। कमजोरी के क्षण में बोले गए अपने अहंकारपूर्ण शब्दों को अब वे वापस नहीं ले सकते थे।
कृष्ण क्रोधित होकर बुदबुदाते रहे, 'कुंती के पुत्रों का भाग्य यही लिखा होगा कि वे अपना पूरा जीवन वन में ही व्यतीत करें।'
मैं दुर्योधन के पास गया। ‘प्रमनाकोटी से शुरू करके, हम दोनों के बीच कई हिसाब-किताब बाकी हैं। हमने धृतराष्ट्र के सभी पुत्रों को मारने की कसम खाई थी, अब सिर्फ तुम ही बचे हो।’
उसकी आँखों ने मेरी आँखों में एक ऐसी दृष्टि डाली जिसने मुझे उस पहले क्षण की याद दिला दी जब पहलवान एक-दूसरे की मुट्ठियों को कसकर पकड़ते हैं और छोड़ते नहीं हैं।
‘जो मुझे सीधे युद्ध में हरा सकता है, वह अभी पैदा ही नहीं हुआ है!’ दुर्योधन ने घमंड से कहा। ‘वृकोदरा, तुम वहाँ खड़े होकर मुझ पर ऐसे दहाड़ मत मारो जैसे बारिश से खाली बादल हो।’
द्वैपायन में भी दर्शक हमें देखने के लिए आ चुके थे। वे दो अलग-अलग शिविरों में बैठ गए।
अब जब दुर्योधन ने देखा कि उसके श्रोता भी हैं, तो उसकी आवाज़ तेज़ हो गई। “यह सच है, मैंने तुम्हें जुए में हराया, तुम्हें जंगल भेजा, तुम्हें

अजनबियों के घरों में काम करवाया। मैंने तुम्हें मसखरा भी बनाया। यह सब इसलिए क्योंकि मैं तुमसे अधिक शक्तिशाली था। दोनों पक्षों को बराबर नुकसान और विनाश का सामना करना पड़ा। अब अपनी शक्ति जुटाओ और मुझसे युद्ध करो! मैं तुम्हें एक ऐसा द्वंद्वयुद्ध का वादा करता हूँ जिसे देवता भी देखेंगे।”
हमें उसी क्षण युद्ध शुरू कर देना चाहिए था। लेकिन दुर्योधन उस व्यक्ति को देखकर झिझक गया जो रथ में सवार होकर नदी किनारे की ओर तेजी से आ रहा था और वह रथ से कूद पड़ा। उसके चेहरे पर स्वागत का भाव फैल गया। बलराम हमारी ओर आ रहे थे।
कृष्ण ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। ‘तुम सही समय पर आए हो। आखिर वे दोनों तुम्हारे ही शिष्य हैं।’
बलराम ने कहा कि वे रेफरी होंगे। उन्होंने हमें अखाड़ा नदी के दूसरे किनारे पर ले जाने का निर्देश दिया। बलराम के हस्तक्षेप से मैं प्रसन्न नहीं था। मैं यह द्वंद्वयुद्ध अपने जीवन और राज्य के लिए लड़ रहा था। मेरा आखिरी द्वंद्वयुद्ध। जब बलराम ने नियम निर्धारित किए और सीमाएँ तय कीं, तो मुझे आश्चर्य हुआ: क्या उन्हें लगा कि उनके शिष्य केवल दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए अखाड़े में प्रवेश कर रहे हैं, मानो वे किसी राजा के स्वर्ण-संधि के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हों?
दुर्योधन ने खुद को समेट लिया, फिर सीधा खड़ा हुआ। मुझे ऐसा लगा मानो मेरा शत्रु मेरे सामने खड़े-खड़े आधा हाथ लंबा हो गया हो।
मुझे लगा कि उसका गदा बहुत हल्का है, क्योंकि मैंने उसके पहले वार को रोक दिया था। शायद इससे उसे तेज़ी से चलने में मदद मिली। मैं पीछे हटते हुए उस पर हमला करने के लिए जगह ढूंढता रहा, फिर आगे बढ़कर उसके चारों ओर चक्कर लगाया। पीछे हटते हुए, बिना चेहरा घुमाए, मैंने एक वार किया जो उसके कंधे पर लगा। वह दहाड़ते हुए मेरी ओर बढ़ा, बारी-बारी से अपने गदा को दाएं-बाएं घुमाता रहा; मैं हर बार बाल-बाल बच गया। वह अपनी मुद्रा बदलता रहा। जब वह बाईं ओर से आगे बढ़ा, तो मैंने दाईं ओर से उसके वार को रोका। उसका एक वार मेरे बाएं कंधे पर लगा।
हमारी गदाओं के टकराने से चिंगारियां बिखर गईं। उसकी निपुणता और हाथों की गति ने मुझे चकित कर दिया। मैंने उसके एक वार को रोकने में कामयाबी हासिल की जो उसने मेरे सिर पर किया था, लेकिन मेरी अपनी गदा मेरे माथे पर जा लगी।

मुझे डर था कि मैं थक रहा हूँ। मैंने खुद को फटकारा, वह शक्तिशाली कहाँ है? वही भीम जिसने बका, हिडिम्बा, जरासंध और कीचक का वध किया था? यही वह शत्रु था जिसका मैं इंतजार कर रहा था, वही शत्रु जिसने मेरी शक्ति को बढ़ाया था। हर वार के साथ, मैं अपने शत्रु के अपराध को याद करता रहा और जंगली घोड़ों जैसी ताकत मेरी भुजाओं की जड़ों, मेरी हड्डियों और नसों में दौड़ उठी। इससे पहले कि वह अपना उठा हुआ हाथ नीचे कर पाता, मैंने दिशा बदल दी, दाईं ओर मुड़ा और उसे जोरदार प्रहार किया। उस प्रहार में मेरी पूरी ताकत लगी थी। प्रहार उसकी बगल के नीचे, पसलियों पर लगा और मुझे अपनी मुट्ठी के नीचे उसकी हड्डियाँ चटकने की आवाज सुनाई दी। दुर्योधन गिर पड़ा।
जब वह उठने के लिए संघर्ष कर रहा था, तो मैं उसके सामने खड़ा हो गया और उसे ताना मारते हुए कहा, 'एक बार फिर मेरा मजाक उड़ाओ, तुम्हारे पास एक बार फिर हंसने का समय है।'
मैं हांफ रहा था।
मैंने युधिष्ठिर को यह कहते सुना, 'रुको, भीमसेन। तुम जीत गए हो।'
मैंने दुर्योधन की बलिष्ठ जांघ को देखा और मुझे याद आया कि कैसे जुआघर में उसने द्रौपदी को देखते हुए अपने वस्त्र को हटाया था और उस पर अपनी उंगलियों से थपथपाया था।
मेरी गदा उठी और गिर गई।
‘नहीं, यह अनुचित है!’
मुझे अनेक आवाजें सुनाई दीं। दुर्योधन ने कुछ कहने का प्रयास किया, फिर उसका सिर जमीन पर जा गिरा। वह अभी भी जीवित था। मैंने एक बार फिर उसकी आँखों में देखा और उन लोगों की ओर चल पड़ा जो मेरा इंतजार कर रहे थे।
मैं पूरी तरह थक चुका था। किसी भी द्वंद्वयुद्ध ने मुझे इतना नहीं थकाया था। मुझे ऐसा लग रहा था मानो मेरी सारी शक्ति समाप्त हो गई हो।
बलराम ने कहा, 'यह धर्म के विरुद्ध है!'
युधिष्ठिर ने कहा, “गिरने के बाद उसकी जांघ पर मारना गलत था। अधर्म!” मैंने युधिष्ठिर से कहा, “मैंने उसे मारने की प्रतिज्ञा की थी। जो क्षत्रिय अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं करता, वह धर्म के विरुद्ध कार्य करता है और नरक में जाएगा। यह आपने ही मुझे सिखाया था, बड़े भाई। मैं उसके सिर पर प्रहार करके उसे समाप्त कर दूंगा। यदि कोई मुझे ऐसा करने से रोकना चाहता है, तो वह रोक सकता है।”

मैंने बलराम की ओर देखा। मुझे लगा कि वे उठ जाएँगे। मैंने धृष्टद्युम्न, सत्यकी और कृष्ण को उन्हें सांत्वना देते देखा। लेकिन किसी ने मुझे नहीं रोका और मैं आखिरी बार अपने शत्रु की ओर वापस चल पड़ा।
मैंने अपना गदा फेंक दिया। मुझे अब उसकी कोई ज़रूरत नहीं थी, मेरा युद्ध समाप्त हो चुका था।
विशोका मेरा इंतजार कर रही थी।
मुझे अब भी धर्म और अधर्म का असली अर्थ समझ नहीं आया था। सब लोग मुझे घूर रहे थे, उनकी निगाहें मुझ पर गड़गड़ा रही थीं और मुझ पर, विजेता पर, अपना शत्रु होने का आरोप लगा रही थीं। मैं कुछ दूर चला और अपने रथ में झाँका।
मैंने देखा कि जिस गदा को मैंने फेंक दिया था, वही मुझे माया ने उपहार में दी थी, वह ज़मीन पर पड़ी थी।
मैंने विशोका की ओर देखा।
उन्होंने कहा, 'यह एक अच्छी गदा है, मैंने इसे फेंका नहीं। गदा धर्म और अधर्म में भेद नहीं करती।'
मैंने विशाल नदी को निहारा, जहाँ लहरें अभी भी शांत थीं। उस रात हवा सो रही थी।
कृष्ण और मेरे भाई कुरुक्षेत्र में विजय का जश्न मनाने के लिए चले गए थे। सत्यकी भी उनके साथ गया था। मैंने जाने से मना कर दिया था। धृष्टद्युम्न वहीं रुक गया था, वह आराम से सोना चाहता था। हम सब अपने-अपने रास्ते चले गए।
मुझे याद आया कि कैसे मैं बचपन में इस नदी के किनारे, स्नान घाटों पर, शाम ढलते समय खड़ा होकर प्रार्थना करता था, जहाँ मैं पवन देव से संदेश की प्रतीक्षा करता था। मुझे उस बच्चे की याद आई जिसने प्रार्थना की थी कि वह एक शक्तिशाली पुरुष बने। मुझे अभी भी अतीत की दूरी में उसकी छवि दिखाई दे रही थी, वह वृकोदरा जो यहाँ खेलता और इतराता था…
वह एक शक्तिशाली व्यक्ति बन चुका था। उसने एक युद्ध जीत लिया था।
मेरा आखिरी शत्रु समंतपंचक की धरती पर पड़ा अपनी अंतिम सांसें ले रहा था। मैं एक क्षत्रिय था जिसने अपने सभी वचनों का पालन किया था।
हे पराक्रमी भीम! मैंने जंगलों में, महल के प्रांगणों में, और अंत में कुरुक्षेत्र में युद्ध किया और अपने शत्रुओं को पराजित किया। मैं एक साधारण मनुष्य था, यह मेरी अपनी शक्ति नहीं थी जिसने मुझे पराक्रमी बनाया।

किसी ने मेरी वाणी को बल दिया जब मैंने युद्धघोष किया, किसी ने मेरी भुजाओं में शक्ति का संचार किया जब वे थक गई थीं। विजय के इन क्षणों में मुझे अहंकारी न होने दें। मुझे विनम्रता से अपना सिर झुकाना चाहिए।
हे ईश्वर, तूफ़ानों को बांधने वाले, बादलों के ऊपर शिकार करने वाले, मेरे पिता परमेश्वर, आज मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। इन चट्टानों को आपके चरण मानकर, मैं अपना सिर इन पर रखता हूँ।
प्रार्थना करने के बाद मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा मन शांत हो गया हो। मैं उस वीरान युद्धक्षेत्र में वापस नहीं जाना चाहता था। तंबू अंधेरे में सो रहे थे और शिविरों में गूंजते भजन थम गए थे। बस मेरे साथी कहीं जश्न मना रहे थे।
मैं स्नान घाट की सीढ़ियों पर बैठा रहा।
रात का अंत हो चुका था और शुक्र ग्रह उदय हो चुका था। सूर्य के उदय स्थल, पर्वत की चोटी से रक्त-लाल रंग की प्रकाश की लकीरें निकल रही थीं। मैं वापस चलने लगा।
द्रिषद्वती नदी के संगम पर मैंने जलती हुई भूमि से धुआं उठता देखा। कैशिका राग की धुन, जो आमतौर पर सूर्योदय का संकेत देती थी, उसकी जगह कुरुक्षेत्र के सुनसान मैदान से अचानक एक विलाप की आवाज़ गूंजी – लोगों के समूह की चीखें। मैं सिहर उठा।
विशोका दौड़कर मेरे पास आई और सिसकते हुए बोली, 'अश्वत्थामा और उसके आदमियों ने रात में शिविर में आग लगा दी।'
नकुल और सहदेव भी वहाँ पहुँच गए। ‘उन्होंने सो रहे सभी लोगों को काटकर मार डाला। कोई भी भाग नहीं सका।’
जिसे मैंने जलती हुई जमीन से उठता धुआं समझा था, वह असल में सुलगते हुए तंबू थे।
एक सवाल मेरे होठों पर अटक गया, मानो खुद को व्यक्त करने में असमर्थ हो। कौन-कौन? कौन?
धृष्टद्युम्न जो अपनी नींद का आनंद लेने के लिए लेट गया था; पांचाली के पुत्र: प्रतिविन्ध्य, सुतसोम, श्रुतकीर्ति, शतानीक और श्रुतकर्मा; और सर्वदा जो उनके साथ सो गई थी।
अश्वत्थामा ने उन सभी को काटकर मार डाला था।

□□□ 8

□□□□□□

1

सिर पर सफेद कपड़ा ओढ़े बाल विधवाएं सबसे आगे चल रही थीं। उनके पीछे वे वृद्ध महिलाएं थीं जिनकी विधवा होने के कारण उनके बालों की मांग में लगा शुभ सिंदूर मिट गया था। उनके बाद चाची गांधारी आईं। विदुर के पीछे माता और बलंधरा थीं। उनके बाद सुभद्रा आईं, उनका हाथ उत्तरा के कंधे पर था। गंगा के तट पर सबसे अंत में द्रौपदी पहुंचीं।
हम भाइयों ने अपने सिर के आभूषण और ऊपरी वस्त्र उतार दिए और अपने आप को पूरी तरह से पानी में डुबो दिया। हमने अपने हाथों में पानी भरकर मृतकों को अर्पित किया।
बेटे को।
एक भाई को।
पति को।
रिश्तेदारों और दोस्तों को।
हम सब भीगे हुए वस्त्रों में पुजारी के सामने कतार में खड़े हो गए, हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे थे। माँ हमारी ओर आईं, उनकी आँखें सूखी थीं, आँसू नहीं थे। उत्तरा, जो भोर के समय अर्धचंद्र की तरह पीली पड़ गई थी, अकेली ऐसी थी जिसकी आँखों में आँसू नहीं बहे थे। मुझे बताया गया था कि वह गर्भवती है।
माता ने युधिष्ठिर से शांत स्वर में कहा, “अंतिम संस्कार करते समय एक नाम है जिसे तुम्हें नहीं भूलना चाहिए। कौरव पक्ष का एक महान योद्धा, जो शहीद हुआ। तुम सब भाइयों में सबसे बड़ा।”
अर्जुन स्तब्ध रह गया, उसे समझ नहीं आया कि वह क्या कहना चाहती है। युधिष्ठिर माता के पास गया और सिर झुकाया।
उसने उससे कहा, ‘तुम्हारा बड़ा भाई भी। कर्ण, जिसे तुम राधा के पुत्र राधेय के नाम से जानते थे।’
अर्जुन के कांपते होठों पर शब्द अटके हुए थे, मानो आवाज़ निकल ही न पा रही हो। लेकिन मैं उन्हें सुन सकता था: कर्ण, वही कर्ण जिसे मैंने मारा था? ‘कर्ण,’ माँ ने पहले जैसी शांत आवाज़ में कहा। ‘मेरा सबसे बड़ा बेटा, जो मेरे अविवाहित रहते हुए पैदा हुआ था और जिसे मैंने बदनामी के डर से नदी में छोड़ दिया था।’

मैंने अपना सिर नहीं उठाया।
मां ने अपने बच्चों से कहा, जो अभी भी सदमे में थे: 'कर्ण, जिसे राधा और अधिरथ ने पाला-पोसा था। उसके लिए भी एक मुट्ठी पानी।'
मां वापस महिलाओं के समूह में शामिल होने चली गई।
काफी देर की चुप्पी के बाद, युधिष्ठिर ने गहरी साँस ली, पूरी तरह से खुद पर काबू रखते हुए। 'कर्ण की पत्नी और बहुओं को आने दो और हमारी महिलाओं के साथ खड़े होने दो।'
सहदेव उन्हें ढूंढने गए।
कई वर्षों पहले अपनी बहन चार्मन्नवती से नवजात शिशु को ग्रहण करने वाली गंगा नदी ने अब अर्थपूर्ण मौन में जल का अर्पण ग्रहण किया। गंगा, जिसने सब कुछ देखा और जाना था।
हम फिर से हस्तिनापुरा लौट आए। अब हम महल के मालिक थे, लेकिन हममें से हर कोई सड़क किनारे विश्राम स्थलों पर बैठे यात्रियों की तरह कोनों में बैठा रहता था। विधवाओं के सिसकने की आवाज़ कई दिनों तक अंधेरे गलियारों में गूंजती रही।
जब कर्ण के रथ का पहिया मिट्टी में धंस गया, तो उसने धर्म के नियमों का पालन करते हुए अर्जुन से युद्ध रोकने का अनुरोध किया। अर्जुन ने उसकी बात अनसुनी करते हुए अपने धनुष से बाण चलाया। बाण चलाते समय कर्ण की आँखों में जो भाव थे, वे उसे लगातार परेशान करते रहे और उसकी नींद उड़ा दी।
मुझे भी नींद नहीं आई।
मेरे हाथों मारे गए लोगों की याद में नहीं, बल्कि इसलिए कि जिस व्यक्ति को कृष्ण और कृष्णद्वैपायन ने भागने दिया था, वह अभी भी जीवित था। मैंने जलते हुए तम्बुओं की रोशनी में उस चेहरे की कल्पना की। अश्वत्थामा, रुद्र की तलवार पकड़े हुए, उन लोगों के खून से सना हुआ जो अभी सो रहे थे और जो अभी- अभी जागे थे...
जिस रात दुर्योधन का पतन हुआ था, उस रात मेरे मन में एक खालीपन का भाव छा गया था, मानो सब कुछ समाप्त हो गया हो। अब मैं युद्ध की धूल के शांत होने का इंतज़ार कर रहा था, ताकि मैं अपने शत्रु को निशाना बना सकूँ। अश्वत्थामा का वह दृश्य, जिसमें उसका सिर लहूलुहान था और वह कृष्णद्वैपायन द्वारा दिए गए जीवन के अंशों के साथ जंगल की ओर भाग रहा था, मुझे रात भर सताता रहता था।

हम दोनों भाई कई दिनों तक एक-दूसरे से नहीं मिले। एक दिन युधिष्ठिर मुझे ढूंढते हुए आए।
‘कर्ण! मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा। मैंने उसके शव को देखा, यह जानते हुए कि मुझे तभी शांति मिलेगी जब मैं उसे अपनी आँखों से मरा हुआ देख लूँगा। इस सारी तबाही की वजह वह औरत है।’ वह माँ के अपराध पर विलाप करते हुए महल में इधर-उधर भटकने लगा।
माताजी कभी स्त्री-कक्ष से बाहर नहीं निकलीं। यहाँ तक कि जब हमने सोचा था कि हम युद्ध टाल सकते हैं और संधि कर सकते हैं, तब भी उन्होंने हमारे भीतर दबी प्रतिशोध की भावना को भड़का दिया था। अर्जुन और नकुल ने भी उन्हें शाप दिया। सहदेव ने कुछ नहीं कहा।
मैं उसे कोस नहीं सका। लेकिन मैं उसे माफ भी नहीं कर सका।
मैंने शूरसेना की पुत्री और वासुदेव की छोटी बहन के रूप में अपनी माता के जीवन के बारे में सोचा – वह संतान जिसे उनके पिता ने कुंतिभोज को सौंप दिया था, क्योंकि उनकी अपनी कोई संतान नहीं थी। ऋषियों को प्रसन्न करने के लिए, उनके पालक पिता ने उन्हें सेविका के रूप में उनके यहाँ काम करने के लिए भेज दिया था। हस्तिनापुर के महल में दुल्हन बनकर आने पर दुर्भाग्य उनका पीछा करता रहा। उनकी जगह लेने के लिए एक सौतन आ गई, जो दिन-प्रतिदिन और अधिक सुंदर होती जा रही थी। यह जानकर उन्हें गहरा सदमा लगा कि उनका पति नपुंसक है। बाद में, उन्हें महल छोड़कर जंगल में रहना पड़ा। अपने पति की खातिर, उन्होंने देवताओं के साथ शारीरिक संबंध बनाए और तीन संतानों को जन्म देने तक वे विधवा हो चुकी थीं।
हालांकि उसके बड़े बेटे थे, फिर भी उसे उन्हें छोड़कर विदुरा के छोटे से घर में रहना पड़ा और तेरह साल तक उसके परिवार की उदारता को स्वीकार करना पड़ा।
नहीं, मैं उसे श्राप नहीं दे सकता था।
मुझे कर्ण की याद आई। जिस दिन हमने अपनी कला का प्रदर्शन किया था, उस दिन मैंने ही उन सभी दर्शकों के सामने उसे सबसे बुरी तरह शर्मिंदा किया था। उसे तो मुझे जान से मारने की कसम खानी चाहिए थी, इसके लिए भाला बनवाना चाहिए था।
दुर्योधन के वीरान महल में पहुँचकर मैं रुक गया। जिस धातु की प्रतिमा के बारे में मैंने सुना था, जिसे उसने मेरे स्वरूप में कुश्ती के लिए बनवाया

था, वह मूर्खतापूर्ण ढंग से मेरी ओर मुस्कुरा रही थी। उसका पेट विशाल था और भुजाएँ बहुत बड़ी थीं। उसके गोल सिर के नीचे, खुला मुँह मुस्कुरा रहा था।
जिस दिन दुर्योधन की मृत्यु हुई थी, धृतराष्ट्र पागलों की तरह उस पर टूट पड़ा था, उससे लड़ने के लिए।
एक नौकर मुझे ढूंढते हुए आया और उसने बताया कि मेरा बड़ा भाई मुझसे मिलना चाहता है।
धृतराष्ट्र अभी भी विशाल सभागार में बैठे थे। जब मैं वहाँ से गुज़रा, तो उन्होंने मेरे कदमों की आहट सुनी और पूछा, 'कौन है?'
मैं, भीमसेना।
उन्होंने इसके बाद और कुछ नहीं कहा।
अगर हस्तिनापुरा को विधवाओं का देश बनाने के लिए किसी को दोषी ठहराया जा सकता था, तो वह यही अंधा आदमी था। मेरा मन करता था कि मैं चीख कर कहूँ कि यही दृष्टिहीन आदमी, जिसे मौत ने भी नहीं छुआ, हम पर आई तमाम विपत्तियों का कारण था। यही बूढ़ा आदमी, जो अपने बेटे के जुए में बेईमानी करके जीतने पर अपनी खुशी नहीं छिपा पाया था।
युधिष्ठिर पुराने जुआघर में थे। अर्जुन, नकुल और सहदेव भी वहीं थे। मैंने उन्हें प्रणाम किया।
उन्होंने कहा, “मैं कई दिनों से सोच-विचार कर रहा था और अंततः एक निर्णय पर पहुँचा हूँ।” वे रुके और फिर से चिंतन में डूब गए। फिर बोले, “यह राज्य जो मुझे मिला है, एक विधवा कन्या के दहेज के समान है। हमारे कोई बच्चे नहीं हैं, कोई रिश्तेदार नहीं हैं। मैं जहाँ भी देखता हूँ, मुझे आँखों से आँसू बहाती विधवाएँ ही दिखाई देती हैं। मैं इस देश पर शासन नहीं कर सकता, बिलकुल नहीं।”
हम सब चुप रहे।
‘इस जगह पर खून की दुर्गंध चिपकी हुई है, मानो जाने का नाम ही नहीं ले रही। रात को मुझे कंकालों के सपने आते हैं और नींद नहीं आती। मैंने जंगल जाकर तपस्वी जीवन जीने का फैसला कर लिया है। मुझे हस्तिनापुरा नहीं चाहिए।’ उसने सफेद संगमरमर के फर्श को देखा, फिर अपना सिर उठाया और सहदेव की ओर देखा, मानो उससे राय पूछ रहा हो।

सहदेव ने कहा, ‘बड़े भाई, आपको ही राज्य का शासन संभालना चाहिए। हम सब आपको राजा बनते देखने का इंतजार कर रहे थे। हमने इसके लिए युद्ध की भीषण पीड़ा सही।’
नाकुला ने कुछ नहीं कहा। उनके चेहरे के भाव से स्पष्ट था कि उन्हें यह निर्णय सही नहीं लगा।
अर्जुन ने माहौल को हल्का करने की कोशिश की। “अक्सर ऐसा होता है कि युद्ध के अंत में एक क्षत्रिय संसार से विरक्त हो जाता है। लेकिन प्रजा के प्रति हमारा उत्तरदायित्व तो है, है ना? बड़े भाई, आपने इतनी कठिनाइयों को सहा है और उन्हें हमारी बुरी नियति मानकर स्वीकार किया है।”
युधिष्ठिर के चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला।
अर्जुन ने आगे कहा, 'कृष्ण को द्वारका से वापस आने दो। कोई निर्णय लेने से पहले तुम उनसे इस मामले पर चर्चा कर सकते हो।'
‘मैंने पहले ही फैसला कर लिया है। मैं कभी भी ऐसी बातें नहीं कहता जिनका कोई मतलब न हो।’ उन्होंने मेरी तरफ देखा। ‘भीमसेन को राज्य का शासन संभालने दो।’
मैंने अपनी सांस रोक ली।
‘कौरवों का वध भीम के हाथों हुआ। क्षत्रिय विधि के अनुसार, सिंहासन उसी का होता है जो युद्ध जीतता है। भीमसेन हर तरह से शासन करने के योग्य हैं।’ मुझे लगा कि मुझे बोलना ही होगा। ‘युद्ध में जीत राजा की होती है। जब हम जंगल में थे तब भी आप ही राजा थे। यह महान युद्ध इसलिए लड़ा गया था ताकि आप अपने राज्य पर अपना अधिकार पुनः प्राप्त कर सकें, बड़े भाई, न कि पांचाली के खुले बालों का बदला लेने के लिए, जैसा कि मैंने मगध के गायकों को बड़ी चतुराई से गाते हुए सुना था।’
उन्होंने जवाब दिया कि अगर मैं अपनी सहमति दे दूं, तो वे विदुर से राज्याभिषेक की तैयारियां शुरू करने को कहेंगे। वे उठे और चले गए।
हम हॉल में ही रुके रहे।
अर्जुन ने कहा, “धृतराष्ट्र द्वारा त्यागे गए सिंहासन पर महान राजा पांडु विराजमान हुए। हमारे बड़े भाई ने जो कहा वह परंपरा के अनुरूप है। आपको राजा बनना चाहिए।”
सहदेव ने आनंदपूर्वक कहा, 'कहिए! कहिए कि आप तैयार हैं।'
नकुला ने भी यही बात कही।

‘अब और क्या सोचने को बचा है?’ अर्जुन ने पूछा।
मैंने कहा, 'मुझे थोड़ा समय दीजिए। मेरे मन को शांत होने दीजिए।'
यह मानकर कि मैं अकेला रहना चाहता हूँ, वे चले गए। मैं बाहर निकला और गलियारे से होते हुए आँगन में पहुँचा। बगीचे के पौधे मुरझाकर सूख गए थे। मैं उन इमारतों के पास से गुजरा जहाँ हम बचपन में सोते थे और हाथियों के बाड़े तक पहुँचा। मैं रुक गया।
वृकोदरा, भेड़िये के समान भूखे पेट वाला बालक, हस्तिनापुर का राजा? मुझे हंसी आ रही थी। जो लोग इस बात पर मज़ाक उड़ाते, उनमें से कोई भी अब जीवित नहीं था। मैं उसी रास्ते से वापस चल पड़ा। मुरझाए पौधों को देखकर मैंने राज्याभिषेक के बारे में सोचा। मेरे बहुत कम मित्र बचे थे जो आने वाले थे। मुझे जल्दी से तय करना होगा कि विशेष दूतों को कहाँ भेजा जाए। सत्यकी, सेनेशा...
महिलाओं के कमरे के द्वार पर अंधेरे में मुझे एक स्त्री की धुंधली आकृति दिखाई दी और मैं चौंककर पीछे हट गई। वह सांवली-लाल रंग की सुंदर स्त्री...? जब वह बाहर आई तो मुझे राहत मिली। मैं मुस्कुराई। वह द्रौपदी थी।
वह मेरे पास आई और, अपने स्वभाव के विपरीत, मुझे प्रणाम किया। वह ऐसे रीति- रिवाज केवल युधिष्ठिर की उपस्थिति में ही निभाती थी।
उसके चेहरे पर नीले कमल की वह खामोशी झलक रही थी, जैसे कोई कमल सूर्यास्त को देखता है।
मैंने कहा, 'राज्याभिषेक की तारीख जल्द ही तय की जाएगी।'
'क्या आपने निर्णय लिया है?'
मैंने अपनी खुशी छुपाते हुए लापरवाही से कहा, 'मेरे बड़े भाई ने फैसला लिया है। मैंने अभी तक अपनी सहमति नहीं दी है।'
मैं इसलिए आया क्योंकि मुझे यह पता था।
मुझे उम्मीद थी कि वह दबी हुई मुस्कान देगी और बधाई के शब्द कहेगी, लेकिन मैंने उसकी आँसुओं से भरी आँखें देखीं।
जब मैं जंगल में रहती थी, जब मैं नौकरानी का काम करती थी, तब मुझे उम्मीद थी कि मैं एक दिन यहाँ वापस आऊँगी। क्या द्रौपदी की यह उम्मीद भी टूट जाएगी? मैं स्तब्ध रह गया।
'मैं अभी जंगल में जाकर रिटायर होने के लिए इतना बूढ़ा नहीं हुआ हूँ। न ही मैंने ऐसा करने के लिए मानसिक स्थिति प्राप्त की है।'

मैंने सोचा… जब युधिष्ठिर संन्यासी बनने के लिए वन में जाते हैं, द्रौपदी… लेकिन मैं तब भी यहीं होती, है ना?
‘मैं विद्वान तो नहीं हूँ, लेकिन मुझे नियम पता हैं। या तो मुझे उसका अनुसरण करना होगा, या फिर मुझे यहाँ महिलाओं के क्वार्टर के किसी कोने में बलंधरा की उदारता पर जीना होगा।’
बलंधरा का नाम अचानक सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गया।
‘Balandhara?’
'जी हां, बलंधरा। जब आपका राज्याभिषेक होगा, तो रानी कौन बनेगी? बलंधरा ही बनेगी!'
अपनी आँसुओं से भरी आँखों को पोंछते हुए, उसने अपने पैरों के नीचे की धरती से कहा, 'शायद पांचाली एक शाश्वत सेविका बनने के लिए ही पैदा हुई थी!'
वह वापस चली गई।
शाम ढलते ही परछाइयों में रोशनी की हल्की किरणें दिखने लगीं। मैं आंगन में अकेला खड़ा रहा। कहीं से शाम की प्रार्थना की आवाज सुनाई दी। मैं अपने आलीशान घर की ओर चल पड़ा।
वहाँ दो लोग मेरा इंतज़ार कर रहे थे। पहले तो मैंने सिर ढके हुए स्त्री पर ध्यान नहीं दिया। विदुर आगे थे। उनके पीछे खड़ी स्त्री माँ थीं।
मां ने कहा, 'मैंने भी जंगल में जाकर संन्यास लेने और तपस्वी बनने के फैसले के बारे में सुना है। तुम्हारे चाचा ने उन्हें कुछ अच्छी सलाह दी थी, लेकिन लगता है कि वे अपना मन बदलने को तैयार नहीं हैं।'
वे मुझसे क्या करने को कह रहे थे? विदुरा ने बात स्पष्ट करने में मदद की। राज्य के सभी लोग उस शुभ दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब धर्म के अनुयायी युधिष्ठिर राजा बनेंगे। आखिरकार, वे जानते हैं कि उनका जन्म हस्तिनापुर पर शासन करने के लिए हुआ था।
अंततः मुझे अपनी ही आवाज़ सुनाई दी। 'मुझे क्या करना चाहिए? मुझे आदेश दीजिए, माँ।'
उसने कहा, ‘तुम्हारा बड़ा भाई राजा बनना चाहिए। तुम इसके योग्य नहीं हो, तुम्हें धर्म के नियमों या राजनीतिक रणनीति का कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए, तुम्हें दृढ़ता से कहना होगा कि तुम राजा बनने के लिए तैयार नहीं हो। तुम्हारे चाचा की भी यही राय है।’

मैंने अपने भीतर के दबे हुए गुस्से को शांत करने के लिए कुछ देर तक चुप्पी साधे रखी। फिर मैं हंस पड़ी। पहले द्रौपदी, और अब एक और स्त्री - मेरी माँ! ‘मैं, एक राजा? हस्तिनापुर का राजा वृकोदरा? कितनी मूर्खता है!’ मैं और ज़ोर से हँस पड़ा। ‘मेरे बड़े भाई ने मज़ाक किया था… वो हमेशा मेरे बारे में मज़ाक करते रहते हैं। मूर्ख, एक राजा!’
मेरी हंसी विदुरा के चेहरे तक पहुंच गई। उसने राहत की सांस ली।
उनके जाने के बाद, मैं विचारों के बोझ तले दबकर अपने बिस्तर पर बैठ गया।
मैं हंसना भूल गया।
मैंने हस्तिनापुरा पर एक पल के लिए शासन किया था, बस एक पल के लिए। मैं एक ऐसा राजा था जिसने सिंहासन त्याग दिया था। मैं अंधेरे में फिर हँस पड़ा।
आखिर एक शक्तिशाली व्यक्ति को रोना नहीं चाहिए।

2

युधिष्ठिर का राज्याभिषेक सादगीपूर्वक, बिना किसी धूमधाम के संपन्न हुआ। ब्राह्मणों को नाममात्र की भेंटें दी गईं। हस्तिनापुर के अन्न भंडार युद्ध के कारण खाली हो चुके थे। शहर में निकाली गई राजयात्रा के दौरान हम सभी को छोटी-छोटी जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं, जिसमें विदुर, ब्राह्मण पुरोहित और परिवार के सदस्य शामिल हुए। प्रथा के अनुसार भेंटें वितरित की गईं: सेनापति को सोना; राजा के मुख्य पुरोहित को सफेद पीठ वाला बैल; रानी को दूध देने वाली गाय; महल के प्रमुख सूत कथाकार को घोड़ा; मंत्रियों और महल एवं उसके मैदान के रखवाले को बैल; राजा के सारथी को दो बैल; शतरंज के स्वामी को हाथीदांत से तराशा हुआ शतरंज का बोर्ड और मोहरे; शिकार के प्रमुख को घुमावदार छुरी; और मुख्य दूत को धनुष-बाण और लाल पगड़ी दी गई। (यदि राजा ने अपनी पत्नी को त्याग दिया होता, तो उसे एक सूखी काली गाय दी जाती थी।) अनुष्ठान के अंत में, राजा स्वयं को एक सफेद बैल भेंट करता था। उस अनुष्ठान को देखते हुए मैंने मन ही मन सोचा कि एक क्षत्रिय को सीखने के लिए मिलने वाले पाठों का कोई अंत नहीं है।
हॉल में युधिष्ठिर ने हम चारों को पुरोहितों द्वारा पवित्र की गई तलवारें भेंट कीं। परिवार के वरिष्ठ सदस्यों ने सबसे पहले उनका अभिषेक किया, जिनमें धृतराष्ट्र और गांधारी, फिर माता और विदुर शामिल थे। इसके बाद ब्राह्मण ऋषियों ने, फिर हम भाइयों ने, उसके बाद रिश्तेदारों, सेनापतियों और मित्रों ने अभिषेक किया।
मैंने राजा के बगल में स्थित ऊंचे आसन पर कब्जा कर लिया, जो युवराज, यानी दूसरे उत्तराधिकारी के लिए आरक्षित था। केवल युधिष्ठिर और एक पुरोहित को ही मेरा अभिषेक करना था।
द्रौपदी दूसरी ओर, राजा की पत्नी के लिए बने आसन पर बैठी थीं। मैंने उनके द्वारा लगाए गए चंदन की सुगंध और रेशमी वस्त्रों की चमक पर ध्यान दिया। वे संतुष्ट प्रतीत हो रही थीं। अपने मृत पुत्रों की स्मृति उन्हें परेशान नहीं कर रही थी।
राज्याभिषेक देखने आए मेहमानों में से केवल कृष्ण और सत्यकी को ही महत्वपूर्ण कहा जा सकता था। हमने सोचा था कि सेनेशा आएंगे, लेकिन वे नहीं आए। उन्होंने अपने मंत्री को उपहारों के साथ भेजा।

‘बेटा, युद्ध में मारना तो आम बात है। लेकिन क्या कोई खून पीता है?’ उसने मुझसे पूछा था। ‘मुझे अपनी सुनी हुई बात पर विश्वास नहीं हो रहा था।’
आंटी गांधारी उनके बगल में बैठी थीं।
मैंने आदरपूर्वक उत्तर दिया था, 'जब दुस्साना का रक्त मेरे होठों पर लगा, चाचा जी, तो मुझे उसका स्वाद अच्छा नहीं लगा, इसलिए मैंने उसे नहीं पिया!' बस यही हुआ था। मैंने सच कहा था, मैंने सिर्फ अपने होंठ गीले किए थे।
जब तक वह महल में रहेगा, हमें युद्ध की भयावहता याद आती रहेगी। इसलिए, मैंने उस बुजुर्ग दंपति की अंतिम इच्छा पूरी करने का फैसला किया।
इस प्रकार उपहार वितरित किए गए और अनुष्ठान संपन्न हुए। जब वृद्ध दंपति जंगल की यात्रा शुरू करने ही वाले थे, तभी हमें पता चला कि विदुर ने उनके साथ जाने का निर्णय लिया है। उन्होंने गृहस्थ जीवन बहुत पहले ही त्याग दिया था। राज्याभिषेक की देखरेख करने के बाद महल में उनके पास करने के लिए कुछ नहीं बचा था।
हमने तय किया कि धृतराष्ट्र के साथ अनुयायियों का एक भव्य समूह होगा। उनके लिए काम करने वाले कई सेवक और कई वृद्ध ब्राह्मण बूढ़े राजा के प्रस्थान को देखने के लिए महल के द्वार पर एकत्र हुए।
जब रथ आंगन में आकर रुके, तो युधिष्ठिर बहुत परेशान होकर दौड़े और बोले, 'माता उनके साथ जंगल जा रही हैं! इसका क्या मतलब है?'
सहदेव दौड़कर माता के पास गए, फिर वापस आ गए। उन्होंने कहा, ‘मैंने अपनी सारी बातें कह दीं। माता तो बिल्कुल दृढ़ निश्चयी लग रही हैं। सोचिए, महारानी होने के नाते उन्हें यहीं रहना चाहिए, लेकिन वे जंगल जाना चाहती हैं। वे कहती हैं कि चाचा और चाची अब उनके माता-पिता हैं। उन्होंने जंगल में रहकर उनकी देखभाल करने का मन बना लिया है।’
‘मां को समय-समय पर हमें आश्चर्यचकित करने में सबसे ज्यादा आनंद आता है,’ अर्जुन ने क्रूर मुस्कान के साथ कहा। वह उनसे विनती करने या उन्हें जाने से रोकने के लिए तैयार नहीं था।
नकुला ने मां से विनती करने की कोशिश की, लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली। मैं अंत में उसके पास गई। मैंने विलाप करते हुए कहा, ‘तुम यह सब ऐसे समय में सोच रही हो जब तुम्हें महल में रहकर उसके सुख-सुविधाओं का आनंद लेना चाहिए था। जब हम निर्णय लेने में असमर्थ थे, तब क्या यह तुम ही नहीं थीं, माँ, जिन्होंने हमें युद्ध छेड़ने के लिए प्रेरित किया था? यदि तुम जंगल में

रहना चाहतीं, तो तुम हमारे साथ वहाँ इतने साल बिता सकती थीं। हमने क्यों युद्ध किया और इतना खून बहाया? हमने इतनी महिलाओं को विधवा क्यों बनाया?’ मैं आप सभी के लिए तेजस्वी और गौरवमयी कामना करता था। यदि आप अपने धर्म का पालन करते हुए प्राण त्यागेंगे, तो आपको यश प्राप्त होगा। आपका धर्म अब देश का शासन करना है, मेरा धर्म इन वृद्धों की देखभाल करना है। किसी को भी शोक करने की आवश्यकता नहीं है।
उससे बहस करने का कोई फायदा नहीं था।
विदुर ने धृतराष्ट्र का हाथ पकड़कर उन्हें रथ में बिठाया और फिर वे भी रथ में चढ़ गए। माताजी और बुआ गांधारी दूसरे रथ में सवार हो गईं। हम रथों के आगे-पीछे चलते रहे, उनके साथ कदम मिलाकर चलते रहे।
रथ जंगल के बीचोंबीच रुक गए। सभी लोग नीचे उतर गए।
माँ हमारे पास आईं। ‘अपने धर्म का पालन करो। तुम्हारी तरक्की हो!’ इतना ही कहकर वे चली गईं और हमारे चाचा और चाची के पास पहुँच गईं।
मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि माँ जंगल के लिए जा रही हैं, यह मेरी कल्पना का कोई पागलपन भरा खेल लग रहा था।
जब हम महल में वापस लौटे तो हम युद्ध समाप्त होने वाली रात की तुलना में और भी अधिक चुप थे। हम सब में युधिष्ठिर सबसे अधिक परेशान थे।
कई दिनों बाद, जंगल से एक तपस्वी आए। हमने उनसे बड़ी उत्सुकता से अपने लोगों का हालचाल पूछा। वे सब कुशल मंगल थे, शांति से रह रहे थे, ऋषियों के अतिथि बनकर उनकी बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह सुन रहे थे। विदुर भोजन त्यागने, तपस्या करने और योगिक नींद में लीन होने जा रहे थे – यह वह अंत है जिसे सभी तपस्वी सहर्ष स्वीकार करते हैं।
युधिष्ठिर ने पूछा, 'क्या हम वहां जाकर पता लगाएं कि माता और बाकी सब कैसे हैं?'
सहदेव को लगा कि हम माँ से एक बार फिर वापस आने की विनती कर सकते हैं। युधिष्ठिर ने दुखी होकर कहा, 'मैंने उसमें दोष ढूंढा, उसके बारे में बहुत सी क्रूर बातें कहीं। मैं उससे फिर से क्षमा मांगना चाहता हूं।'
मुझे पूरा यकीन था कि माँ वापस नहीं आएंगी। फिर भी, मैं अपने बड़े भाई के पीछे-पीछे चला गया।

हमारे मार्गदर्शक ने बताया कि वे सभी शतयुपा के आश्रम में थे। हम दोपहर बाद वहाँ पहुँचे। दादा कृष्णद्वैपायन ऋषियों के साथ थे। वे वेदों के एक ग्रंथ की व्याख्या कर रहे थे।
धृतराष्ट्र ने हमारी ओर से उनके कुशल-मंगल पूछने पर आभार और प्रसन्नता व्यक्त की। माता गांधारी के बगल में बैठी थीं। उन्होंने हमारी ओर मुस्कुराया, लेकिन कुछ नहीं कहा।
युधिष्ठिर ने पूछा, ‘चाचा विदुर कहाँ हैं?’
ऋषियों ने हमें बताया कि वह अजीबोगरीब वस्त्र पहने, राख से लिपटे शरीर के साथ जंगल में भटक रहा था। युधिष्ठिर ने जंगल जाकर उसे प्रणाम करने का निश्चय किया। मैं उसके आगे-आगे चल रहा था, उसके लिए रास्ता साफ कर रहा था। रास्ते में मिले एक युवा ऋषि ने हमें बताया, 'मैंने उसे दो दिन पहले उस अश्वत् वृक्ष के नीचे देखा था।' उसने दूर स्थित एक वृक्ष की चोटी की ओर इशारा किया।
विदुर वृक्ष के नीचे लेटे हुए थे। राख से सना उनका शरीर कंकाल जैसा हो गया था। वे गतिहीन थे, लेकिन पत्तों पर हमारे कदमों की आहट सुनकर उन्होंने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं। उन्होंने युधिष्ठिर को एक क्षीण मुस्कान दी। हमें स्पष्ट हो गया था कि वे मृत्यु के बहुत करीब थे।
उसने कुछ कहने की कोशिश की लेकिन शब्द स्पष्ट नहीं थे।
युधिष्ठिर ने कहा, 'मुझे लगता है उसका समय आ गया है। मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ।'
मैं जल्दी से तालाब ढूंढने चला गया। मैं पत्ते के प्याले में थोड़ा पानी लेकर जितनी जल्दी हो सके वापस आया और देखा कि युधिष्ठिर विदुर के पास खड़े हैं। उन्होंने मुझसे पानी नहीं लिया, उसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। विदुर ने सांस लेना बंद कर दिया था।
युधिष्ठिर चुपचाप चले गए और मैं उनके पीछे-पीछे गया। जब हम आश्रम के पास पहुँचे, तो वे रुक गए और आह भरी।
‘वह अब विष्णु के चरणों में होगा। क्या तुम कुछ जानते हो, भीमसेन?’
मैंने युधिष्ठिर के दुबले-पतले चेहरे पर संघर्ष देखा। उन्होंने कहा, 'वही मेरे असली पिता थे!'
मैं माता के एक और रहस्य को जानकर चकित रह गया। युधिष्ठिर ने मेरी उलझन देखकर कहा, 'इसके लिए माता को दोष मत दो। क्षत्रियों में भाई की पत्नी से

संतान उत्पन्न करना हमेशा से ही प्रथा रही है। विदुर भगवान धर्म का अंश थे।'
मैंने चुपचाप उसकी बातें सुनीं।
हम आश्रम में दाखिल हुए और युधिष्ठिर ने कृष्णद्वैपायन से कहा, 'महान विदुर योगिक नींद में लीन हो गए हैं।'
उस समय भी धृतराष्ट्र ने रीति-रिवाज के अनुसार विलाप करना नहीं भूला। मैंने भय और चिंता से माँ की ओर देखा, लेकिन उनके चेहरे के भावों में कोई बदलाव नहीं देखा।
जब युधिष्ठिर ने अंततः अंत्येष्टि के बारे में पूछने का साहस जुटाया, तो हमारे दादाजी ने कहा, 'इनकी आवश्यकता नहीं है। विदुर विष्णु के चरणों में हैं। महान योगियों को अंत्येष्टि की आवश्यकता नहीं होती। यद्यपि वे मेरे पुत्र के रूप में जन्मे थे, वे धर्म का अंश थे। परलोक जाने से पहले उन्होंने तुम्हें अपनी संपूर्ण चेतना अर्पित कर दी।'
धृतराष्ट्र को विलाप करते देख कृष्णद्वैपायन ने कहा, ‘विदुर स्वयं धर्म थे। और यह पांडव, युधिष्ठिर, वही विदुर हैं। जब युधिष्ठिर आपके सामने सेवक के रूप में खड़े हैं, तो आप क्यों शोक मना रहे हैं?’
मैं युधिष्ठिर के साथ तब तक रहा जब तक वे रथ पर सवार नहीं हो गए। फिर मैं वापस जंगल में चला गया। कृष्णद्वैपायन और ऋषियों को अपनी ओर आते देख, मैं उनसे बचने के लिए दूसरे रास्ते पर मुड़ गया।
कृष्णद्वैपायन ने ही अर्जुन को अश्वत्थामा को न मारने और उसे मुक्त छोड़ने के लिए राजी किया था। मुझे अपने वंश के अंतिम वंशज के हत्यारे के प्रति उनकी दया की भीख कोई महान कार्य नहीं लगी। जब भी मैं उनसे मिलता, मुझे वह घटना याद आ जाती थी।
कुरु जाति द्वारा अपनाई जाने वाली न्याय संहिता मेरी समझ से परे थी।
मैं आश्रम से दूर जंगल में घूमता रहा। विदुर ही धर्म थे, पांडव ही विदुर थे
- दादाजी ने ऐसा कहा था।
तो फिर मैं कौन था?
मेरे पैरों के नीचे कुशा घास सरसरा उठी। पत्तों से रहित, नंगी शाखाएँ हवा में काँप रही थीं। क्या हवा मुझसे कुछ कहना चाहती थी?
मैं कौन था?

मैं लगभग सूख चुके एक तालाब के पास बैठ गया। फिर लेट गया और पत्तों से रहित शाखाओं के बीच से ऊपर आसमान की ओर देखने लगा, जिसमें पतझड़ के बादल तैर रहे थे। पानी पीने आया एक हिरण यह सोचकर मेरे बहुत करीब आ गया कि आसपास कोई नहीं है, फिर अपने खुरों की आवाज़ करते हुए जंगल में भाग गया और गायब हो गया। एक बार फिर, चारों ओर सन्नाटा छा गया।
मुझे सूखी पत्तियों पर कदमों की आहट सुनाई दी। माँ थीं, उनके हाथ में चमाता की टहनियों का एक गट्ठा था।
उसने मेरा परेशान चेहरा देखा और कहा, 'वापस जाओ।'
मैं उसके सामने खड़ा था। पता नहीं क्यों, मेरी आवाज कर्कश हो गई।
‘मैं कौन हूँ? कृपया मुझे बताएँ, कम से कम अभी तो बताएँ। ताकि मैं फिर कभी कोई गलती न करूँ। अपने ही बड़े भाई का उपहास करने और उसे सारथी का पुत्र कहने का दुख अब भी मेरे मन पर भारी है।’
माँ ने मेरी ओर ध्यान से देखा। फिर उन्होंने धीरे से कहा, 'कर्ण एक सारथी का पुत्र था। कुंतिभोज का सारथी एक सुंदर पुरुष था। और बहुत साहसी भी। जब मैं ऋषियों की सेविका के रूप में काम करती थी, तो वह सारथी ही एकमात्र व्यक्ति था जिसने मुझ पर दया दिखाई।'
मां का चेहरा उदास हो गया। मैंने देखा कि उनके माथे पर पसीने की बूँदें थीं।
मैंने उससे दोबारा पूछा, 'मैं कौन हूँ?'
मैंने उसके चेहरे पर कमजोरी और बेबसी देखी। मैंने उसके अंदर इतनी हिम्मत आने का इंतजार किया कि वह सीधे मेरी तरफ देख सके।
‘मैंने विदुर को इसलिए स्वीकार किया ताकि मुझे एक ऐसा पुत्र मिले जो आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। क्षत्रियों के लिए पत्नियाँ केवल गर्भ धारण करने का साधन होती हैं। इसलिए, विदुर, मुझे आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण पुत्र प्राप्त हुआ।’
मुझे लगा कि माँ मुस्कुराने लगी हैं। लेकिन उन्होंने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया था। उन्हें यह बात पता थी।
‘तब मेरे पति, राजा को एक बलवान पुरुष की आवश्यकता थी। पवन देवता के समान बलवान। एक शक्तिशाली पुरुष। मैंने आज्ञाकारी भाव से प्रार्थना की।’ ‘और फिर…?’
मां ने सिर झुकाए सूखी घास की पत्तियों को देखा।

‘और वह कौन था?’
माँ ने अपना सिर उठाया और मेरी ओर ऐसे देखा मानो मेरी आवाज़ से वह चौंक गई हों। मैंने उनके चेहरे पर क्रोध की लाल लपटें फैलती देखीं।
उसने धीरे से कहा, 'वह घने जंगल से निकला। एक बेकाबू आंधी की तरह। एक वनवासी जिसका नाम मैं नहीं जानती थी।'
मुझे बिलकुल भी पता नहीं है कि माँ कब वापस गईं, या कब अंधेरा छा गया और मैं जंगल के सन्नाटे में भटकने लगी।
देवता द्वारा जंजीरों से मुक्त की गई एक प्रचंड हवा मेरे पास से गुजरी, जिससे अंधेरे पेड़ों की चोटियाँ ज़ोर से काँप उठीं। मैं उत्सुकता से किसी संदेश की प्रतीक्षा कर रहा था। तभी हवा खिलखिलाकर हंस पड़ी।
मैं जंगल की सीमा पर मौजूद रोशनी पर नजर रखते हुए आगे बढ़ता रहा।

मेरे दोस्तों, अब महान यात्रा का समय आ गया है। आप जानते हैं कि सभी बुजुर्ग जंगल की आग में मारे गए।
युयुत्सु को एक महल की देखरेख का जिम्मा सौंपा गया है, जहाँ केवल सुभद्रा और परिक्षित ही रहते हैं, जो उत्तरा और अभिमन्यु के पुत्र हैं। खांडव वन, जो जल गया था, फिर से उग आया है और इंद्रप्रस्थ को घेरने लगा है। उलूफी और चित्रांगदा अपने पिता के घर लौट गई हैं। अंत में, मैंने बलंधरा को विदाई दी, और अब जो आप सुन रहे हैं वह उनके रथ के काशी के लिए रवाना होने की आवाज़ है।
मैंने विशोका को भी विदाई दी। मेरे मित्रों, आपके पोते-पोतियाँ और फिर उनके पोते-पोतियाँ अग्नि के चारों ओर बैठकर परिक्षित के बाद आने वाली पीढ़ियों को कुरुक्षेत्र की कथाएँ सुनाएँगे। मुझे नहीं पता कि उनकी मनमोहक कहानियों में मैं कौन होऊँगा। शायद वे हँसेंगे जब उनके सामने दुर्योधन के महल में रखी मूर्ति की तरह एक विशाल तोंद और चौड़े मुँह वाले व्यक्ति की छवि उभरेगी। या शायद वे काँप उठेंगे जब वे मदमस्त अवस्था में खड़े एक ऐसे व्यक्ति का भयानक रूप देखेंगे जिसमें दस हज़ार हाथियों के बराबर शक्ति है, जिसका सिर आकाश में और पैर धरती पर हैं... जो भी हो, उन्हें गाते रहने दीजिए।

महान यात्रा की तैयारी कर रहे वे चारों सो गए हैं। द्रौपदी भी सो गई है।
भीमसेन की कहानी यहीं खत्म नहीं होती। जैसा कि आप कहते हैं, सूतों, कहानियां कभी खत्म नहीं होतीं।
आप सभी दोस्तों को और मुझे इस यात्रा के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं!

3

भीम मुस्कुराया। फिर उसने द्रौपदी के माथे को धीरे से सहलाया।
द्रौपदी ने एक बार फिर अपनी आँखें खोलीं और बंद कर लीं। उसका शरीर गतिहीन हो गया। उसने पसीने से तरबतर उसका सिर ज़मीन पर रख दिया। अब कमल के फूलों की कोई सुगंध नहीं थी, केवल मानव पसीने की गंध थी।
भीमा उठ खड़ी हुई।
जो लोग उससे आगे निकल चुके थे, वे बहुत आगे निकल चुके थे। मेरु पर्वत पर कहीं न कहीं एक दिव्य रथ खड़ा होगा, जो रास्ते में न गिरने वालों का स्वागत करने के लिए तैयार होगा।
भीमा पर्वत श्रृंखलाओं को देखते हुए झिझक गया। उसने नीचे ढलानों पर जंगल के हरे-भरे पेड़ों की चोटियाँ देखीं।
जो लोग पतन की ओर जाते हैं, उनकी आत्माएं भी वीरों के स्वर्ग में पहुँचती हैं। एक ऐसा स्वर्ग जहाँ न भूख है, न पसीना, जहाँ फूल कभी मुरझाते नहीं। एक ऐसी दुनिया जो उन लोगों के लिए है जो अब वासना या क्रोध महसूस नहीं करते। दूसरा सिंहासन अब खाली पड़ा है।
क्या मैं उस पर बैठने की इच्छा रखता हूँ?
नहीं, क्योंकि मैंने अपनी इंद्रियों को वश में नहीं किया है।
जैसे ही मैं एक सुनसान इलाके से दूसरे सुनसान इलाके की ओर बढ़ता हूँ, मेरी आँखें लगातार उस दुश्मन को खोजती रहती हैं जो अज्ञात जंगलों में भटक रहा है। अश्वत्थामा।
नहीं, मैंने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त नहीं की है।
जो भीम यह सोचता है कि रास्ते में गिरी द्रौपदी अधेड़ उम्र की होने के बावजूद भी सुंदर है, उसने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त नहीं की है।
जब मैंने एक स्त्री के साथ संबंध बनाते हुए स्वार्थ के क्रोध को अपने भीतर सुलगने दिया, तब मेरे भीतर कोई क्षत्रिय नहीं था। मेरे भीतर का वह पुरुष, जो जंगल को कंपा देने वाली दहाड़ मार रहा था, वास्तव में एक वनवासी था।
जब मैंने दूर स्थित जंगलों की हरियाली को निहारा, तो मुझे ऐसा लगा मानो जो ताकत मैंने खो दी थी, वह मुझमें वापस आ रही हो।
वह जंगल जो वनवासियों का खेल का मैदान था, जिसमें खजूर के बाग थे जहाँ हाथी चरते थे, उसकी चट्टानी चोटियाँ थीं जो जंगली बकरियों द्वारा अपने सींगों

को उन पर तेज करने पर चिंगारियाँ बिखेरती थीं, और उसके शिकारियों की चीखें थीं।
इसके भीतर कहीं, एक सांवली रंगत वाली खूबसूरत युवती भटक रही थी, उसकी वासना की ज्वाला अभी बुझी नहीं थी...
वहीं कहीं, एक दुश्मन अपने सिर पर लगे घाव के साथ इधर-उधर भटक रहा था।
जब तक वे दोनों व्यक्ति जीवित रहेंगे, वह दूसरे सिंहासन के योग्य नहीं होगा।
खड़ी ढलान वाले रास्ते पर अपने पैरों को मजबूती से जमाते हुए, भीमसेन उस जंगल की ओर चल पड़े जो उनके नीचे गिरे हुए काले बादल की तरह प्रतीत हो रहा था।
उसी क्षण सफेद पंखों वाले पक्षी बादलों से एकदम सटीक संरचना में नीचे उतरे और घाटी में इस तरह उड़ गए मानो उसे रास्ता दिखा रहे हों।

उपसंहार

वे लोकगीत गाते हुए घूमते थे। उन सभी स्थानों पर जहाँ लोग एकत्रित होते थे, विशेषकर तीर्थ स्थलों और यज्ञ स्थलों पर। वे पुराने इतिहासों के साथ-साथ हाल की घटनाओं को भी लोकगीतों में रूपांतरित करके गाते थे। जाति व्यवस्था में उनका स्थान वैश्यों से ठीक नीचे था। सूत। कथाकार जो अपने शब्दों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे।
वे एक छोटा समुदाय रहे होंगे। ऐतिहासिक ग्रंथों में शायद उनके बारे में ऐसे विवरण नहीं हैं जो उन्हें एक समाज कहलाने का औचित्य साबित करते हों, हालांकि कई प्रसिद्ध सूत (गुरुओं) का समय-समय पर व्यक्तिगत रूप से उल्लेख किया गया है।
जिस प्रकार वे उत्कृष्ट सारथी थे, उसी प्रकार वे कहानी सुनाने में भी माहिर थे। महाभारत के कर्ण पर्व में एक प्रसंग है जहाँ शल्य दुर्योधन को एक सूत के बारे में बताते हैं जो सारथी बनकर ब्राह्मणों और क्षत्रियों की सेवा करने से असंतुष्ट रहता है। यद्यपि सूत वैश्यों से नीचे स्थान रखते थे, फिर भी उच्च पदस्थ लोग भी गीत गाने वाले सूत का आदर करते थे। यह सत्य था कि सूतों को अक्सर डांट पड़ती थी, परन्तु जो अच्छी कहानी सुना सकता था, उसे कहीं भी महत्वपूर्ण पद दिया जाता था और उसका बहुत सम्मान किया जाता था। महाभारत की संरचना एक ऐसे सूत से जुड़ी घटना के इर्द-गिर्द बुनी गई है जो एक उत्कृष्ट कथाकार था। नैमिष्य वन में एक लंबे अनुष्ठान से ऊबकर, तपस्वी शौनक ने अपनी ऊब दूर करने के लिए एक प्रतिभाशाली सूत से गीत गाने का अनुरोध किया। सूत द्वारा गाई गई कथा कृष्णद्वैपायन द्वारा रचित थी, जो स्वयं कवि- ऋषि व्यास हैं, और वैशम्बायन द्वारा सुनाई गई थी। सूत ने यह कथा उस समय सुनी थी जब राजा जनमेजय एक महान अनुष्ठान कर रहे थे। जनमेजय के पिता, राजा परीक्षित, की मृत्यु उनके शिशु अवस्था में ही सर्प के काटने से हो गई थी। जनमेजय के बड़े होकर राजा बनने पर, उन्होंने अपने पिता का बदला लेने के लिए सर्पसत्र नामक एक विस्तृत अनुष्ठान करने और संसार के सभी सर्पों को मारने का निश्चय किया।
ऋषि व्यास इस अनुष्ठान में आए और जनमेजय ने उनसे गीत गाने का अनुरोध किया। व्यास के निर्देश पर, उनके शिष्य वैशंबायन ने महाभारत की कथा सुनाई, जिसे बाद में नैमिष्य वन में शौनक के अनुष्ठान में उपस्थित सूत ने सुना और

स्मरण कर लिया। सूत की कथा में उनसे तीन पीढ़ियों पहले के लोगों का वर्णन था और यह एक ऐसी कथा थी जिसमें लेखक, कृष्णद्वैपायन, जो बाद में ऋषि व्यास बने, एक पात्र के रूप में प्रकट होते हैं। चूंकि महाकाव्य में लेखक की भूमिका महत्वहीन है और कथा की रचना के कारण, हम उन्हें दूर से देखने की प्रवृत्ति रखते हैं, हालांकि वास्तव में वे हमारे बहुत करीब हैं।
अपने प्रारंभिक रूप में, महाभारत, जिसे पहले जया कहा जाता था, एक वीरगाथा थी और शोधकर्ताओं का कहना है कि यह केवल एक कथा ही थी। कुछ विद्वानों का मानना है कि कई लोगों द्वारा मूल कथा में दार्शनिक सिद्धांतों और उपकथाओं को जोड़ने के बाद ही इसे अपना वर्तमान रूप मिला। यह निष्कर्ष कि यह एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें कई व्यासों का योगदान रहा है, जिनमें से व्यासों ने संकलनकर्ता, संपादक और प्रकाशक के रूप में कार्य किया, महाभारत पर विराजमान दिव्य आभा का आदर करने वालों को क्रोधित करता है। लेकिन, सामान्य तौर पर, सभी यह मानते हैं कि एक मुख्य ग्रंथ था जिसमें बाद में कई अंश जोड़े गए।
इस दुर्लभ रचना के पीछे एक महान प्रतिभा का हाथ है, इसमें कोई संदेह नहीं है। वेदों का संपादन करने के बाद कृष्णद्वैपायन द्वारा रचित इस कविता के काल या रचनाकार के बारे में चाहे जो भी मतभेद हों, बाद के काल के सभी इतिहासकारों और शोधकर्ताओं ने इसका अत्यंत सम्मान किया है।
कहा जाता है कि महाभारत में सब कुछ समाहित है, और यह कोई निराधार दावा नहीं है। इतिहास, भूगोल, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान: सब कुछ इसमें शामिल है। क्या आप हवा की गति के बारे में जानना चाहते हैं? इस विषय पर एक पूरा अध्याय है। क्या आप शरीर रचना विज्ञान या रोगों के लक्षणों के बारे में जानना चाहते हैं? ये सब आपको मिल जाएगा। यह एक महान और दुर्लभ रचना है और एक अत्यंत मार्मिक मानवीय कहानी है। यूनानियों की इलियड इसके सामने फीकी पड़ जाएगी। फारसियों का शाहनामा तो इसके आसपास भी नहीं ठहरता।
कई साल पहले – मेरे जीवन के उस दौर में जब मैं यह सोचता था कि मैंने भी महाभारत पढ़ लिया है, क्योंकि मैंने थुंचथ एझुथाचन की 'किलिपट्टू' और सी. राजगोपालाचारी की 'भरतसंग्रह' पढ़ ली थी – महान मलयालम कवि अक्किथम ने मुझे कोडुंगल्लूर के शाही परिवार से संबंध रखने वाले कवि और विद्वान कुंजुकुट्टन थंपुरन द्वारा किए गए महाकाव्य के पूर्ण संस्करण के मलयालम अनुवाद को पढ़ने की सलाह दी। बाद में, प्रसिद्ध मलयालम लेखक पी.सी.

कुट्टिकृष्णन ने जोर देकर कहा, 'आपको एक बार पूरी महाभारत अवश्य पढ़नी चाहिए। यह आपके लिए बहुत लाभदायक होगी। मैंने इसे पढ़कर ही उपन्यास 'उम्माचू' लिखा था।'
कुंजुकुट्टन थंपुरन के अनुवाद को पढ़ने में मुझे कुछ और साल लग गए। शुरुआत में मैंने इसे एक कर्तव्य की तरह पढ़ा, फिर मुझे एहसास हुआ कि मैंने क्या खोया था। इसके प्रति मेरी ज़िम्मेदारी की भावना जुनून में बदल गई। एक बार जब मैंने इस महान कृति को पढ़ लिया, तो मैं इसे छोड़ नहीं सका। थंपुरन का अनुवाद कई जगहों पर अस्पष्ट है, कुछ जगहों पर तो अप्रिय भी है। फिर भी, इसने मुझे एक महान कवि, एक उत्कृष्ट कथाकार को खोजने में मदद की। मैंने मन ही मन थंपुरन को नमन किया। किसारी मोहन गांगुली का अंग्रेजी गद्य अनुवाद, जिसने व्यास की महान कृति के प्रति यथासंभव न्यायसंगत रहने का प्रयास किया है, बाद में मेरे लिए सहायक साबित हुआ। गांगुली का महाभारत एक और असाधारण मानवीय प्रयास का परिणाम है।
उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में, इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी के डॉ. रेनॉल्ड रॉस ने कलकत्ता के एक प्रमुख प्रकाशक प्रताप चंद्र रॉय को पत्र लिखकर महाभारत के प्रामाणिक गद्य अनुवाद की आवश्यकता पर बल दिया। रॉय उनसे सहमत थे। लेकिन इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए उन्हें कौन मिलता? कई लोगों ने उन्हें हतोत्साहित किया और कहा कि इस परियोजना को हिंदू धर्म के विरुद्ध माना जा सकता है। रॉय ने इस विषय पर ईश्वर चंद्र विद्यासागर से चर्चा की। विद्यासागर का मत था कि अनुवाद का स्वरूप तभी एकरूप होगा जब एक ही व्यक्ति संपूर्ण कार्य करे। उन्होंने रॉय को सलाह दी कि वे पहले आवश्यक धनराशि जुटाएँ, फिर उपयुक्त अनुवादक की तलाश करें।
उन्हें एक ऐसा व्यक्ति मिला जिसने यह कार्य करने की इच्छा जताई: किसारी मोहन गांगुली। गांगुली ने 1883 से 1896 तक लगन से काम करते हुए अनुवाद पूरा किया। वे इस बात पर अड़े थे कि उनका नाम उजागर न किया जाए। जब 1904 में यह कृति धारावाहिक रूप में प्रकाशित होने लगी, तो अनुवादक का नाम नहीं बताया गया। प्रताप चंद्र रॉय ने प्रकाशन शुरू किया और उनकी पत्नी सुंदरी बाला रॉय ने उनकी मृत्यु के बाद इसे पूरा किया। केरल के लोग इस अनुवाद को प्रताप चंद्र रॉय के नाम से जानते थे। ब्रिटिश सरकार ने रॉय को इस अनुवाद के लिए कई पुरस्कार भी दिए। पहला संस्करण गांगुली के जीवनकाल में ही बिक गया था। उनकी मृत्यु के तुरंत बाद प्रकाशित संस्करण में भी उनका नाम नहीं

था। 1974 में, जब कई छपाई की त्रुटियों को सुधारा गया और एक नया संस्करण जारी किया गया, तब हमें पता चला कि इस महान उपलब्धि के पीछे गांगुली का हाथ था।
गांगुली की महाभारत मूल कविता की गीतात्मकता को बरकरार रखती है। जब भी कोई शंका उत्पन्न होती है, वे पुणे और कलकत्ता संस्करणों के बीच अंतर बताते हैं। कुंभकोणम संस्करण भी उपलब्ध है। इन तीनों संस्करणों पर आधारित कई अध्ययनों से मुझे बहुत सहायता मिली है।
जब महाभारत काल किसी उपन्यास की पृष्ठभूमि बनता है, तो लेखक के मन में अनगिनत शंकाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। उसे असंख्य विवरणों से परिचित होना पड़ता है: उस युग के भूदृश्य, कृषि पद्धतियाँ और जीवनशैली, घरों की वास्तुकला, पहनावा, आभूषण, खान-पान की आदतें, दैनिक जीवन में प्रयुक्त वस्तुएँ इत्यादि। उसे युद्ध के नियमों और हथियारों का अध्ययन करना पड़ता है। संस्कृत ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद इन क्षेत्रों में बहुत सहायक सिद्ध हुए, विशेष रूप से ए.ए. मैकडॉनल्ड और ए.बी. कीथ द्वारा लिखित 'वैदिक इंडिया' और 'वैदिक इंडेक्स', राल्फ ग्रिफ़िथ का यजुर्वेद का अध्ययन, जॉर्ज बुहलर की 'सेक्रेड लॉज़ ऑफ़ द ईस्ट', जूलियस एगरलिंग की 'शत पाठ ब्राह्मणम', पंडित राजाराम की 'धनुर्वेद संकल्पनम', पंडित अजय मित्र शास्त्री की 'इंडिया इन द बृहद संहिता' और योहन जे. मेयर की 'सेक्सुअल लाइफ इन एन्शिएंट भारत'। उस युग की संस्कृति का अध्ययन करने में सहायक अन्य ग्रंथ इतने असंख्य हैं कि उनका उल्लेख करना संभव नहीं है और मैं उन्हें यहाँ सूचीबद्ध नहीं करूँगा।
भारत भर के बच्चों को महाकाव्यों में दो पात्र हमेशा से प्रिय और प्रशंसनीय रहे हैं: रामायण के हनुमान और महाभारत के भीम। दोनों ही सामर्थ्य के प्रतीक हैं। केरल में भीम के नाम पर बच्चों को कई चेतावनियाँ दी जाती हैं। 'सोते समय अपने पैर पलंग से बाहर न लटकाएँ, इससे आपकी शक्ति कम हो जाएगी। दुर्योधन हमेशा भीम को सोने के लिए एक छोटी चटाई देता था, ताकि उनकी शक्ति कम हो जाए।'
और फिर क्या हुआ?
‘भीमा ने अपने दोनों पैर चटाई पर रखे और अपना सिर चटाई के बाहर रखा!’
बच्चा भीमा को देखकर आश्चर्यचकित होकर हंसता है।
इस तरह की बहुत सी कहानियां हैं।

महाभारत को ध्यानपूर्वक पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति यह समझ जाएगा कि वास्तविक भीम वह भीम नहीं है जो बच्चों के लिए लिखी गई साहित्यिक पुस्तकों और सचित्र ग्रंथों को पढ़ने वाले किशोरों के मन में प्रस्तुत किया जाता है। भीम का न केवल विशाल शरीर था, बल्कि उनका मन भी महान था। महाभारत का भीम एक मनुष्य था, मानवीय कमजोरियों और शक्तियों से युक्त एक आदर्श स्वरूप। महाभारत की मानवीय कहानी का अध्ययन करने वाले कई विद्वानों ने उन लोगों की निंदा की है जिन्होंने पुरोहितों की इच्छाओं को पूरा करने के लिए इसमें बचकानी कहानियां और विसंगतियां जोड़ दीं।
मैंने कृष्णद्वैपायन, जो पहले व्यास थे, द्वारा संहिताबद्ध कथा के ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं किया है। जिन भागों में मैंने स्वतंत्रता ली है, वे वे भाग हैं जिनमें उन्होंने एक ऐसा मौन बनाए रखा जिसे बाद के अनुयायियों ने सार्थक पाया। ऐसे क्षण भी हैं जब वे शब्दों के बीच में हमें संकेत देते हैं। उदाहरण के लिए, व्यास स्वयं स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि युधिष्ठिर विदुर के पुत्र हैं। आश्रमवास पर्व में, जब विदुर ने भोजन त्याग कर ध्यान में लीन होकर प्राण त्याग दिए, तब कृष्णद्वैपायन युधिष्ठिर की ओर इशारा करते हुए कहते हैं:

धर्म ही विदुर हैं और विदुर स्वयं पांडव हैं।
वह पांडव आपके सामने आपके सेवक के रूप में खड़ा है।
(कुंजुकुट्टन थंपुरन का मलयालम अनुवाद)
यह महत्वपूर्ण है कि विदुर की मृत्यु के क्षण में, उनकी चेतना का संपूर्ण प्रकाश युधिष्ठिर में समाहित हो जाता है।
कई बार कवि कुछ क्षणों के मौन के बाद विषय बदल देता है। कुरुक्षेत्र युद्ध समाप्त होने के बाद युधिष्ठिर स्पष्ट रूप से कहते हैं, 'भीम राजा बने।' बाद में वे स्वयं राज्याभिषेक की तैयारी में जुट जाते हैं। इन दोनों क्षणों के बीच क्या घटित होता है? कथाकार को यह पता लगाना होता है कि घटनाओं का स्वाभाविक क्रम क्या रहा होगा। युद्ध के बाद सांसारिक मामलों से विरक्त हो चुके युधिष्ठिर अचानक वनवास जाने का अपना प्रारंभिक विचार त्याग देते हैं और राज्याभिषेक की तैयारी में जुट जाते हैं। इसके पीछे उनका कोई कारण अवश्य रहा होगा। कुंती देवी, जिन्होंने अनेक निर्णायक क्षणों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से घटनाओं को अपने नियंत्रण में लिया था, इन

दिनों निष्क्रिय नहीं रह सकती थीं। विदुर राजा नहीं बन सकते थे क्योंकि वे एक सेवक के पुत्र थे, इसलिए वे चाहते होंगे कि कम से कम उनका पुत्र ही राजा बने। और ऐसे अवसर पर, द्रौपदी, जो हमेशा न्यायसंगत कारण के पक्ष में तर्क खोजने में निपुण थीं, ने निश्चित रूप से अपने पद के जोखिम पर विचार किया होगा और अपने विचार व्यक्त किए होंगे।
एक और दृश्य: अभिमन्यु मारा गया। पूरा शिविर शोक में डूब गया। लगभग तुरंत ही घटोत्कच भी मारा गया। कृष्ण कहते हैं:
मुझे भीम के पुत्र घटोत्कच को मार डालना चाहिए था।
यह जानते हुए कि आप सभी उनसे प्यार करते थे, मैंने पहले ऐसा नहीं किया। (कुंजुकुट्टन थंपुरन का मलयालम अनुवाद)
क्या भीमा ने उसकी बात नहीं सुनी होगी?
मैंने कोई नए पात्र नहीं जोड़े हैं। विशोक और बलंधरा सभी महाभारत में मौजूद हैं। मैंने बस उन पात्रों पर थोड़ा और गौर किया है जिनकी छवि आम तौर पर धुंधली रहती है।
भीम एक ऐसा योद्धा था जो कभी थकता नहीं था। उन दिनों के युद्धों के नायक खिलाड़ी नहीं होते थे जो मैदान पर कभी फॉर्म में होते थे तो कभी नहीं। भीम कर्ण पर सिर से पैर तक हमला करने और उसे भय से कांपने में सक्षम था। वही भीम तब गिर पड़ता है जब कर्ण उसके पास आता है, अपना धनुष उसके गले में डालता है और उसे घसीटता है, उसकी कम दाढ़ी और तोंद का अपमान करता है और उसका मनोबल तोड़ता है। योद्धाओं का हाल ही में घटी दुखद घटनाओं के बारे में सुनकर गिर पड़ना आम बात है। आख़िरकार, द्रोण भी इसी तरह शहीद हुए थे। शक्तिशाली भीम के कर्ण का सामना करते समय इतनी दयनीय स्थिति में गिरने, अपना साहस और वीरता खोने, और अपनी मर्दानगी पर हो रहे अपमान को असहाय रूप से सुनते हुए लगभग मरणासन्न हो जाने का एकमात्र वैध कारण यही हो सकता है कि उसने एक ऐसी खबर सुनी थी जिसने उसे एक भयानक आघात पहुँचाया था। और कौन सी खबर उसे कर्ण की असलियत की सच्चाई से ज़्यादा गहराई से झकझोर सकती थी? महाभारत में अनगिनत कथाएँ हैं जिनमें ऐसी घटनाएँ, जिन्हें हम मानवीय समझ सकते हैं, दैवीय नियति का आभास कराती हैं। ये निश्चित रूप से बाद में जोड़ी गई हैं। कर्ण एक उत्कृष्ट योद्धा और धनुर्धर था, लेकिन वह अजेय नहीं था। वह द्रौपदी के स्वयंवर में, विराट द्वारा गायों की चोरी की घटना में, या दुर्योधन के जुलूस के दौरान सफल नहीं हुआ: वह इन सभी से भाग गया। हालाँकि,

एक कथा यह दर्शाती है कि कर्ण भी अलौकिक था: इसमें कहा गया है कि उसने अपने गुरु को, जो उसकी गोद में सो रहे थे, जगाने से रोकने के लिए एक कीड़े का काटना सहन किया। गुरु, परशुराम, ने तुरंत समझ लिया कि उनका शिष्य ब्राह्मण नहीं है और उसे श्राप देते हुए कहा कि एक महत्वपूर्ण मोड़ पर उसका शस्त्र उसके लिए बेकार हो जाएगा।
द्रौपदी का विवाह भी ऐसी ही एक कहानी है। उस समय की जनजातियों में भी बहुपतित्व को असभ्य माना जाता था। द्रुपद इसके विरुद्ध थे। बाद में, ज्यादती में, द्रौपदी की पवित्रता पर कलंक लगाया गया, क्योंकि उनके पाँच पति थे और ऐसा विवाह स्थानीय रीति-रिवाजों के अनुरूप नहीं था। कुंती ने अपने बेटों को एक सुंदर कन्या के लिए आपस में झगड़ने और अलग होने से रोकने के लिए कोई उपाय अवश्य सोचा होगा। वह जानती थीं कि युधिष्ठिर, सबसे बड़े होने के नाते, अपनी पत्नी पर विशेष अधिकार रखते थे। लोग चाहे जो भी कहते, कुंती को यह निश्चित रूप से पता था कि उनके बेटों को एक साथ रहना होगा। आखिरकार, वह असाधारण दृढ़ निश्चय वाली महिला थीं: उन्होंने लाख के घर में आई वनवासी स्त्री और उसके पाँच बेटों को उपयुक्त बलि के रूप में पहचाना, जिनके जले हुए कंकाल उनके बेटों और स्वयं का स्थान लेंगे।
हालांकि, एक कथा ऐसी भी है जो द्रौपदी के विवाह को दैवीय निर्णय मानती है। इसके अनुसार, वह अपने पिछले जन्म में एक तपस्वी कन्या थीं। उन्होंने तपस्या की और शिव उनके सामने प्रकट हुए। अनजाने में ही उन्होंने पाँच बार 'मुझे एक अच्छा पति दो' का जाप किया। इसका अर्थ यह हुआ कि उनका भाग्य पाँच पतियों से ग्रस्त होना निर्धारित था। यह तर्क स्वयं कृष्णद्वैपायन ने दिया है! भला कौन कल्पना कर सकता है कि इतना महान व्यक्ति ऐसी बेतुकी कहानी सुनाएगा? इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि महाभारत के विद्वान, जिनमें मलयालम आलोचक कुट्टिकृष्ण मारार भी शामिल हैं, इस तरह के दैवीय आभास को गलत ठहराते हैं जो कविता की शक्ति और सुंदरता को धूमिल कर देते हैं।
इन प्रक्षेपों से संबंधित अध्ययन और शोध परियोजनाएं आज भी लोकप्रिय हैं। भीष्मचार्य द्वारा बाणों की शय्या पर लेटे रहने के दौरान कही गई कई बातें बाद में जोड़ी गई मानी जाती हैं। कुछ विद्वान तो यह भी तर्क देते हैं कि भगवद् गीता भी बाद में जोड़ी गई है। वेदांत के विद्वान डॉ. फूलगेंदु सिन्हा ने हाल ही में कहा कि आज की गीता 800 ईस्वी में संकलित की गई थी, जबकि वास्तविक गीता, व्यास की गीता, जो 600 वर्ष पहले अस्तित्व में आई थी,

एक अलग रचना थी और वे अपना पूरा जीवन इस मूल गीता की खोज में समर्पित करने जा रहे हैं।
बहुत हो गया ये सब। महाभारत एक अत्यंत शक्तिशाली पारिवारिक गाथा है, युद्ध की गाथा है और जनजातीय संस्कृति का इतिहास है। यह समझना आसान है कि मौखिक रूप से विकसित हुई इस कहानी में पीढ़ी दर पीढ़ी कई परिवर्तन हुए होंगे। युद्ध दृश्यों का अधिकांश वर्णन एक जैसा है, जैसा कि लोक साहित्य में हर जगह होता है। सुंदर पुरुषों और सुंदर स्त्रियों की सभी छवियां एक जैसी हैं। 'कई' का अर्थ सौ हो सकता है; 'बहुत अधिक' का अर्थ हजारों तक हो सकता है। जब धनुष से हजार बाण चलाए गए, तो 10,000 बाण वापस आए। एक विशाल सेना एक विशाल गठन, अक्षौहिणी बन जाती है, जिसमें नियमों के अनुसार 21,870 हाथी, उतने ही रथ, तीन गुना घोड़े और पांच गुना पैदल सैनिक होने चाहिए। जब कवि कहता है कि युद्ध में ऐसे अठारह गठन लड़े, तो हम केवल यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसने एक ऐसे शक्तिशाली युद्ध का वर्णन करने के लिए काव्यात्मक स्वतंत्रता का प्रयोग किया है जिसका कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं था। उत्तर-पश्चिम में गांधार; सिंधु घाटी में केकेया, मद्रा और वाहलीका; सिंधु-गंगा घाटी में स्थित इंद्रप्रस्थ, हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, मथुरा, काम्बिल्य और चेदि; उत्तर-पूर्व में मगध और उसके ठीक आगे अंग; और सबसे ऊपर कामरूप: ये महाभारत काल में उत्तर भारत के सबसे महत्वपूर्ण देश थे। ये सभी छोटे देश थे। मवेशी उनकी मुख्य संपत्ति थे, और उनके लिए युद्ध करना आम बात थी। सभी देशों के प्राचीन इतिहास में हमें मवेशी युद्धों का उल्लेख मिलता है। वैदिक काल की जनजातियों में कुरु, गांधार, चेदि, निषाद, मगध, मद्रा, वंग, विदर्भ, पंचाल और साल्वा सभी का उल्लेख मिलता है। महाभारत युद्ध में वर्णित देशों के लोग सभी महान जनजातीय थे।
रथ यात्रा के लिए इस्तेमाल होने वाले वाहन थे। हालाँकि घोड़े बहुतायत में थे, लेकिन घुड़सवारी लोकप्रिय नहीं थी और घोड़ों का उपयोग केवल रथों को खींचने के लिए किया जाता था। मुख्य फसलें धान और जौ थीं। हस्तशिल्प बनाने वाले कारीगर हर जगह पाए जाते थे। हिमालय की ढलानों पर औषधीय पौधों के बड़े- बड़े बाग और उद्यान थे। आज भी कुमाऊं और गढ़वाल के कुछ हिस्सों में बड़े- बड़े चिकित्सा संस्थानों को पौधों की आपूर्ति करने वाले उद्यान मौजूद हैं, और फूलों की घाटी आज भी हिमालय में पर्यटकों को आकर्षित करती है।

क्योंकि संदेशवाहक अनपढ़ थे, इसलिए वे संदेशों को कंठस्थ कर लेते थे और उन्हें पूरी तरह से दोहराते थे।
उस युग के लोग अग्नि और वरुण, इंद्र और रुद्र की पूजा करते थे। विष्णु को देवता का दर्जा बाद में मिला।
यह उपन्यास की पृष्ठभूमि है।
महाभारत युद्ध का केंद्रबिंदु भीम थे। चाहे कितने भी नेता हों, जीत और हार उस योद्धा की कुशलता पर निर्भर करती है जो शत्रु के आक्रमण का सामना करने वाले स्थान पर नेतृत्व करता है। भीम को सर्वसम्मति से इस पद के लिए चुना गया था। धृतराष्ट्र को इस बात की चिंता सताती रही कि कहीं भीम शत्रु पक्ष में न लड़ रहे हों।
भीम ने युद्ध जीता, फिर भी उसे कुछ हासिल नहीं हुआ। इसीलिए मैंने उपन्यास के लिए उसका दृष्टिकोण अपनाया। कुंती और द्रौपदी वे पात्र थीं जिन्होंने भीम के जीवन की दिशा तय की। विदुर का भी प्रभाव था, भले ही बहुत गुप्त तरीके से। भीम ऐसा व्यक्ति था जिसे परलोक में किसी प्रकार के आशीर्वाद की अधिक उम्मीद नहीं थी। और इसी कारण उसने जुआघर में प्रतिज्ञा की थी। युद्ध में सबसे अधिक साहस अर्जुन या कर्ण ने नहीं, बल्कि भीम ने दिखाया। उसने कौरवों को सीधे युद्ध में मार गिराया। शत्रु को मारने वाला सर्वोच्च नेता बन जाता है और उस समय के नियमों के अनुसार, उसे राज्य का अधिकार प्राप्त था।
महाभारत के वृत्तांत में भीम के जीवन का अनुसरण करते हुए, जिनके लिए बल एक अभिशाप और बोझ दोनों था, यह स्पष्ट हो जाता है कि वे केवल कम दाढ़ी और तोंद वाले, विशाल गदा धारण करने वाले व्यक्ति नहीं थे। वे एक ऐसे वीर योद्धा थे जिन्हें अपने प्रेम और वासना के भावों को छुपाने की आवश्यकता नहीं थी, एक ऐसे व्यक्ति जो दार्शनिक विचारों या आर्यों के नियमों के बोझ से मुक्त थे। द्रौपदी के साथ उनका संबंध कई बिंदुओं पर उनकी सरलता और मासूमियत को दर्शाता है। सौगंधिका पुष्प की चोरी की घटना है, जिसे हमारे देश में कथाकारों ने प्रसिद्ध किया है। भीम द्रौपदी के एक पुष्प के प्रति आसक्त होने के कारण एक अभियान पर निकलते हैं। अनेक साहसिक यात्राओं के बाद, वे कुबेर के उद्यान से पुष्प तोड़ते हैं। लेकिन महाभारत में, वे पुष्प को द्रौपदी के बालों में नहीं लगाते, न ही उनके साथ प्रेम प्रसंग में लिप्त होते हैं, जैसा कि कहानियों में कहा गया है। द्रौपदी उनके भाइयों के साथ

आती हैं, जो उन्हें ढूंढने आए थे। जब द्रौपदी बगीचे में पहुँचती है, तो वह उस फूल को भूल जाती है जिसे वह बहुत चाहती थी। भीम को उसके बड़े भाई से जल्दबाजी के लिए डांट पड़ती है।
अगर तुम मेरी परवाह करते हो, तो इस तरह की हरकतें मत करो।
कुंती के पुत्र ने कमल के फूल लेते हुए कहा।
(कुंजुकुट्टन थंपुरन का मलयालम अनुवाद)
महाभारत में बस इतना ही कहा गया है।
इसके तुरंत बाद, द्रौपदी एक और सपने में खो जाती है: वह पर्वत की चोटियों पर चढ़ना चाहती है। भीम पर्वत पर चढ़ता है, वहाँ मौजूद राक्षसों को भगाता है और उनमें से कुछ को मार डालता है। और क्या द्रौपदी ने चोटियों से नीचे दुनिया को देखने का आनंद लिया, जैसा कि वह चाहती थी? व्यास हमें इसका जवाब नहीं देते। भीम से यह कहने के बाद कि, 'मैं आपकी बाहों की सुरक्षा में खड़े होकर पर्वत की चोटियों को देखना चाहती हूँ...', द्रौपदी ने अपना मन क्यों बदल लिया?
जब यह उपन्यास कालकौमुदी में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ, तो कई लोगों, विशेषकर महिला पाठकों ने मुझे पत्र लिखकर कृष्ण की भूमिका पर संदेह व्यक्त किया। वे जिस कृष्ण की कल्पना कर रही थीं, वह पहले अंबडी में एक शिशु के रूप में और फिर राधा के प्रेमी के रूप में प्रकट हुए कृष्ण थे। बांसुरी बजाते और मोर पंख से सुशोभित मुकुट धारण किए शाश्वत प्रेमी का चित्रण किसी अन्य कवि की सुंदर कल्पना से हुआ है। यह संभव नहीं है कि वह दिव्य शिशु, जिसे हर माँ अपने बच्चे में देखना चाहती है, वह राधामदवन, जिसे हर युवती अपने प्रेमी में देखना चाहती है, महाभारत में मिले। न ही द्रौपदी के निर्वस्त्र होने के क्षण में कमर से बहने वाली अनंत साड़ी की कहानी व्यास के महाभारत में मिलती है।
महाभारत के कृष्ण एक छोटे और कमज़ोर देश के राजकुमार थे। यादव कई युद्धों में पराजित हुए थे। जरासंध के भय से उन्हें मथुरा छोड़कर द्वारका जाना पड़ा था। महाभारत के कृष्ण एक कुशल सारथी, चक्रयुद्ध में अद्वितीय योद्धा और अन्य देशों के साथ कूटनीतिक संबंध रखने में निपुण थे (गुटनिरपेक्षता की शुरुआत उन्हीं से हुई थी)। शत्रु की भेद्यता को पहचानने की उनकी क्षमता युद्ध में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई। उन्होंने अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने और यादवों की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः

प्राप्त करने का प्रयास किया। केवल उनके और पांडवों के बीच के घनिष्ठ संबंध के कारण ही नहीं, जो उनके पिता की बहन के पुत्र थे, बल्कि उनके लिए जरासंध पर आक्रमण करने में सक्षम भीमसेन जैसे शक्तिशाली योद्धा को अपने पक्ष में रखना भी बुद्धिमानी भरा निर्णय रहा होगा। ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों ही उन्हें प्रिय थे। पांडवों के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित करने में उनकी विशेषज्ञता का सबसे अच्छा प्रमाण निश्चित रूप से वह प्रसंग है जिसमें वे अर्जुन द्वारा सुभद्रा के अपहरण का समर्थन करते हैं।
महाभारत में कृष्ण की भूमिका एक विवादास्पद विषय है।
प्रोफेसर मेयर समेत कई विद्वानों ने कृष्ण की लगातार आलोचना की है, उन्हें निकम्मा, उद्दंड और परंपराओं से विहीन व्यक्ति बताया है। मैंने यहाँ केवल भीम के दृष्टिकोण से कृष्ण के उस रूप का वर्णन किया है जो भीम से जुड़ा हुआ था। भीम ने कभी कृष्ण के बहुत करीब आने की कोशिश नहीं की। वे कृष्ण को पसंद तो करते थे, लेकिन उनसे दूरी बनाए रखते थे, शायद इसलिए क्योंकि कृष्ण उनके छोटे भाई के सबसे करीबी दोस्त थे। और कृष्ण ने हमेशा भीम को वह सम्मान दिया जिसके वे हकदार थे।
मेरे उपन्यास का विषय महाभारत में वर्णित कुछ मानवीय संकट हैं। मैं कृष्णद्वैपायन (व्यास) को नमन करता हूँ, जिन्होंने मुझे उन अर्थपूर्ण मौनों को समझाया, जिन्होंने मुझे इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।
कमज़ोर पारिवारिक रिश्ते और उनमें उलझने वाले इंसान: ये ऐसे विषय हैं जो मेरे अपने गाँव में हमेशा से मेरे सामने मौजूद रहे हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि मैं यहाँ एक प्राचीन युग में घटित पारिवारिक कहानी की बात कर रहा हूँ।
नवंबर 1977 में, जब मृत्यु मेरे बेहद करीब आकर दूर चली गई, तब मेरे मन में यह इच्छा जागृत हुई कि बचे हुए समय में कम से कम इस उपन्यास को पूरा कर लूँ। मैंने मन ही मन इसकी रचना शुरू की, पढ़ना शुरू किया और जानकारी जुटाना शुरू किया। लेकिन इसे पूरा करने में मुझे 1983 का समय लगा। उस असीम कृपा से मुझे जो दिन मिले, उनके लिए मैं आभारी हूँ।
इस उपन्यास को लिखने की तैयारी के दौरान मैंने जो पठन-पाठन और अध्ययन किया, उसे मैं एक बहुमूल्य उपलब्धि मानता हूँ। जिन पुस्तकों के कारण यह संभव हो पाया, उनका मैं अत्यंत आभारी हूँ, साथ ही नागपुर, कोझिकोड और बॉम्बे

विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थानों के उन मित्रों का भी जिन्होंने मुझे ये पुस्तकें खोजने में सहायता की। मेरे मित्रों, आप सभी का धन्यवाद।
मेरा मानना है कि इस उपन्यास को लिखने के लिए मुझे वास्तव में जो प्रेरणा मिली, वह भारत के एक गांव में जन्म लेने और रहने तथा महाकाव्यों और इतिहासों को सुनते हुए बड़े होने से प्राप्त आंतरिक शक्ति थी।
आइए एक बार फिर कृष्णद्वैपायन (व्यास) को नमन करें।

• • • • • • • • • • • • • • • • • • •

• • • • • • • • • • • • • • • • • •

□□□□□□□□ □□ □□□
□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□

□□ □□□□□□□□

□□□□
□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□
□□□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□

P.S.

Insights
Interviews
& More...

अनुवादक की टिप्पणी गीता कृष्णनकुट्टी

… … … … … … … … … … … … … …

भीम: लोन वॉरियर का मलयालम मूल संस्करण, रंदामूझम, 1984 में प्रकाशित हुआ था और मार्च 2013 में इसका अड़तीसवाँ संस्करण आया। इस उपन्यास की निरंतर सफलता का कारण क्या है? महाभारत का पुनर्लेखन, ज़ाहिर है, हमेशा ही मन मोह लेता है। इस विशेष पुनर्लेखन का जादू शायद इसलिए बरकरार है क्योंकि एम.टी. वासुदेवन नायर ने इसे भीम के दृष्टिकोण से सुनाया है, उन्हें केवल एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे इंसान के रूप में देखा है जो अधूरी इच्छाओं से घिरा है, संदेह और भय से ग्रस्त है, और अक्सर अपने आसपास के लोगों द्वारा उपहासित और गलत समझा जाता है। एम.टी. कहते हैं, 'मानव ही एक लेखक का एकमात्र विषय है।' उनका भीम अकेला है, अक्सर असहाय है, और निरंतर इस बात से अवगत है कि उसकी शारीरिक शक्ति एक वरदान और अभिशाप दोनों है। यह चित्रण इतना अंतरंग है कि, समय और स्थान के अंतर के बावजूद, पाठक भीम को करीब से देख पाता है।
दरअसल, एमटी का भीमा उनके अन्य उपन्यासों के नायकों से मिलता-जुलता है— कलम का सेतु, नालुकेट्टू की अप्पुन्नी और उनकी लघु कथाओं के कई पात्र, ये सभी मालाबार में मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार के विघटन से उपजे पारिवारिक कलह में फंसे हुए अलगावग्रस्त व्यक्ति हैं। भीमा भी उन्हीं की तरह 'बाहरी' चेतना, आत्मनिरीक्षण की प्रवृत्ति और सफलता की तीव्र इच्छा रखता है। क्या वह परिवार की अंतिम यात्रा में लिए गए अपने निर्णय के कारण पूरी तरह असफल हो जाता है, या क्या एमटी ने वास्तव में उसे जीवन भर झेले गए दर्द और अपमान से मुक्त कर दिया है, यह पाठक को तय करना है।
रंदामूझम, एमटी की सामान्य शैली से हटकर है। शाही दरबारों और युद्ध की साज-सज्जा, जुए और कुश्ती के दांव-पेच, उस दौर के रीति-रिवाज और परंपराएं, ऐतिहासिक और पौराणिक संदर्भ, एक ऐसी भाषा शैली की मांग करते हैं जो उनके अधिकांश उपन्यासों और लघु कथाओं में प्रयुक्त भाषा से भिन्न है। वे इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि वे अत्यधिक शास्त्रीय भाषा का प्रयोग न करें।

पात्र आम इंसानों की तरह बोलते हैं, और ईर्ष्या, अहंकार या नीचता से उतने ही प्रभावित होते हैं जितने कोई और। हालांकि, उपन्यास उस महाकाव्य की आभा से ओतप्रोत है जिससे यह प्रेरित है। यह न केवल रूप और विषयवस्तु को प्रभावित करता है, बल्कि अनुवादक के लिए एक निरंतर चुनौती भी प्रस्तुत करता है।
पाठ में कई मलयालम और संस्कृत शब्द हैं जिनका अंग्रेज़ी में कोई सटीक पर्याय नहीं है। कुछ मामलों में संक्षिप्त व्याख्या देना संभव था, लेकिन कई बार मुझे अर्थ स्पष्ट करने के लिए लंबे वाक्यांशों का सहारा लेना पड़ा। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं: 'रथवीरन' शब्द को थोड़ा लंबा करके 'रथ पर सवार होकर युद्ध करने में निपुण योद्धा' कहा गया है, 'पंचवर्णपुक्कल' का अर्थ 'कुबेर के बगीचे के फूल' हो गया और 'राजस्वला' का अर्थ 'मासिक धर्म के दौरान' बताया गया। मुझे पता था कि नए वाक्यांश में मूल शब्द की सुंदरता और सटीकता का अभाव है, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि इससे कहानी कहने में कोई खास बाधा नहीं आएगी।
चाहे उपन्यास के पात्र किसी गंभीर सभा-महल में हों या किसी एकांत वन-स्थल पर, एमटी के उपन्यासों के पाठकों के लिए परिचित ग्रामीण परिवेश में प्रयुक्त मलयालम भाषा की लय को परिवेश में सहजता से पिरोया गया है। पी.पी. रवींद्रन द्वारा एमटी के लेखन में वर्णित यह गुण, जो उनके उपन्यासों को उनकी स्वयं की व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं और उनके पले-बढ़े गाँव के जीवन से सहजता से जोड़ता है, अंग्रेजी में आसानी से व्यक्त करना आसान नहीं है और अनुवादक के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।
इन समस्याओं के बावजूद, मुझे इस उपन्यास को पढ़ने और इस पर काम करने का अवसर मिलने पर बहुत खुशी है। इसका अध्ययन करते समय, मुझे बार-बार महाभारत के मलयालम और अंग्रेजी अनुवादों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया, न केवल संदर्भों की जाँच करने के लिए, बल्कि रोचक विवरणों और कम ज्ञात घटनाओं को खोजने के लिए भी। जैसे कि अश्वनादि नदी कुंतिभोज के देश से होकर बहती है, कुंती ने शिशु कर्ण को इसी नदी में बहाया था, अश्वनादि नदी चार्मणवती में मिलती है, जो यमुना में समा जाती है, और यमुना गंगा में समा जाती है, जहाँ पांडव भाइयों ने अपने भाई कर्ण को अंतिम आहुति दी थी। और यह कि सौगंधिका फूल की खोज, जिसके दौरान भीम की हनुमान से मुलाकात हुई थी -

जिसे केरल में कथकली कलाकारों ने अविस्मरणीय बना दिया है - वास्तव में उस तरह से नहीं हुई थी!
मैं श्री वासुदेवन नायर के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ कि उन्होंने उपन्यास की संरचना पर चर्चा करने, भाषा और अभिव्यक्ति की बारीकियों को समझाने और मेरे द्वारा पूछे गए अनगिनत प्रश्नों का धैर्यपूर्वक उत्तर देने के लिए मुझे इतना समय दिया।
मैं वी.के. कार्तिका को उनके अटूट समर्थन और प्रोत्साहन के लिए और मेरी संपादक अजिता को पांडुलिपि पर काम करने के दौरान मेरे प्रति दिखाए गए असीम धैर्य और दयालुता के लिए भी धन्यवाद देना चाहूंगी।

चेन्नई, 2013 गीता कृष्णनकुट्टी

नोट्स
1. एम. टी. वासुदेवन नायर 'द ट्रैवेल्स ऑफ अ राइटर' में, वक्कुकालुते विस्मयम में, संस्करण। एम.एन. करास्सेरी (कोझिकोड: पप्पियॉन, 1999), पी. 85.
2. पी.पी. रवींद्रन, एम.टी. वासुदेवन नायर के लेखन का परिचय (नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2010), पृ. 11.

□□ □□□□□□□

□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□

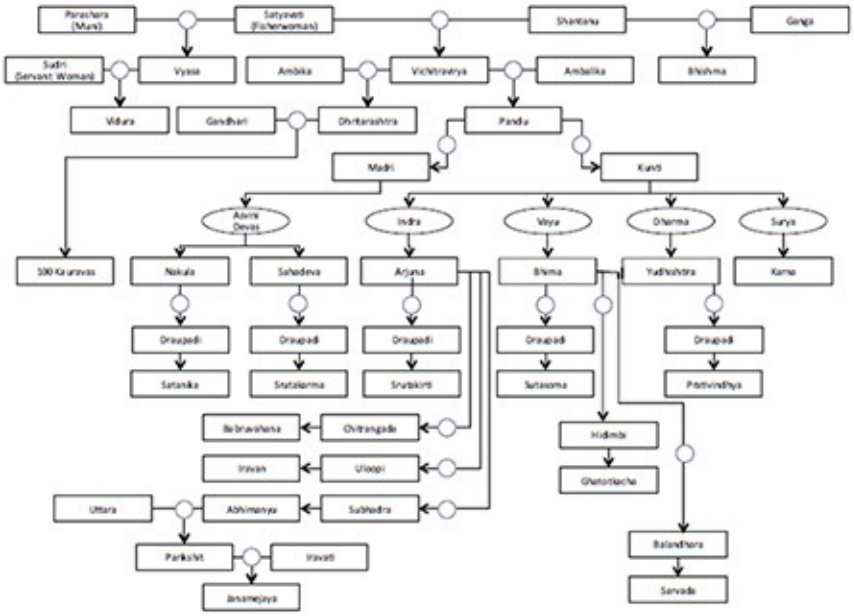
Parashara (Muni)
Satyavati (Fisherwoman)
Shantanu
Ganga
Sudhi (Servant Woman)
Vyasa
Ambika
Vichitravirya
Ambalika
Bhishma
Vidura
Gandhari
Dhritarashtra
Pandu
Madri
Kunti
Ashvin Devas
Indra
Vayu
Dharma
Surya
100 Kauravas
Nakula
Sahadeva
Arjuna
Bhima
Yudhishthira
Karna
Draupadi
Draupadi
Draupadi
Draupadi
Draupadi
Satanika
Shrutakarma
Shrutakirti
Sutasoma
Prativindhya
Balavahana
Chitrangada
Hidimba
Iravan
Ulupi
Ghatotkacha
Uttara
Abhimanyu
Subhadra
Parikshit
Iravati
Janamejaya
Balandhara
Sarvada

एमटी

अनूप रामकृष्णन के साथ यात्रा

… … … … … … … … … … … … … … … …

मैंने बहुत कम उम्र से ही एमटी को पढ़ा है, पसंद किया है और उनकी प्रशंसा की है, जो केरल में कोई असामान्य बात नहीं है, जहाँ वे मलयाली साहित्यिक चेतना का अभिन्न अंग हैं। लेकिन कुछ साल पहले, कोट्टायम के मलयाला मनोरमा में, मुझे एक अनोखी परियोजना का नेतृत्व करने का अवसर मिला, जिसने मुझे एमटी को एक लेखक और एक व्यक्ति के रूप में जानने का मौका दिया। मैंने महसूस किया कि ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।
हमने नई तकनीक की मदद से एमटी की व्यक्तिगत और कलात्मक प्रतिभा को पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया था। मेरी टीम और मैंने अंततः उनकी प्रमुख साहित्यिक कृतियों और फिल्मों को चौदह डीवीडी में संकलित किया और उन्हें 'एमटीज़ वर्ल्ड्स' शीर्षक से प्रकाशित किया। इसमें वीडियो साक्षात्कार, वृत्तचित्र, ऑडियो पुस्तकें और इंटरैक्टिव प्रस्तुतियाँ शामिल हैं। हमारा उद्देश्य लगभग पचास वर्षों के रचनात्मक जीवन की यथासंभव संपूर्ण तस्वीर प्रस्तुत करना था। लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने 2010 में हमारे मल्टीमीडिया प्रोजेक्ट को 'किसी लेखक के कार्यों का पहला और सबसे बड़ा डिजिटल संकलन' के रूप में विश्व रिकॉर्ड से सम्मानित किया।
जैसे ही मैंने शोधकर्ता के मार्ग पर चलना शुरू किया, मैं एमटी द्वारा तय की गई दूरी को देखकर चकित रह गया। हमने एमटी से व्यक्तिगत और कलाकार के रूप में जुड़े 300 से अधिक लोगों का साक्षात्कार लिया। जो छवि हमारे सामने आई, वह एक ऐसे दिग्गज की थी जो कई रचनात्मक क्षेत्रों में समाहित था।
मणि रत्नम वहां मौजूद हैं, जो एमटी द्वारा लिखित पटकथा पर फिल्म बनाने के अवसर का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। गोविंद निहलानी निर्मल्यम के विस्फोटक क्लाइमेक्स के बारे में विस्तार से बात करते हैं। अभिनेत्री शारदा आज भी इरुट्टिन्टे आत्मवु के उस दृश्य को याद करके भावुक हो जाती हैं, जहां पागल वेलायुधन उनसे उनकी उंगली के सिरे को छूने की विनती करता है। बॉम्बे रवि एमटी द्वारा लिखित मलयालम फिल्म का निर्माण करना चाहते

हैं। यू.आर. अनंतमूर्ति कहते हैं, 'एमटी भारतीय लेखन की उदार, लोकतांत्रिक और मानवतावादी परंपरा में सर्वश्रेष्ठ का प्रतिनिधित्व करते हैं।' अडूर गोपालकृष्णन एमटी के बचपन और युवावस्था और अपने बचपन के बीच की समानताओं पर प्रकाश डालते हैं। वैरामुथु एमटी की दुर्लभ, संयमित मुस्कान को 'सेंटीमीटर सिरिप्पू' (एक सेंटीमीटर लंबी मुस्कान) बताते हैं। एम. मुकुंदन बताते हैं कि एमटी की एक कहानी पढ़ने के बाद उन्हें नदी किनारे शांत सैर करने का मन हुआ। अभिनेत्री श्रीविद्या कहती हैं कि अगर कोई पटकथा लेखक निर्देशक समेत पूरी फिल्म यूनिट को अपने वश में करने की क्षमता रखता है, तो वह एमटी ही हैं। विशाल भारद्वाज कहते हैं, 'एमटी सिर्फ वही कहते हैं जो बिलकुल जरूरी होता है। और वो भी वो कहना पसंद नहीं करते, अगर वो अपनी आंखों से ही आपको यकीन दिला सकें।' ओ.एन.वी. कुरुप जोर देकर कहते हैं कि एमटी गद्य में लिखते हैं, लेकिन उनकी रचनाएं कविता हैं। कमला दास कहती हैं कि उनकी कहानियां 'महिलाओं के दिलों को ऐसे निचोड़ देती हैं जैसे गीले तौलिए से पानी निचोड़ा जाता है।'
हमने एमटी की कहानियों के पात्रों से मुलाकात की, उनके परिवेश को समझा और समय के साथ उनमें आए बदलावों की पड़ताल की। उदाहरण के लिए, हम शुकापुरम गए, वह गाँव जहाँ फिल्म निर्मल्यम की शूटिंग हुई थी। रतीश, जो गोपालन नायर के पोते हैं - जिन्होंने निर्मल्यम के मुख्य अभिनेता पी.जे. एंटनी को वेलिचप्पडु नर्तक की भूमिका निभाने का प्रशिक्षण दिया था - अब मंदिर के वेलिचप्पडु हैं और उनके पास अभी भी वह पवित्र तलवार है जिसका उपयोग फिल्म में किया गया था।
जिस घर में फिल्म की शूटिंग हुई थी, उसमें ज्यादा बदलाव नहीं आया है। हमने एमटी को उस कमरे में चुपचाप खड़े हुए उदास मुद्रा में देखा, जहाँ निर्मल्यम के प्रेमी को यह एहसास हुआ कि उसकी पत्नी और उसके चार बच्चों की माँ ने उसे धोखा दिया है।
'वनप्रस्थम: अ रीलुक' नामक वृत्तचित्र के लिए, एमटी हमारे साथ मूकाम्बिका मंदिर गए, जो मूल कहानी का स्थल है। उन्होंने हमें बताया कि कहानी के नायक करुणान मास्टर कई मायनों में उनसे मिलते-जुलते हैं, और एमटी की भी एक छात्रा थी जो उन्हें हर नए साल पर शुभकामना कार्ड भेजा करती थी, और कई वर्षों बाद उनकी उससे एक बार मुलाकात हुई।

हमने इतिहास के गलियारों में यात्रा की, उनकी फिल्म 'परिणयम' के पात्रों की तलाश में, जो कल्पकसेरी इल्लम की कुरिदाथु तात्री की कहानी बयां करती है, जो एक नंबूदरी महिला थी जिसने बदला लेने के लिए सभी सामाजिक नियमों को तोड़ दिया था। जिस स्थान पर इल्लम स्थित था, वह अब खंडहर है, घनी झाड़ियों से ढका हुआ। ऐसा लगता है कि वर्षों से कोई भी वहां नहीं गया है। हम कवुंगल चथुन्नी पणिक्कर से मिले, जो कवुंगल शंकर पणिक्कर के परिवार की अंतिम कड़ी हैं, जो दुर्भाग्यशाली कथकली कलाकार थे जिन्हें तात्री के साथ संबंध रखने के कारण नंबूदरी समुदाय और उनकी कला से निष्कासित कर दिया गया था।
'द टेल ऑफ़ अ फेरी' फिल्म 'कडावु' पर आधारित है, जो दो अलग-अलग दुनियाओं को जोड़ने वाली नौका की कहानी है। एमटी हमारे साथ नौका यात्रा पर संतोष एंटनी से मिलने गए, जिन्होंने पच्चीस साल पहले इस फिल्म में एक बच्चे की भूमिका निभाई थी।
अप्पुन्नी की खोज, उपन्यास नालुकेट्टू पर आधारित वृत्तचित्र में, एमटी अपने खुद के थारवाद (घर) के बारे में बात करते हैं, उस बाढ़ के पानी के बारे में जो कभी आंगन तक आ जाता था और उन लोगों के बारे में जो शरण मांगने आते थे। उस देवी के बारे में जो एक तूफानी रात भूखे बच्चों के लिए चावल का बर्तन लेकर आई, पायल की झंकार के साथ घर में दाखिल हुई और नालुकेट्टू के पश्चिमी तरफ स्थित छोटे से कमरे, माचू को अपना स्थायी निवास बना लिया... हमने मलमक्कावु देवी मंदिर में स्थित तालाब भी देखा, जहाँ नीलतमारा के नीले कमल खिलते हैं। ऐसी मान्यता है कि ये कमल तभी खिलते हैं जब कोई आस्थावान व्यक्ति मंदिर में चढ़ावा चढ़ाता है। जब हम वहाँ पहुँचे, तो तालाब में चार-पाँच कमल थे, शायद उस लेखक का स्वागत करने के लिए जिन्होंने इन्हें प्रसिद्धि दिलाई और एक नया नाम दिया (स्थानीय लोग इन्हें चेंगझीर फूल कहते हैं)।
यात्रा के दौरान एक समय ऐसा आया जब एमटी ने हमें बताया कि हवा में लहराते पेड़ और ताड़ के पेड़ भी उनके लिए पात्र थे। कई बार, अपने पात्रों का परिचय कराते-देते वे चुप हो जाते और सोच में डूब जाते। कभी-कभी वे उत्साह से बोलते थे। उनके कई प्रिय पात्र अब इस दुनिया में नहीं हैं; केवल उनके बच्चे और पोते-पोतियां ही हमारे सवालों के जवाब देने आए।
एमटी अपने गांव के मंदिर की देवी कोडिक्कुन्नथु कविलम्मा के परम भक्त हैं। मंदिर की खड़ी सीढ़ियों पर जोश के साथ चढ़ते हुए, एमटी एक मिलनसार

दादाजी में बदल गए और उन्होंने हमें मंदिर से जुड़ी पुरानी कहानियां सुनाईं।
इस पूरी यात्रा के दौरान, हमने जो कहानियाँ पढ़ी थीं और जो फिल्में देखी थीं, वे नए अनुभवों के रूप में हमारे सामने आती रहीं। मैं उस नियति का आभारी हूँ जिसने मुझे एमटी के साथ उनकी कहानियों और फिल्मों के परिदृश्यों में घूमने का अवसर दिया। मैं उन पलों के लिए कृतज्ञ हूँ।
कथावाचक को मेरा प्रणाम।

□□□□□□ □□□□□□□

•••

□□□□□□□□

- □□□□□□□□□□ (□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□), □□□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1958
- □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ (□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□), □□.□□. □□□□□□□, □□□□□□, 1958
- □□□□□□□□□□□□ (□□□ □□□□, □□.□□. □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□), □□□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1960
- □□□□□□□□□□ (□□□□□□ □□□), □□□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1962
- □□□□ (□□□□), □□□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1964
- □□□ (□□□), □□□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1969
- □□□□□□□□□□□ (□□□□□ □□□□□□□ □□□□□), □□□□□□□□ □□□□□□□□, 1978
- □□□□□□□□□ (□□□: □□□ □□□□□□), □□□□□□□□ □□□□□□□□, 1984
- □□□□□□□ (□□□□□), □□□□□ □□□□□, □□□□□□□, 2002

□□□□□□□□ (□□□□□)

- *□□□□ □□□□□ □□□□□□□ (□□□ □□ □□□□ □□□), □□□□□□□ □□□□ □□□□□□*, 1952
- □□□□ □□□□□□□ (□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□), □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□, 1954
- □□□□□□□□ □□□□□□ (□□□□ □□ □□□), □□□□□□□, □□□□□□□, 1955
- □□□□ □□□□□□□□ (□□ □□□ □□□□□□), □□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1956
- □□□□□□□□□□□ □□□□□□□ (□□□□□□ □□ □□□□□), □□□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1957
- □□□□□ □□□□□□ (□□□ □□ □□□□□□), □□□□ □□□□□, □□□□□□□□□□□, 1957
- □□□□□□□□□□□, □□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1959
- □□□□□□□□□□□ □□□□□□ (□ □□□□□ □□□□), □□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1960
- □□□□□□ (□□□□), □□□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1963
- □□□□ (□ □□□□), □□□□ □□□□□, □□□□□□□, 1966

• कलिविदु (प्लेहाउस), करंट बुक्स, त्रिशूर, 1966
• वरिक्कुझी (द ट्रैप), करेंट बुक्स, त्रिशूर, 1967
• तिरंजेदत्त कधकाल (चयनित कहानियाँ), करंट बुक्स, त्रिशूर, 1968
• दार-एस-सलाम, करंट बुक्स, त्रिशूर, 1972
• अजनातन्ते उयारता स्मारकम, करंट बुक्स, त्रिशूर, 1973
• अभयम तेदि वीन्दुम, एसपीसीएस, कोट्टायम, 1978
• स्वर्गवत्तिल तुरक्कुन्ना समय (जब स्वर्ग के द्वार खुलते हैं), पूर्णा प्रकाशन, कालीकट, 1980
• वनप्रस्थम (जंगल में), करेंट बुक्स, त्रिशूर, 1992
• शर्लक, करेंट बुक्स, त्रिशूर, 1998

साहित्यिक अध्ययन
• कधिकांते पानीपपुरा, करंट बुक्स, त्रिशूर, 1963
• हेमिंग्वे ओरु मुघवुरा, करंट बुक्स, त्रिशूर, 1968
• कधिकांते काला, डीसी बुक्स, कोट्टायम, 1984

बाल साहित्य
• माणिक्यकल्लु, करंट बुक्स, त्रिशूर, 1957
• दया एना पेनकुट्टी, मलयालम प्रकाशन, कालीकट, 1987
• तंत्रकारी, गुरु प्रकाशन, कालीकट, 1993
• माणिक्यकल्लम कुट्टीक्कधकलम चित्रांगलुम, डीसी बुक्स, कोट्टायम, 2009

यात्रा वृत्तांत
• मानुषयार निझालुकल, पूर्णा प्रकाशन, कालीकट, 1960
• अलकूत्ततिल तानिये, करेंट बुक्स, त्रिशूर, 1972
• वंकाडालिले तुझावल्लक्कर, एसपीसीएस, कोट्टायम, 1998
• एमट्यूड यात्राकाल, एच एंड सी बुक्स, त्रिशूर, 2010

निबंध
• किलिवातिलिलुदे, अगस्त बुक्स, वलप्पाडु, 1992

- [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], 1994
- [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], 1998
- [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], 2003
- [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], 2005
- [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], 2010

[illegible]

- [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], 2010
- [illegible] [illegible] (6 [illegible]), [illegible], [illegible], [illegible],
- 2011

लेखक और अनुवादक के बारे में एक टिप्पणी

फोटो सौजन्य: पी. मुस्तफा
मदाथ थेक्केप्पट वासुदेवन नायर का जन्म 1933 में केरल के पलक्कड़ जिले के कुडल्लूर गांव में हुआ था।
मलयालम साहित्य के संभवतः सबसे प्रिय और व्यापक रूप से पढ़े जाने वाले लेखक, एम.टी., जिन्हें मित्र और पाठक स्नेहपूर्वक इसी नाम से पुकारते हैं, ने अपने जीवन की शुरुआत एक शिक्षक के रूप में की थी। उन्होंने 1957 में पत्रकारिता में कदम रखा और 1997 में मातृभूमि साप्ताहिक के संपादक के पद से सेवानिवृत्त हुए। वे वर्तमान में थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं।
एमटी का साहित्यिक कार्य बेहद विविध है: उपन्यास, लघु कथाएँ, पटकथाएँ, यात्रा वृत्तांत, साहित्यिक आलोचना और बच्चों के लिए पुस्तकें। स्वयं एमटी के अनुसार, लघु कथा उनकी पसंदीदा साहित्यिक विधा है – और निश्चित रूप से इसमें वे निपुण हैं। उनके नाम बीस से अधिक लघु कथा संग्रह हैं, जिनमें पचास के दशक में प्रकाशित 'कुट्टी एडाथी' से लेकर नब्बे के दशक के

उत्तरार्ध में प्रकाशित 'शर्लक' तक शामिल हैं। उनकी अधिकांश रचनाएँ केरल के नायर समुदाय की मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन और इस प्रक्रिया से जुड़े संघर्षों का वर्णन करती हैं, जो उनकी परवरिश का परिवेश था।
साहित्य जगत के दिग्गज के लिए यह एक असामान्य बात है कि एमटी सिनेमा से गहराई से जुड़े हुए हैं। पचास से अधिक पटकथाएँ लिखने वाले एक विपुल पटकथा लेखक होने के अलावा, एमटी ने अपनी पटकथाओं या कहानियों पर आधारित फिल्मों का निर्देशन किया है या उनसे किसी न किसी रूप में जुड़े रहे हैं। उनकी पहली पटकथा और उनके द्वारा निर्मित और निर्देशित पहली फिल्म निर्मल्यम, जो उनकी लघु कहानी 'पवित्र तलवार और पायल' पर आधारित थी, ने 1973 में राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक जीता। ओरु वडक्कन वीरगाथा (1989), सदायम (1990), कडावु (1991), परिणयम (1994) और ओरु चेरु पंचिरी (2000) सभी ने राष्ट्रीय पुरस्कार जीते। उनकी बाईस पटकथाओं को केरल राज्य पुरस्कार मिले हैं। उन्हें 1996 में ज्ञानपीठ और 2005 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उनके पुरस्कार विजेता उपन्यासों में नालुकेट्टू (1954) शामिल है, जिसने केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता था; कलाम (1969), जिसने केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता; और रैंडमूज़म (1984), जिसने वायलार और मुत्तथु वर्की पुरस्कार जीते।

गीता कृष्णनकुट्टी ने एम.टी. वासुदेवन नायर, ललिताम्बिका अंतर्जनम, एन.पी. मोहम्मद, पॉल जाचरिया, आनंद और एम. मुकुंदन सहित कई मलयालम लेखकों के उपन्यासों और लघु कहानियों का अनुवाद किया है।

भारत में पहली बार 2008 में प्रकाशित।
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया
कॉपीराइट © नायर, एमटी वासुदेवन 2008

ISBN: 9-789-3502-9759-9
ईपब संस्करण © जुलाई 2013 ई-आईएसबीएन: 9-789-3502-9760-5
2 4 6 8 10 9 7 5 3 1
एम.टी. वासुदेवन नायर इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करते हैं।
कॉपीराइट अधिनियम, 1957 के तहत सभी अधिकार सुरक्षित हैं। आवश्यक शुल्क के भुगतान पर, आपको इस ईबुक के पाठ को स्क्रीन पर देखने और पढ़ने का गैर-अनन्य, गैर-हस्तांतरणीय अधिकार प्रदान किया गया है। हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना, इस पाठ का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, प्रसारित, डाउनलोड, डीकंपाइल, रिवर्स-इंजीनियर या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली में किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे इलेक्ट्रॉनिक हो या यांत्रिक, वर्तमान में ज्ञात हो या भविष्य में आविष्कार किया जाए, संग्रहीत या उसमें शामिल नहीं किया जा सकता है।
कवर डिज़ाइन: अमृता चक्रवर्ती
www.harpercollins.co.in
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स
ए-53, सेक्टर 57, नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301, भारत
77-85 फुलहम पैलेस रोड, लंदन W6 8JB, यूनाइटेड किंगडम
हेज़ल्टन लेन्स, 55 एवेन्यू रोड, सुइट 2900, टोरंटो, ओंटारियो M5R 3L2 और 1995 मार्खम रोड, स्कारबोरो, ओंटारियो M1B 5M8, कनाडा
25 राइड रोड, पिम्बल, सिडनी, NSW 2073, ऑस्ट्रेलिया
31 व्यू रोड, ग्लेनफील्ड, ऑकलैंड 10, न्यूजीलैंड
10 ईस्ट 53 स्ट्रीट, न्यूयॉर्क NY 10022, यूएसए